परलोक के अटल विधान

शांगगुआन युहुआ

विषय-सूची

इस संस्करण की संपादकीय सीमा.....10

परलोक के अटल विधान — खंड एक.....11

प्रस्तावना.....16

0/लेखिका की भूमिका.....18

1/《परलोक के अटल विधान》 की रचना का आरंभिक प्रसंग (एक) — तथागत की दिव्य शक्ति के सहारे त्रायस्त्रिंश स्वर्ग की ओर आरोहण.....23

2/《परलोक के अटल विधान》 की रचना का आरंभिक प्रसंग (दो) — परलोक के सर्वोच्च शासक फ़ेंगदू सम्राट के पुनः दर्शन और प्रणाम.....30

3/सातवें न्यायसभागृह में उपस्थित होकर सुनवाई सुनना.....37

4/न्यायाधिकारी ने कहा: “मृत्यु के बाद प्रायश्चित्त करना बहुत देर कर देना है!”.....43

5/हस्तमैथुन महानरक का भीषण कर्मफल—न्यायाधिकारी ने स्वर्ग के सारे रहस्य प्रकट कर दिए!.....47

6/वेश्याओं के ग्राहकों को महानरक में 100,000 वर्ष का कर्मफल.....52

7/निकट पारिवारिक संबंधियों के बीच यौन दुराचार को दंडित करने वाले उलटे पहियों और बर्फ़ीले आकाश के नरक तथा रंगीन फूलों और तलवारों के वन के नरक का प्रत्यक्ष वृत्तांत.....57

8/अश्लील सामग्री और वेबसाइटों में डूबे युवक की आशीषें और आयु पूरी तरह क्षीण हो गईं; मृत्यु के समय उसकी उम्र बीस से अधिक, लेकिन तीस वर्ष से कम ही थी!.....62

9/हस्तमैथुन का भयावह दंड—विद्युत्-नेत्र और लोहे के गोलों का नरक.....67

10/सांसारिक आयु पूरी होने से पहले ही तीन हुन आत्माओं को हुक से पकड़ लेना!!!.....71

11/न्यायाधिकारी ने गंभीरता से उत्तर दिया, “परलोक में हमारे परलोकाधिपति ने देखा कि मनुष्यलोक से सहन-सीमा से अधिक दूषित ऊर्जा निकल चुकी है!”.....76

12/दाँतेदार पहियों, भेड़ियों और सर्पों का नरक.....81

13/परलोक के सर्वोच्च अधिपति फ़ेंगदू सम्राट से पहली भेंट.....84

14/विद्युत्-प्रकाश की स्क्रीन—विद्युत्-युक्त बर्फ़ की सुइयाँ छोड़ने वाला नया नरक.....89

15/परलोक की सामान्य बस्ती के जीवन से रहस्य का परदा उठाना.....92

16/1900 से भी अधिक वर्ष पहले पश्चिमी हान काल में कामोत्तेजक चित्र बनाने वाले आज तक महानरक में कैद होकर दुःख भोग रहे हैं!.....97

17/दूसरी बार न्यायसभा में उपस्थित होकर सुनवाई सुनना—प्राचीन पुस्तकों में वर्णित सत्कर्मों को पुरस्कृत करने और दुष्कर्मों को दंडित करने वाले दो विभागों को अपनी आँखों से देखना.....105

18/अश्लील पुस्तकों, पत्रिकाओं और डिस्क को दूसरों में बाँटने तथा प्रसारित करने का नारकीय कर्मफल.....112

19/जीवों के मूल यांग से युक्त शरीर को बचाना—मनुष्यलोक की अश्लील वस्तुओं का निपटारा कैसे किया जाए, इस पर परलोक का आधिकारिक दृष्टिकोण.....116

20/गर्भपात का कर्मफल और शिशु आत्माओं की अन्यायपूर्ण मृत्यु का रुदन-नगर.....120

21/शिशु आत्माओं का तीव्र अभियोग—यमराज की पीली आदेश-पट्टिका.....127

22/गर्भपात करने वाले डॉक्टरों का इस जन्म और अगले जन्म का कर्मफल—विखंडन नरक में 100000 वर्ष का दंडात्मक कारावास.....133

23/बच्चे, कृपया मत रोओ—परलोक के न्यायाधिकारी गर्भपात के परिहार के उपाय विस्तार से समझाते हैं.....139

24/बच्चे, माँ तुमसे प्यार करती है—परलोक के न्यायाधिकारी संसार की सभी माताओं को गंभीर और स्नेहपूर्ण शिक्षा देते हैं!.....146

25/परलोक के विधानों में स्त्रियों का यौन शील और विवाहपूर्व यौन संबंध.....152

26/परलोक के विधानों में जीवित मनुष्यों की बिजली गिरने से मृत्यु का रहस्य.....156

27/समलैंगिकता की अंतिम गति—लियानश्यांग महानरक.....159

28/मिंगगुआंग छुझुआन सभा-भवन में क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व के दर्शन और वंदना.....164

29/दिव्य मणि के मंत्र की असीम शक्ति—दक्षिण के तीन पवित्र महात्माओं को नरक के घोर दुःखों से जीवों का उद्धार करते हुए प्रत्यक्ष देखना.....171

30/परलोक के न्यायाधिकारी ने युली का सत्य बताया—《युली बाओछाओ》 और 《परलोक के अटल विधान》 की रक्षा और समर्थन में पूरी शक्ति लगाना.....180

31/अवीचि महानरक के दंड, जिन्हें देखना भी असहनीय है; दिव्य प्राणी दी तिंग ने परहित के आचरण की साधना पर उपदेश दिया.....183

32/परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: “पवित्र माता मरियम अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्व का निर्मित रूप हैं”—अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्व की दुःख दूर करने के लिए नरक-यात्रा.....195

उपसंहार.....204

परलोक के अटल विधान — खंड दो.....211

0/लेखिका की भूमिका.....215

1/जीवन-मृत्यु की बही.....218

2/तो सब कुछ पहले ही लिखा जा चुका था! — मानव भाग्य का कूट और आयु का बढ़ना-घटना; जीवन-मृत्यु की बही देखकर आकाशीय रहस्य जानना!.....219

3/अंततः उस दुष्कर्म-दर्पण के दर्शन हुए जिसकी चर्चा लंबे समय से सुनती आई थी—दुष्कर्म-दर्पण के मंच के सामने कोई भला व्यक्ति नहीं!.....227

4/परलोक के सर्वोच्च अधिपति, सम्राट यमराज.....234

5/《परलोक का आत्मिक सत्ता संबंधी आधिकारिक पत्र》—बैलमुख और अश्वमुख मनुष्य की आयु पूरी होने पर की जाने वाली समस्त कार्यवाही विस्तार से बताते हैं.....236

6/सदाचार और दुराचार प्राचीन काल से बर्फ़ और अंगारे जैसे रहे हैं; निंदा और प्रशंसा में आज सत्य और असत्य का निर्णय हो! — एक युग के राष्ट्रनायक सेनापति यूए फ़ेई से भेंट और बीते दिनों की घटनाओं का विस्तृत वृत्तांत.....243

7/मेंग पो के सूप का एक प्याला, उपकार और वैर दोनों भुला दे! — यूवांग मंच का प्रत्यक्ष भ्रमण.....254

8/भोजन बरबाद करने का दर्दनाक कर्मफल—पाँच अनाजों की भरपूर फ़सल नरक.....264

9/बुद्ध का स्वयं दिया हुआ उपदेश: भोजन और पेय बरबाद करने पर अवश्य नरक में गिरकर कष्ट भोगना पड़ता है!.....271

10/बुद्ध कहते हैं: स्वादिष्ट भोजन के प्रति आसक्ति और पेट भरने से भी अधिक खाना मनुष्य को आसानी से दुर्गतियों में गिरा सकता है!.....273

11/मनुष्य कठिन परिश्रम से संचित अपना सौभाग्य और आयु धूम्रपान से व्यर्थ गँवा देता है!.....274

12/डोंगयुए सम्राट की पदोन्नति और दक्षिण जम्बूद्वीप की विपत्तियाँ.....285

13 / पुण्य और सद्गुण से युक्त धर्मनिष्ठ देवता—भूमि-देव तुदी गोंग.....294

14/एक झूठ के परिणाम छोटे भी हो सकते हैं और बड़े भी —
‘बर्फ़ीली ठंड में जीभ उखाड़ने और शरीर को चूर-चूर करने वाले नरक’
का भ्रमण.....300

15/अशोभन वाणी का भयंकर दंड—काँटेदार साँप द्वारा जीभ लपेटकर
तोड़ दिए जाने वाला काँच-कंप्यूटर नरक.....309

16/उड़ती कीलों से जीभ काटना—फूट डालने वाली वाणी के नरक के
दंड का प्रथम दर्शन.....314

17/कठोर वाणी का कर्मफल—अत्यंत पीड़ादायक विषैले साँपों और
आँतों में कील ठोकने का नरक.....320

18/कभी काँटे से मछली न पकड़ें—अकेली आत्मा द्वारा तलवारों के
समुद्र में अकेले काँटा डालने का नरक.....335

19/आ यू नगर-रक्षक देव से भेंट करती है.....349

यौन दुराचार के लिए परलोक के दंड-विधान.....357

गुआन पवित्र सम्राट के यौन दुराचार से विरत रहने के सूत्र की व्याख्या.....365

वेनचांग सम्राट का यौन दुराचार से विरत रहने का बहुमूल्य उपदेश.....402

महागुरु यिनगुआंग द्वारा संशोधित ‘शौकांग बाओज्यान’ में शरीर की
रक्षा और जीवन सँभालने के लिए संयम की तिथियों तथा स्वर्ग, पृथ्वी
और मनुष्य से संबंधित निषिद्ध दिनों की तालिका (TXT फ़ाइल में यह
तालिका व्यवस्थित नहीं की जा सकती; कृपया इसे इंटरनेट पर खोजें।
यह तालिका बहुत महत्त्वपूर्ण है, विशेषकर उन माता-पिताओं के लिए
जो पुण्य और प्रज्ञा दोनों से संपन्न संतान चाहते हैं)।.....405

‘परलोक के अटल विधान’ सचमुच परलोक के प्रशासन द्वारा प्रस्तुत की गई पुस्तक है और उसके प्रसार को उसी की कृपा-शक्ति मिली है —
‘परलोक के अटल विधान’ से जुड़ी मेरी कहानी.....406

पुण्य-समर्पण गाथा.....419

अनुवादक और संपादकीय टिप्पणियाँ.....420

टिप्पणियाँ.....421

परलोक के अटल विधान

इस संस्करण की संपादकीय सीमा

इस संकलित समीक्षित पाठ में चीनी मूल के क्रम के अनुसार दोनों खंड और परिशिष्ट शामिल हैं। ZH-L0251, ZH-L0286, ZH-L0739 और ZH-L0741 में कम उम्र के लोगों से जुड़े यौन विवरण के स्थान पर स्पष्ट संपादकीय सीमाएँ रखी गई हैं। गैर-स्पष्ट आसपास का प्रसंग सुरक्षित है। इन अंशों को पूर्ण, असंक्षिप्त अनुवाद न माना जाए।

मुख्य पाठ के धार्मिक, नैतिक, चिकित्सकीय और कर्मफल-संबंधी कथन लेखक, पात्रों या उद्धृत ग्रंथों के हैं। वे संपादक की वैज्ञानिक पुष्टि या चिकित्सा-सलाह नहीं हैं। अनुवादक की टिप्पणियाँ मूल कथन से अलग चिह्नित हैं।

परलोक के अटल विधान — खंड एक

विषय-सूची

प्रस्तावना.....16

0/लेखिका की भूमिका.....18

1/《परलोक के अटल विधान》 की रचना का आरंभिक प्रसंग (एक) — तथागत की दिव्य शक्ति के सहारे त्रायस्त्रिंश स्वर्ग की ओर आरोहण.....23

2/《परलोक के अटल विधान》 की रचना का आरंभिक प्रसंग (दो) — परलोक के सर्वोच्च शासक फ़ेंगदू सम्राट के पुनः दर्शन और प्रणाम.....30

3/सातवें न्यायसभागृह में उपस्थित होकर सुनवाई सुनना.....37

4/न्यायाधिकारी ने कहा: “मृत्यु के बाद प्रायश्चित्त करना बहुत देर कर देना है!”.....43

5/हस्तमैथुन महानरक का भीषण कर्मफल—न्यायाधिकारी ने स्वर्ग के सारे रहस्य प्रकट कर दिए!.....47

6/वेश्याओं के ग्राहकों को महानरक में 100,000 वर्ष का कर्मफल.....52

7/निकट पारिवारिक संबंधियों के बीच यौन दुराचार को दंडित करने वाले उलटे पहियों और बर्फ़ीले आकाश के नरक तथा रंगीन फूलों और तलवारों के वन के नरक का प्रत्यक्ष वृत्तांत.....57

8/अश्लील सामग्री और वेबसाइटों में डूबे युवक की आशीषें और आयु पूरी तरह क्षीण हो गईं; मृत्यु के समय उसकी उम्र बीस से अधिक, लेकिन तीस वर्ष से कम ही थी!.....62

9/हस्तमैथुन का भयावह दंड—विद्युत्-नेत्र और लोहे के गोलों का नरक.....67

10/सांसारिक आयु पूरी होने से पहले ही तीन हुन आत्माओं को हुक से पकड़ लेना!!!.....71

11/न्यायाधिकारी ने गंभीरता से उत्तर दिया, “परलोक में हमारे परलोकाधिपति ने देखा कि मनुष्यलोक से सहन-सीमा से अधिक दूषित ऊर्जा निकल चुकी है!”.....76

12/दाँतेदार पहियों, भेड़ियों और सर्पों का नरक.....81

13/परलोक के सर्वोच्च अधिपति फ़ेंगदू सम्राट से पहली भेंट.....84

14/विद्युत्-प्रकाश की स्क्रीन—विद्युत्-युक्त बर्फ़ की सुइयाँ छोड़ने वाला नया नरक.....89

15/परलोक की सामान्य बस्ती के जीवन से रहस्य का परदा उठाना.....92

16/1900 से भी अधिक वर्ष पहले पश्चिमी हान काल में कामोत्तेजक चित्र बनाने वाले आज तक महानरक में कैद होकर दुःख भोग रहे हैं!.....97

17/दूसरी बार न्यायसभा में उपस्थित होकर सुनवाई सुनना—प्राचीन पुस्तकों में वर्णित सत्कर्मों को पुरस्कृत करने और दुष्कर्मों को दंडित करने वाले दो विभागों को अपनी आँखों से देखना.....105

18/अश्लील पुस्तकों, पत्रिकाओं और डिस्क को दूसरों में बाँटने तथा प्रसारित करने का नारकीय कर्मफल.....112

19/जीवों के मूल यांग से युक्त शरीर को बचाना—मनुष्यलोक की अश्लील वस्तुओं का निपटारा कैसे किया जाए, इस पर परलोक का आधिकारिक दृष्टिकोण.....116

20/गर्भपात का कर्मफल और शिशु आत्माओं की अन्यायपूर्ण मृत्यु का रुदन-नगर.....120

21/शिशु आत्माओं का तीव्र अभियोग—यमराज की पीली आदेश-पट्टिका...127

22/गर्भपात करने वाले डॉक्टरों का इस जन्म और अगले जन्म का कर्मफल—विखंडन नरक में 100000 वर्ष का दंडात्मक कारावास.....133

23/बच्चे, कृपया मत रोओ—परलोक के न्यायाधिकारी गर्भपात के परिहार के उपाय विस्तार से समझाते हैं.....139

24/बच्चे, माँ तुमसे प्यार करती है—परलोक के न्यायाधिकारी संसार की सभी माताओं को गंभीर और स्नेहपूर्ण शिक्षा देते हैं!.....146

25/परलोक के विधानों में स्त्रियों का यौन शील और विवाहपूर्व यौन संबंध. .152

26/परलोक के विधानों में जीवित मनुष्यों की बिजली गिरने से मृत्यु का रहस्य.....156

27/समलैंगिकता की अंतिम गति—लियानश्यांग महानरक.....159

28/मिंगगुआंग छुझुआन सभा-भवन में क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व के दर्शन और वंदना.....164

29/दिव्य मणि के मंत्र की असीम शक्ति—दक्षिण के तीन पवित्र महात्माओं को नरक के घोर दुःखों से जीवों का उद्धार करते हुए प्रत्यक्ष देखना.....171

30/परलोक के न्यायाधिकारी ने युली का सत्य बताया—《युली बाओछाओ》 और 《परलोक के अटल विधान》 की रक्षा और समर्थन में पूरी शक्ति लगाना.....180

31/अवीचि महानरक के दंड, जिन्हें देखना भी असहनीय है; दिव्य प्राणी दी तिंग ने परहित के आचरण की साधना पर उपदेश दिया.....183

32/परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: “पवित्र माता मरियम अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्व का निर्मित रूप हैं”—अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्व की दुःख दूर करने के लिए नरक-यात्रा.....195

उपसंहार.....204

परलोक के विधान अटल हैं, बुद्ध करुणामय हैं.....204

देश की रक्षा, जनता से प्रेम; कर्मफल की स्पष्ट समझ.....206

प्रस्तावना

सहसाधिका शांगगुआन युहुआ ने 《परलोक के अटल विधान》 की रचना में अपना समस्त मनोबल और हृदय का श्रम लगा दिया है। ऊपरी, मध्य और निचले तीनों लोकों ने मिलकर इसमें योगदान दिया है; आकाश और पृथ्वी के देवताओं तथा आत्माओं ने इससे बड़ी आशाएँ बाँधी हैं। संसार के आचरण को सँभालना और लोगों के मन को सही दिशा देना इसका उद्देश्य है। पूर्वकाल की 《युली बाओछाओ》 के बाद यह परलोक के शासन की एक और महत्त्वपूर्ण कृति है। आज लोगों के मन बिगड़ रहे हैं और नैतिकता का पतन हो रहा है, इसलिए नरक और परलोक की वास्तविक स्थिति अवश्य ही सार्वजनिक करने का निश्चय किया गया है, ताकि इसके माध्यम से उन लोगों को बचाया जा सके जिनका इससे कर्मगत संबंध है और जिनमें कुशल मूल अभी पूरी तरह नष्ट नहीं हुए हैं।

इस बार परलोक के शासन ने क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व की आज्ञा के कारण विशेष अनुग्रह प्रदान किया है: नरक में जो कुछ देखा और सुना जाए, वह सब मनुष्यलोक में प्रकाशित किया जा सकता है। यह एक अत्यंत विशेष अपवाद है। इसी वर्ष इस पुस्तक का आरंभिक रूप पूरा किया जाएगा, ताकि मनुष्यलोक की महाविपत्ति को शांत और समाप्त किया जा सके।

जो कोई परलोक के विधान का समर्थन करेगा, उसे स्वर्ग में उच्चतर गति प्राप्त होगी और नरक की सूची से उसका नाम हटा दिया जाएगा। संसार को बचाने के इस पुण्य को पश्चिम की परम सुखमय शुद्धभूमि में जन्म लेने की कामना के लिए समर्पित करने पर उसका कमल उच्चतर श्रेणी का होगा। हम त्रिरत्न के सभी शिष्यों को अवश्य ही इसका समर्थन और पालन करना चाहिए।

एक व्यक्ति को धर्म की प्राप्ति हो जाए तो उसके जिउश्युआन छीज़ू सभी उच्चतर गति पाकर दुःख से मुक्त और सुखी हो सकते हैं। ऊपर चार उपकारों का

ऋण चुकाने और नीचे तीनों भवों के जीवों को उबारने के लिए इस ग्रंथ के प्रसार से बढ़कर कुछ नहीं!

अनुवादक की टिप्पणी: “जिउश्युआन छीज़ू” एक पारंपरिक चीनी धार्मिक पद है, जो कुछ परंपराओं में पूर्वजों और वंशजों की पीढ़ियों को समेटता है। अलग-अलग परंपराओं में इसका दायरा अलग समझा जाता है; यहाँ पीढ़ियों की कोई निश्चित सूची नहीं दी जा रही है।

चीनी कालगणना का रेनछेन वर्ष हाथ जोड़कर, म्याओझेंग

0/लेखिका की भूमिका

अमिताभ बुद्ध! आप सभी को नमस्कार!

कामना है कि संसार में शांति हो और युद्ध के अस्त्र शांत हो जाएँ!

कामना है कि समस्त आकाश और धर्मधातु के सभी चेतन प्राणी आनंदित, सुखी, शांत और निश्चिंत हों!

कामना है कि धर्मधातु के सभी चेतन प्राणी जन्म-मृत्यु से मुक्त हों, तीनों लोकों से बाहर निकलें, दुःख से छुटकारा पाएँ और सुख प्राप्त करें!

कामना है कि धर्मधातु के सभी चेतन प्राणी सद्धर्म सुनें और शुद्ध शील-व्रतों का पालन करके सिद्धि प्राप्त करें; उनका शील उज्ज्वल मणि की तरह निर्मल और निष्कलंक हो!

कामना है कि हमारी धरती माँ का चुंबकीय क्षेत्र शीघ्र ही कल्प के आरंभ वाला संतुलन और सामंजस्य फिर पा ले। कामना है कि जिन चेतन प्राणियों को अपने कर्मगत संबंध के कारण यह लेख देखने का अवसर मिले, वे अपने आसपास के संबंधियों और मित्रों को इसकी बात आगे पहुँचाएँ। वे पूर्वकाल में पंचशील का पालन करके पाए गए बहुमूल्य मनुष्य-शरीर को सँजोएँ, अच्छी तरह साधना करें और अवसरों तथा अनुकूल स्थितियों से संपन्न इस मनुष्य-शरीर का उपयोग करते हुए शुद्ध शील-व्रतों का पालन जारी रखें, अपने भीतर के स्वभाव की ज्योति बढ़ाएँ और शीघ्र ही मुक्ति के पार पहुँचें!

आइए, अपनी आध्यात्मिक चेतना को प्रकाश की ओर बढ़ाएँ। यदि सभी चेतन प्राणियों की आध्यात्मिक चेतना प्रकाशमान हो, तो इससे ब्रह्मांड और प्रकृति में सहज संतुलन आएगा, और हमें सामूहिक कर्म से उत्पन्न इतनी अधिक बड़ी प्राकृतिक आपदाएँ भी नहीं झेलनी पड़ेंगी। इसलिए कहा जा सकता है कि समस्त विशाल

ब्रह्मांड के लिए पहले स्वयं को सँवारना आवश्यक है। हममें से हर एक स्वयं एक लघु ब्रह्मांड है; लघु ब्रह्मांड विशाल ब्रह्मांड से जुड़ा है। एक ही सब है और सब ही एक है। हमारे बीच अपना-पराया नहीं है; सब कुछ एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़ा है। यह मत समझिए कि कोई अत्यंत निजी काम करने पर किसी को पता नहीं चलता। भलाई या बुराई का एक विचार भी सीधे परलोक के शासन की सत्कर्म-दुष्कर्म लेखा-पुस्तिका से जुड़ जाता है।[1]

बुद्ध और बोधिसत्त्व करुणापूर्वक देख रहे हैं कि आज संसार के आचरण का पतन हो रहा है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी की उन्नति ने लोगों को भरपूर भौतिक वस्तुएँ दी हैं, और लोगों के मन तथा विचार तेजी से बिगड़ने लगे हैं। आज अधिकांश लोग कर्म और फल में विश्वास नहीं करते; वे इसे पुराने जमाने की सोच मानते हैं जो समय के अनुरूप नहीं है। छोटे बच्चों में भी अब वैसी सहज निर्मलता और भलमनसाहत नहीं रही जैसी पहले कल्प के आरंभ में थी, तो वयस्कों की बात ही क्या! वे नहीं जानते कि इसका कारण प्राचीन काल की कन्फ्यूशियस और मेंगज़ी की उत्तम परंपरा तथा चार पुस्तकों और पाँच शास्त्रों की शिक्षा का खो जाना है।

आज लोगों का मानसिक जीवन उन्मुक्त हो गया है। उदाहरण के लिए, बड़े शॉपिंग मॉल में बिकने वाले बिना आस्तीन के और पतली पट्टियों वाले कपड़ों को आज सामान्य माना जाता है, जबकि पुराने समय में स्त्रियों का इस तरह कपड़े पहनना बिल्कुल असंभव था। अब वयस्क सामग्री की दुकानें हर जगह दिखाई देती हैं। बड़े अखबार स्टॉलों पर अखबारों की सामग्री और पत्रिकाओं के मुखपृष्ठ लगभग सभी बिकिनी और गहरे गले वाले परिधानों से भरे होते हैं। छोटे बच्चे इन्हें हर दिन अवश्य देखते हैं; वे बिगड़ना न भी चाहें, तो बचना बहुत कठिन है। बुद्ध और बोधिसत्त्व ने देखा है कि संसार में आध्यात्मिक शिक्षा का गंभीर अभाव हो गया है। उन्हें जीवों की आध्यात्मिक चेतना के पतन की चिंता है; विपत्तियाँ निश्चित ही लगातार एक के बाद एक आती रहेंगी। यद्यपि संसार में कुछ सदाशयी लोग संसार के आचरण को सँभालने वाले संदेश और लेख लगातार प्रसारित करते रहते हैं, लेकिन यदि जीव

बुराई छोड़कर भलाई नहीं अपनाते, तो आयु समाप्त होने पर उन्हें अवश्य नरक में गिरकर तरह-तरह के कठोर दंड भोगने होंगे, और वहाँ से निकलने का कोई दिन नहीं होगा।

करुणामय देवराज ने देखा कि अनेक महानरक पहले ही अत्यधिक भर चुके हैं और उनका विस्तार करते रहना पड़ रहा है। विशेष रूप से यौन दुराचार के नरकों में बहुत से कम उम्र के बच्चे कष्ट भोग रहे हैं, क्योंकि उन्हें अच्छे विचारों और कर्म-फल की शिक्षा का गंभीर अभाव रहा है। यह सचमुच मनुष्यलोक के जीवों के लिए बहुत बड़ा दुःख है! इसलिए देवराज ने विशेष रूप से बुद्ध से निवेदन किया कि वे मनुष्यलोक की किसी उपयुक्त शिष्या की व्यवस्था करें, जो शुद्ध शील-व्रतों का पालन करती हो और पूरी तरह जागृत अवस्था में नरक का भ्रमण करे, फिर मनुष्यलोक लौटकर एक पुस्तक लिखे। उसमें नरक की स्थितियों का विस्तृत विवरण दर्ज करके मनुष्यलोक के जीवों को बताया जाए; पुस्तक का नाम 《परलोक के अटल विधान》 हो। इस पुस्तक की सामग्री नरक के प्रत्येक भ्रमण के बाद अपेक्षाकृत सरल भाषा में लिखी जाती है। हर बार लिखने के बाद संशोधन भी करना पड़ता है; उसे जाँचकर वास्तविक स्थिति के अनुरूप पाए जाने पर ही प्रकाशित किया जा सकता है। कभी-कभी एक वृत्तांत ठीक से लिखने के लिए मुझे, आ यू को, उसकी सामग्री की पुष्टि करने नरक में कई बार आना-जाना पड़ता है। इसलिए यह पहले मनुष्यलोक में प्रचलित आत्मा-लेखन या किसी आत्मा के शरीर में प्रवेश करने पर लिखी गई सदाचार की पुस्तकों से, अथवा लोगों द्वारा सपने में अनुभव की गई अलौकिक घटनाओं के वृत्तांतों से, पूरी तरह अलग है।

देवराज को आशा है कि इस बार अभूतपूर्व रूप से मुझे, शांगगुआन युहुआ को, नरक की स्थितियाँ संसार के सामने प्रकट करने देकर लोगों को अपना मन सँवारने और स्वभाव विकसित करने की चेतावनी दी जा सकेगी। यदि वे आगे से शील-व्रतों का उल्लंघन और अपराध न करें, तो जीवन समाप्त होने पर नरक में जाकर दंड

भोगने की संभावना निश्चित ही बहुत कम हो जाएगी। यदि नरक की इन वास्तविकताओं को आगे दूसरों तक पहुँचाया जा सके, जिससे अधिक लोग जागरूक हों, बुरे मार्ग को छोड़कर सही मार्ग अपनाएँ और परिश्रम से सत्कर्म करते हुए पुण्य संचित करें, तो संभव है कि वे पहले किए गए नरक में ले जाने वाले दुष्कर्मों के फल से बच जाएँ, किसी पुण्यभूमि में पुनर्जन्म लें या स्त्री-शरीर से पुरुष-शरीर प्राप्त करें। निश्चय ही, प्रत्येक मामले का विशिष्ट निर्णय बुद्ध, बोधिसत्त्व और कर्म-फल के अनुसार ही होना चाहिए।[2]

हर व्यक्तिगत जीवन में प्रकाश की ओर ले जाने वाली सीढ़ियाँ अवश्य होती हैं। वे सच्चे मन से पश्चात्ताप करने वाले चेतन प्राणियों के लिए होती हैं, ताकि वे उन पर स्थिर कदमों से चढ़ सकें और समझें कि शुभ कारण बोने से शुभ फल मिलता है, अशुभ कारण बोने से अशुभ फल भोगना पड़ता है। कर्म का फल शरीर के साथ छाया की तरह लगा रहता है। ऐसा नहीं कि फल मिलेगा ही नहीं; बस उसका समय अभी नहीं आया है!

कुछ समय पहले बुद्ध ने मुझे, आ यू को, उपदेश दिया और कहा कि नरक का भ्रमण करके लौटने के बाद लेख लिखूँ, ताकि लोग कर्म और फल को समझें तथा शुद्ध शील-व्रतों को ग्रहण कर उनका पालन करें। जो अभी शील-व्रतों का पालन नहीं करते, वे ठीक से पालन करें; जो पहले से करते हैं, उन्हें एक कदम और आगे बढ़ना चाहिए, स्वयं को निरंतर उन्नत करना चाहिए और लोगों के हित में अधिक कार्य करने चाहिए।

मैं, आ यू, त्रिरत्न की शरण में गई और पंचशील को ग्रहण कर उनका पालन करने वाली बुद्ध की शिष्या हूँ। यह मेरा बड़ा सौभाग्य है कि बुद्ध ने करुणापूर्वक मुझे यह कार्य करने का प्रयास करने दिया। 《क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व के मूल प्रणिधानों का सूत्र》 कहता है: “यदि दिव्य सामर्थ्य से नहीं, तो कर्म की शक्ति से ही।” वास्तव में बुद्ध की शक्ति का अनुग्रह न हो, तो मेरे पास इस पवित्र दायित्व को

सँभालने के लिए पर्याप्त पुण्य और प्रज्ञा ही नहीं है। लेकिन मैं इस अवसर को बहुत सँजोऊँगी और बुद्ध की करुणामय व्यवस्था पूरी करने के लिए अपनी सारी शक्ति लगा दूँगी।

एक कहावत है: "धर्म का प्रचार करने वाले बोधिसत्त्व हैं, धर्म की रक्षा करने वाले बुद्ध हैं।" वास्तव में सभी पुण्य बुद्ध से ही आते हैं। बुद्ध परोक्ष रूप से बहुत-सी व्यवस्थाएँ और अनुग्रह प्रदान करते हैं; बस हम सब इससे अनजान रहते हैं। इसलिए सभी को परिश्रम से शील-व्रतों का पालन करके बुद्ध और गुरु के उपकारों का ऋण चुकाना चाहिए!

अपनी न्यूनताओं पर लज्जित शिष्या शांगगुआन युहुआ की सादर लेखनी से

1/《परलोक के अटल विधान》 की रचना का आरंभिक प्रसंग (एक) — तथागत की दिव्य शक्ति के सहारे त्रायस्त्रिंश स्वर्ग की ओर आरोहण[3]

बुद्ध की शक्ति के अनुग्रह के लिए कृतज्ञ हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ!

अमिताभ बुद्ध! मैं, आ यू, परलोक के न्यायाधिकारी के सामने हाथ जोड़ती हूँ!

मैंने परलोक के न्यायाधिकारी से पूछा: “जब फ़ेंगदू सम्राट, परलोक के सर्वोच्च अधिपति यमराज, ने मनुष्यलोक को सद्मार्ग पर लाने के लिए 《परलोक के अटल विधान》 पुस्तक लिखवाने की इच्छा से देवराज के समक्ष निवेदन प्रस्तुत किया था, तब देवराज ने क्या उपदेश दिया था?”

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: “मुझे एक सरकारी कार्य के संबंध में देवराज को प्रतिवेदन देने स्वर्गलोक जाना ही है! तुम्हें भी साथ लेकर देवराज के दर्शन करने स्वर्गलोक चलता हूँ!”

मैंने प्रसन्न होकर परलोक के न्यायाधिकारी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की और हम उड़कर स्वर्गलोक की ओर चले। जब मैं मनुष्यलोक की धरती से लगभग 6000 मीटर ऊपर पहुँची, तो मुझे स्पष्ट रूप से निर्मलता, स्थिरता और शांति का अनुभव होने लगा। मैंने कुछ देवताओं को उड़ते हुए देखा और महल तथा घर भी दिखाई दिए। स्वर्गलोक के महल और घर प्रकाश बिखेरते हैं; वे अत्यंत सुंदर और सुरुचिपूर्ण हैं, मनुष्यलोक के उन घरों जैसे नहीं जिनमें ऐसी चमक नहीं होती।

अब हम एक विशाल महल के द्वार पर पहुँचे। द्वार के ऊपर तीन बड़े चीनी अक्षरों में "帝释天" (शक्र देवेन्द्र) लिखा था। वहाँ दो दिव्य सेनापति हाथों में शस्त्र लिए खड़े थे; वे बहुत बलिष्ठ और प्रतापी लग रहे थे। ऐसा लगा कि वे हम दोनों को जानते थे। उन्होंने बड़े शिष्ट भाव से मुस्कराकर हमारा स्वागत किया। परलोक के न्यायाधिकारी ने बताया कि हम देवराज के दर्शन करना चाहते हैं। दोनों दिव्य सेनापतियों ने कहा कि देवराज ने अभी-अभी निर्देश दिया है कि हमारे आने पर फिर से सूचना देने की आवश्यकता नहीं है; हम सीधे भीतर जा सकते हैं। जब दोनों दिव्य सेनापति दो ओर हटकर खड़े हुए, तो द्वार अपने-आप खुल गया और हम भीतर चले गए।

यह महल न केवल विशाल था, बल्कि विशेष रूप से भव्य और गरिमामय भी था; वह जगमगा रहा था। मैंने देवकन्याओं को देखा। उनमें से हर एक सुंदर थी और उसका व्यक्तित्व असाधारण था। मनुष्यलोक की सबसे सुंदर विश्वसुंदरी भी यहाँ आ जाती, तो तुरंत फीकी पड़ जाती। देवताओं के शरीर भी स्वतः प्रकट होकर जन्म लेते हैं, लेकिन यहाँ का अनुभव नरक-गति के अनुभव से बिल्कुल अलग है। देवता स्वतंत्र और निश्चिंत हैं; हर कोई प्रसन्न और सुखी दिखाई देता है। स्वर्गलोक में कोई पीड़ा नहीं है। देवताओं के वस्त्र हल्के होकर लहराते हैं और उनमें सिलाई का कोई निशान दिखाई नहीं देता। सचमुच दिव्य वस्त्रों में कोई सीवन नहीं होती। जब मैं स्वर्गलोक पहुँची, तो लगा कि मनुष्यलोक कितना अशुद्ध है; जब मैं नरक गई थी, तो लगा था कि मनुष्यलोक कितना अच्छा है। इसलिए हम मनुष्यों को निरंतर ऊपर उठते रहना चाहिए। जितना ऊपर, उतनी अधिक निर्मलता; जितना नीचे, उतना अधिक दुःख।

एक देवकन्या हमारे पास आई और हमें आगे ले चली; महल वास्तव में बहुत बड़ा था। अब सामने सोने और रत्नों की आभा से दमकता एक विशाल सभागार दिखाई दिया और हम उसमें प्रवेश कर गए। देवकन्या ने देवराज को सूचित किया

कि नरक के न्यायाधिकारी और मनुष्यलोक की सामान्य स्त्री शांगगुआन युहुआ दर्शन करने आए हैं।

विशाल सभागार के मध्य सबसे ऊँचे स्थान पर विराजमान व्यक्तित्व ही देवराज थे। उनका स्वरूप शुभ लक्षणों से युक्त, गरिमामय और करुणापूर्ण था। सिर पर प्राचीन चीनी शैली का राजमुकुट था। मुकुट आयताकार था और उसके आगे तथा पीछे लटकती झालरें थीं। देवराज का रूप देखते ही मन में आदर उत्पन्न होता था! उनके वस्त्रों के रंग सात हल्के, कोमल रंगों की आभा बिखेर रहे थे। यद्यपि सात रंग थे, फिर भी वे तनिक भी आँखों को चुभते नहीं थे; उनमें परतों और उभार का स्पष्ट बोध भी था। उन्हें देखकर बहुत सहजता और निश्चिंतता अनुभव होती थी। देवराज के हृदय के प्रकाश से निकलने वाली किरणें पूरे स्वर्गलोक को आच्छादित कर सकती थीं।

परलोक के न्यायाधिकारी ने देवराज को औपचारिक प्रणाम किया। मैं भी सभागार में घुटनों के बल बैठी और सिर झुकाकर देवराज को प्रणाम किया। तभी देवराज की करुणामय वाणी सुनाई दी: “शांगगुआन युहुआ, उठो। क्या तुम यह पूछना चाहती हो कि परलोक के शासन द्वारा 《परलोक के अटल विधान》 की रचना के बारे में मेरे क्या विचार हैं?”

देवराज के वस्त्रों के रंग बदल रहे थे! अभी वे सात रंगों के थे, अब सफेद, मलाई जैसे सफेद, हल्के हरे और सुनहरे पीले हो गए थे। दिव्य वस्त्रों में सीवन न होने से उनकी कटाई-सिलाई का बहुत समय तो बचता ही है, ऊपर से वे मन के अनुसार बदल भी सकते हैं। कितना अचिंत्य है!

मैंने कहा: “जी हाँ! मैं, एक सामान्य स्त्री, देवराज से 《परलोक के अटल विधान》 पुस्तक की रचना के पीछे के कारण पूछना चाहती हूँ।”

देवराज ने भावुक होकर कहा: “मनुष्यलोक और तीन अधोगतियों[4] के जीवों में से बहुत थोड़े ही अन्य बुद्धक्षेत्रों के बुद्ध और बोधिसत्त्व हैं, जो अपने प्रणिधान के बल पर मनुष्यलोक में उतरते हैं, ताकि अपने से कर्मगत संबंध रखने वाले दुःखी जीवों का उद्धार कर सकें। उन्हें छोड़कर स्वर्गलोक के नीचे के बाकी सभी जीव मेरी प्रजा हैं। मनुष्यलोक में पतित होने के बाद वहाँ जन्म-मरण के चक्र में घूमते हुए उनकी आदतें दूषित होती गई हैं। वे स्वर्गलोक से जितने दूर होते जा रहे हैं, अपने स्वर्गीय मूल घर लौटने में सफल होने वालों की संख्या भी उतनी ही घटती जा रही है। मनुष्यलोक के जीव हर दिन जो अशुभ विचार उत्पन्न करते हैं, उन्होंने स्वर्गलोक के रहने योग्य वातावरण को गंभीर रूप से क्षति पहुँचाई है और मेरे महल की चमक फीकी कर दी है। हाल के वर्षों में लोगों के मन अचानक बहुत तेजी से बदले हैं। वे कर्म-फल की अवहेलना करते हैं और यौन दुराचार को फैशन मानते हैं। इससे कामवासना की अत्यंत दूषित ऊर्जा का एक प्रवाह तलवार की तरह सीधा आकाश को चीरता हुआ ऊपर पहुँचता है; घोर विषैली मेघ-वाष्प स्वर्गलोक को ढक लेती है। यदि ऐसा ही चलता रहा, तो शीघ्र ही मनुष्यलोक के सभी जीव नरक में पतित हो जाएँगे।

जब मैं विचार कर रहा था कि मनुष्यलोक की इस महाविपत्ति का समाधान कैसे किया जाए, तभी फ़ेंगदू सम्राट ने परलोक का एक अत्यावश्यक आधिकारिक पत्र भेजा और मेरे समक्ष निवेदन रखकर निर्देश माँगा। उन्होंने बताया कि नरक पहले ही अत्यधिक भर चुका है और कर्मचारियों की भी गंभीर कमी है। इसलिए बड़े स्तर पर दिव्य रहस्य प्रकट करने का निश्चय किया गया है। वे मनुष्यलोक के किसी उपयुक्त व्यक्ति को ढूँढ़ना चाहते थे, जो नरक का भ्रमण करने के बाद एक पुस्तक लिखे, जिसका निश्चित नाम 《परलोक के अटल विधान》 हो। उसे मनुष्यलोक में प्रसारित किया जाए, ताकि संसार के आचरण को सँभालने और लोगों के मन को शुद्ध करने का प्रभाव हो। तब मैंने पुण्य और प्रज्ञा से पूर्ण बुद्ध से निवेदन किया कि

वे मेरे लिए मनुष्यलोक का कोई उपयुक्त साधक खोजें। उसे पूरी तरह जागृत अवस्था में नरक का भ्रमण करना होगा और फिर मनुष्यलोक लौटकर अपने देखे-सुने वास्तविक अनुभवों को पुस्तक में लिखना होगा। इसलिए तुम्हें यह पवित्र कार्य अच्छी तरह सँभालना चाहिए और मेरे सौंपे दायित्व को पूरा करने में चूकना नहीं चाहिए!

सभी जीवों का मूल निवास स्वर्गलोक ही है। अब तुम्हारी निवास-पंजी का स्थानांतरण मनुष्यलोक में हो गया है; जो नरक में पतित हुए हैं, उनका भी स्थानांतरण ही हुआ है। नरक कारागार की तरह है, जो जीवों को बंद रखता है। जब जीव सच्चे मन से पश्चात्ताप करके अपनी गलतियाँ सुधार लेंगे, तो वे स्वर्गलोक लौट जाएँगे। 《परलोक के अटल विधान》 के मूल शीर्षक का 'यिन' शब्द परलोक को दर्शाता है और 'ल्यु' बुद्ध के विधान, स्वर्ग के विधान, पृथ्वी के विधान और मनुष्यों के विधान को। यदि मनुष्यलोक के जीव शील-व्रतों और कानूनों का उल्लंघन करते हैं, तो उन्हें निश्चित ही परलोक के नरक में गिरकर बिना किसी रियायत के अपने कर्मों के अनुरूप फल भोगना पड़ेगा। इसलिए जो अपने जीवन में भलाई के मार्ग पर चलते हैं, वे निश्चित ही पतित नहीं होंगे; जो दुष्कर्म करते हैं, उनके प्रति परलोक के विधान निश्चित ही कोई नरमी नहीं बरतेंगे। परलोक के विधान के ऐसे कठोर कर्मफल से बचने के लिए हर व्यक्ति को सत्कर्म करना, मन शुद्ध करना और मार्ग की साधना करना आवश्यक है; तब उसका जीवन भी निश्चित ही उन्नत होकर स्वर्गलोक तक पहुँच सकता है।

इस अनमोल ग्रंथ 《परलोक के अटल विधान》 को लिखने के दौरान तुम्हारी रक्षा और सहायता के लिए मैंने देवताओं को नियुक्त कर दिया है। आशा है कि 《परलोक के अटल विधान》 शीघ्र प्रकाशित होकर मनुष्यलोक में प्रसारित होगा, लोगों के मन को शुद्ध करेगा और सभी जीव नियत समय पर अपने स्वर्गीय मूल घर लौट सकेंगे।

मनुष्यलोक में जो कोई इस अनमोल ग्रंथ को पढ़ने के बाद इसकी पुनर्मुद्रित प्रतियाँ आगे प्रसारित करेगा, उसकी सभी शुभ कामनाओं को पूरा करने में सहायता देने के लिए मैं उससे कर्मगत संबंध रखने वाले देवताओं को भेजूँगा। आशा है कि जीव मेरे अभिप्राय को गहराई से समझेंगे! शांगगुआन युहुआ, यह फल खा लो!"

मैंने प्रसन्न होकर दोनों हाथों से फल ले लिया, लेकिन खाया नहीं। मन में सोच रही थी कि मुझे देवराज को क्या उपहार देना चाहिए।

फिर मैंने देवराज को कहते सुना: "तुम इसे खा क्यों नहीं रही हो?"

मैंने कृतज्ञतापूर्वक उत्तर दिया: "मेरी इच्छा है कि देवराज का यह अनुग्रह मनुष्यलोक ले जाकर अपने वृद्ध पिता को खाने के लिए दूँ!"

देवराज ने कहा: "तुम्हारी पितृभक्ति प्रशंसनीय है, लेकिन तुम्हारे पिता के पास फिलहाल इस फल को खाने योग्य पर्याप्त पुण्यफल नहीं है। यह दिव्य फल तुम ही खा लो! 《परलोक के अटल विधान》 को अच्छी तरह लिखकर मनुष्यलोक में प्रसारित करना ही मेरे लिए सबसे अच्छा उपहार है!"

तब मैंने कृतज्ञ हृदय से वह दिव्य फल खा लिया। वह फल देखने में ताजा और रसपूर्ण तो था ही, उसे खाने के बाद मुँह में निर्मल मिठास अनुभव हुई और पूरा शरीर हल्का, स्वच्छ और सुखद लगने लगा। मनुष्यलोक में मैंने वास्तव में कभी इतना निर्मल और मधुर स्वाद वाला सुंदर फल नहीं खाया था! मेरा शरीर तुरंत शक्ति से भर गया! लौटकर मुझे अपना देखा-सुना सावधानी से अच्छी तरह लिखना है। देवराज की चिंता और देखभाल के लिए कृतज्ञ हूँ।

"अमिताभ बुद्ध! आपकी विनीत प्रजा शांगगुआन युहुआ देवराज को प्रणाम करके धन्यवाद देती है! आपकी प्रजा अब विदा लेती है!"

आखिरकार परलोक के न्यायाधिकारी अपना काम शुरू कर सके। मैंने उनका बहुत समय ले लिया था।

परलोक के न्यायाधिकारी के प्रति कृतज्ञ हूँ! मैं, आ यू, परलोक के न्यायाधिकारी को हाथ जोड़कर प्रणाम करती हूँ!

यदि लेख लिखने के लिए जल्दी लौटना जरूरी न होता, तो इतने निर्मल स्वर्गलोक में सचमुच बैठकर कुछ ध्यान-साधना करने का मन था। लेकिन समय कम था, इसलिए श्वेत कमल पर सवार होकर पहले लौटना ही उचित था!

2/《परलोक के अटल विधान》 की रचना का आरंभिक प्रसंग (दो) — परलोक के सर्वोच्च शासक फ़ेंगदू सम्राट के पुनः दर्शन और प्रणाम

बुद्ध की शक्ति के अनुग्रह के लिए कृतज्ञ हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ!

अमिताभ बुद्ध! मैं, आ यू, परलोक के न्यायाधिकारी के सामने हाथ जोड़ती हूँ!

“परलोक के न्यायाधिकारी, कृपया बताइए, मैं, आ यू, जानना चाहती हूँ कि परलोक के शासन द्वारा 《परलोक के अटल विधान》 नामक इस ग्रंथ की रचना की शुरुआत कैसे हुई थी?”

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: “कुछ समय पहले हमारे परलोक के शासन ने एक आपात बैठक बुलाई थी। बारह न्यायसभाओं के यमराजों और सभी अधिकारियों को फ़ेंगदू सम्राट, परलोक के सर्वोच्च अधिपति यमराज, द्वारा भेजे गए एक आधिकारिक पत्र के रूप में अत्यावश्यक सूचना मिली। हमारे परलोक के सर्वोच्च शासक फ़ेंगदू सम्राट, परलोक के सर्वोच्च अधिपति यमराज हैं। सर्वोच्च अधिपति यमराज केवल एक हैं; उनके अधीन बारह न्यायसभाओं के यमराज भी हैं। पहले नरक में केवल दस न्यायसभाएँ और दस यमराज थे, लेकिन अब नए बनाए गए नरक-क्षेत्र में दो और यमराज जुड़ गए हैं। इन बारह न्यायसभाओं के कुल बारह यमराज हैं। वे अलग-अलग बारह न्यायसभाओं के अधीन आने वाले छोटे-बड़े नरकों का शासन सँभालते हैं, और ये बारह यमराज फ़ेंगदू सम्राट, परलोक के सर्वोच्च अधिपति यमराज, की आज्ञा के अधीन हैं।

परलोक के उस अत्यावश्यक आधिकारिक पत्र की विषयवस्तु यह थी: सर्वोच्च अधिपति यमराज ने देखा कि नरक अत्यधिक भर चुका है। इस समय भी लगातार नए नरक बनाए जा रहे हैं और परलोक के अधिकारियों तथा कर्मचारियों की गंभीर कमी हो गई है। इसके अतिरिक्त, वे मनुष्यलोक के जीवों को एक के बाद एक नरक में पतित होते देखना सहन नहीं कर पा रहे थे। इसलिए उन्होंने देवराज को निवेदन भेजा कि मनुष्यलोक के किसी ऐसे व्यक्ति को नियुक्त किया जाए जो शील-व्रतों का शुद्ध पालन करता हो। वह नरक के दंडों का अवलोकन करने आए और फिर मनुष्यलोक लौटकर एक पुस्तक लिखे, जिसका निश्चित नाम 《परलोक के अटल विधान》 हो। इसका उद्देश्य लोगों के मन को शुद्ध करना, भटके हुए जीवों के मन और स्वभाव को सही दिशा में लौटाना तथा उन्हें सत्कर्म करके पुण्य संचित करने के लिए प्रेरित करना है, ताकि वे अपनी स्वाभाविक आयु शांति से पूरी कर सकें और आयु समाप्त होने पर उच्चतर गति प्राप्त करके नरक में गिरने से बचें। मनुष्यलोक का वह व्यक्ति तुम, शांगगुआन युहुआ, ही हो। तुम्हारे पास परलोक के शासन द्वारा जारी आदेश-पट्टिका है, जिससे पुस्तक लिखने की अवधि में तुम अपनी इच्छा से परलोक में आ-जा सकती हो। परलोक के शासन ने शांगगुआन युहुआ, अर्थात आ यू, को नरक के भ्रमण में मार्ग दिखाने और तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर देने के लिए विशेष रूप से एक न्यायाधिकारी नियुक्त किया है। यदि न्यायाधिकारी को अपने काम से समय न मिल सके, तो परलोक के सभी अधिकारियों को शांगगुआन युहुआ की सहायता करनी होगी। नरक वास्तव में इतना विशाल है कि उसका पूरा भ्रमण करने में बहुत समय लगेगा, लेकिन 《परलोक के अटल विधान》 का मनुष्यलोक में शीघ्र और व्यापक प्रसार आवश्यक है। इसलिए सभी अधिकारी परिस्थिति के अनुसार दोषी आत्माओं के अपेक्षाकृत प्रतिनिधि मामलों को तुम्हारे सामने रखें, ताकि तुम उनसे बातचीत कर सको।

परलोक के अत्यावश्यक आधिकारिक पत्र में यह भी बताया गया है कि आ यू, तुम पूरी तरह जागृत अवस्था में ध्यान-साधना की क्षमता से अपना एक अन्य रूप प्रकट करके नरक का भ्रमण करने आती हो। आशा है कि 《परलोक के अटल विधान》 प्रकाशित होने के बाद हर दिन नरक में पतित होने वाले जीवों की संख्या बहुत कम हो सकेगी, और इससे हमारे वर्तमान दैनिक काम का वह भार भी कम होगा जो हमारी क्षमता से अधिक है। अभी हमारे परलोक के सभी अधिकारी और कर्मचारी बहुत व्यस्त हैं, लेकिन जब भी तुम आओगी, हम तुम्हारा स्वागत करने और तुम्हें आवश्यक सारी जानकारी देने के लिए समय अवश्य निकालेंगे। 《परलोक के अटल विधान》 की रचना का आरंभ फ़ेंगदू सम्राट, परलोक के सर्वोच्च अधिपति यमराज, के आदेश से हुआ था। यदि तुम अधिक विवरण जानना चाहती हो, तो मैं तुम्हें सर्वोच्च अधिपति यमराज के दर्शन कराने ले चलता हूँ। वे तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर देंगे।”

“ठीक है! मैं, आ यू, सचमुच परलोक के न्यायाधिकारी की बहुत कृतज्ञ हूँ!”

हम आगे चलने लगे। नरक वास्तव में बहुत विशाल है और हर बार भ्रमण में हम अलग रास्ते पर चलते हैं। कामना है कि कोई भी चेतन प्राणी नरक में पतित न हो! यदि नरक में आना ही हो, तो जीवों के उद्धार के प्रणिधान के बल पर उन्हें बचाने के लिए आएँ!

अब हम जिस दिशा में चल रहे हैं, वहाँ न पीड़ा की आवाज़ें हैं, न भय का अनुभव होता है। सामने बहते पानी पर एक छोटा पुल और पेड़ों का एक छोटा झुरमुट है; बहुत अच्छा लग रहा है। परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा कि यह परलोक के अधिपति यमराज का निवासस्थान है। अब हम उस सभाकक्ष में जा रहे हैं जहाँ यमराज अधिकारियों से मिलकर कामकाज पर चर्चा करते हैं। वास्तव में परलोक के अधिकारियों के रहने की जगहें अच्छी हैं; मनुष्यलोक के अधिकारियों की तरह उन्हें

भी कुछ सुविधाएँ मिलती हैं। कुछ आगे चलने पर एक बड़ा भवन दिखाई दिया। भीतर की सजावट में प्राचीन समय की सादगी और सुरुचि झलक रही थी। भवन के सभाकक्ष में सबसे ऊपर एक आड़ी पट्टिका लगी थी, जिस पर चार बड़े चीनी अक्षरों में लिखा था: "正大光明" (अर्थात "न्यायनिष्ठ और निष्कपट")। परलोक के अधिपति यमराज उसी पट्टिका के नीचे बैठे थे। दोनों ओर की दीवारों पर प्राचीन वेशभूषा में सत्कर्म करते लोगों के कुछ चित्र टँगे थे। परलोक के कुछ अधिकारी दोनों ओर बैठे थे। फ़ेंगदू सम्राट, परलोक के अधिपति यमराज, अधिकारियों के साथ नरकों के विस्तार के निर्माणकार्य पर विचार कर रहे थे। सचमुच वे बहुत व्यस्त थे!

मैंने तुरंत घुटने टेककर कहा: "मनुष्यलोक की साधारण स्त्री शांगगुआन युहुआ, फ़ेंगदू सम्राट यमराज को सादर प्रणाम करती है! मैं फ़ेंगदू सम्राट की कृतज्ञ हूँ कि उन्होंने 'परलोक के अटल विधान' की रचना की, जिससे मुझ साधारण स्त्री का ज्ञान और अनुभव बढ़ सके, मेरे पापकर्म क्षीण हों और पुण्य संचित हो। मैं फ़ेंगदू सम्राट से पूछना चाहती हूँ कि किन कारणों और परिस्थितियों से आपने 'परलोक के अटल विधान' नामक इस ग्रंथ की रचना करने का निश्चय किया?"

फ़ेंगदू सम्राट, परलोक के अधिपति यमराज, ने उत्तर दिया: "मनुष्यलोक के आदिप्राचीन समय में सभी लोग स्वभाव से भले थे और पंचशील तथा दस कुशल कर्मों का पालन करते थे। उस समय आकाश और धरती के बीच यिन और यांग संतुलित थे, इंद्रधनुष चमकते थे, पाँचों प्रकार के अन्न की भरपूर उपज होती थी और मनुष्यलोक में सर्वत्र शांति और मंगल का वातावरण था। न प्राकृतिक विपदाएँ थीं, न मनुष्यों द्वारा लाई गई विपत्तियाँ। सभी सुखपूर्वक अपनी पूरी आयु बिताते और आयु पूरी होने पर देवलोक लौट जाते थे। किंतु मनुष्यों की मूल प्रवृत्ति निरंतर दूषित होती गई और उनका पतन बढ़ता गया। अनादि कल्पों से मनुष्य की अभ्यस्त प्रवृत्तियाँ कामवासना से उत्पन्न होती आई हैं और वह पुनर्जन्म की छह गतियों में

चक्कर काटता रहा है। मनुष्यों के आचरण का लगातार पतन होने, शील भंग करने और दस अकुशल कर्म करने के कारण, मध्यप्राचीन काल में स्वर्ग ने नरकों का निर्माण आरंभ किया, ताकि पतित और शीलभंग करने वाले मनुष्यों को दंड देकर शिक्षा दी जा सके और वे नरक में आत्मचिंतन करें।

उस समय नरक बहुत छोटा था और उसमें पतित होने वाले मनुष्य भी अधिक नहीं थे। समय बीतने के साथ बढ़ते दूषण से मनुष्य के आदिप्राचीन, मूलतः भले स्वभाव का लगभग पूरा लोप हो गया है। आज मनुष्यों के मन में भारी बदलाव आ गया है। उनके दुष्ट विचारों की ऊर्जा सीधे स्वर्गीय दरबार तक पहुँचती है। विशेषकर यौन दुराचार की ऊर्जा ब्रह्मांड के प्राकृतिक संतुलन के नियमों को और भी गंभीर रूप से बिगाड़ती है। इससे आकाश और धरती की ऊर्जा इतनी मलिन और धुँधली हो गई है कि दोनों का भेद करना भी कठिन हो गया है। यिन और यांग का संतुलन तो बहुत पहले ही बिगड़ चुका है। मनुष्य तभी शांति से रहकर अपना कामकाज कर सकते हैं, जब पृथ्वी के प्राकृतिक पर्यावरण में विभिन्न संतुलन एक-दूसरे के अनुकूल हों। कल्प के आरंभ में सभी का मन भला था, सभी पंचशील और दस कुशल कर्मों का पालन करते थे, और आकाश तथा धरती में सर्वत्र शांति और मंगल था। यह शांति और मंगल इसलिए था कि मनुष्यों के विचार प्रकृति के अनुरूप थे, और प्रकृति उसके प्रत्युत्तर में निर्मल मौसम, पाँचों प्रकार के अन्न की भरपूर उपज और चमकते इंद्रधनुष देती थी। आज पृथ्वी पर अन्न की उपज कम होती है, विभिन्न क्षेत्रों में तरह-तरह की प्राकृतिक और मानवजनित विपत्तियाँ आती हैं, आकाश काला रहता है और कुछ ही दिनों में तापमान बहुत अधिक बदल सकता है। यह भी मनुष्यों के मन के दुष्ट विचारों में होने वाले भारी बदलावों के कारण होता है। मनुष्यों के निर्दयी और निष्ठाहीन विचार मनुष्यलोक में ठंडी हवा के आगमन को आकर्षित करते हैं; यदि सभी के मन उज्ज्वल हों, तो वे चमकते इंद्रधनुष को आकर्षित करेंगे।

मनुष्यलोक में बार-बार आने वाली प्राकृतिक विपदाएँ चेतावनी हैं। आगे और भी अधिक प्राकृतिक विपदाएँ एक के बाद एक आती रहेंगी। मनुष्यों की कोई भी तकनीक इन विपदाओं के आगमन को रोक नहीं सकती। जीवों का उद्धार उन्नत तकनीक से नहीं, बल्कि सच्चे मन से पंचशील का पालन करने, दस कुशल कर्मों का अभ्यास करने, पिछले दुष्कर्मों का सच्चा प्रायश्चित्त करने और पवित्र मार्ग की साधना करने से हो सकता है। यदि यही स्थिति चलती रही, तो ब्रह्मांड की प्रकृति के पास संतुलन लौटाने का अपना तरीका है। मनुष्यलोक में निश्चित ही बड़े पैमाने पर प्राकृतिक और मानवजनित विपत्तियाँ आएँगी, और बुराई का अनुसरण करने वाले सभी मनुष्य अवश्य नरक में पतित होंगे।

अब नरक पूरी तरह भर चुका है और यहाँ हमारे काम का बोझ भी क्षमता से बहुत अधिक हो गया है। मैं मनुष्यलोक को विनाश की ओर जाते और नैतिक संबंधों को पतित होते नहीं देख सकता। इसीलिए मैं स्वर्ग के रहस्यों को बड़े पैमाने पर प्रकट कर रहा हूँ। मैंने देवराज को निवेदन किया कि वे किसी ऐसे जीवित व्यक्ति को भेजें जो शील का शुद्ध पालन करता हो और जाग्रत अवस्था में नरक के विभिन्न दंडों को देखे, फिर मनुष्यलोक में लौटकर पुस्तक लिखे और लोगों को समझाए कि वे बुराई छोड़कर भलाई अपनाएँ तथा शीघ्र ही अपनी जन्मजात आध्यात्मिक प्रकृति की उज्ज्वलता पुनः प्राप्त करें।

यदि लोग ‘परलोक के अटल विधान’ पढ़ने के बाद इसे आगे-से-आगे पहुँचाएँ, अथवा निःशुल्क वितरण के लिए इसका पुनर्मुद्रण कर व्यापक प्रसार करें, और अपने मन को भी शुद्ध करें, तो उनकी सभी शुभ कामनाएँ पूरी होंगी। परलोक में उनकी व्यक्तिगत जीवन-मृत्यु की बही में एक महान सत्कर्म का पुण्य दर्ज किया जाएगा। इससे उन्हें पिछले उन पापकर्मों से मुक्ति मिल सकती है जो नरक में ले जाते हैं, और आयु पूरी होने पर वे इस महान सत्कर्म के पुण्य के सहारे देवलोक में ऊपर उठेंगे। जो ‘परलोक के अटल विधान’ नामक सदाचार सिखाने वाले ग्रंथ की निंदा करेंगे या उसके प्रसार में बाधा डालेंगे, उनकी व्यक्तिगत जीवन-मृत्यु की बही

में भी एक बड़ा पापकर्म दर्ज किया जाएगा। आयु पूरी होने पर वे चीख-पुकार के नरक, जीभ उखाड़ने के नरक, आँखें निकालने के नरक आदि में जाकर नरक के दंड भोगेंगे। आयु पूरी होने से पहले भी उन्हें बीमारी की पीड़ा और अंततः मृत्यु का फल भोगना पड़ेगा। उन्हें कौन-सा दंड दिया जाए, इसका निर्णय इस बात के विवरण के अनुसार होगा कि उन्होंने इस सद्ग्रंथ 'परलोक के अटल विधान' की कैसी निंदा की या उसके प्रसार में कैसी बाधा डाली। यदि बहुत से जीव उनकी निंदा पर विश्वास कर लें, तो निंदक को ऊपर बताए गए नरकों के दंडों के अतिरिक्त अवीचि महानरक में भी फेंका जाएगा; तब वहाँ से निकलकर दूसरा जन्म पाना अत्यंत कठिन होगा!

अच्छा! अभी हम व्यस्त हैं। आज तुम पहले लौट जाओ और पुस्तक के प्रकाशन के जिन कारणों और परिस्थितियों के बारे में मैंने अभी बताया है, उन्हें लिख लो। आशा है कि लोग एक-दूसरे को प्रोत्साहित करेंगे, यह बात आगे-से-आगे पहुँचाएँगे, अपने आचरण और स्वभाव को अच्छी तरह सँवारेंगे तथा सद्गुण संचित करके सत्कर्म करेंगे।"

अमिताभ बुद्ध! मैं, आ यू, फ़ेंगदू सम्राट, परलोक के अधिपति यमराज, को प्रणाम करके आभार व्यक्त करती हूँ!

हाथ जोड़कर सभी न्यायाधिकारियों और अधिकारियों का आभार व्यक्त करती हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर लौटती हूँ!

3/सातवें न्यायसभागृह में उपस्थित होकर सुनवाई सुनना

मैं सभी बुद्धों और बोधिसत्त्वों के अधिष्ठान के लिए कृतज्ञ हूँ। उससे इस बार की नरक-यात्रा में मेरा ज्ञान और अनुभव भी बढ़ा तथा शील का पालन करने का मेरा विश्वास और भी दृढ़ हुआ। वास्तव में बचपन से ही मुझे इस प्रकार की विशेष अनुभूतियाँ होती रही हैं। कुछ ऐसी घटनाएँ जो जल्द होने वाली हों या भविष्य में होंगी, मेरे सपनों में दिखाई देती हैं। लगता है कि सपना है, पर वास्तव में वह सपना नहीं होता। मुझे स्पष्ट रूप से पता होता है कि मेरी आत्मा शरीर से बाहर निकल आई है, और मैं अपने शरीर को बिस्तर पर पड़ा देख सकती हूँ। आत्मा के बाहर निकलने पर जो घटनाएँ देखती हूँ, वे मुझे स्पष्ट याद रहती हैं। सामान्यतः ऐसी बातें भविष्य में सच हो जाती हैं, या वे किसी प्रकार का संकेत होती हैं, जिनके आधार पर मैं घटना होने से पहले ही उससे संबंधित व्यवस्था कर लेती हूँ।

पहले की घटनाएँ मेरे अपने या मेरे परिवार के बारे में होती थीं। इस बार की बात कुछ विशेष है। मुझे इसे सभी चेतन प्राणियों के साथ साझा करना है, ताकि सब जानें कि विचार कितने महत्वपूर्ण हैं। जैसा कि कहा जाता है, यदि चाहते हो कि किसी को तुम्हारे किए का पता न चले, तो उसे करो ही मत। हमारे आसपास रोज़ बहुत-सी ऐसी बातें होती हैं जिनके बारे में लोगों को शायद पता भी नहीं होता कि वे गलत हैं। उदाहरण के लिए, विधिवत विवाहित एक पति-पत्नी हैं और दोनों में से किसी का विवाहेतर संबंध नहीं है, फिर भी दोनों ने यौन दुराचार से विरत रहने का शील भंग किया है। ऐसा क्यों? क्योंकि उन्होंने अनुचित समय, अनुचित स्थान और अनुचित अंगों में संभोग न करने के नियमों का पालन नहीं किया।

कल रात मुझे लगा मानो मैं सपना देख रही हूँ और फिर शरीर से निकलकर नरक चली गई। नरक में पहुँचते ही मुझे लगा कि वहाँ यिन ऊर्जा बहुत प्रबल है। यहाँ स्त्री और पुरुष सभी पीड़ित हैं। वे चिल्लाते हैं और तीखी, करुण चीखें निकालते हैं। न मुस्कान है, न स्वतंत्रता। कुछ के शरीर लोहे की जंजीरों में जकड़े हैं, कुछ को प्रेत-प्रहरी यातना के उपकरणों से घसीटकर ले जा रहे हैं, पीट रहे हैं या काँटेदार भालों से बेध रहे हैं, इत्यादि। नरक में प्रेत-प्रहरी और न्यायाधिकारी हैं। वे भी मुस्कराते नहीं हैं, बहुत गंभीर रहते हैं, और कुछ तो दिखने में बहुत भयानक हैं। परलोक के केवल कुछ अधिकारी ही अपेक्षाकृत कम भयानक दिखते हैं; बाकी प्रेत-प्रहरियों का रूप उग्र है। नरक में धूप नहीं है। वह मनुष्यलोक से अलग है। वहाँ का वातावरण काला-धूसर और कुछ लालिमा लिए हुए है। उसका वर्णन करना कठिन है; बहुत असहज अनुभूति होती है।

उस समय मैं नरक के सातवें न्यायसभागृह में पहुँची। वहाँ ठीक उसी समय यौन दुराचार का अपराध करने वाले एक पुरुष की आत्मा पर मुकदमा चल रहा था। न्यायाधिकारी की अनुमति से मैं भीतर जाकर सुनवाई सुनने लगी। इस विशाल सभागृह के बीच में ताइशान राजा नाम के एक शासक बैठे थे। वे इस सभागृह का प्रशासन चलाते हैं। इसके अधीन 16 छोटे नरक हैं और उन सभी का प्रबंध ताइशान राजा की जिम्मेदारी है। नरक में सर्वोच्च अधिकारी यमराज हैं। वे 12 न्यायसभागृहों सहित पूरे नरक का प्रशासन चलाते हैं। प्रत्येक सभागृह का एक राजा है और प्रत्येक राजा 16 छोटे नरकों के प्रबंध का उत्तरदायी है। ताइशान राजा के पास परलोक के 2 अधिकारी थे, जिनमें से एक न्यायाधिकारी थे। दंड लागू करने वाले प्रेत-प्रहरी भी बड़ी तलवारें और लोहे की जंजीरें लिए हुए थे। वे सभी बहुत गंभीरता से सुनवाई सुन रहे थे। वातावरण भयावह और अँधेरा था, और एक तरह की ठंडक महसूस हो रही थी।

इस समय मैंने देखा कि ताइशान राजा बहुत उग्र दिखाई दे रहे थे और जीवनकाल में यौन दुराचार का अपराध करने वाले एक पुरुष की आत्मा से पूछताछ कर रहे थे।

वह आत्मा कुतर्क करके अपना बचाव कर रही थी। ताइशान राजा ने हवा में हाथ से एक रेखा खींची और तुरंत दुष्कर्म-दर्पण का मंच प्रकट हो गया। उस दर्पण में उस पुरुष की युवावस्था के यौन दुराचार दिखाई देने लगे: पत्नी और विवाहेतर प्रेमिका के साथ अनुचित समय, अनुचित स्थान और अनुचित अंगों में संभोग करना, अश्लील पुस्तकें और डिस्क देखना, इत्यादि। पुरुष की आत्मा भय से काँपने लगी और घुटने टेककर क्षमा माँगने लगी, किंतु अब बहुत देर हो चुकी थी। ताइशान राजा प्रेत-प्रहरियों को आदेश दे चुके थे कि उसे बाहर ले जाकर ताँबे के स्तंभ का आलिंगन करने वाले नरक में दंड दिया जाए।

बड़ी तलवार लिए हुए प्रेत-प्रहरी उस पुरुष की आत्मा को लोहे की जंजीर से घसीटता हुआ दंड देने के लिए सभागृह से बाहर ले गया। मैं भी यह देखने पीछे चली गई कि वहाँ क्या होता है। न देखती तो अच्छा था; देखा तो—ओह! बहुत डरावना था। इस नरक की सभी प्रेतात्माएँ पीड़ा में चिल्ला रही थीं और उनकी संख्या बहुत, बहुत अधिक थी। उनकी तीखी, करुण चीखें एक पल के लिए भी नहीं रुकती थीं। पीड़ा भी लगातार बनी रहती थी; विश्राम का बिल्कुल समय नहीं था। मैंने देखा कि अभी-अभी लाए गए उस पुरुष की आत्मा प्रसन्न होकर ताँबे के स्तंभ की ओर गई, लेकिन उससे लिपटते ही पीड़ा से चीख उठी। मैंने न्यायाधिकारी से इसका कारण पूछा। न्यायाधिकारी ने कहा कि उस पुरुष की आत्मा ने दहकते लाल ताँबे के स्तंभ को सुंदर स्त्री समझ लिया था, इसलिए वह बहुत प्रसन्न थी। लेकिन आलिंगन करते ही ताँबे का स्तंभ उसके पूरे शरीर को जलाने लगा, इसलिए वह पीड़ा से चीख उठी।

मैंने न्यायाधिकारी से आगे पूछा कि अनुचित समय, अनुचित स्थान और अनुचित अंगों का क्या अर्थ है। पता चला कि विधिवत विवाहित पति-पत्नी को भी इन नियमों का पालन करना चाहिए, अन्यथा वे भी यौन दुराचार का अपराध करते हैं। अनुचित समय का अर्थ है कि बुद्धों और बोधिसत्त्वों की जयंती के दिनों, प्रत्येक महीने के छह उपवास-दिवसों और वर्ष के तीन लंबे उपवास-महीनों में संभोग से विरत रहना

चाहिए।[5] ऐसे दिनों में, जैसे हर महीने की पहली, दसवीं और पंद्रहवीं तिथि आदि पर, चार देवराजा मनुष्यलोक का निरीक्षण करते हैं, अच्छे-बुरे कर्म दर्ज करते हैं और फिर स्वर्गीय दरबार में लौटकर जेड सम्राट को बताते हैं। अनुचित स्थान का अर्थ है कि पति-पत्नी के दांपत्य संबंधों में उचित मर्यादा होनी चाहिए। दंपति की शय्या के अतिरिक्त किसी दूसरी जगह, जैसे बैठक, रसोई, शौचालय, खुले आकाश के नीचे या बुद्ध के सामने आदि में संभोग नहीं करना चाहिए। अनुचित अंगों का अर्थ है कि पति-पत्नी जननांगों के अतिरिक्त शरीर के अन्य अंगों में संभोग न करें। अन्यथा उन्हें नरक में जाकर कष्ट भोगना होगा, और नरक का कष्ट पूरा होने के बाद सूअर, कुत्ते, मंदारिन बत्तख, साँप आदि पशुओं की देह में जन्म लेना होगा।

आज तकनीक विकसित है और इंटरनेट पर बहुत-सी अश्लील वेबसाइटें हैं; उन्हें भी नहीं देखना चाहिए। देखना भी अपराध माना जाता है और उससे निश्चित रूप से पुण्यफल घटेंगे, आयु कम होगी तथा समृद्धि में कटौती होगी। भले ही कोई कर्म वास्तव में न किया हो, मन में विचार उठते ही जन्मसहचर देवता उसे तुरंत दर्ज कर लेते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के दो जन्मसहचर देवता होते हैं: एक पापकर्म दर्ज करता है और दूसरा सत्कर्म। निश्चय ही कुछ लोग कहेंगे कि जीवन भर केवल अपने एक ही साथी के साथ ऐसा करना विवाहेतर संबंध नहीं है, लेकिन वास्तव में यह भी गलत है। न्यायाधिकारी ने कहा: “मनुष्य को अपने मूल सार और प्राण-ऊर्जा को सुरक्षित रखना चाहिए। अत्यधिक संभोग से शरीर की शुद्ध ऊर्जा खर्च होती है। जब स्त्री-पुरुष संभोग करते हैं, तो उससे दूषित ऊर्जा भी निकलती है, जो आकाश और धरती के बीच की शुद्ध ऊर्जा को बिगाड़ती है।” यदि विधिवत विवाहित पति-पत्नी ने ऊपर बताए गए अनुचित समय, अनुचित स्थान और अनुचित अंगों संबंधी नियमों का उल्लंघन किया हो, तो कृपया शीघ्र प्रायश्चित्त करके अपना आचरण सुधारें। यह सूचना मनुष्यलोक के सभी चेतन प्राणियों तक भी पहुँचाएँ, ताकि सब स्वयं को

पवित्र रखें, अपना सम्मान करें, शिष्टाचार और मानवीय संबंधों की मर्यादा का पालन करें, और आकाश तथा धरती के बीच की शुद्ध ऊर्जा संतुलित हो सके।

यदि पहले अनुचित समय, अनुचित स्थान या अनुचित अंगों में संभोग इसलिए हुआ हो कि वैध जीवनसाथी ने विवश किया था, मन में संभोग-सुख का रत्ती भर भी आनंद न लिया हो, और समय रहते प्रायश्चित्त करके आचरण सुधारा हो तथा साथ ही यह प्रण किया हो कि आगे दूसरों को भी समझाएँगे, तो ऐसे व्यक्ति को इस नरक का कष्ट भोगने से छूट दी जाती है। यदि जानबूझकर सुख पाने के लिए शील भंग किया हो, तो ताँबे के स्तंभ का आलिंगन करने वाले नरक में जाकर दंड भोगना ही होगा। उस कर्मफल का भोग पूरा होने पर पशुयोनि में फेंका जाएगा, और उसके बाद मनुष्यलोक में हीन स्त्री-देह में जन्म लेना होगा।

अब आगे यौन दुराचार से विरत रहने के शील का उल्लंघन करने पर दिए जाने वाले अलग-अलग दंडों की बात करूँगी। पहले अविवाहित स्त्री-पुरुषों की बात है। यदि अविवाहित स्त्री-पुरुष अभी भी कुंवारे हैं—अर्थात पुरुष ने अपना कौमार्य और स्त्री ने अपना कौमार्य नहीं खोया है, विपरीत लिंग के किसी व्यक्ति के साथ यौन संबंध नहीं बनाए हैं—तो उनके अश्लील पुस्तकें पढ़ने या अश्लील वेबसाइटें देखने को भी यौन दुराचार का अपराध माना जाता है। उससे पुण्यफल और आयु घटेंगे तथा समृद्धि में कटौती होगी। यदि केवल एक बार देखें, तो आयु एक महीना घटेगी। यदि देखते रहें, तो आयु एक वर्ष या उससे अधिक घटेगी। यदि केवल देखा हो और उसे व्यवहार में न उतारा हो, तो समय रहते प्रायश्चित्त करने से पापकर्म का भार कम किया जा सकता है।

यदि अविवाहित रहते हुए, अर्थात विवाह से पहले, केवल एक ही व्यक्ति के साथ यौन संबंध बनाया हो, तो बाद में उसी व्यक्ति से विवाह कर लेने पर भी दोनों के पुण्यफल घटेंगे, क्योंकि उन्होंने मर्यादा का उचित पालन नहीं किया। यदि अविवाहित रहते हुए अंधाधुंध यौन संबंध बनाए जाएँ, अर्थात साथी बार-बार बदले

जाएँ—आज A, कल B और परसों C—तो आजकल ऐसी बातें बहुत प्रचलित हैं कि पुरुष की जितनी अधिक प्रेमिकाएँ हों, उसकी उतनी अधिक प्रतिष्ठा है, और स्त्रियाँ 'दस हज़ार पुरुषों की शय्यासंगिनी' बनती हैं, इत्यादि। ऐसे आचरण वाले लोग मृत्यु के बाद इस नरक में पतित होंगे और उन्हें दहकते ताँबे के स्तंभ का अधिक लंबे समय तक आलिंगन करना होगा। उसके बाद पशुयोनि में पुनर्जन्म होगा, फिर पुराने ऋण चुकाने के लिए मनुष्यलोक में जन्म लेना होगा। यदि विवाहित व्यक्ति विवाहेतर संबंध बनाए, तो उससे पहुँची हानि के अनुसार दंड की अवधि और गंभीरता तय होगी; कम-से-कम 10,000 वर्ष तक दहकते ताँबे के स्तंभ का आलिंगन करना होगा।

यदि बलात्कार किया हो, षड्यंत्र करके किसी स्त्री का यौन शील भंग किया हो, अथवा कोई स्त्री कामवासना में लिप्त रही हो, तो मृत्यु के बाद 20,000 वर्ष के लिए इस नरक में पतित होना होगा। उसके बाद चीख-पुकार के नरक में 10,000 वर्ष तक कर्मफल भोगना होगा, फिर पुराने ऋण चुकाने के लिए मनुष्यलोक में आना होगा। यदि यौन दुराचार के साथ दुर्भावनापूर्ण हानि पहुँचाकर किसी की मृत्यु का कारण भी बना हो, तो 40,000 वर्ष के लिए इस नरक में पतित होना होगा, और उसके बाद पुराने ऋण चुकाने के लिए मनुष्यलोक में आना होगा।

अमिताभ बुद्ध! यदि मेरे लिखे में कोई त्रुटि हो, तो वह मुझ नवशिक्षार्थी की गलती है; उसका न्यायाधिकारी की शिक्षा से कोई संबंध नहीं है। मैं बुद्धों और बोधिसत्त्वों के अधिष्ठान के लिए कृतज्ञ हूँ, जिससे मैं नरक का भ्रमण कर सकी और सबके साथ साझा करने के लिए यह लेख लिख सकी। यदि इससे कोई पुण्य हुआ हो, तो मैं उसे समस्त आकाश और धर्मधातु के सभी जीवों को समर्पित करती हूँ, ताकि वे वासनाओं से दूर रहें, शुद्ध शील का पालन करें और मिलकर अनुत्तर सम्यक् संबोधि प्राप्त करें।[6]

4/न्यायाधिकारी ने कहा: “मृत्यु के बाद प्रायश्चित्त करना बहुत देर कर देना है!”

मैं बुद्धों और बोधिसत्त्वों के महान अधिष्ठान के लिए कृतज्ञ हूँ, जिससे मैं फिर स्वयं नरक में जाकर अपना ज्ञान और अनुभव बढ़ा सकी। नरक का अनुभव सदा पीड़ा और अँधेरे से भरा होता है; वहाँ नकारात्मक चुंबकीय क्षेत्र व्याप्त है। आशा करती हूँ कि कोई भी पापकर्म करके नरक में न आए। वहाँ की पीड़ा सचमुच असहनीय और अवर्णनीय है।

मैं शीघ्र ही सातवें न्यायसभागृह में पहुँची। वहाँ एक पुरुष की आत्मा का न्याय किया जा रहा था। वह दिखने में काफ़ी सभ्य था। न जाने उसने कौन-सा अपराध किया था कि न्यायाधिकारी ने उसे 500 वर्ष तक ताँबे के गोले निगलने का दंड दिया। ध्यान से देखने पर पता चला कि जीवित रहते उस पुरुष की एक विधिवत पत्नी और दो स्थायी प्रेमिकाएँ थीं। जीवनकाल में उसे अनुचित समय, अनुचित स्थान और अनुचित अंगों में संभोग करना पसंद था। उसकी ये तीन साथिनें उसकी इच्छाएँ पूरी कर देती थीं। पूरे जीवन में उसकी केवल यही तीन साथिनें थीं।

तभी मैंने उस पुरुष की आत्मा को अपना बचाव करते सुना: उसकी विधिवत पत्नी को 500 वर्ष तक ताँबे के स्तंभ का आलिंगन करने के दंड से छूट क्यों मिल सकती है, जबकि उसे 500 वर्ष तक ताँबे के गोले निगलने के दंड से छूट नहीं मिल सकती? इस पर न्यायाधिकारी ने कहा: “दृश्य देखो!” पता चला कि उस समय पुरुष ने अपनी विधिवत पत्नी से अनुचित अंगों में संभोग करने की माँग की थी। पत्नी ने मना कर दिया था और समझाया भी था कि ऐसा नहीं करना चाहिए, यह मर्यादा के विरुद्ध है। उसकी पत्नी ने केवल अनुचित समय और अनुचित स्थान पर उसके साथ संभोग किया था। पत्नी की कामेच्छा भी कम थी, इसलिए उसका

अपराध कुछ हल्का था और केवल उसके पुण्यफल घटने थे। अनुचित अंगों में संभोग से इनकार करने और ऐसा न करने के लिए समझाने के कारण उसने कुछ पुण्य फिर संचित कर लिया था।

यद्यपि उस पुरुष ने अपनी पत्नी को विवश नहीं किया था, पर बाहर उसकी दो और साथिनें थीं, जिनके साथ उसने इन तीनों प्रकार के यौन दुराचार किए थे। न्यायाधिकारी ने कहा कि तुम्हारे मन में प्रायश्चित्त की भावना है, तुम माता-पिता के प्रति कर्तव्यनिष्ठ थे, सार्वजनिक दायित्वों में निष्ठावान और कानून का पालन करने वाले थे, और तुमने केवल इन तीन प्रकार के यौन दुराचार किए थे; इन बातों को ध्यान में रखते हुए तुम्हें 500 वर्ष तक ताँबे के स्तंभ का आलिंगन करने के दंड से छूट दी जाती है। अब उस पुरुष की आत्मा के पास उत्तर देने को कुछ नहीं था। प्रेत-प्रहरी उसे ताँबे के गोले निगलने वाले नरक में ले गए। जैसे ही एक प्रेत-प्रहरी ने उसे भीतर धकेला, उसे अपनी प्रेमिका आती दिखाई दी और उस पुरुष की आत्मा तुरंत उसकी ओर बढ़ी। वास्तव में वह एक बड़ा उड़ने वाला पक्षी था। उसकी बड़ी चोंच उस पुरुष के जननांग को पूरी तरह घेर सकती थी। जननांग को चोंच में दबोचते ही उसने आगे की ओर खींचकर उसे तोड़ डाला। पुरुष की आत्मा अत्यंत पीड़ा से ज़ोर-ज़ोर से चीखने लगी। दृश्य इतना रक्तरंजित था कि इसके आगे मैं देख नहीं सकी।

सभागृह से बाहर निकलने के बाद मैंने न्यायाधिकारी से यौन दुराचार के दंडों के विषय में कुछ प्रश्न पूछे। न्यायाधिकारी ने बताया कि सबसे पहले सम्यक् समझ और सम्यक् स्मृति बनाए रखनी चाहिए तथा स्वयं को पवित्र रखने और अपना सम्मान करने के प्रति हर समय सजग रहना चाहिए। यदि मन में यौन दुराचार किया, किंतु उसे व्यवहार में नहीं उतारा, तो एक सप्ताह के पुण्यफल घटते हैं। यदि अश्लील प्रकाशन केवल देखे, तो एक सप्ताह के पुण्यफल और आयु घटते हैं। यौन दुराचार को व्यवहार में उतारने पर एक महीने के पुण्यफल और आयु घटते हैं। यदि दूसरी

बार फिर यौन दुराचार किया, तो दो महीने के पुण्यफल और आयु घटते हैं; इसी क्रम में आगे भी होता है।

स्त्री-पुरुष के विवाहपूर्व यौन संबंधों से सभी मामलों में पुण्यफल और आयु घटते हैं। प्रत्येक मामले का विवरण अलग होता है, पर मोटे तौर पर उन्हें तीन प्रकारों में बाँटा जा सकता है।

पहला: पूरे जीवन में केवल एक साथी रहा हो, उस साथी की कामेच्छा कम हो और बाद में उसी से विवाह किया हो। इस प्रकार के मामले में यदि अनुचित समय, अनुचित स्थान और अनुचित अंगों संबंधी निषेधों का उल्लंघन न किया हो, तो केवल पुण्यफल घटेंगे। यथाशीघ्र प्रायश्चित्त करके पापकर्म भी क्षीण किए जा सकते हैं।

दूसरा: विवाह से पहले और बाद में एक ही साथी रहा हो, किंतु अनुचित समय, अनुचित स्थान और अनुचित अंगों संबंधी निषेधों का उल्लंघन किया हो तथा कामेच्छा प्रबल हो। ऐसे में विवाह से पहले और बाद, दोनों समय पुण्यफल और आयु घटते हैं। आयु पूरी होने पर नरक में जाकर 500 वर्ष तक ताँबे के स्तंभ का आलिंगन करना होगा और 500 वर्ष तक ताँबे के गोले निगलने होंगे। यदि जीवित रहते प्रायश्चित्त किया जाए, तो उसका प्रभाव कुछ अधिक होगा। साथ ही दूसरों को भी ऐसा अपराध न करने के लिए दृढ़ता से समझाया जाए और सत्कर्मों से दोषों की भरपाई की जाए, तो संभव है कि नरक का कर्मफल भोगने से छूट मिल जाए।

तीसरा: विवाह से पहले और बाद, दोनों समय अंधाधुंध यौन दुराचार किया हो, कामवासना विशेष रूप से प्रबल हो और दिन भर भोग-विलास में बेसुध जीवन बिताया हो। ऐसे लोगों के वर्तमान जीवन में निश्चित ही पुण्यफल और आयु घटेंगे। आयु पूरी होने पर वे नरक में जाकर ताँबे के स्तंभ का आलिंगन करने, लोहे की शय्या पर सोने, ताँबे के गोले निगलने आदि दंड भोगेंगे। प्रत्येक नरक में कम-से-कम 10,000 वर्ष तक दंड भोगना होगा; निर्णय मामले के विवरण के अनुसार होगा।

नरक का कर्मफल पूरा होने के बाद उन्हें पशुयोनि में फेंका जाएगा। कुछ मंदारिन बत्तख के रूप में कर्मफल भोगेंगे, कुछ कुत्ते, साँप आदि के रूप में जन्म लेंगे।

अब नरक में सबसे अधिक लोग तीसरे प्रकार के हैं। इस समय नरक का पहले की अपेक्षा बहुत अधिक विस्तार भी हो चुका है। मनुष्यलोक में अभी बहुत-से लोग तीसरे प्रकार के हैं; भविष्य में उन सभी को कर्मफल भोगने के लिए नरक आना होगा।

न्यायाधिकारी ने आगे कहा कि स्त्री के मासिक धर्म के समय पति-पत्नी के लिए संभोग सख्त निषिद्ध है। गर्भावस्था और स्तनपान के समय भी संभोग नहीं करना चाहिए, अन्यथा पुण्यफल घटेंगे। इसके अतिरिक्त, मासिक धर्म के समय संभोग करने से वीर्य और रक्त निगलने वाले तरह-तरह के प्रेत रक्त चूसने के लिए आकर्षित होते हैं। हर बार संभोग करने पर सार और प्राण-ऊर्जा निगलने वाले प्रेत उन्हें चूसने आते हैं। इसके बाद शरीर में रोग उत्पन्न होते हैं और दुर्भाग्य की घटनाएँ अधिक होती हैं।

न्यायाधिकारी ने यह भी बताया कि यदि स्त्रियाँ गर्मियों में शरीर को बहुत अधिक खुला रखने वाले कपड़े पहनें, तो उनके भी एक सप्ताह के पुण्यफल घटेंगे, क्योंकि इससे विपरीत लिंग के लोगों के मन में यौन दुराचार के विचार उठते हैं। न्यायाधिकारी की बातें सुनकर मुझे लगा कि मन में उठने वाले विचार सचमुच बहुत महत्वपूर्ण हैं। अदृश्य जगत में वास्तव में प्रेत और देवता हैं, जो हमारे आचरण की निगरानी और उसका लेखा रखने के लिए जिम्मेदार हैं!

मैं न्यायाधिकारी की अत्यंत कृतज्ञ हूँ कि उन्होंने यह महत्वपूर्ण जानकारी दी और स्वर्ग के रहस्य प्रकट किए। अब प्रणाम करके विदा लेती हूँ! कामना है कि संसार के सभी चेतन प्राणी शुद्ध ब्रह्मचर्य का अभ्यास करें और नरक के कष्ट से मुक्त रहें।

5/हस्तमैथुन महानरक का भीषण कर्मफल—न्यायाधिकारी ने स्वर्ग के सारे रहस्य प्रकट कर दिए!

बुद्ध और बोधिसत्त्व जीवों का उद्धार करते हैं, ठीक जैसे समुद्र लहरों से अलग नहीं हो सकता—बिना किसी विराम के, एक क्षण के बाद दूसरा क्षण, एक लहर के बाद दूसरी लहर। कामना है कि संसार के चेतन प्राणी इसे और अधिक समझें, अपने कर्तव्य ठीक से निभाएँ, पंचशील का पालन करके मनुष्य-देह बनाए रखें तथा स्वयं को पवित्र रखें और अपना सम्मान करें। कामना है कि मैं नवशिक्षार्थी भी बुद्धों और बोधिसत्त्वों की महान करुणा से सीखकर बिना सोए, बिना विश्राम किए असंख्य जीवों की सेवा कर सकूँ। कल मैं बुद्ध की शक्ति से एक बार फिर नरक गई।

बुद्ध की शक्ति के अधिष्ठान को साष्टांग प्रणाम और आभार! बुद्ध का नाम स्मरण करते ही मैं दुखमय नरक पहुँच गई। यदि बुद्ध की शक्ति का अधिष्ठान और मुझे घेरे हुए प्रकाश का वलय न होता, तो मैं निश्चित ही बहुत थक जाती। नरक का नकारात्मक चुंबकीय क्षेत्र मानो पहाड़ों और समुद्र को उलट देने वाले प्रचंड वेग से लगातार उमड़ता रहता है। मनुष्यलोक में यदि लगातार 7 दिन बारिश हो, आकाश में बादल छाए रहें और साथ ही ज़ुकाम हो जाए, तो मुझे विश्वास है कि बहुत लोग कहने लगेंगे कि कितना कष्ट है। रोज़ ठंडी, बादलों भरी बारिश हो रही है, व्यक्ति बीमार है, सिर भारी है और पैर लड़खड़ा रहे हैं, फिर भी काम पर जाना पड़ता है। वास्तव में नरक की पीड़ा मनुष्यलोक की पीड़ा से कम-से-कम सैकड़ों-हजारों गुना अधिक है, और वहाँ की पीड़ा में कोई विराम नहीं होता। चीखने की आवाज़ें सुनाई दे रही हैं—पीड़ा भरी कराहें! चलो, आवाज़ों की दिशा में जाकर देखें!

अरे! बहुत-से पुरुषों की आत्माएँ निर्वस्त्र थीं और उनके चारों ओर दो सिर वाले साँप लिपटे हुए थे। ये साँप आग जैसी लाल लपटों की चमक छोड़ रहे थे और देखने में नरम लगते थे। पुरुषों की आत्माओं को ऐसा दिखाई दे रहा था मानो सुंदर स्त्रियाँ उन्हें सहला रही हों, लेकिन जैसे ही दो सिर वाला साँप किसी पुरुष के जननांग को छूता, तुरंत उसे काटकर अलग कर देता। पुरुष की आत्मा पीड़ा से बेतहाशा चीखती और बेहोश हो जाती। दो सिर वाला साँप एक फूँक मारता, तो वह तुरंत होश में आ जाती और उसका क्षत-विक्षत जननांग भी अचानक पूरी तरह ठीक हो जाता। तभी साँप फिर आग जैसी लाल लपटों की चमक छोड़ता और वही पीड़ादायक दृश्य दोहराता। सचमुच मैं और नहीं देखना चाहती थी। मन कितना व्याकुल हो रहा था!

यहाँ ऐसे बहुत-से पुरुषों की आत्माएँ थीं और वे सभी यह महान कष्ट भोग रही थीं। मैं नरक के न्यायाधिकारी से पूछने गई कि वे ऐसा कर्मफल क्यों भोग रही हैं। न्यायाधिकारी ने कहा कि यह जीवनकाल में हस्तमैथुन के शौकीन होने के कारण मिलने वाले नरक के कर्मफलों में से एक है। दो सिर वाले अग्नि-सर्प का यह कर्मफल नरक के समय के अनुसार पूरे 10,000 वर्ष तक भोगना पड़ता है! यह साधारण हस्तमैथुन के दुष्फलों में से एक है।

हस्तमैथुन का एक और दुष्फल है, जिसे 20,000 वर्ष तक भोगना पड़ता है। जो लोग जीवनकाल में इंद्रियों की उत्तेजना पाने के लिए बर्फ़, गुनगुने पानी, मिर्च, स्नेहक आदि या अपनी पसंद की वस्तुओं का उपयोग करके स्वयं हस्तमैथुन का यौन दुराचार करते हैं या दूसरों को सिखाते हैं, वे आयु पूरी होने पर बर्फ़ और अग्नि की पाँच परतों वाले इस नरक में प्रवेश करेंगे।

मैंने पूछा कि हस्तमैथुन के लिए इतना कठोर दंड क्यों दिया जाता है कि हल्का अपराध करने वालों को भी 10,000 वर्ष का दंड मिलता है?

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा कि हस्तमैथुन विशेष रूप से शरीर को हानि पहुँचाता है और सदाचार को नष्ट करता है। यह मानव शरीर के तीन रत्नों—

जीवनसार, प्राणशक्ति और चेतना—को क्षीण करता है। यह माता-पिता के प्रति कर्तव्य का घोर उल्लंघन भी है। यह आत्महत्या जैसा है: भले ही किसी दूसरे को हानि न पहुँचाई हो, स्वयं को मारने में भी एक जीवन का अंत होता है, इसलिए दंड कठोर है। जिन्हें हस्तमैथुन प्रिय है, वे सामान्यतः बहुत बार, बार-बार यह अपराध करते हैं। जीवनकाल में पहली बार हस्तमैथुन करने पर आधे महीने की आयु और आशीषों का क्षय होता है; दूसरी बार एक महीने की आशीषों और आयु का क्षय होता है। आयु पूरी होने पर उन्हें कर्मफल भोगने के लिए नरक में डाल दिया जाता है। यदि जीवनकाल में गहरा पश्चात्ताप करें, तो संभव है कि आयु पूरी होने के बाद नरक में जाने की पीड़ा से बच जाएँ; इसका निर्णय प्रत्येक वास्तविक मामले के अनुसार होगा।

परलोक के न्यायाधिकारी ने मुझसे पूछा कि क्या मैं बर्फ़ और अग्नि की पाँच परतों वाला नरक देखना चाहती हूँ। मैंने सोचा, ठीक है, चलकर देखती हूँ।

यहाँ का दृश्य दो सिर वाले अग्निसर्पों के नरक से भी कहीं अधिक क्रूर था। यहाँ बहुत-से उपकरण थे—कहना चाहिए, यातना के उपकरण। ये उपकरण पारदर्शी, कुछ सफ़ेदी लिए हुए, गोल और नुकीले आकार के थे। वे बेहद बर्फ़ीले और धारदार दिखाई देते थे। किसी पुरुष आत्मा को छूते ही ये बर्फ़ीले उपकरण उसके जननांग को जमा कर तोड़ देते और चूर-चूर कर देते थे। जमकर टूटने के तुरंत बाद वह फिर पूरा हो जाता था।

बर्फ़ की यातना समाप्त होते ही बिना रुके ऊपर से अग्निपर्वत के दबाने का कर्मफल भोगना पड़ता था। अग्निपर्वत से दबाए जाने का यह दंड उन लोगों के लिए था जिन्हें हस्तमैथुन का यौन दुराचार करते समय उत्तेजना बढ़ाने के लिए गुनगुने पानी, मिर्च जैसी चीज़ों का उपयोग करना पसंद था। एक छोटे पहाड़ जैसा, अग्नि की तरह लाल यातना-यंत्र पुरुष आत्मा की ओर सामने से उड़ता हुआ झपटता था। वह मानो उसके नाप से ही बनाया गया हो: ठीक जननांग की जगह एक जकड़ने

वाला हिस्सा था, जो जननांग को दबाकर इतनी भीषण गर्मी से जलाता था कि वह अलग हो जाता था। हर ओर फिर पीड़ा से भरी चीखें और कराहें गूँजने लगती थीं; पीड़ित बेहोश हो जाते थे। इसके बाद कर्मबल के कारण वे फिर होश में आ जाते, शरीर पूरा हो जाता और वही यातना चक्र फिर शुरू हो जाता। कितना भयंकर कष्ट, कितनी दयनीय दशा थी!

आज रात इस नरक का दृश्य देखकर बहुत मितली आ रही थी। परलोक के न्यायाधिकारी ने बताया कि यह नरक नया बनाया गया है, फिर भी इसकी जगह पर्याप्त नहीं है और इसका और विस्तार करना पड़ेगा। मनुष्यलोक में इस तरह के बहुत अधिक जीव हैं, जो आयु पूरी होने पर यहाँ कर्मफल भोगने आएँगे।

मैंने यह भी देखा कि सौंदर्य-संबंधी अनेक और नरक बनाए जा रहे थे, जो विशेष रूप से सौंदर्य-सैलून चलाने, स्त्रियों के स्तनों का आकार बढ़ाने, उनके जननांग को संकरा करने की शल्यक्रिया करने जैसे कामों के लिए थे। बहुत-सी अनुचित ढंग से काम करने वाली सौंदर्य कंपनियाँ या चिकित्सा केंद्र विशेष रूप से स्त्रियों को कामना में डुबोते हैं और यौन दुराचार द्वारा शील का उल्लंघन करवाते हैं। जीवनकाल में आशीषों और आयु का क्षय होता है और आयु पूरी होने पर इस नरक में 10,000 वर्ष तक कर्मफल भोगना पड़ता है।

परलोक के न्यायाधिकारी जानते थे कि मेरे मन में प्रश्न है। वास्तव में हम विचारों से ही संवाद करते थे। मैं पूछना चाहती थी कि अनुचित स्थान पर मैथुन करना भी शील का उल्लंघन क्यों है। न्यायाधिकारी ने मुझे इसके दृश्य दिखाए।

पता चला कि खुले आकाश के नीचे, शौचालयों में या गरज और बिजली वाली रातों में बहुत-से प्रेत और सूक्ष्म आत्माएँ जीवनसार तथा प्राणशक्ति चूसने आते हैं, या फ़ेइजिंग के माध्यम से शरीर में आविष्ट हो जाते हैं। ऐसे समय अनुचित स्थान पर मैथुन करना स्वयं के लिए हानिकारक होता है और प्रकृति की सद्ऊर्जा के चुंबकीय

क्षेत्र को भी नष्ट करता है। इससे सौ हानियाँ होती हैं, एक भी लाभ नहीं। इसलिए ऐसा करने वाले जीवों को स्वयं ही पीड़ादायक कर्मफल भोगना पड़ता है।[7]

विदा होने से पहले परलोक के न्यायाधिकारी ने मुझे निर्देश देते हुए कहा, "इस बार आप बुद्ध की शक्ति के सहारे यहाँ आई हैं। ऊपरी लोक में विराजमान मेरे परम अधिपति और यमराज की कृपापूर्ण अनुमति भी मिली है, और मुझे नरक की वास्तविक स्थिति समझाने का आदेश दिया गया है। इसे स्वर्ग के सारे रहस्य खोल देना कह सकते हैं; ऐसा अभूतपूर्व है। आशा है कि आप जीवितों के लोक में लौटकर यह संदेश पहुँचाएँगी और संसार के लोगों को चेताएँगी कि वे फिर यौन दुराचार करके मानवीय संबंधों और सदाचार को नष्ट न करें, अपने लिए नरक न बनाएँ, और यहाँ का कार्यभार तथा मनुष्यलोक में प्राकृतिक और मानवजनित आपदाएँ इतनी न बढ़ाएँ। आप देख सकती हैं कि मेरा रूप कितना भयावह है। आशा है कि संसार के लोगों को मृत्यु के बाद मुझसे मिलना न पड़े—यह उनके लिए बहुत सौभाग्य की बात होगी!"

सभी बुराइयों में यौन दुराचार सबसे आगे है! यहाँ मैंने परलोक के न्यायाधिकारी को प्रणाम कर विदा ली। उनके मार्गदर्शन के लिए आभार; फिर भेंट होगी।

6/वेश्याओं के ग्राहकों को महानरक में 100,000 वर्ष का कर्मफल

बुद्ध का आभार कि उन्होंने मुझे श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करने का अवसर दिया। आज नरक कुछ अलग क्यों लग रहा था? क्या मैं रास्ता भटक गई थी? सामान्यतः नरक में घनी अंधकारमय यिन ऊर्जा रहती है, पर आज तीव्र सुनहरी रोशनी फैल रही थी—बहुत सुखद बुद्ध-प्रभा। सिर उठाकर देखा तो वे महान प्रण वाले क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व थे। मेरी आँखों से आँसू लगभग छलक पड़े। मैंने तुरंत दोनों हाथ, दोनों घुटने और मस्तक भूमि पर रखकर क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व को प्रणाम किया।

क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व ने मुझे उपदेश दिया कि मैं मानव जन्म को भलीभाँति सँजोऊँ और इस सार्थक कार्य को अच्छे से पूरा करूँ; सद्धर्म का गंभीरता से प्रचार करूँ, नरक की पीड़ाएँ प्रकट करूँ और लौटकर मनुष्यलोक के जीवों को सचेत करूँ, ताकि वे कुमार्ग छोड़कर सन्मार्ग पर आएँ और बुराई त्यागकर भलाई अपनाएँ। मैंने प्रसन्न होकर बोधिसत्त्व से निवेदन किया कि मैं अवश्य अपनी पूरी सामर्थ्य लगा दूँगी और उनके उपदेश के अनुसार आचरण करूँगी।

पहले मैंने हाथ जोड़कर परलोक के न्यायाधिकारी को प्रणाम किया! आज मैं उनसे “वेश्याओं के ग्राहकों, वेश्याओं और दलाली करने वालों के कर्मफल” के बारे में पूछना चाहती थी।

परलोक के न्यायाधिकारी ने मुझे बताया कि वेश्याओं के ग्राहक दो प्रकार के होते हैं:

पहले प्रकार के लोग अपनी शारीरिक आवश्यकता पर नियंत्रण नहीं रख पाते, उनकी पत्नी उन्हें संतुष्ट नहीं कर पाती, और वे नियमित रूप से एक निश्चित वेश्या

के पास मैथुन करने जाते हैं। जीवनकाल में हर बार यह अपराध करने पर एक महीने की आशीषों और आयु का क्षय होता है। आयु पूरी होने पर वे अपने किए हुए यौन दुराचार से संबंधित नरक में कर्मफल भोगते हैं। इसकी अवधि प्रत्येक मामले के अनुसार तय होती है; सामान्यतः अधिकांश की दंडावधि 800 वर्ष होती है।

दूसरे प्रकार के लोग प्रबल कामना से भरे होते हैं और लंबे समय तक वेश्याओं को बुलाकर यौन दुराचार करते रहते हैं। वे मानव जन्म का मूल्य नहीं समझते, उसे व्यर्थ गँवाते हैं और मदहोशी तथा बेसुधी में जीवन बिताते हैं। वे शरीर और इंद्रियों की उत्तेजना पाने के लिए यौन उत्तेजना बढ़ाने वाले उपकरणों का उपयोग करते हैं। जीवनकाल में हर अपराध पर ऐसे लोगों की डेढ़ महीने की आशीषें और आयु घटती हैं। आयु पूरी होने पर वे अपने किए हुए यौन दुराचार से संबंधित नरक में 100,000 वर्ष तक कर्मफल भोगते हैं। नरक का कर्मफल समाप्त होने पर उन्हें पशु योनि में डाल दिया जाता है, जहाँ वे 1,000 वर्ष तक निम्न कोटि के पशुओं के रूप में कर्मफल भोगते हैं। उसके बाद यदि उन्हें फिर मानव जन्म मिल भी जाए, तब भी उन्हें अस्पष्ट और भ्रमित बुद्धि का फल भोगना पड़ता है।

वेश्याओं के कर्मफल तीन प्रकार के होते हैं:

पहले प्रकार में वे हैं जो पूरी तरह दूसरों के नियंत्रण में रहकर वेश्यावृत्ति के लिए विवश की जाती हैं, तत्काल उससे निकल नहीं पातीं और मैथुन करते समय उन्हें बिल्कुल भी आनंद का अनुभव नहीं होता। बाद में बचाए जाने पर वे उससे मुक्त हो जाती हैं। लेकिन उन्हें अपने कर्मावरणों के लिए पश्चात्ताप करना होगा और आगे फिर कभी ऐसा नहीं करना होगा; तब संभव है कि वे नरक का कर्मफल भोगने से बच जाएँ।

दूसरे प्रकार में वे हैं जो धन के लिए वेश्या का जीवन बिताती हैं। जीवनकाल में हर बार एक महीने की आशीषों और आयु का क्षय होता है। आयु पूरी होने पर वे अपने किए हुए यौन दुराचार से संबंधित नरक में 80,000 वर्ष तक कर्मफल भोगती हैं। नरक का कर्मफल समाप्त होने पर उन्हें पशु योनि में डाल दिया जाता है, जहाँ

वे 800 वर्ष तक कर्मफल भोगती हैं। उसके बाद मानव जन्म मिल भी जाए, तो उन्हें निम्न और तिरस्कृत अवस्था का फल भोगना पड़ता है।

तीसरे प्रकार की वेश्याएँ ऊपर बताए गए दूसरे प्रकार के ग्राहकों जैसी होती हैं। वे भी प्रबल कामना से भरी होती हैं, मानव जन्म का मूल्य नहीं समझतीं, उसे व्यर्थ गँवाती हैं और मदहोशी तथा बेसुधी में जीवन बिताती हैं। वे शरीर और इंद्रियों की उत्तेजना पाने के लिए यौन उत्तेजना बढ़ाने वाले उपकरणों का उपयोग करती हैं। जीवनकाल में हर बार दो महीने की आशीषों और आयु का क्षय होता है। आयु पूरी होने पर वे अपने किए हुए यौन दुराचार से संबंधित नरक में 150,000 वर्ष तक कर्मफल भोगती हैं। नरक का कर्मफल समाप्त होने पर उन्हें पशु योनि में डाल दिया जाता है, जहाँ वे 2,000 वर्ष तक निम्न कोटि के पशुओं के रूप में कर्मफल भोगती हैं। उसके बाद फिर मानव जन्म लेकर निम्न और तिरस्कृत अवस्था का फल भोगती हैं।

वेश्यावृत्ति की दलाली करने वाले दो प्रकार के होते हैं:

पहले प्रकार के लोग धन के लिए कुछ समय तक यह काम करते हैं, फिर बोध होने पर इसे छोड़ देते हैं और आगे कभी नहीं करते। यदि साथ ही गहरा पश्चात्ताप भी करें, तो संभव है कि नरक का कुछ कर्मफल हल्का हो जाए। लेकिन जीवनकाल में प्रत्येक अपराध पर डेढ़ महीने की आशीषों और आयु का क्षय होता है, और आयु पूरी होने पर यानहुआ फ़ानगुन नरक में 100,000 वर्ष तक कर्मफल भोगना पड़ता है।

दूसरे प्रकार के लोग दूषित नीयत रखते हैं, वेश्याओं को अपने नियंत्रण में रखते हैं, स्वयं प्रबल कामना से भरे होते हैं, स्वार्थी होते हैं और विशेष रूप से दूसरों को फँसाने तथा हानि पहुँचाने की योजनाएँ बनाते हैं, इत्यादि। जीवनकाल में उनकी आशीषों और आयु का क्षय होता है। आयु पूरी होने पर वे यानहुआ फ़ानगुन नरक में कर्मफल भोगते हैं। जब तक उनके उत्पीड़न की शिकार सभी वेश्याएँ फिर मानव

जन्म न पा लें, तब तक उन्हें नरक से निकलने का अवसर नहीं मिलता। इसके बाद उन्हें पशु योनि में कर्मफल भोगने के लिए डाल दिया जाता है। पशु योनि का कर्मफल समाप्त होने के बाद वे मानव जन्म में भी निम्न और तिरस्कृत अवस्था का फल भोगते हैं।

"ओह! न्यायाधिकारी महोदय, दलाली के इस दुष्कर्म का फल तो बहुत भारी है! आपका स्पष्टीकरण सुनकर मेरे मन में कसक और गहरा दुःख हो रहा है। मुझे इस व्यवसाय में लगे जीवों पर बहुत दया आती है।"

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा, "यह व्यवसाय समाज के आचार-विचार को गंभीर रूप से बिगाड़ता है, नैतिकता, मर्यादा और मानवीय संबंधों के नियमों को नष्ट करता है तथा मनुष्य के अच्छे मूल स्वभाव पर गहरा दुष्प्रभाव डालता है। इसलिए नरक के अधिपति ऐसे दुष्कर्म करने वाले जीवों को कठोर दंड देते हैं। लेकिन मेरी जानकारी के अनुसार बुद्ध और बोधिसत्त्व इन जीवों पर करुणा करते हैं और मानव रूप धारण करके उनके बीच आते हैं, ताकि जिनमें शुभ मूल हैं, उन्हें मार्ग दिखाकर भलाई की ओर लौटा सकें।"

आज के लिए यहीं तक। परलोक के न्यायाधिकारी का आभार! अमिताभ बुद्ध! मैं श्वेत कमल पर बैठकर लौटती हूँ।

इस बार मुझे बहुत प्रसन्नता हुई कि नरक में भी महान प्रण वाले क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व के दर्शन हुए। बोधिसत्त्व का पूरा शरीर सुनहरी प्रभा से घिरा था और उन्होंने मुझे भी अधिष्ठान दिया। उनके प्रण की व्यापक शक्ति सचमुच अचिन्त्य है!

मनुष्यलोक में लौटने पर मैं बहुत थक चुकी थी। हर बार नरक जाने में मूल चेतना और मूल प्राणशक्ति बहुत खर्च होती हैं, इसलिए लौटते ही मुझे मंत्र जपकर उनकी तत्काल पूर्ति करनी पड़ती है।

आशा है कि सभी पाठक इसे उपन्यास समझकर नहीं पढ़ेंगे; तब क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व के इतने कष्टपूर्ण प्रयत्न व्यर्थ नहीं जाएँगे। मैं, आ यू, आप सभी का फिर आभार व्यक्त करती हूँ। नमो महान प्रण वाले क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व महासत्त्व!

7/निकट पारिवारिक संबंधियों के बीच यौन दुराचार को दंडित करने वाले उलटे पहियों और बर्फ़ीले आकाश के नरक तथा रंगीन फूलों और तलवारों के वन के नरक का प्रत्यक्ष वृत्तांत

मैं, आ यू, क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व को साष्टांग प्रणाम करती हूँ! फिर धर्म का लाभ पाकर सचमुच बहुत प्रसन्न हूँ!

क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व ने मुझे, आ यू को, पाँच शीलों का उपदेश दिया। पाँच शीलों का पालन मानव जन्म को सुरक्षित रख सकता है; यह मनुष्य होने का आधार है और इससे अधोगति नहीं होती। यह बहुत सरल लगता है, लेकिन बहुत-से जीव अनजाने में ही इनका उल्लंघन कर देते हैं। हम अक्सर अपने आसपास लोगों को कहते सुनते हैं, "मैंने कभी हत्या, आगज़नी या किसी को हानि पहुँचाने जैसा काम नहीं किया; मैं तो एक साधारण नागरिक हूँ।" वास्तव में हत्या और आगज़नी पहले ही शरीर से किए जाने वाले अत्यंत गंभीर पाप हैं, जिनका फल नरक में भोगना पड़ता है। अब हम क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व का करुणापूर्ण उपदेश सुनें। यदि उसे सुनने-समझने में कोई त्रुटि हुई है, तो वह मेरी, आ यू की, अपनी त्रुटि है। मैं बोधिसत्त्व के उपदेश को संक्षेप में इस प्रकार दोहराती हूँ:

एक, जीव-हत्या न करना—किसी भी चेतन जीव का जीवन लेना निषिद्ध है। शुद्ध शाकाहार इस शील के पालन का आधार है। शुद्धता क्या है? 'शूरंगम सूत्र' की शिक्षाओं का कठोरता से पालन करना चाहिए और पशुओं से संबंधित चीज़ों का सेवन या उपयोग नहीं करना चाहिए। अर्थात पशुओं से जुड़ा कोई भी खाद्य पदार्थ नहीं खाना चाहिए। उदाहरण के लिए दूध, मक्खन, अंडे, शहद आदि—पशुओं से जुड़ी सभी चीज़ें त्यागनी चाहिए। बहुत-से सौंदर्य प्रसाधनों में भी पशुजन्य सामग्री होती है; उनका उपयोग भी नहीं करना चाहिए। बीमार पड़ने पर हम जो औषधियाँ

लेते हैं, विशेषकर चीनी पारंपरिक औषधियाँ, उनमें से भी बहुत-सी में पशुजन्य सामग्री होती है।

दो, चोरी न करना—दूसरे की अनुमति के बिना किसी वस्तु को अपना बना लेना चोरी है। बहुत-से लोग कंपनी में उसकी कुछ लेखन-सामग्री अपने निजी उपयोग में लेते हैं, यहाँ तक कि घर ले जाकर इस्तेमाल करते हैं; या कंपनी से निजी फ़ोन करते हैं, अपना मोबाइल फ़ोन कंपनी में चार्ज करते हैं और निजी काग़ज़ात के लिए कंपनी की फ़ोटोकॉपी या फ़ैक्स मशीन इस्तेमाल करते हैं, इत्यादि। यदि कंपनी की अनुमति न मिली हो, तो ये सब चोरी न करने के शील का उल्लंघन हैं।

तीन, यौन दुराचार न करना—पति-पत्नी के संबंध से बाहर यौन संबंध रखना। अनुचित समय पर, अनुचित स्थान पर या अनुचित अंगों में यौन आचरण करना, अश्लील डिस्क देखना और यौन उत्तेजना बढ़ाने वाले उपकरणों का उपयोग करना —ये सब इस शील का उल्लंघन हैं।

चार, असत्य न बोलना—सच बोलें, दूसरों को धोखा न दें। जो है उसे है कहें; जो नहीं है, उसे है न कहें। जानबूझकर धोखा देना इस शील का और गंभीर उल्लंघन है। सुविधा के लिए बोले जाने वाले झूठ भी यथासंभव न बोलें, क्योंकि बार-बार झूठ बोलना चेतना पर बुरा प्रभाव डालता है और यह आसानी से सहज आदत बन जाता है।

पाँच, मदिरा न पीना—मदिरा और नशीले पदार्थ त्यागें। मदिरा से जुड़े उत्पादों का भी सेवन नहीं करना चाहिए। उदाहरण के लिए अधिकांश किण्वित टोफ़ू में मदिरा होती है, इसलिए उसे नहीं खाना चाहिए। भले ही विक्रेता कहे कि उसमें बहुत ही थोड़ी मदिरा डाली गई है, किंतु तनिक-सी भी हो तो वह मदिरा ही है। केवल प्राण बचाने के लिए औषधीय उपयोग में अपवाद की अनुमति हो सकती है। बहुत-से सौंदर्य प्रसाधनों में भी अल्कोहल होता है; उनका उपयोग न करना ही बेहतर है।

क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व का उपदेश श्रद्धापूर्वक सुनने के बाद मैं, आ यू, परलोक के न्यायाधिकारी से मिलने आगे चली।

न्यायाधिकारी महोदय, अमिताभ बुद्ध! आज मैं आपसे निकट संबंधियों के बीच यौन संबंधों के कर्मफल के बारे में जानना चाहती हूँ।

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा कि निकट संबंधियों के बीच यौन संबंध नैतिकता को भ्रष्ट करने, समाज के आचार-विचार को बिगाड़ने और मानवीय संबंधों की सद्ऊर्जा को नष्ट करने वाला आचरण है। परलोक का प्रशासन ऐसे जीवों को कठोर दंड देगा। जो भी जीव इस प्रकार का यौन दुराचार करते हैं, जीवनकाल में प्रत्येक बार उनकी ढाई महीने की आशीषों और आयु का क्षय होता है। आयु पूरी होने पर उन्हें यौन दुराचार के नरकों में भेजा जाता है: उलटे चक्र के नरक में 500 वर्ष, ताँबे के खंभे का आलिंगन करने के नरक में 500 वर्ष, लोहे की शय्या के नरक में 500 वर्ष, यानहुआ फ़ानगुन नरक में 500 वर्ष और तलवारों के वन के नरक में 500 वर्ष तक कष्ट भोगना पड़ता है। यह केवल सामान्य मामलों में दिया जाने वाला दंड है; वास्तविक घटना के अनुसार ही विशिष्ट दंड पर अंतिम निर्णय होगा। श्वेत कमल पर सवार होकर मैं एक क्षण में उलटे चक्र के नरक में पहुँच गई। यहाँ पुरुष आत्माएँ स्त्री आत्माओं से अधिक थीं।

इस नरक में निकट संबंधियों के साथ यौन संबंध रखने वाली सभी आत्माओं ने अपनी ही पीढ़ी के विपरीत लिंग के संबंधियों के साथ मैथुन किया था। अर्थात पुरुष ने बड़े भाई की पत्नी, छोटे भाई की पत्नी, बड़ी बहन, छोटी बहन या पत्नी के परिवार में अपनी ही पीढ़ी की किसी विवाहित स्त्री के साथ मैथुन किया था। स्त्री ने बड़ी बहन के पति, छोटी बहन के पति, बड़े भाई, छोटे भाई या पति के परिवार में अपनी ही पीढ़ी के किसी विवाहित पुरुष के साथ मैथुन किया था।

उलटे चक्र और बर्फ़ के नरक में एक बहुत बड़ा घूमने वाला चक्र था। चारों ओर अत्यंत ठंडी बर्फ़ की दीवारें थीं और ऊपर कुछ दर्पण जैसी बर्फ़ थी—उसे बर्फ़ का दर्पण कह लेते हैं। यह बर्फ़ का दर्पण चारों ओर की दीवारों की बर्फ़ से अलग था।

इसमें एक विशेष पारदर्शिता और प्रतिबिंबित करने की क्षमता थी; कुल मिलाकर यह दर्पण का काम करता था और इसमें चक्र के भीतर का दृश्य दिखाई देता था। उस दर्पण से लगातार पारदर्शी बर्फ़ के टुकड़े उड़कर निकलते थे और घूमते चक्र में दंड भोग रहे जीवों के आत्मिक शरीरों पर पड़ते थे।

तभी मैंने एक पूर्णतः नग्न पुरुष आत्मा को बड़े चक्र की ओर जाते देखा। चक्र ने उसे अपनी ओर खींचकर पूरी तरह अपने भीतर बंद कर लिया और घुमाने लगा। बर्फ़ के दर्पण से बर्फ़ निकलकर उसके शरीर पर पड़ने लगी। बर्फ़ का हर टुकड़ा उस अपराधी आत्मा को लहूलुहान कर देता, उसके हाथ-पाँव काट देता और उसे अपार पीड़ा पहुँचाता था। वह पूरी शक्ति से बाहर भागने की कोशिश करता था। लेकिन जब वह घायल शरीर को घसीटते हुए बड़ी कठिनाई से कुछ क्षणों के लिए चक्र से बाहर निकल पाता, तो बाहर खड़े प्रेत-प्रहरी उसे अपने काँटेदार भालों पर उठाकर फिर भीतर फेंक देते थे। दृश्य अत्यंत भयावह था। अमिताभ बुद्ध!

तब परलोक के न्यायाधिकारी ने मुझे पास के रंगीन फूलों और तलवारों के वन के नरक को भी देखने को कहा। यह नरक जीवनकाल में अपने सीधे पारिवारिक संबंधियों के साथ, विवश किए जाने पर या स्वेच्छा से, यौन दुराचार करने के अपराध के लिए था। यदि किसी को विवश किया गया हो और उस समय उसके मन में कामसुख न रहा हो, तो पश्चात्ताप करने पर उसे दंड नहीं भोगना पड़ता; किंतु यदि मन में कामसुख रहा हो, तो उसे भी कर्मफल भोगना पड़ता है। पुरुष का अपनी बेटी, पोती, नानी, दादी या पत्नी के परिवार की सीधे संबंध में आने वाली स्त्री के साथ, और स्त्री का अपने पिता, पोते, दादा, नाना या पति के परिवार के सीधे संबंधी के साथ यौन दुराचार करना—इन सबका कर्मफल भोगना पड़ता है। इस नरक में असंख्य सुंदर दिखने वाले फूल थे। इन फूलों में बहुत-सी युक्तियाँ छिपी थीं; वे रंग बदलते थे और देखने में बहुत आकर्षक लगते थे।[8]

तभी एक नग्न पुरुष आत्मा कामुक विचारों से भरी हुई फूल लेने बढ़ी। फूल ने तुरंत अपना रूप बदल लिया और उसके शरीर से लिपट गया। जब फूल धीरे-धीरे

नीचे लिपटता हुआ उसके जननांग तक पहुँचा, तो उसने तत्काल जननांग काट दिया। रक्त के छींटे ज़मीन पर फैल गए; शरीर लहूलुहान था। फिर फूल असंख्य कठोर पंखुड़ियों में बदल गया, जो लगातार उड़कर उस अपराधी आत्मा को मारती रहीं, जब तक वह बेहोश नहीं हो गई। बेहोश होने पर प्रेत-प्रहरी आए और उसके चेहरे पर बर्फ़ जैसा ठंडा द्रव डालकर उसे होश में लाए। उसके बाद उसे लगातार वही दंड बार-बार भोगना पड़ा, अपार पीड़ा के अनुभव से बार-बार गुज़रना पड़ा। यदि पहले ही यह परिणाम जान लिया होता, तो वह काम किया ही क्यों होता!

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा, “मनुष्यलोक में निकट संबंधियों के बीच यह यौन दुराचार आकाश और पृथ्वी को अस्वीकार्य है। यह अत्यंत जघन्य अपराध है। इसे निश्चित रूप से भारी और कठोर दंड दिया जाएगा; क्षमा का कोई अवसर नहीं है, ताकि परलोक के विधान की निष्पक्षता प्रकट हो।”

आज के लिए यहीं तक; किसी और दिन फिर आऊँगी।

मैंने परलोक के न्यायाधिकारी को प्रणाम कर विदा ली। उनके मार्गदर्शन के लिए धन्यवाद!

8/अश्लील सामग्री और वेबसाइटों में डूबे युवक की आशीषें और आयु पूरी तरह क्षीण हो गई; मृत्यु के समय उसकी उम्र बीस से अधिक, लेकिन तीस वर्ष से कम ही थी!

सभी बुद्धों और बोधिसत्त्वों का आभार! मैं, आ यू, श्वेत कमल पर सवार होकर चल पड़ी।

न्यायाधिकारी महोदय, अमिताभ बुद्ध! मैं, आ यू, हाथ जोड़कर प्रणाम करती हूँ!

आज परलोक के न्यायाधिकारी मुझे यौन दुराचार के नरकों में से विद्युत्-प्रकाश नेत्र नरक दिखाने ले गए। यह नरक उन जीवों के लिए है जिन्हें जीवनकाल में अश्लील पुस्तकें पढ़ना या अश्लील वेबसाइटें देखना पसंद था। आयु पूरी होने पर वे इस नरक में कर्मफल भोगने आते हैं। यहाँ आने वाले जीवों का दंड उनकी उम्र और कितनी बार उन्होंने ऐसी सामग्री देखी, इसके अनुसार तय होता है। न्यूनतम नरक-दंड 50 वर्ष है। ऐसी सामग्री में डूबने वाले की उम्र जितनी कम होती है, दंड उतना ही कठोर होता है।

अधिकांश लोग अश्लील वेबसाइटें देखने के बाद आगे अन्य यौन दुराचार भी करते हैं, जैसे हस्तमैथुन, अनुचित समय पर, अनुचित स्थान पर या अनुचित अंगों में यौन आचरण, यहाँ तक कि यौन उत्तेजना बढ़ाने वाले उपकरणों का उपयोग भी। ऐसी अश्लील पुस्तकें पढ़ना मनुष्य के अच्छे मूल स्वभाव को गंभीर रूप से नष्ट करता है, विशेषकर उन बच्चों का, जिनकी प्रकृति निर्मल और शरीर शुद्ध यांग का होता है। जब वयस्कों को भी ऐसी सामग्री नहीं देखनी चाहिए, तो अवयस्क बच्चों की बात ही क्या!

आज मनुष्यलोक में बहुत-से किशोर और युवा कंप्यूटर पर ऐसी अश्लील वेबसाइटें देखते हैं। जो भी कामवासना में डूबता है, उसके शरीर, मन और आत्मा—सभी के स्वस्थ विकास पर निश्चित रूप से सीधा प्रभाव पड़ता है। मनुष्य प्रतिदिन अपने विचारों और मनोभावों के सहारे जीवन जीता है। विचार और मनोभाव आचरण को प्रेरित करते हैं; आचरण शुभ और अशुभ कर्म बनाता है; शुभ और अशुभ कर्म भाग्य तय करते हैं; भाग्य कर्मबल उत्पन्न करता है; और कर्मबल उत्पन्न होने पर उसका फल भोगना पड़ता है।

बार-बार अश्लील वेबसाइटें देखने से मनुष्य के विचार सुस्त और धुँधले हो जाते हैं तथा कामकाज में स्पष्टता नहीं रहती। विशेषकर बच्चों पर इसका प्रभाव बहुत व्यापक होता है और यह मानव जन्म में साधना का अच्छा अवसर नष्ट कर देता है। कहावत है, 'कामवासना के चीनी अक्षर के सिर पर एक छुरी है।' प्राचीन काल से आज तक, देश-विदेश में कितने ही प्रसिद्ध लोग, सेनापति और सैनिक कामवासना की इस परीक्षा को पार नहीं कर पाए।

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा, "पहले तो अश्लील पुस्तकें या अश्लील वेबसाइटें देखने पर हर बार आशीषों और आयु का क्षय होता है; इसके बाद आगे बढ़कर अन्य यौन दुराचार करने पर भी इसी तरह आशीषें और आयु घटती हैं। यह धीमी आत्महत्या के समान है।

आज मनुष्यलोक में विज्ञान और तकनीक विकसित हैं। छोटे बच्चे भी कंप्यूटर इस्तेमाल करते हैं और बहुत-से बच्चे अश्लील वेबसाइटें देखते हैं। कुछ माता-पिता को इसका पता नहीं होता, क्योंकि वे स्वयं कंप्यूटर चलाना नहीं जानते। वे बच्चों को अपने आप कंप्यूटर सीखने देते हैं और कभी पूछताछ नहीं करते। प्रतिदिन काम में भी इतने व्यस्त रहते हैं कि बच्चों के मामलों पर ध्यान देने के लिए उनके पास अतिरिक्त समय ही नहीं होता। या जो कुछ अधिक संपन्न हैं, वे बच्चे की देखभाल के लिए घरेलू कर्मचारी रख लेते हैं, पर वह भी आवश्यक नहीं कि ठीक से देखभाल

करे। इसलिए इन माता-पिता की आशीषें भी घटती हैं। यह कहकर कि उन्हें पता नहीं था, वे इसकी उपेक्षा नहीं कर सकते। 'पालना, पर शिक्षा न देना, पिता का दोष है।' माता-पिता को स्वयं ध्यान देकर बच्चों को शिक्षित करना और उनके स्वस्थ विकास का मार्गदर्शन करना चाहिए। कुछ माता-पिता जानते हुए भी बच्चों को रोकते नहीं हैं, या इसे यौन शिक्षा मानकर उन्हें देखने की छूट देते हैं। कुछ तो यह भी कहते हैं कि समय बदल गया है, अब खुलापन है और विद्यालयों में छोटे बच्चों के लिए भी यौन शिक्षा अनिवार्य पाठ्यक्रम है। यह बहुत गंभीर रूप से गलत समझ है। परलोक का प्रशासन आशा करता है कि आ यू, आप इस बार नरक का भ्रमण करने के बाद मनुष्यलोक में लौटकर चेतन जीवों को कुमार्ग छोड़कर सन्मार्ग अपनाने की चेतावनी देंगी। वे मनुष्यलोक के कुछ दशकों के समय को सँजोएँ, समाज के आचरण और लोगों के मन को लाभ पहुँचाने वाले अधिक कार्य करें, और दूसरों तथा स्वयं को हानि पहुँचाने वाले काम न करें। अन्यथा, अगली साँस न आते ही मृत्यु के बाद वे मुझसे मिलने आ जाएँगे!"

अब दर्दनाक चीखें सुनाई देने लगी थीं। वे विद्युत्-प्रकाश नेत्र नरक में कठोर यातना भोगते जीवों की थीं। इस नरक में विशेष यंत्रों से युक्त बहुत-से बड़े कंप्यूटर लगे थे, प्रत्येक आत्मा के लिए एक कंप्यूटर। कंप्यूटरों में देखने के लिए सामग्री थी और हर आत्मा अपना कंप्यूटर देख रही थी। न देखती तो ठीक था, लेकिन देखते ही वह ज़ोर से चीख उठती थी।

एक पुरुष आत्मा बहुत युवा थी, देखने में बीस से अधिक और तीस से कम उम्र की लगती थी। उसके कंप्यूटर से काँटों के आकार की लाल विद्युत्-प्रभा निकलती थी, जो सीधे उसकी दोनों आँखों में फँसकर नेत्रगोलकों को चीरते हुए बाहर खींच लेती थी। ज़मीन पर हर ओर ताज़ा रक्त था और वह पुरुष आत्मा अपार पीड़ा तथा दुःख में दिखाई दे रही थी! यह वेबसाइटों पर अश्लील फ़िल्में, चित्र और उपन्यास आदि देखने का कर्मफल था।

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा कि इस पुरुष आत्मा ने बचपन से ही अश्लील वेबसाइटें देखना शुरू कर दिया था और वह हस्तमैथुन भी करता था। बहुत बार ये अपराध करने के कारण उसके पूरे जीवन की आशीषें बहुत जल्दी समाप्त हो गईं और वह नरक में गिर पड़ा। उसके माता-पिता अभी भी मनुष्यलोक में अपने प्रिय पुत्र को खो देने पर विलाप कर रहे थे।

पास में एक अपराधी आत्मा मेज़ पर बैठकर अश्लील पुस्तक पढ़ रही थी। उसे भी अभी देखे गए आँखों को काँटों से खींचने वाले कर्मफल जैसा ही, उतना ही कठोर दंड मिल रहा था, लेकिन दंड दिए जाने की गति कुछ धीमी थी। मैंने परलोक के न्यायाधिकारी से पूछा कि दंड की गति अलग क्यों है। उन्होंने कहा, "क्योंकि कंप्यूटर पर अश्लील वेबसाइटें देखने वाले सामान्यतः थोड़े समय में अधिक सामग्री देख लेते हैं और कुल मिलाकर उस पर समय भी अपेक्षाकृत अधिक बिताते हैं। लेकिन अश्लील पुस्तकें, चित्र-पत्रिकाएँ और उपन्यास पढ़ने वालों के पास केवल कुछ सीमित पुस्तकें ही होती हैं। यदि किसी जीव ने जीवनकाल में ऐसी सामग्री अधिक न देखी हो और बाद में उसे बोध हो जाए, वह पश्चात्ताप करके फिर अपराध न करे, और इसके उलट भलाई की प्रेरणा देने वाले इस लेख का भरपूर प्रचार करे, जीवों को अश्लील वेबसाइटें, डिस्क और पुस्तकें फिर न देखने के लिए समझाए, तथा अपने धन से यथाशक्ति अश्लील पुस्तकें और डिस्क आदि खरीदकर जला दे और इस तरह अच्छे कर्मों से अपने दोषों की भरपाई करे, तो वह इस नरक का कर्मफल भोगने से बच सकता है।"

परलोक के न्यायाधिकारी ने कठोर स्वर में कहा, "विद्युत्-प्रकाश नेत्र नरक में कर्मफल भोगने वाले जीवों को सामान्यतः अन्य यौन दुराचार के नरकों में भी जाकर आगे दंड भोगना पड़ता है। हस्तमैथुन करने वाले और अनुचित समय, अनुचित स्थान या अनुचित अंगों में यौन आचरण जैसे अपराध करने वाले मृत्यु के बाद निश्चित रूप से लोहे के गोले निगलने, ताँबे के खंभे का आलिंगन करने, यानहुआ फ़ानगुन आदि

नरकों में और अनुचित अंगों में यौन आचरण के विभिन्न अन्य नरकों में दंड भोगने के लिए डाले जाएँगे।”

आज के लिए यहीं तक। परलोक के न्यायाधिकारी को प्रणाम कर विदा लेती हूँ!

मैंने हाथ जोड़कर परलोक के न्यायाधिकारी को प्रणाम किया। उनका आभार व्यक्त करके श्वेत कमल पर सवार होकर लौट गई।

अश्लील वेबसाइटें और डिस्क सचमुच लोगों को बहुत गहरी हानि पहुँचाती हैं। विभिन्न महानरकों में रक्त की गंध मेरे, आ यू के, लिए बिल्कुल असहनीय थी। इन महानरकों के भ्रमण में मैंने इतने भयानक, रक्तरंजित दृश्य देखे—प्रेत-सैनिक अपराधी आत्माओं के सिर और हाथ काट रहे थे, मांस चीर रहे थे, पैर काट रहे थे और वे ज़ोर-ज़ोर से चीख रही थीं। घर लौटने के बाद मुझे अपने मन को फिर सँभालना पड़ता था, तभी मैं सामान्य हो पाती थी!

9/हस्तमैथुन का भयावह दंड—विद्युत्-नेत्र और लोहे के गोलों का नरक

सभी बुद्धों और बोधिसत्त्वों का आभार! मैं श्वेत कमल पर सवार होकर चल पड़ी।

न्यायाधिकारी महोदय, अमिताभ बुद्ध! मैं, आ यू, हाथ जोड़कर प्रणाम करती हूँ!

आज परलोक के न्यायाधिकारी मुझे यौन दुराचार के नरकों में से विद्युत्-नेत्र और लोहे के गोलों का नरक दिखाने ले गए। इस नरक में वे लोग आयु पूरी होने के बाद दंड भोगने आते हैं, जो जीवनकाल में अश्लील वेबसाइटें, अश्लील चित्र और अश्लील प्रकाशन देखने में डूबे रहते थे और कंप्यूटर के पास बैठकर उन्हें देखते हुए हस्तमैथुन करते थे। दंड की अवधि 800 वर्ष है। उसके बाद उनकी आत्मिक चेतना में हुए परिवर्तन को देखकर तय किया जाता है कि उन्हें यहाँ आगे भी दंड भोगना होगा या नहीं।

पहले बताया जा चुका है कि अश्लील प्रकाशन देखने पर हर बार पुण्यफल और आयु में एक महीने की कटौती होती है; केवल पहली बार देखने पर पुण्यफल और आयु में आधे महीने की कटौती होती है, उसके बाद हर बार एक महीने की। यदि कोई बार-बार इन्हें देखता है और साथ में हस्तमैथुन भी करता है, तो वास्तव में उसके जीवन भर का पुण्यफल बहुत जल्दी चुक जाता है।

यह नरक विद्युत्-प्रकाश नेत्र नरक के बगल में है और उससे भी करोड़ों गुना अधिक कष्टदायक है। यहाँ लगभग सभी किशोर और युवा हैं। आह! कितने दयनीय हैं, एक-एक की उम्र इतनी छोटी है। मुझे याद है, उनकी उम्र में मैं स्कूल में पढ़ती थी, भोली-भाली थी और कुछ नहीं जानती थी। ये पढ़ाई करने के बजाय नरक में दंड भोगने क्यों आ गए? एक ही बात कह सकती हूँ—इन्हें देखकर मन सिहर जाता है! लड़कों, अपना आचरण शुद्ध रखो और अपना मान करो। नरक में बहुत, बहुत कष्ट

है; यहाँ कभी मत आना। मनुष्यलोक में मन लगाकर पढ़ो, साधना करो और अपने सुंदर जीवन को सँजोओ।

यहाँ मुझे एक माध्यमिक विद्यालय का छात्र दिखाई दिया, जिसका चेहरा बहुत जाना-पहचाना लगा। उसे कहाँ देखा था? याद आया, लगभग छह महीने पहले अंतिम संस्कार गृह में उसका स्मृति-चित्र देखा था। छह महीने पहले मैं एक रिश्तेदार के अंतिम संस्कार की व्यवस्था कर रही थी। उसका शोक-कक्ष हमारे रिश्तेदार के शोक-कक्ष के ठीक बगल में था। उस समय हमारे यहाँ बहुत लोग थे, बच्चे भी बहुत थे, इसलिए वहाँ लोगों की गरमाहट और चहल-पहल थी; उसका शोक-कक्ष, इसके विपरीत, सूना-सूना था, केवल उसके माता-पिता और दो-तीन परिजन थे। तब हमारे रिश्तेदार आपस में कह रहे थे कि बच्चा बहुत छोटा था, पता नहीं क्या हुआ होगा। उसके माता-पिता की दशा बहुत दुखद थी और उसकी माँ अत्यंत शोकाकुल थी। मैंने केवल उसके स्मृति-चित्र के सामने कुछ बार अमिताभ बुद्ध का नाम लेकर उसे पुण्य समर्पित किया था। कभी नहीं सोचा था कि उससे नरक में भेंट होगी। मनुष्य का जीवन सचमुच अनित्य है!

न्यायाधिकारी ने बताया कि यह लड़का अपने माता-पिता की इकलौती संतान था। जीवनकाल में वह अश्लील वेबसाइटें और अश्लील प्रकाशन देखने में डूबा रहता था। उसे हस्तमैथुन की बुरी आदत भी लग गई थी और वह अपने बनाए उपकरणों का उपयोग भी यौन उत्तेजना के लिए करता था। उसने छह वर्ष की उम्र में हस्तमैथुन शुरू किया और दस वर्ष की उम्र में ही उसकी वृक्क-शक्ति क्षीण होने लगी थी। उसकी माँ उसे लेकर जगह-जगह प्रसिद्ध चिकित्सकों को खोजती फिरी। उसने बहुत-सी चीनी औषधियाँ खाईं; चलते समय उसे किसी बूढ़े की तरह छड़ी का सहारा लेना पड़ता था। उसने स्वयं अपने जीवन और स्वास्थ्य का आदर नहीं किया, यहाँ तक कि औषधियाँ लेते समय भी हस्तमैथुन करता रहा। इसलिए बारह वर्ष की उम्र में ही

उसका सारा पुण्यफल चुक गया और आयु समाप्त हो गई और उसे विद्युत्-नेत्र और लोहे के गोलों के नरक में 800 वर्ष का दंड भोगने के लिए डाल दिया गया।

मैंने देखा कि इस लड़के के पास कंप्यूटर के रूप में एक यातना-यंत्र था और एक अग्नि-सर्प उसके चारों ओर लिपटा हुआ था। कंप्यूटर से लाल प्रकाश वाले हुक निकले, जिन्होंने उसकी दोनों आँखें बाहर खींच लीं; रक्त छिटक गया। फिर अग्नि-सर्प उससे लिपटा और उसने उस पर हमला किया। [यहाँ नाबालिग पर यौन यातना के स्पष्ट विवरण हटाए गए हैं; केवल दृश्य का यही अंश सीमित है।] लड़का अभी प्रतिक्रिया भी नहीं कर पाया था कि दो बड़े, खूंखार भेड़ियों ने उस पर टूट पड़कर उसे काटा और उसके दोनों हाथ काट दिए। कितना भयावह था! यह यातनाओं में भी अत्यंत कठोर यातना थी, जिसकी पीड़ा सहना असंभव था।

मैंने न्यायाधिकारी से पूछा कि उसे एक ही समय में कई प्रकार के दंड क्यों भोगने पड़ रहे हैं। उसकी आँखें फिर से ठीक हो जाने के बाद उसे अग्नि-सर्प और जंगली भेड़ियों का दंड क्यों नहीं दिया जाता?

न्यायाधिकारी ने कहा, “ये दंड अलग-अलग बिल्कुल नहीं दिए जा सकते, क्योंकि जीवनकाल में वह कंप्यूटर देखते हुए वहीं उसके पास हस्तमैथुन करने लगता था, और फिर अपने बनाए यौन उत्तेजना के उपकरणों से दोबारा यौन दुराचार करता था। इसी कारण वह इतनी जल्दी नरक में कर्मफल भोगने आ गया। इस नरक का दंड पूरा करने के बाद उसे चीख-पुकार के महानरक में जाकर दंड भोगना जारी रखना होगा। हस्तमैथुन करके उसने समय से पहले ही अपना सारा पुण्यफल नष्ट कर लिया और अपने माता-पिता को गहरे दुःख और शोक में डाल दिया। सफेद बालों वाले माता-पिता को अपने काले बालों वाले पुत्र की अंतिम विदाई करनी पड़ी। वह माता-पिता के प्रति कर्तव्यहीन पुत्र था, इसलिए उसे यह दंड मिलता है। आज मनुष्यलोक में लोग बहुत छोटी उम्र से ही मर्यादा और धर्मसम्मत आचरण का पालन नहीं करते। वे माता-पिता की अवज्ञा करते हैं, उनसे उलझते हैं, उन्हें अपशब्द कहते हैं, यहाँ तक

कि मुक्कों और लातों से मारते हैं। उनका व्यवहार कुछ निकृष्ट पशु-पक्षियों से भी बुरा होता है। आकाश और धरती के बीच जो लोग माता-पिता के प्रति घोर कर्तव्यहीनता करते हैं, उन्हें मृत्यु के बाद यहाँ आकर दंड भोगना ही पड़ता है, ताकि उनकी आत्मिक चेतना का परिष्कार और मूल आत्मा की शुद्धि हो, जब तक कि वे पूरी तरह सच्चे मन से पश्चात्ताप करके स्वयं को सुधार न लें।"

"आज के लिए इतना ही। मेरे पास अभी आवश्यक काम हैं, आप किसी और दिन आइए।"

"मैं, आ यू, आपको प्रणाम करके विदा लेती हूँ। धन्यवाद, न्यायाधिकारी महोदय!"

10/सांसारिक आयु पूरी होने से पहले ही तीन हुन आत्माओं को हुक से पकड़ लेना!!!

बुद्ध की शक्ति के अनुग्रह के लिए कृतज्ञ हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ।

अमिताभ बुद्ध! मैं, आ यू, परलोक के न्यायाधिकारी के सामने हाथ जोड़ती हूँ।

आज न्यायाधिकारी मुझे यौन दुराचार के नरकों में से कोड़ों और डंडों का नरक दिखाने ले गए। कोड़ों और डंडों का नरक क्या है? जिन जीवों की सांसारिक आयु अभी पूरी नहीं हुई है, जो अब भी मनुष्यलोक में रहते हैं और यौन दुराचार करते हैं, उनकी आत्मिक चेतना का एक छोटा-सा भाग परलोक के दूत पकड़कर दंड देने के लिए नरक में ले आते हैं। मनुष्य में तीन हुन आत्माएँ और सात पो आत्माएँ होती हैं। परलोक के दूत अपराधी आत्मा की तीन हुन आत्माओं को पकड़कर दंड देने के लिए नरक में ले आते हैं। मनुष्यलोक में उन जीवों को चक्कर और सिरदर्द महसूस होता है; वे बहुत सुस्त, उनींदे और भ्रमित रहते हैं। कुछ लोगों को उस धुँधली चेतना की अवस्था में अपने पीटे जाने का अनुभव होता है, लेकिन अधिकांश लोग सोचते हैं कि वे कोई दुःस्वप्न देख रहे हैं। गंभीर स्थिति में उन्हें बुखार हो जाता है और बिस्तर पर लेटकर सोना पड़ता है। दंड पूरा करके मनुष्यलोक में लौटने पर कुछ लोगों के पूरे शरीर में तीव्र पीड़ा होती है, मानो दर्द हड्डियों तक उतर गया हो।

यह कोड़ों और डंडों का नरक सचमुच बहुत विशाल है! कहा जा सकता है कि जहाँ तक नज़र जाती है, इसकी सीमा दिखाई नहीं देती। मनुष्यलोक में समुद्र देखने की तरह इसका कोई किनारा नज़र नहीं आता। अब तक मैंने जितने नरक देखे हैं, उनमें यह सबसे बड़ा है। इस कोड़ों और डंडों के नरक में चीन, ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस, जापान, थाईलैंड, भारत, अफ्रीका, पाकिस्तान आदि अनेक देशों के लोग हैं

—बहुत-सी राष्ट्रीयताओं के लोग। एक अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि अनगिनत किशोर और छोटे बच्चे भी इस नरक में दंड भोग रहे हैं।

मैंने न्यायाधिकारी से पूछा कि यहाँ इतने सारे लोग क्यों हैं। यह नरक इतना विशाल है कि भय लगता है!

न्यायाधिकारी ने कहा, "विज्ञान और तकनीक के विकास के कारण ही मनुष्यलोक में कंप्यूटर का आविष्कार हुआ। आश्चर्यजनक संख्या में अश्लील वेबसाइटों ने किशोरों और छोटे बच्चों को दूषित और भ्रष्ट किया है। वे सभी यौन दुराचार कर रहे हैं और नरक में जाने के कारण बना रहे हैं। ऐसे अशुभ कर्म करने वाले जीवों की संख्या लगातार बढ़ती और तेज़ी से ऊपर जाती जा रही है। इसीलिए बुद्ध ने विशेष रूप से तुम्हें नरक का अवलोकन करने भेजा है, ताकि वापस जाकर तुम जीवों को पाँच शाश्वत सद्गुणों और आठ नैतिक गुणों का दृढ़ता से पालन करने की सीख दो। विशेषकर युवा यह बिल्कुल न समझें कि ये सब पुराने और अप्रचलित विचार हैं। उन्हें अपना आचरण शुद्ध रखना चाहिए, अपना मान करना चाहिए, कुमार्ग से सन्मार्ग पर लौटना चाहिए और बुराई छोड़कर भलाई अपनानी चाहिए। अन्यथा आगे चलकर वे नरक के क्रूर दंड से बच नहीं सकेंगे, और तब पछताने में बहुत देर हो चुकी होगी!"

तब मैंने देखा कि कोड़ों और डंडों के नरक में सभी जीवों को परलोक के दूत कोड़ों और डंडों से ज़ोर-ज़ोर से पीट रहे थे। यहाँ के दूत लगातार कोड़े और डंडे उठाकर अपराधी आत्माओं को मारते रहते हैं। अपराधी आत्माएँ पीड़ा से चीखती-चिल्लाती हैं और उनकी चीखों की लहरें एक के बाद एक उठती रहती हैं। इस मार का उद्देश्य अपराधी आत्माओं को अपनी गलतियों पर विचार करने के लिए प्रेरित करना है। थोड़ी-सी अपराधी आत्माएँ मनुष्यलोक में लौटकर होश में आने के बाद दृढ़ संकल्प से अपनी पुरानी गलतियाँ सुधार लेती हैं, लेकिन अधिकांश आत्माएँ मनुष्यलोक लौटने के बाद फिर वही अपराध करने लगती हैं।

मैं, आ यू, न्यायाधिकारी से पूछना चाहती हूँ कि मनुष्यलोक के जीवों को कैसे विश्वास दिलाया जाए कि 'परलोक के अटल विधान' नामक यह कृति आज के नरकों की पूर्णतः सत्य और वास्तविक स्थिति का वर्णन करती है? क्योंकि कुछ लोग सोच सकते हैं कि आ यू जो कहती है, वह उसकी अपनी कल्पना या मनगढ़ंत कहानी है। वे इसे उपन्यास की तरह पढ़ सकते हैं; लोगों को विश्वास दिलाना बहुत कठिन है।

न्यायाधिकारी ने कहा, "अदृश्य जगत में हर चीज़ का कारण और फल होता है। जो दिखाई नहीं देता, वह इसलिए झूठ नहीं हो जाता। हममें से कोई भी अपनी माँ को स्वयं को जन्म देते हुए नहीं देख सकता, फिर भी यह एक अटल सत्य है। किसी चीज़ का दिखाई न देना उसके अस्तित्वहीन होने का प्रमाण नहीं है। सिर से तीन ची की ऊँचाई पर देवात्माएँ हैं। इस विशाल लोकसमूह में बहुत-सी ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें हम देख नहीं सकते, पर वे हमारे जीवन से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई हैं, उनसे हमारा अटूट संबंध है। बात केवल इतनी है कि हमें बुद्धों, बोधिसत्त्वों, प्रेतों और देवताओं के अस्तित्व का बोध नहीं होता। प्रत्येक व्यक्ति के अवसर और पुण्यफल अलग होते हैं, इसलिए उसकी अनुभूतियाँ और अनुभव भी पूरी तरह समान नहीं होते। शुभ और अशुभ कर्मों के कारण और फल शरीर के साथ छाया की तरह चलते हैं। ऐसा नहीं कि फल नहीं मिलेगा; अभी उसका समय नहीं आया है। आकाश का जाल बहुत विशाल है; उसकी बुनावट विरल है, फिर भी उससे कुछ बचकर नहीं निकलता। आ यू, इस बार विभिन्न महानरकों की वास्तविक स्थिति देखने के लिए तुम्हारा आना भी बुद्ध के चयन और व्यवस्था से हुआ है। तुम शील का पालन करने वाली ऐसी बुद्ध-शिष्या हो जो इस दायित्व को सँभालने की योग्यता रखती है। सभी के हित के इस शुभ कार्य को पूरी निष्ठा और गंभीरता से पूरा करो।"

प्रोत्साहन देने के लिए धन्यवाद, न्यायाधिकारी महोदय। मैं, आ यू, इस पवित्र दायित्व को पूरा करने के लिए अपनी पूरी सामर्थ्य लगा दूँगी।

उसी समय मैंने परलोक के कुछ अधिकारियों को कोड़ों और डंडों के नरक की ओर आते देखा। आह! परलोक के सर्वोच्च अधिपति यमराज आए हैं। मैं, आ यू, हाथ जोड़कर परलोकाधिपति यमराज को प्रणाम करती हूँ! पता चला कि परलोक को इस कोड़ों और डंडों के नरक का और विस्तार करना है। परलोकाधिपति यमराज स्थल का निरीक्षण करने आए हैं। यमराज मनुष्यलोक के किशोरों द्वारा यौन दुराचार के अपराध किए जाने की इस गंभीर सामाजिक समस्या पर गहरी नज़र रख रहे हैं। अब स्पष्ट है कि यह केवल मनुष्यलोक की समस्या नहीं है; परलोक भी तुरंत इसकी चपेट में आ गया है और यहाँ भी विस्तार करना पड़ रहा है। मैंने आश्चर्य से कहा, "अभी नरक का यह स्तर इतना विशाल है कि इसकी कोई सीमा नहीं दिखती, फिर भी इसका और विस्तार करना होगा?"

परलोकाधिपति यमराज ने कहा, "मनुष्यलोक में लगातार नए किशोर उन जीवों की पंक्ति में शामिल हो रहे हैं जो यौन दुराचार से विरत रहने के शील का उल्लंघन करते हैं। वे अश्लील वेबसाइटें, अश्लील डिस्क और अश्लील प्रकाशन देखते हैं, हस्तमैथुन करते हैं, इत्यादि। उनकी सांसारिक आयु अभी पूरी नहीं हुई है, लेकिन यह समस्या उनके सद्गुण और शरीर दोनों को हानि पहुँचाती है, इसलिए कठोर दंड देना आवश्यक है। मनुष्यलोक में इन गंभीर समस्याओं के लिए दंड देने वाला कोई कानून नहीं है। केवल मुझे ही नरक का विस्तार करके जीवित लोगों की आत्माएँ पकड़कर लानी पड़ती हैं, ताकि इस कर्मफल का निपटारा हो। इन वर्षों में हमारे परलोक का विस्तार लगातार होता रहा है और काम का बोझ भी लगातार बढ़ता गया है। वर्तमान में यह कोड़ों और डंडों का नरक तुलनात्मक रूप से अब भी बहुत छोटा है। प्रतिदिन उमड़कर आने वाली अनगिनत अपराधी आत्माएँ इसमें कैसे समा सकती हैं? मैं तुम्हें बताता हूँ, जो लोग मनुष्यलोक में सार्वजनिक कर्तव्य और कानून का पालन करते हैं, बुद्ध के शीलों का पालन करते हैं और महान सदाचारी हैं, परलोक उन्हें बंदी नहीं बना सकता। लेकिन जिसने शील या कानून के उल्लंघन का कोई भी कार्य किया है, वह मेरे जीवन-मृत्यु और शुभ-अशुभ कर्मों के अभिलेख से अवश्य

ही बच नहीं सकता। मनुष्यलोक के कानून से बच निकलना आसान है, लेकिन परलोक के विधान से बचना असंभव है। जैसा कारण, वैसा फल। चाहे तुम आकाश के छोर पर हो या समुद्र के अंतिम किनारे पर, परलोक के दूत तुम्हें अवश्य खोज निकालेंगे—सिवाय इसके कि तुमने शीलभंग या अपराध किया ही न हो। आ यू, तुम्हें यह संदेश पहुँचाने का काम अच्छी तरह करना है। इस बार परलोक ने विशेष छूट देकर सारे गूढ़ रहस्य प्रकट कर दिए हैं, ताकि संसार के लोग नरक का सत्य जान सकें। इसका उद्देश्य यह आशा है कि जीव भटके हुए मार्ग से लौटें, शुभ कर्म करें और सद्गुण संचित करें। इससे मनुष्यलोक में विभिन्न घोर अशुभ कर्मों से उत्पन्न बड़ी आपदाओं को घटाया और दूर किया जा सकेगा, ताकि जीवों को भीषण विनाश न झेलना पड़े। वापस जाकर सभी को समझाओ कि वे पाँच शाश्वत सद्गुणों और आठ नैतिक गुणों का दृढ़ता से पालन करें, देश के कानून न तोड़ें, माता-पिता के प्रति कर्तव्यनिष्ठ और आज्ञाकारी रहें, शिक्षकों और बड़ों का आदर करें, शुचिता और मर्यादा बनाए रखें और फिर नरक के कारण और फल न रचें। अच्छा, मेरे पास अभी राजकीय काम हैं। तुम पहले मनुष्यलोक लौट जाओ।”

यमराज के प्रति कृतज्ञ हूँ! न्यायाधिकारी के प्रति कृतज्ञ हूँ! अमिताभ बुद्ध!

11/न्यायाधिकारी ने गंभीरता से उत्तर दिया, “परलोक में हमारे परलोकाधिपति ने देखा कि मनुष्यलोक से सहन-सीमा से अधिक दूषित ऊर्जा निकल चुकी है!”

सभी बुद्धों के आशीर्वाद के लिए कृतज्ञ हूँ! आज तो मैं लगभग लेख लिख ही नहीं पाती। इन दिनों आ यू को नरक जाने से रोकने के लिए बहुत-सी बाधाएँ आ रही हैं। सचमुच एक लहर शांत नहीं होती कि दूसरी उठ जाती है। पहले कंप्यूटर में समस्या हुई और अक्षर टाइप नहीं हो रहे थे। फिर मेरे सोते समय एक अमानवीय सत्ता ने ज़ोरदार हस्तक्षेप करके मेरी जीवन-ऊर्जा खर्च करवाई। उस समय मुझे थोड़ा बुखार और सिरदर्द महसूस होने लगा था, और मैं बहुत थक गई थी। आज सुबह तक मेरी दशा ज़ुकाम जैसी हो गई थी। जब भी मुझे ज़ुकाम होता है, यदि मैं लगन से मंत्र जपूँ तो भी ठीक होने में कम-से-कम सात दिन लगते हैं; अन्यथा आधा महीना लगता है।

अभी मैंने मनोबल के साथ स्वयं से कहा कि आज मैं बीमार पड़कर नहीं रहूँगी, नरक अवश्य जाऊँगी और लेख अवश्य लिखूँगी; मुझे विश्वास है कि मैं यह कर सकती हूँ। फिर बैठकर महामयूरी मंत्र का जप शुरू किया। लगभग 30 मिनट बाद बुखार उतर गया, नाक नहीं बह रही थी, गले का दर्द कम होने लगा और सिरदर्द भी नहीं रहा। ज़ुकाम में सुधार शुरू हो गया था। महामयूरी विद्याराज्ञी और दसों दिशाओं के सभी बुद्धों के आशीर्वाद के लिए असीम कृतज्ञ हूँ। मैं, आ यू, बुद्ध के उपकार का प्रतिदान करने के लिए इस पवित्र कार्य को अच्छी तरह पूरा करने का हर संभव प्रयास करूँगी! अन्यथा मैं सभी बुद्धों के आशीर्वाद और संरक्षण के सामने लज्जित होऊँगी!

श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ। न्यायाधिकारी महोदय, अमिताभ बुद्ध!

आज न्यायाधिकारी मुझे यौन दुराचार के नरकों में से एक—आत्माओं और तलवार-पुष्पों का नरक—दिखाने ले गए।

मैंने न्यायाधिकारी से पूछा, "आत्माओं और तलवार-पुष्पों का नरक क्या है?"

न्यायाधिकारी ने गंभीरता से उत्तर दिया, "यह नरक उन जीवों के लिए है जिनकी सांसारिक आयु अभी पूरी नहीं हुई है और जो मनुष्यलोक में हस्तमैथुन तथा यौन दुराचार में डूबे रहते हैं। पुरुष प्रतिदिन या बार-बार जानबूझकर अलग-अलग स्त्रियों को अपना यौन साथी बनाते हैं और इस पर इतराते हैं; स्त्रियाँ प्रतिदिन या बार-बार जानबूझकर पुरुष यौन साथी बदलती हैं और स्वयं को बहुत महान समझती हैं। यौन दुराचार से विरत रहने के शील का उल्लंघन करने वाले और यौन दुराचार में डूबे ऐसे जीव आकाश और धरती की यिन और यांग की सम्यक् ऊर्जा के संतुलन को गंभीर रूप से नष्ट करते हैं। क्योंकि हर बार यौन कर्म के समय जीवों के विचारों से यौन दुराचार की कामना की बहुत-सी ऊर्जा निकलती है। ऐसी दूषित ऊर्जा प्रेतों, सूक्ष्म आत्मिक सत्ताओं आदि को आकर्षित करती है। यौन कर्म करने वाले लोग अनजाने में हानि झेलते हैं और उन्हें इसका बोध नहीं होता। जब इस प्रकार की दूषित ऊर्जा बहुत अधिक और प्रबल होकर अत्यंत विशाल शक्ति का रूप ले लेती है, तब उसे निष्प्रभावी करके संतुलन बनाने के लिए मनुष्यलोक में अनगिनत प्रकार की आपदाएँ अवश्य आती हैं।

मनुष्य ब्रह्मांड के प्राकृतिक नियमों का गंभीर उल्लंघन कर रहे हैं, लेकिन मनुष्यलोक में इसके लिए कोई कानूनी दंड नहीं है। कुछ पश्चिमी देशों के कानून तो विवाह के बिना साथ रहने आदि को वैध करने का समर्थन भी करते हैं। ऐसे कानून बनाने वालों को असीम और अंतहीन नरक-फल भोगने होंगे। मनुष्यलोक में ऐसे कानून पूरी तरह निरस्त होने के बाद ही उनके नरक के कर्मफल का अंत हो सकेगा।

ठीक ही कहा गया है कि बोधिसत्त्व कारण से डरते हैं और सामान्य जन फल से। हमें प्रतिदिन अपना हर कार्य कर्म के कारण और फल के अनुरूप करना चाहिए और सावधान रहना चाहिए कि क्षणभर की असावधानी भविष्य के जन्मों में अशुभ फल न ले आए। परलोक में हमारे परलोकाधिपति ने देखा कि मनुष्यलोक से सहन-सीमा से अधिक दूषित ऊर्जा निकल चुकी है, और इन अशुभ कर्मों में से बहुत-से नाबालिग किशोरों द्वारा किए गए हैं। इसलिए हमारे परलोकाधिपति ने नरकों में और अधिक नए नरक बनवाए, ताकि ऐसे शीलभंग करने वाले जीवों को दंड दिया जा सके जिनकी आयु अभी समाप्त नहीं हुई है। आशा है कि मनुष्यलोक के जीवित लोगों की आत्माओं को पकड़कर नरक में दंड देने से संसार के लोग सचेत होंगे, उनके पापकर्म क्षीण होंगे और आयु पूरी होने के बाद नरक में उनके दंड की अवधि भी घटेगी।"

आ यू को इतने विस्तार से समझाने के लिए धन्यवाद, न्यायाधिकारी महोदय। मैंने फिर बहुत कुछ सीखा। आपका सचमुच बहुत धन्यवाद!

जब मैं आत्माओं और तलवार-पुष्पों के नरक पहुँची, तो देखा कि यह नरक भी बहुत विशाल है। वहाँ बहुत-से छोटे बच्चे भी थे, विशेषकर पश्चिमी देशों के; वे भी साथ-साथ दंड भोग रहे थे। उनकी संख्या सचमुच बहुत अधिक थी! ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस और चीन के लोग भी थे। कुल मिलाकर लगभग हर राष्ट्रीयता और जातीय समूह के लोग दिखाई दे रहे थे।

उसी समय मैंने देखा कि परलोक के दूत कई लड़कों के आत्मिक शरीरों को घसीटकर बाहर दंड देने ले जा रहे थे। स्त्री आत्माओं को भी दंड दिया जा रहा था। [यहाँ नाबालिगों से जुड़ी यौन हिंसा के स्पष्ट विवरण हटाए गए हैं; यह अंश मूल का पूर्ण अनुवाद नहीं है।] यहाँ अपराधी इतने अधिक थे कि रोने और चीखने की आवाज़ें आकाश को हिला रही थीं। उन्हें सुनकर मुझे बहुत बेचैनी हुई। थोड़ी देर देखकर मैं तुरंत बाहर निकल आई; मेरा मन सचमुच बहुत व्यथित था। यदि संसार के लोगों को

समझाने के काम में अपना थोड़ा-सा योगदान देना न होता, तो मैं, आ यू, यहाँ बिल्कुल नहीं आना चाहती!

मनुष्यलोक में इस दंड को भोगने वाले जीवों को ऐसा लगता है जैसे उन्हें बुखार हो; वे बिस्तर पर धुँधली चेतना में बेसुध सोए रहते हैं। उनकी तीन हुन आत्माएँ पकड़कर नरक ले जाई गई होती हैं, इसलिए ऐसे लोग सामान्य जीवन भी नहीं जी पाते। कुछ लोग सोचते हैं कि वे दुःस्वप्न देख रहे हैं, लेकिन यह दुःस्वप्न से कहीं अधिक कष्टदायक होता है। अधिकांश लोग शरीर की उस पीड़ा को महसूस कर सकते हैं, विशेषकर शरीर के निचले हिस्से में तेज़ दर्द और तीव्र चुभन से होने वाली तकलीफ़ को। थोड़े-से लोग नरक का दंड भोगने के बाद शारीरिक पीड़ा से सचेत होकर अपनी गलतियाँ सुधारते हैं और नया जीवन शुरू करते हैं। न्यायाधिकारी ने कहा कि परलोक के यमराज इस प्रकार की गंभीर सामाजिक समस्याओं को बहुत महत्व देते हैं। अपराधी आत्माओं को दंड देने का उद्देश्य बुरी सामाजिक प्रवृत्तियों के लगातार फैलने से मनुष्यलोक में आने वाली गंभीर आपदाओं को रोकना है।

मैं, आ यू, न्यायाधिकारी से फिर पूछना चाहती हूँ, "ऐसा क्यों लगता है कि यौन दुराचार के इन नरकों के दंड बहुत आधुनिक हैं? यहाँ कंप्यूटर जैसे यातना-यंत्र, प्रकाश छोड़ने वाले बर्फ़ के दर्पण आदि चीज़ें भी हैं?" न्यायाधिकारी ने कहा, "नरक मनुष्यलोक का प्रतिबिंब है। मनुष्यलोक के जीव जैसे ही शीलभंग से जुड़ी कोई आधुनिक वस्तु बनाते हैं, नरक में भी ऐसे जीवों को दंड देने के लिए उसी तरह का यातना-यंत्र तुरंत जोड़ दिया जाता है। आज मनुष्यलोक की सौंदर्य-चिकित्सा कितनी उन्नत है! कुछ धन खर्च करके कभी भी पूरे शरीर और चेहरे का रूप इस तरह बदला जा सकता है कि किसी को पता न चले। मनुष्यलोक में कोई छल करके बच निकलने में सफल हो सकता है, लेकिन परलोक के विधान के सामने केवल चेहरा और रूप बदलने की बात ही क्या—यदि कोई कई जन्म भी ले चुका हो, तब भी हमारे परलोकाधिपति उसे तुरंत खोजकर वापस बंदी बनाकर ला सकते हैं और विधि के

अनुसार उसे मृत्युदंड दे सकते हैं।[9] आ यू, वापस जाकर मनुष्यलोक के जीवों को अच्छी तरह समझाओ कि उन्हें सार्वजनिक कर्तव्य और कानून का पालन करना चाहिए, माता-पिता के प्रति कर्तव्यनिष्ठ और आज्ञाकारी रहना चाहिए तथा मानवता, न्यायपरायणता, मर्यादा, विवेक और विश्वसनीयता का पालन करना चाहिए। यह मत कहो कि ये पुराने, घिसे-पिटे उपदेश हैं। जान लो कि ये वे नियम हैं जो आकाश और धरती की स्वाभाविक गति और परिवर्तन का संतुलन बनाए रखते हैं। जो इनका पालन नहीं करेगा, वह प्रकृति द्वारा बाहर कर दिया जाएगा और कर्मफल का दंड पाएगा।

अच्छा! आज के लिए इतना ही। कृपया पहले वापस जाइए, अगली बार फिर आइए।"

मैं, आ यू, साष्टांग प्रणाम करके न्यायाधिकारी से विदा लेती हूँ!

12/दाँतेदार पहियों, भेड़ियों और सर्पों का नरक

बुद्ध की शक्ति से मिले आशीर्वाद और संरक्षण के लिए कृतज्ञ हूँ! कृतज्ञता व्यक्त करने को सचमुच बहुत कुछ है!

बुद्ध के प्रति कृतज्ञ हूँ! बुद्ध द्वारा छोड़े गए अनुत्तर महान धर्म के सूत्रों के प्रति कृतज्ञ हूँ!

मुझे, आ यू को, बौद्ध सूत्र बहुत प्रिय हैं; विशेषकर मूल सूत्रों का सीधे अध्ययन करना अच्छा लगता है। ऐसा लगता है मानो मैं स्वयं धर्मसभा में उपस्थित हूँ, जैसे 2500 वर्ष पहले भारत के गृध्रकूट पर्वत पर पहुँच गई हूँ और स्वयं बुद्ध के मुख से अनुत्तर, अद्भुत बोधि-धर्म की वाणी सुन रही हूँ। उस अनुभूति का वर्णन साधारण शब्दों में नहीं किया जा सकता। सभी के लिए अच्छा होगा कि वे नियमित रूप से मूल सूत्रों का अध्ययन करें। जीवन के बहुत-से गहरे और सूक्ष्म प्रश्नों के उत्तर सूत्रों में एक-एक करके मिल सकते हैं।

सभी सूत्रों में बुद्ध हमें यही सिखाते हैं कि हम स्वयं को अच्छा कैसे बनाएँ। शील का पालन बोधि का कारण है; छह पारमिताओं और असंख्य साधनाओं का अभ्यास, लगन से साधना करना और अंततः अनुत्तर सम्यक् संबोधि प्राप्त करना—इनमें से प्रत्येक बात का विवरण बहुत स्पष्ट रूप से बताया गया है। शुरुआत में कुछ धर्म-सहचर शायद सूत्रों का अर्थ न समझें। वास्तव में इसमें कोई बात नहीं; बस प्रतिदिन अध्ययन जारी रखें, तो धीरे-धीरे समझ अवश्य आने लगेगी। सबसे आवश्यक है प्रतिदिन निरंतरता बनाए रखना। जब मैंने अध्ययन शुरू किया था, तो हर बार पढ़ते समय अनुभूति अत्यंत विलक्षण होती थी, लेकिन पढ़ने के तुरंत बाद सब कुछ पूरी तरह भूल जाती थी। मन में बस यही रहता था कि यह अत्यंत विलक्षण है; पर उसमें क्या कहा गया था, यह बता नहीं पाती थी। कर्मावरण कितने भारी थे! लेकिन मुझे

सूत्र प्रिय थे, इसलिए भूल जाने पर भी प्रतिदिन उनका पाठ करना था। इस तरह कुछ वर्ष बीतने के बाद मैंने पाया कि मुझे कुछ बातें याद रहने लगी थीं, या अलग-अलग समय और स्थानों में कुछ सिद्धांत अपने आप समझ में आने लगे थे। इसलिए निरंतरता बहुत महत्वपूर्ण है। मेरी कामना है कि हम सभी, जब तक हमारे पास स्वस्थ मनुष्य-शरीर है, सूत्रों का अधिक अध्ययन अवश्य करें। जीवन अनित्य है; एक साँस न आए तो अगला जन्म आ जाता है। यदि वास्तव में बुद्ध के उपकार का प्रतिदान करना है, तो निष्ठापूर्वक साधना और शील का पालन करने से ही हम सच्चे बुद्ध-शिष्य बनते हैं! आइए, हम सब मिलकर लगन से प्रयास करें और शील का पालन करें!

श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ! अमिताभ बुद्ध! मैं, आ यू, न्यायाधिकारी के सामने हाथ जोड़ती हूँ!

आज न्यायाधिकारी मुझे दाँतेदार पहियों, भेड़ियों और सर्पों का एक नरक दिखाने ले गए। इस नरक में दंड भोगने आने वाले जीव ये हैं: वे पुरुष जिन्हें जीवनकाल में एक ही समय पर दो स्त्रियों के साथ यौन कर्म करना पसंद था; या वे स्त्रियाँ जो एक ही समय पर दो पुरुषों के साथ यौन कर्म करती थीं। हम पहुँच गए, और फिर तीखी, हृदयविदारक चीखें सुनाई दीं!

मैंने एक पुरुष को देखा। वह नग्न था और ऐसा लग रहा था कि उसे एक घूमने वाले पहिए से बाँधा गया है। पहिए के दोनों ओर दो लचीले सर्प थे, जो लगभग उसके शरीर से चिपके हुए थे: एक लाल था और दूसरा गहरे नीले-हरे रंग का। एक सर्प उसे कसकर लपेटे हुए था और छोड़ नहीं रहा था। उसका मुँह पुरुष के सिर, चेहरे और कानों को काटकर टुकड़े-टुकड़े नोच रहा था; पूरी ज़मीन रक्त से भर गई थी। दूसरा सर्प उसके निचले भाग को काट रहा था। पुरुष अत्यंत पीड़ा में दिखाई दे रहा था और कराहते हुए चीख रहा था।

फिर मैंने बगल की स्त्री को देखा। वह भी नग्न थी और एक घूमने वाले पहिए से बँधी हुई थी। पहिए के दोनों ओर लोहे के दो अत्यंत क्रूर जंगली भेड़िए उसे लगातार नोच-काट रहे थे। एक भेड़िया उसकी छाती को काट रहा था और दूसरा उसके निचले गुप्त भाग को। स्त्री ज़ोर-ज़ोर से सहायता के लिए पुकार रही थी, लेकिन कोई ध्यान नहीं दे रहा था। कुल मिलाकर दृश्य अत्यंत रक्तरंजित था। अभी देखे गए उस पुरुष और स्त्री की उम्र बहुत अधिक नहीं थी; वे तीस से अधिक और चालीस से कम उम्र के थे और नरक में कर्मफल भोगने आ गए थे। कितनी दुखद दशा थी!

न्यायाधिकारी ने कठोर मुख-मुद्रा के साथ मुझसे कहा, “ऐसे जीव केवल अपनी आत्मिक प्रकृति ही नष्ट नहीं करते, बल्कि समाज के आचरण को भी गंभीर रूप से बिगाड़ते हैं। इसलिए परलोक को उन्हें कठोर दंड देना ही पड़ता है। उन्हें यहाँ 500 वर्ष दंड भोगना होगा, फिर न्याय-निर्णय के लिए दूसरे नरकों में भेजा जाएगा। अब इस प्रकार के जीव भी अधिकाधिक बढ़ रहे हैं। हाल ही में इस नरक को फिर बड़ा किया गया है। आगे तुम्हें अधिक बार आकर अवलोकन करना चाहिए। यौन दुराचार के इस नरक के अतिरिक्त तुम्हें दूसरे नरकों की वास्तविक स्थिति भी देखकर लिखनी है, ताकि जल्द-से-जल्द पुस्तकें छापी जा सकें और मनुष्यलोक के जीवों का हित हो। इससे वे यथाशीघ्र बुराई छोड़कर पश्चात्ताप कर सकेंगे, शुभ कर्म करके पुण्य संचित कर सकेंगे, नरक में जाने की संभावना घटा सकेंगे और मनुष्यलोक की आपदाएँ भी कम कर सकेंगे।”

जी, न्यायाधिकारी महोदय, मैं, आ यू, आपकी आज्ञा का पालन करूँगी! मैं अपनी पूरी शक्ति लगाकर यह कार्य अवश्य करूँगी।

श्वेत कमल पर सवार होकर लौटती हूँ।

13/परलोक के सर्वोच्च अधिपति फ़ेंगदू सम्राट से पहली भेंट

‘परलोक के अटल विधान’ वह पुस्तक है जिसे लिखने में मैंने अपनी पूरी शक्ति लगा दी है! यद्यपि मेरी शिक्षा अधिक नहीं है और मेरी लेखन-शैली साधारण है, फिर भी सभी सत्त्व बुद्ध के शीलों का भली-भाँति पालन करें—यह मेरी सदैव की, पूर्णतः सच्ची हार्दिक इच्छा है।

हाल में मैंने एक धर्मसहचरी को लगातार गुरु तान की निंदा करते देखा। उनका रवैया बहुत आक्रामक था और उनकी बातों में किसी गुंजाइश की जगह ही नहीं थी! गुरु तान का मुझ आ यू पर उपकार है। उनके लेखों से मैंने बुद्धधर्म की बहुत-सी सजीव शिक्षाएँ सीखी हैं और मैं उनकी बहुत आभारी हूँ! इसके अलावा, परलोक के अधिपति यमराज ने स्वयं उन्हें ‘परलोक के अटल विधान’ की पांडुलिपि की समीक्षा करने के लिए नियुक्त किया है, और उन्होंने भी प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लिया है। सत्त्वों को दुःख से मुक्त करके सुख दिलाने का कोई कार्य हो, तो गुरु तान निश्चित ही उसे करने से मना नहीं करेंगे। यदि किसी की निंदा के कारण ‘परलोक के अटल विधान’ का प्रकाशन और प्रसार प्रभावित होता है, तो यह निश्चय ही एक बहुत गंभीर समस्या होगी।

इसलिए मैं, आ यू, अपनी ओर से जितना हो सके उतना योगदान देना चाहती हूँ। इस समय गुरु तान का समर्थन करने के लिए आगे आना चाहती हूँ और स्वयं परलोक के न्यायाधिकारी से पूछकर सारी बात स्पष्ट करवाना चाहती हूँ।

बुद्ध की शक्ति के अनुग्रह के लिए कृतज्ञ हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ।

मैंने परलोक के न्यायाधिकारी के सामने हाथ जोड़े!

आज मैं परलोक के न्यायाधिकारी से पूछना चाहती थी: “क्या गुरु तान जो कहते हैं, वह सद्धर्म है?”

परलोक के न्यायाधिकारी ने उत्तर दिया: “गुरु तान जो कहते हैं, वह सद्धर्म है। इसमें संदेह करने की आवश्यकता नहीं है। अन्यथा परलोक के अधिपति उन्हें पांडुलिपि की समीक्षा का काम क्यों सौंपते? आ यू, तुम्हारा ऐसा प्रश्न करना मानो परलोक के अधिपति की प्रज्ञा की उपेक्षा करना है।”

“ओह! क्षमा कीजिए, न्यायाधिकारी महोदय! मुझ आ यू ने अनुचित प्रश्न किया। कृपया मेरा अपराध क्षमा करें।”

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: “उस समय, जब बुद्ध बोधिवृक्ष के नीचे बुद्धत्व प्राप्त करने ही वाले थे, मार ने आकर उन्हें बहुत बाधित किया। बुद्ध ने अपनी समाधि की स्थिर शक्ति तथा करुणा के पुण्य और दिव्य सामर्थ्य से मार की सेना को पीछे हटा दिया। मार विवश होकर पीछे हट गया, लेकिन जाते समय उसने प्रतिज्ञा की: ‘अभी मैं तुम्हारी समाधि की शक्ति को नष्ट नहीं कर सकता। भविष्य में जब धर्म के ह्रास का युग आएगा, तब मैं अपने पुत्रों और पौत्रों को तुम्हारे वस्त्र पहनाकर तुम्हारे धर्म को नष्ट करने भेजूँगा।’ इसके बाद ही मार क्रोध से भरा हुआ वहाँ से चला गया। उस समय बुद्ध की आँखों से करुणा के आँसू बह निकले। वास्तव में बुद्ध को इस बात की चिंता नहीं थी कि मार आकर सद्धर्म को नष्ट करेगा। उन्हें मार के उन पुत्रों और पौत्रों पर दया आ रही थी, जिन्हें बुद्धधर्म को नष्ट करने और सद्धर्म की निंदा करने के बाद नरक के असीम और अनंत कर्मफल भोगने पड़ेंगे। परिनिर्वाण से पहले बुद्ध ने अपने शिष्यों को यह भी उपदेश दिया था कि आने वाली पीढ़ियों के बौद्ध शिष्यों को शील को अपना गुरु मानना चाहिए और व्यक्ति के बजाय धर्म का आश्रय लेना चाहिए। सबसे महत्त्वपूर्ण यह देखना है कि कोई जो धर्म बता रहा है, वह बुद्ध के सूत्रों के अनुरूप है या नहीं। ‘शूरंगम सूत्र’ में कहा गया है: ‘मेरे इस कथन के अनुरूप जो कहा जाए, वह बुद्ध का वचन कहलाता है; जो इसके अनुरूप न हो, वह

मार का वचन है।' सद्धर्म के युग में, जब बुद्ध स्वयं उपस्थित थे, तब भी मार आकर बाधा डालता था। फिर आज धर्म के ह्रास के युग की तो बात ही क्या है! मिथ्या उपदेश देने वाले गुरु गंगा की रेत के कणों जितने असंख्य हैं। जहाँ सद्धर्म होगा, वहाँ मार अवश्य होगा। यह भी साधना के मार्ग पर आध्यात्मिक क्षमता को माँजने और उन्नत करने की परीक्षा का एक अवसर है। बुद्ध के समय में उनके छोटे चचेरे भाई देवदत्त ने भी उनकी निंदा की, हर जगह उनके कार्यों को बिगाड़ा और उन्हें हानि पहुँचाने के षड्यंत्र रचे। बाद में देवदत्त को दंड भोगने के लिए यहाँ नरक में आना पड़ा।"

तभी अचानक परलोक का एक अधिकारी आकर सूचना देने लगा: "फ़ेंगदू सम्राट का आदेश है कि जीवित मनुष्य शांगगुआन युहुआ तत्काल उनके सामने उपस्थित हों।" आह! मैं चौंक उठी! फ़ेंगदू सम्राट यहाँ के सर्वोच्च शासक हैं। वे मुझ आ यू से मिलना चाहते हैं—आखिर कौन-सी बड़ी बात हो गई? मैं तुरंत परलोक के न्यायाधिकारी के साथ चल पड़ी।

हम राजसभा के विशाल कक्ष में पहुँच गए! मैं तुरंत घुटनों के बल बैठकर फ़ेंगदू सम्राट को प्रणाम करने लगी।

"दक्षिण जम्बूद्वीप के चीन देश की जीवित सामान्य स्त्री शांगगुआन युहुआ, फ़ेंगदू सम्राट के सम्मुख सिर झुकाकर प्रणाम करती है! कृपा करके फ़ेंगदू सम्राट मेरे अपराध क्षमा करें।"

मेरे सामने फ़ेंगदू सम्राट राजसी दरबारी वस्त्र पहने, सिर पर रत्नजटित मुकुट धारण किए, ऊँचे आसन पर बैठे थे। उनका मुख गहरा काला था और भाव अत्यंत गंभीर। उन्हें देखकर मन में आतंक और भय उत्पन्न होता था।

मैं सभा-कक्ष में लगातार घुटनों के बल बैठी रही। न उठी, न सिर उठाकर उनकी ओर देखने का साहस हुआ।

तब फ़ेंगदू सम्राट ने बोलना आरंभ किया: "मैं तुम्हारे आने का उद्देश्य जान चुका हूँ, इसलिए कृपा करके तुम्हें अपने सम्मुख बुलाया है। मनुष्यलोक के श्री तान, जिनका उपनाम वेनशु मोचिए है, सद्धर्म बताते हैं, धर्म के ह्रास के युग के सत्त्वों को शिक्षा देते हैं और लोगों के चित्त को शुद्ध करते हैं। आज मनुष्यलोक ऐसी स्थिति में पहुँच गया है जहाँ नैतिक धारणाएँ दिन-प्रतिदिन गिरती जा रही हैं और कर्म तथा उसके फल की शिक्षा का गंभीर अभाव है। लोग नहीं जानते कि भलाई का फल भला और बुराई का फल बुरा होता है। इसलिए वे किसी संकोच के बिना उन्मुक्त विचारधारा का व्यापक आचरण करते हैं—जीवहत्या, यौन दुराचार और व्यक्तियों की निंदा करते हैं, और इसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता मानते हैं। वे नहीं जानते कि वे दूसरों और पवित्र शिक्षाओं की निंदा का अपराध कर चुके हैं। श्री तान जो बताते हैं, वह लोगों के चित्त को बचाने, उन्हें ऊपर उठाने और अपनी भूलें सुधारकर नया जीवन आरंभ करने का सद्धर्म है। जो कोई बुद्ध द्वारा बताए गए सद्धर्म की रक्षा और सहायता करता है, मैं उसके पुण्य का लेखा बढ़ाकर उसके अनुसार उसे पुरस्कृत कर सकता हूँ। यदि कोई बुद्ध की शिक्षाओं के अनुसार जीवन भर आचरण करे और उनका उल्लंघन न करे, तो भले ही वह उनका प्रचार न करके केवल अपनी साधना करे, उसे भी निश्चित रूप से नरक में दुःख भोगने नहीं आना पड़ेगा। यदि वह न केवल स्वयं जीवन भर उनका पालन करे और उल्लंघन न करे, बल्कि एक से दूसरे तक पहुँचाते हुए अन्य लोगों को भी बताए और उनका प्रसार करे, तो उसके शुभफल और आयु अवश्य बढ़ेंगे, और उसका लाभ उसकी आने वाली संतान तथा वंशजों को भी मिलेगा। यदि कोई स्वयं पालन न करे और जानबूझकर सद्धर्म को नष्ट करने तथा उसकी निंदा करने में भी लगे, तो इस जीवन में उसके शुभफल और आयु निश्चित रूप से घटेंगे। आयु पूरी होने पर वह जीभ खींचने वाले नरक और चीख-पुकार के नरक में जाएगा, और उसे आँखें खोदकर निकालने, हृदय नष्ट करने, कान काटने आदि नरक की क्रूर यातनाएँ भी भोगनी होंगी। जहाँ तक दंड की अवधि का प्रश्न है,

जब तक सद्धर्म की निंदा करने वाली इन बातों पर विश्वास करने वाले सभी सत्त्वों में फिर से सम्यक् श्रद्धा उत्पन्न न हो जाए और वे पुनः सद्धर्म की साधना आरंभ न कर दें, तब तक प्रतीक्षा करनी होगी। उसके बाद ही निंदा करने वाली उस अपराधी आत्मा को नरक से बाहर निकलने का अवसर मिल सकता है। इसके बाद मनुष्य के रूप में जन्म लेने पर उसे नीच माने जाने वाले परिवेश में जन्म, अपूर्ण इंद्रियाँ, दोनों आँखों का अंधापन, बहरापन, दुर्बल और दुबला शरीर, अथवा दरिद्रता और हीन सामाजिक स्थिति, खराब रहने की परिस्थितियाँ, आवश्यक वस्तुओं का अभाव, पारिवारिक कलह और तरह-तरह की असफलताओं जैसे कठिन कर्मफल भोगने पड़ेंगे। तुम शीघ्र लौटकर मेरे कहे हुए शब्द लिखो। आशा है कि इससे हठपूर्वक मोह में पड़े सत्त्वों को समझाया जा सकेगा कि वे सद्धर्म की निंदा न करें, लौट आएँ और पश्चात्ताप करें।”

मैंने फ़ेंगदू सम्राट, यमराज और सभी प्रधान न्यायाधिकारियों को साष्टांग प्रणाम करके धन्यवाद दिया!

श्वेत कमल पर सवार होकर लौटती हूँ।

14/विद्युत्-प्रकाश की स्क्रीन—विद्युत्-युक्त बर्फ़ की सुइयाँ छोड़ने वाला नया नरक

बुद्ध की शक्ति के अनुग्रह के लिए कृतज्ञ हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ।

मैंने परलोक के न्यायाधिकारी के सामने हाथ जोड़े!

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा कि आज वे मुझे विद्युत्-प्रकाश की स्क्रीन वाला नरक दिखाने ले जाएँगे।

विद्युत्-प्रकाश की स्क्रीन वाला नरक क्या है? यह उन लोगों के लिए है जिन्होंने जीवित रहते अश्लील पत्रिकाएँ, अश्लील डिस्क, अश्लील चित्र, अश्लील लघु फ़िल्में, अश्लील ध्वनियाँ और बातें आदि बनाने का अपराध किया था। कुल मिलाकर ये ऐसे अश्लील उत्पाद हैं जो मनुष्यलोक के सत्त्वों के मन में दूषित कल्पनाएँ या सीधे यौन दुराचार के विचार पैदा कर सकते हैं। ऐसे उत्पाद जानबूझकर कंप्यूटर की वेबसाइटों पर डाल दिए जाते हैं, ताकि सत्त्व उन्हें अपनी इच्छा से देखें। इससे मनुष्यलोक के सत्त्वों के विचार दूषित होते हैं और वे यौन दुराचार का पापकर्म करते हैं। अथवा जो लोग सत्त्वों के विचारों को विचलित करने वाले ऐसे अश्लील उत्पाद वेबसाइटों पर दोबारा साझा करना पसंद करते हैं, उन्हें भी आयु पूरी होने पर इस नरक में आकर दंड भोगना पड़ता है।

इस नरक में दंड भोगने आने वाले सभी सत्त्वों को तब तक रहना पड़ता है, जब तक उनके बनाए अश्लील उत्पाद वेबसाइटों से पूरी तरह मिट न जाएँ। इन्हें दोबारा साझा करने वाले सत्त्वों को भी तब तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है, जब तक उनसे प्रभावित सत्त्व बुरे मार्ग को छोड़कर सही मार्ग पर न लौट आएँ और ऐसे अश्लील

उत्पाद देखने से उत्पन्न यौन दुराचार फिर कभी न करें। तभी वे इस नरक से बाहर निकल सकते हैं।

मैंने परलोक के न्यायाधिकारी से पूछा: "इस नरक में तो काफ़ी लोग हैं? इन्हें बनाने वाले इतने सारे लोग हैं!"

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: "इन्हें दोबारा साझा करने वाले सभी सत्त्व भी इसी अपराध के भागी हैं और उन्हें इस नरक में दंड भोगना पड़ता है। बेशक, उनका अपराध इन्हें बनाने वालों से कुछ हल्का होता है। कंप्यूटर की वेबसाइटें थोड़े ही समय में अनगिनत भोले और नासमझ बच्चों के मन में विष भर सकती हैं और उनके मानसिक विकास के मार्ग को गंभीर रूप से बिगाड़ सकती हैं। हर व्यक्ति के बालमन का विकास उसके वयस्क जीवन के आचरण की आधारशिला होता है, लेकिन आज लोगों को इतनी छोटी उम्र में ही ऐसी बुरी लत लग जाती है। जैसा कि 'क्षितिगर्भ सूत्र' में कहा गया है: 'यदि बुरे संयोग मिलें, तो हर विचार के साथ बुराई बढ़ती जाती है।' आदत स्वभाव बन जाती है। बड़े होने के बाद पश्चात्ताप का भाव जगाकर अपनी भूलें सुधारना बहुत कठिन होता है, जब तक कि किसी महान कल्याणमित्र का उपदेश न मिल जाए। आज संसार में कंप्यूटर तकनीक दिन-प्रतिदिन बदल रही है। कर्मफल की शिक्षा के अभाव में अब अनगिनत नाबालिग बच्चे हर दिन वेबसाइटों पर ऐसे अश्लील उत्पाद देख रहे हैं। इन सभी कारणों और कर्मफलों की ज़िम्मेदारी ऐसे अश्लील उत्पाद बनाने और दोबारा साझा करने वालों को उठानी होगी। इसलिए परलोक ने विशेष रूप से ऐसा नरक बनाया है, ताकि ऐसे सत्त्वों को कठोर दंड दिया जा सके।"

मैंने देखा कि इस नरक के सत्त्व पूरी तरह नग्न होकर एक-एक कंप्यूटर की ओर जा रहे थे। उन्हें कंप्यूटरों में जो कुछ दिखाई दे रहा था, वह सब अश्लील सामग्री थी, लेकिन मुझे कंप्यूटर के रूप वाले यातना-यंत्र दिखाई दे रहे थे। ये कंप्यूटर आग जैसे लाल थे और चमकते प्रतीत होते थे। जब अपराधी आत्माएँ कामासक्त होकर

कंप्यूटर के पास जातीं, तो कंप्यूटर आग जैसे लाल काँटे छोड़ता और तुरंत उनकी दोनों आँखें खींचकर निकाल लेता। विद्युत्-युक्त बर्फ़ की सुइयाँ भी उन्हें इस तरह बेधतीं कि उनके पूरे शरीर से रक्त बहने लगता। पहले सिर में चुभतीं, फिर नीचे की ओर बढ़ते हुए पूरे शरीर को बेध देतीं। कुल मिलाकर दृश्य अत्यंत भीषण था! ऐसी क्रूर यातनाएँ भी अनिश्चित काल तक सहनी पड़ती थीं, जब तक कि वे अश्लील उत्पाद संसार से पूरी तरह मिट न जाएँ। यह तो सचमुच असीम और अनंत पीड़ा थी! पहले इस नरक से बाहर चलें! यह दृश्य देखा नहीं जा रहा था!

परलोक के न्यायाधिकारी ने आगे बताया: “आ यू, ‘परलोक के अटल विधान’ के पुस्तक रूप में प्रकाशित होने से पहले तुम्हें इसकी सामग्री वेबसाइट पर सार्वजनिक कर देनी चाहिए, ताकि जिन सत्त्वों का इससे कर्म-संबंध हो, वे एक-दूसरे को बताएँ और इसे दोबारा साझा करें। इस तरह लोगों के चित्त को शुद्ध करने का प्रभाव उत्पन्न हो सकेगा। इसे दोबारा साझा करने वाले सत्त्वों के परलोक में रखे व्यक्तिगत शुभ-अशुभ कर्मों के लेखे में एक महान पुण्यकर्म दर्ज किया जाएगा। यह माता-पिता की श्रद्धापूर्वक सेवा करने के पुण्य के बराबर होगा, कोई अंतर नहीं होगा।

सभी बुराइयों में यौन दुराचार सबसे आगे है, और सभी सदाचरणों में माता-पिता की श्रद्धापूर्वक सेवा सबसे पहले है। मेरे स्वामी, परलोक के अधिपति, मनुष्यलोक के उन लोगों की सबसे अधिक सराहना और प्रशंसा करते हैं जो माता-पिता की श्रद्धापूर्वक सेवा करते हैं। आज यहीं तक। अब तुम लौट जाओ।”

मैंने हाथ जोड़कर परलोक के न्यायाधिकारी से विदा ली! श्वेत कमल पर सवार होकर लौट गई।

15/परलोक की सामान्य बस्ती के जीवन से रहस्य का परदा उठाना

जब से ‘परलोक के अटल विधान’ प्रकाशित होना शुरू हुआ है, कुछ लोगों ने मान लिया है कि ये लेख आत्माओं से लेखनी चलवाकर या किसी आत्मा के आवेश में लिखे गए हैं। इसलिए यहाँ एक बार फिर ज़ोर देकर कहना आवश्यक है कि मैं, आ यू , ध्यान में बैठकर शांत होने के बाद अपने मन को भटकते विचारों से मुक्त करती हूँ, तभी उसकी शक्ति को एकाग्र कर पाती हूँ! इसके बाद बुद्ध की शक्ति के आशीर्वाद के सहारे, पूरी तरह सजग अवस्था में, श्वेत कमल पर सवार होकर एक क्षण में नरक पहुँच जाती हूँ। इसलिए ‘परलोक के अटल विधान’ की सामग्री को बार-बार नरक जाकर सत्यापित किया गया है और संदर्भ के रूप में इसका मूल्य अत्यंत ऊँचा है! यदि कोई भूल हो, तो वह मेरी साधना सीमित होने के कारण गलत सुन लेने से हुई है। लेकिन बुद्धों और बोधिसत्त्वों के लिए कार्य करने तथा सभी सत्त्वों के हित के लिए शील का पालन करने की मेरी भावना बिल्कुल सच्ची है!

इसलिए ‘परलोक के अटल विधान’ लोक-प्रचलित आत्मा-लेखन, आत्मा के आवेश, छीलिंग या सपनों के आधार पर लिखी गई रचनाओं से बिल्कुल अलग है। सभी पाठकों से विनम्र अनुरोध है कि इस बात पर ध्यान दें।

बुद्ध की शक्ति के अनुग्रह के लिए कृतज्ञ हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ।

मैंने हाथ जोड़कर परलोक के न्यायाधिकारी को प्रणाम किया!

आज मैं परलोक के न्यायाधिकारी से पूछना चाहती थी: “क्या परलोक की सामान्य बस्ती प्रेत योनि के अंतर्गत आती है?”

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: “सामान्य बस्ती प्रेत योनि के अंतर्गत आती है। अर्थात् वे सत्त्व जो जीवित रहते मनुष्य के रूप में न अच्छे थे, न बुरे; जिन्होंने न कोई बहुत बड़ा पुण्यकर्म किया, न कोई बहुत बड़ा पापकर्म, और अपना पूरा जीवन साधारण ढंग से बिता दिया। उनकी आयु पूरी होने पर काले और श्वेत वूचांग पहले उन्हें न्यायसभा के विशाल कक्ष में ले जाते हैं, जहाँ उनके शुभ-अशुभ कर्मों का लेखा देखा जाता है। जिन सत्त्वों के कर्म नरक में ले जाने वाले नहीं हैं, उन्हें इस सामान्य बस्ती में स्थान दिया जा सकता है। जिनके बड़े पुण्यकर्म हैं, वे ऊँची गति में जा सकते हैं या मनुष्यलोक में लौटकर जन्म ले सकते हैं।”

आज हम सामान्य बस्ती देखने जा रहे थे। आह! एक विचार जितने समय में ही हम सामान्य बस्ती में पहुँच गए। यहाँ का अनुभव नरक की तुलना में बहुत, बहुत अच्छा था। कम-से-कम यहाँ यातनाएँ तो नहीं भोगनी पड़ती थीं। यहाँ रहने वाले सत्त्वों का जीवन मनुष्यलोक जैसा ही दिखाई देता था। सभी को बहुत स्वतंत्रता थी। सामान्य बस्ती के सत्त्व अपनी इच्छा से आ-जा सकते थे और साधारण खरीद-बिक्री तथा व्यापार कर सकते थे।

यहाँ बड़े लोग, बच्चे और दुकानें थीं। आकाश धूसर था। न सूर्य था, न ही तारे और चाँद। उनके कपड़े गहरे रंग के दिखाई देते थे। उनके शरीर रक्त-मांस के नहीं थे और उनकी आकृतियाँ कुछ हल्की, तैरती-सी लगती थीं। मनुष्यलोक के सत्त्वों के चलने में जैसा धरती के गुरुत्वाकर्षण का एहसास होता है, वैसा यहाँ नहीं था। यह उनमें एक अंतर था।

मैं आगे जाकर देखने लगी। सामने प्रेत योनि के सामान्य निवासियों का एक समूह इकट्ठा था। आह! यह तो एक लंबे गलियारे के आकार का विविध सामानों का खुदरा बाज़ार था। गलियारा बहुत लंबा था और उसके दोनों ओर सामान बेचने के स्टॉल थे। प्रत्येक स्टॉल पर 2 या 3 दुकानदार थे, और कुछ पर केवल 1 व्यक्ति कारोबार कर रहा था।

यहाँ खाने-पीने का एक क्षेत्र भी था। चलो देखें, वे क्या खाते हैं। आह! मुझे ऐसा क्यों लग रहा था कि उनके किसी भी भोजन में गर्माहट नहीं थी, सब कुछ बर्फ़ जैसा ठंडा था? सभी खाद्य पदार्थ मानो बहुत हल्के थे। कहना चाहिए कि देखने में वे एक वस्तु जैसे लगते थे, लेकिन जब मैंने उन्हें हाथ में उठाया, तो किसी भौतिक वस्तु के भार का एहसास ही नहीं हुआ। मनुष्यलोक में एक गिलास पानी उठाने पर उसका वज़न महसूस होता है, लेकिन यहाँ की वस्तुओं में ऐसा एहसास नहीं था। अब यह भी देखें कि सामान्य बस्ती के आत्मिक शरीर भोजन कैसे करते हैं! वे मानो भोजन को खींचकर ग्रहण कर रहे थे, और बहुत जल्दी ऐसा कर रहे थे। तभी अचानक मैंने एक महिला दुकानदार को मुझे पुकारते सुना।

“नमस्ते, दुकानदार जी! यह क्या है?”

“यह अभी-अभी बनाया हुआ शीतल और तरावट देने वाला सूप है। इसे पी लीजिए, फिर अगले साल पीना होगा।”

वाह! साल में एक बार पीना? लिंगझी में भी ऐसा प्रभाव नहीं होता! एक बार पीकर पूरे साल काम चल जाए—इसमें तो कमाल का पोषण है!

तभी उस महिला दुकानदार का हाथ मेरे हाथ से छू गया।

उसने कहा: “युवती, तुम्हारे शरीर का तापमान तो बहुत ऊँचा है! अपना ध्यान रखना। आओ, एक कटोरा पी लो! इसे पीने के बाद तापमान कम हो जाएगा और आराम महसूस होगा।”

मैंने मुस्कराकर कहा: “धन्यवाद! आज पीने का मन नहीं है।”

मनुष्यलोक में बचपन से ही मेरे शरीर का तापमान अपेक्षाकृत कम रहा है, लेकिन सामान्य बस्ती में आकर उसे ऊँचा माना जा रहा था।

रास्ते भर आत्मिक शरीर अपनी इच्छा से खरीदारी करते दिखाई दिए। इस सामान्य बस्ती का वातावरण कुछ साधारण और नीरस-सा था। यहाँ भी यिन का प्रभाव महसूस होता था, लेकिन नरक से यह बहुत, बहुत अच्छा था।

मैंने परलोक के न्यायाधिकारी से पूछना चाहा: “सामान्य बस्ती के सत्त्वों की औसत आयु कितनी होती है? क्या वे भोजन को खींचकर ग्रहण करते हैं?”

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: “आयु की बात करें तो सबसे कम 300 वर्ष और सबसे अधिक 1500 वर्ष होती है। जिनमें कुशल-मूल हैं और जो साधना करते हैं, उनका यह जीवन पहले समाप्त हो सकता है और वे ऊपर मनुष्यलोक या देवलोक में जा सकते हैं। जहाँ तक भोजन का प्रश्न है, उन्हें मनुष्यलोक के सत्त्वों की तरह रोज़ 3 बार खाने की आवश्यकता नहीं होती। वे स्पर्श-आहार पर निर्भर रहते हैं और भोजन का सार ग्रहण करते हैं। एक बार खाने पर लगभग 1 वर्ष तक पेट भरा रह सकता है। यदि मनुष्यलोक में उनके वंशज अप्रैल के छिंगमिंग पर्व पर 1 बार पूजन और अर्पण करें, तो उससे वे 1 वर्ष तक तृप्त रह सकते हैं। लेकिन यह अवश्य याद रखना कि पूर्वजों के पूजन में कभी मांसाहार अर्पित न किया जाए। ऐसा करने से प्रेत योनि में रहने वाले पूर्वजों के पापकर्म बढ़ेंगे। मनुष्यलोक के वंशजों को शाकाहारी भोजन, ताज़े फूल और फल जैसी वस्तुओं से पूजन करना चाहिए। बेशक, सबसे अच्छा है सूत्रों का पाठ करना, बुद्ध का नाम स्मरण करना, पुण्य संचित करना और भले कार्य करना, फिर उस पुण्य को पूर्वजों के पालन-पोषण के उपकार का प्रतिदान करने के लिए समर्पित करना, ताकि वे शीघ्र ऊँची गति प्राप्त कर सकें।

आज यहीं तक। लौटकर संसार के लोगों को बताना मत भूलना कि वे अब पूर्वजों के पूजन में मांसाहार अर्पित न करें। इससे केवल पूर्वजों को कष्ट ही होता है।” इस बार परलोक की सामान्य बस्ती की यात्रा और वहाँ की सीख ने सचमुच मेरी आँखें खोल दीं। मेरा ज्ञान और अनुभव बढ़ा और मैंने बहुत-सी बातें सीखीं। मनुष्य के मरकर प्रेत बनने के बाद वास्तव में अस्तित्व का एक दूसरा क्षेत्र और संसार होता है, जहाँ वह अपने अभी पूरे न हुए कर्मफलों वाला जीवन जारी रखता है।

मैं परलोक के न्यायाधिकारी की शिक्षाओं के लिए आभारी हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर घर लौट गई।

16/1900 से भी अधिक वर्ष पहले पश्चिमी हान काल में कामोत्तेजक चित्र बनाने वाले आज तक महानरक में कैद होकर दुःख भोग रहे हैं!

बुद्ध के करुणामय विविध उपायों के लिए आभार, जिनसे वे सत्त्वों का मार्गदर्शन और उद्धार करते हैं तथा सभी के लिए साधना के तरह-तरह के अवसर बनाते और जुटाते हैं। साधना में आगे न बढ़ना पीछे हटना है। सचमुच लज्जा आती है—कल रात मुझे नरक जाना था, लेकिन थकान के कारण टाल दिया। इस अवसर पर बुद्धों और बोधिसत्त्वों के सम्मुख अपनी भूल स्वीकार करके क्षमा प्रार्थना करती हूँ। बुद्ध ने अनेक सूत्रों में हम सभी को सिखाया है कि कैसे परिश्रमपूर्वक आगे बढ़ें और कैसे शील का पालन करें। लज्जित हूँ, लज्जित हूँ!

'अवतंसक सूत्र' में बुद्ध ने कहा: "हे बुद्धपुत्र! बोधिसत्त्व महासत्त्व दस प्रकार से अथक प्रयत्न करते हैं। वे दस कौन-से हैं? सभी सत्त्वों को शिक्षा देने में अथक प्रयत्न; सभी धर्मों में गहराई तक प्रवेश करने में अथक प्रयत्न; सभी लोकों को विभूषित और शुद्ध करने में अथक प्रयत्न; बोधिसत्त्वों द्वारा सीखी जाने वाली सभी साधनाओं का अभ्यास करने में अथक प्रयत्न; सभी सत्त्वों की बुराई मिटाने में अथक प्रयत्न; तीनों दुर्गतियों के समस्त दुःख शांत करने में अथक प्रयत्न; सभी मारों को परास्त करने में अथक प्रयत्न; सभी सत्त्वों के लिए निर्मल नेत्र बनने का प्रण निभाने में अथक प्रयत्न; सभी बुद्धों की पूजा और उन्हें अर्पण करने में अथक प्रयत्न; तथा सभी तथागतों को प्रसन्न करने में अथक प्रयत्न। ये दस हैं। यदि बोधिसत्त्व इन धर्मों में दृढ़ता से स्थित रहें, तो वे तथागत की अनुत्तर वीर्य पारमिता को पूर्ण रूप से प्राप्त करेंगे।" मुझे लगता है कि अध्ययन और साधना में परिश्रमपूर्वक आगे बढ़ने के मामले में मुझमें अब भी कमियाँ हैं। सचमुच मुझे दुगुने उत्साह से आगे बढ़ना चाहिए।

अब 'महारत्नकूट सूत्र—बोधिसत्त्वपिटक सभा' में देखें। बुद्ध ने कहा: "न भय है, न आतंक, न घबराहट, न आशंका। चार प्रकार का दृढ़ और साहसी सामर्थ्य विकसित होता है। बोधिसत्त्वपिटक के सूक्ष्म धर्ममार्गों में परिश्रम और बढ़ता है। न उनका त्याग होता है, न उन्हें छोड़ा जाता है, न उनसे दूरी होती है, न अलगाव। प्रखर श्रद्धायुक्त समझ, दृढ़ श्रद्धायुक्त समझ, दृढ़ सहनशीलता और दृढ़ सम्यक् प्रयास पूर्ण रूप से सिद्ध होते हैं। शारिपुत्र, मैं तुम्हारे लिए दृढ़ क्षान्ति और दृढ़ सम्यक् प्रयास के उपायों के दृष्टांत बताऊँगा, ताकि बोधिसत्त्व दृढ़ क्षान्ति और दृढ़ सम्यक् प्रयास प्राप्त करें और शरीर तथा प्राणों की चिंता किए बिना बोधिसत्त्व मार्ग पर चलें।"[10] सचमुच लज्जा आती है। लगातार कुछ बार नरक जाने पर ही मैं थक गई। बुद्धों और बोधिसत्त्वों की शिक्षा के महान उपकार के सामने लज्जित हूँ। मुझे शील का भली-भाँति पालन करने के लिए निरंतर प्रयास करना चाहिए, परिश्रमपूर्वक साधना करनी चाहिए और बुद्धों तथा बोधिसत्त्वों के उपकार का प्रतिदान करना चाहिए। यह भी कामना है कि सभी असीम सामर्थ्य प्राप्त करें, साहस और उत्साह के साथ आगे बढ़ें, सम्यक् प्रयास में तत्पर रहें और उनका शील उज्ज्वल मणि के समान हो।

प्रस्थान से पहले मैंने देखा कि मेरे पैरों के नीचे एक और कमल आ गया था। धर्मपालों के प्रति आभार! बुद्ध और बोधिसत्त्व सदा करुणामय होते हैं! आज एक और कमल होने से गति बहुत तेज़ थी। एक क्षण में ही नरक पहुँच गई। मैंने परलोक के न्यायाधिकारी को प्रणाम किया। वे पहले से मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे।

आज मैं परलोक के न्यायाधिकारी से उन मालिकों के कर्मफलों के बारे में पूछना चाहती थी जो अश्लील पुस्तकें लिखते, छापते और बेचते हैं, अश्लील फ़िल्में बनाते हैं तथा अश्लील डिस्क तैयार करते हैं। अश्लील फ़िल्मों में अभिनय करने वालों के कर्मफल और कामोत्तेजक औषधियों जैसी यौन दुराचार में सहायक वस्तुएँ बेचने के कर्मफल भी जानना चाहती थी।

परलोक के न्यायाधिकारी तुरंत मुझे एक नरक दिखाने ले गए जिसका नाम था 'यानहुआ फ़ानगुन नरक'। बातचीत के दौरान ही हमें एक अलग तरह का वातावरण

महसूस होने लगा। वह बहुत नकारात्मक था; कहना चाहिए कि वह कामुकता का प्रभाव था। पूरे नरक में पहले ही असीम यिन का प्रभाव भरा हुआ था, लेकिन इस ओर के नरक में कामुकता का प्रभाव यिन के प्रभाव से बहुत, बहुत अधिक था—मानो उसने यिन के प्रभाव को ढक लिया हो। साथ ही एक तीखी, सड़ी और मछली जैसी दुर्गंध भी थी। यदि सबको बताना न होता, तो मैं सचमुच वहाँ देखने नहीं जाना चाहती।

हम पहुँच गए। फिर वही ज़ोर-ज़ोर से चीखने और पीड़ा से कराहने की आवाज़ें थीं। यहाँ बहुत-सी स्त्री और पुरुष आत्माएँ थीं। वे आपस में बातें नहीं करती थीं, न संवाद करतीं, न हालचाल पूछतीं और न एक-दूसरे को ढाँढ़स बँधाती थीं। यहाँ तक कि एक साधारण-सा वाक्य, "क्या तुम्हें कष्ट हो रहा है?" भी नहीं कहती थीं, क्योंकि सभी निरंतर नरक का कर्मफल भोग रही थीं।

मैंने उनमें से एक आत्मा को बहुत छोटी-सी कुर्सी पर देखा। वह दोनों हाथ कुर्सी पर टिकाकर उल्टी खड़ी थी—सिर नीचे और पैर ऊपर। यह मुद्रा बहुत ही असामान्य थी! फिर वह नीचे गिरकर मर जाती, दोबारा जीवित होती और फिर वही करती। परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा कि यह जीवित रहते अश्लील पुस्तकों में ऐसे कृत्यों का वर्णन करने का शौक रखने का कर्मफल था, जिनमें स्त्री उल्टी होती है और पुरुष खड़ा होकर यौन दुराचार करता है।

एक आत्मा लगातार एक हाथ के सहारे ज़मीन पर टिकी हुई थी। मैं देख सकती थी कि वह इतनी थक चुकी थी कि पसीना बह रहा था और वह काँप रही थी। जैसे ही वह रुकती, तुरंत एक विशाल पक्षी उड़कर नीचे आता और उसे खा जाता। फिर वह जीवित होती और दंड दोबारा शुरू हो जाता। पता चला कि यह उन लोगों का दंड था जिन्हें जीवित रहते यौन दुराचार की विशेष रूप से अतिरंजित क्रियाओं का वर्णन करने का शौक था, जैसे कोड़े मारना और इंद्रिय-उत्तेजना की तलाश करने वाले कृत्य।

एक आत्मा ज़मीन पर बिना रुके लगातार घूम रही थी। जैसे ही वह रुकती, तुरंत बहुत-से विशाल भेड़िए आकर उसे चीर-फाड़कर खा जाते। यह जीवित रहते कामोत्तेजना बढ़ाने वाली कुछ मतिभ्रमकारी नशीली दवाएँ तैयार करने का शौक रखने का कर्मफल था।

एक आत्मा को दंडस्वरूप लगातार एक पैर पर खड़ा रखा जा रहा था। ऐसा लगता था मानो वह संभोग की कोई क्रिया कर रही हो। जैसे ही वह रुकती, एक बड़ा लौह-पक्षी तुरंत झपटकर नीचे आता और टक्कर मारकर उसे मार डालता। उसके बाद हवा चलने पर वह फिर जीवित हो जाती और वही दंड दोबारा भोगती। यह भी अश्लील पुस्तकें लिखने का कर्मफल था।

एक आत्मा लगातार बिना रुके दवाएँ खा रही थी। रुकते ही उसे तुरंत बहुत तेज़ उल्टियाँ होने लगतीं। अधमरी हो जाने के बाद उसे फिर से खाने के लिए मजबूर किया जाता। यह जीवित रहते विशेष रूप से कामोत्तेजक और कामवासना भड़काने वाली दवाओं पर शोध करने तथा उन्हें बनाने का कर्मफल था।

एक आत्मा हाथ में मशाल की नली जैसा यातना-यंत्र लिए लगातार अपने जननांग जला रही थी। जब तक जननांग जलकर नष्ट और गल नहीं जाते, यह चलता रहता। हवा चलने पर वे फिर ठीक हो जाते और वह फिर उसी चक्र में बार-बार कष्ट भोगती। यह जीवित रहते यौन दुराचार में सहायक उपकरण बेचना पसंद करने का कर्मफल था।

दो आत्माएँ साथ मिलकर कुछ छोटे, कंपन करने वाले साँप पकड़े हुए अपने ही जननांगों के पास खुद को यातना दे रही थीं। दोनों अपने जननांगों के चूर-चूर होकर सड़ने की भीषण पीड़ा सह रही थीं। वे दोनों जीवित रहते विशेष रूप से यौन उत्पाद बेचने वाले कारोबारी थे।

एक आत्मा बहुत छोटी, नुकीली और तपती कुर्सी पर बैठी थी और लाल तपकर आग उगलती मेज़ पर कुछ लिख रही थी। मैंने उसके विचार ग्रहण करने का प्रयास

किया। पता चला कि वह मन में सोच रही थी कि अश्लील पुस्तक कैसे लिखे। जैसे ही वह लिखने लगती, उसके दोनों हाथ तुरंत जलकर नष्ट हो जाते। फिर वह दोबारा जीवित होकर उसी अग्नि-दंड को भोगती। यह भी तरह-तरह की अश्लील पुस्तकें लिखने का कर्मफल था।

इस ओर कुछ स्त्री और पुरुष आत्माएँ मानो उन अश्लील पुस्तकों को बहुत सराहते हुए देख रही थीं। (विपरीतबोध और मिथ्या कल्पनाओं के कारण उनके मन कामवासना से भरे हुए थे, इसलिए उन्हें अश्लील पुस्तकें दिखाई देती थीं, जबकि मुझे एक कोरे कागज़ जैसी वस्तु दिखाई दे रही थी।) यहाँ एक विशाल कंप्यूटर जैसी दिखने वाली छपाई की मशीन थी। जब वे अश्लील पुस्तकें छापना चाहतीं, तो यह विशाल मशीन उन्हें अपने भीतर खींच लेती। सभी को मशीन में से गुज़ारकर कुचल दिया जाता और उनका शरीर मांस की लुगदी बन जाता। रक्त के छींटे उड़ते और वे बेतहाशा चीखती-चिल्लातीं। उस चरम पीड़ा को न शब्दों में कहा जा सकता था, न सहा जा सकता था। एक ही दिन में उन्हें एक करोड़ बार यह दंड भोगना पड़ता था। यहाँ पहुँचकर मैं और नहीं देख सकी। मुझे स्वयं भी असाधारण कष्ट महसूस होने लगा। ये वे भारी कर्मफल थे जो जीवित रहते अश्लील फ़िल्में बनाने और अश्लील डिस्क तैयार करने वालों को भोगने पड़ते थे।

मैंने एक गहरी साँस ली और फिर परलोक के न्यायाधिकारी से पूछा: “इन अपराधी आत्माओं को आखिर कितने वर्षों तक यह कर्मफल भोगना होगा?”

परलोक के न्यायाधिकारी ने उत्तर दिया: “यह कहना कठिन है कि उन्हें कितने समय तक कर्मफल भोगना होगा। मूलतः इतना कहा जा सकता है कि जब उनकी लिखी और छापी हुई अश्लील पुस्तकें, उनकी बनाई हुई अश्लील फ़िल्में और डिस्क, तथा उनके बनाए हुए कामोत्तेजक, पुरुषत्व बढ़ाने और कामवासना को उकसाने वाले सभी प्रकार के औषधीय पदार्थ मनुष्यलोक से पूरी तरह लुप्त हो जाएँगे, तभी उनके नरक से निकलने का दिन आ सकेगा। यदि वे फिर मनुष्यलोक में जन्म भी लें,

तो उन्हें अत्यंत निम्न और तिरस्कृत स्थिति का कर्मफल अवश्य भोगना होगा। दंड की वास्तविक और निश्चित अवधि केवल बुद्ध और बोधिसत्त्व ही बता सकते हैं। अब इस नरक में कई नए स्तर बनाए गए हैं और तरह-तरह के दंड भी बढ़ाए गए हैं। पहले इसका क्षेत्र इतना विशाल नहीं था। अब तकनीक विकसित हो गई है; यौन दुराचार से जुड़ी ऐसी वस्तुओं की छपाई और उत्पादन बहुत तेज़ गति से तथा चौंका देने वाली मात्रा में होते हैं। मनुष्यलोक में यौन सामग्री की दुकानें भी बहुत बड़ी संख्या में खुल गई हैं। अपराध और शीलभंग करने के कारण नरक में धकेले जाने और कष्ट भोगने वालों की संख्या गिनना सचमुच कठिन है। वास्तव में नरक मनुष्यलोक का प्रतिबिंब है। मनुष्यलोक में शीलभंग की कोई नई वस्तु आते ही, उसके कर्मफल की आवश्यकता के अनुरूप नरक में तुरंत नया निर्माण हो जाता है। अपराध करने वाले जीव अपनी आयु समाप्त होने पर यहाँ आकर दुःखद कर्मफल भोगते हैं।"

मैंने कहा: "ये अंतहीन दंड क्या अवीचि नरक जितने ही पीड़ादायक नहीं हैं?" परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: "यहाँ का कष्ट अभी भी अवीचि महानरक के कष्ट से बहुत, बहुत दूर है! ये पुस्तकें और यौन दुराचार से जुड़ी वस्तुएँ अनगिनत, अपरिमित जीवों को हानि पहुँचा सकती हैं। विशेष रूप से कंप्यूटर पर अश्लील वेबसाइटें तो भोले-भाले, निष्कपट और शुद्ध यांग शरीर वाले बच्चों तक को दूषित करती हैं। परलोक के विधान में यह सहन या क्षमा नहीं किया जा सकता। मैं तुम्हें बता दूँ, अभी जिन कलाकारों की बात की थी, यदि उन्हें अश्लील फ़िल्म बनाने के लिए मजबूर किया गया हो, तो उनका कर्मफल कुछ हल्का होगा—100 वर्ष। लेकिन उन्हें यह सुनिश्चित करना होगा कि आगे ऐसा कभी नहीं करेंगे, और अपने पापकर्मों का पश्चात्ताप भी करना होगा। यदि किसी ने पैसे के लिए केवल एक फ़िल्म की हो और उसके बाद कोई न की हो, तो उसे 1,000 वर्ष तक कर्मफल भोगना होगा। यदि बाद में वह स्वयं सभी अश्लील डिस्क खरीदकर जला दे और सच्चे मन से पश्चात्ताप करे, तो उसका दंड 500 वर्ष कम किया जा सकता है। अश्लील फ़िल्म

बनाने वाले निर्देशक और अश्लील डिस्क बनाने या वितरित करने वाले लोग अपनी आयु समाप्त होने पर इस नरक में आकर कर्मफल भोगते हैं। फ़िल्मों और डिस्क के पूरी तरह लुप्त होने पर ही वे इस नरक से निकल सकते हैं। अन्य संबंधित कर्मचारियों को इस नरक में डालकर 50,000 वर्ष तक कर्मफल भोगना पड़ता है। अश्लील पुस्तकें लिखने, छापने या बेचने वाले सभी लोगों का, तथा यौन दुराचार वाली फ़िल्मों और अश्लील डिस्क के निर्माण से जुड़े सभी मालिकों, कलाकारों, निर्देशकों और संबंधित कर्मचारियों का, जीवित रहते ही सौभाग्य और आयु घटा दिए जाते हैं। प्रत्येक अश्लील पुस्तक या फ़िल्म पर एक वर्ष का सौभाग्य घटता है और आयु एक वर्ष कम होती है।"

मैंने फिर परलोक के न्यायाधिकारी से पूछा: "यदि कोई वेबसाइट खोलकर अश्लील डिस्क और वीडियो बेचे, या लोगों को उन्हें खुले तौर पर डाउनलोड करने दे, चाहे पैसे लेकर या मुफ़्त में, तो उसका क्या कर्मफल होगा?" परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: "इसका सिद्धांत भी वही है। उसे भी इसी नरक में डाला जाएगा। जब तक उसकी बेची हुई अश्लील डिस्क मनुष्यलोक से सदा के लिए लुप्त न हो जाएँ और संबंधित अश्लील वेबसाइटें भी पूरी तरह बंद न हो जाएँ, तब तक वह नरक का कर्मफल भोगने से मुक्त नहीं हो सकता। लौटकर सभी को अच्छी तरह समझाना कि वे नियम और मर्यादा का पालन करें तथा शीलों का आचरण करें, तब स्वर्गीय दंड से बच सकेंगे! आज के लिए यहीं तक। आप पहले कमल पर सवार होकर लौट जाइए, फिर किसी दिन आइए।"

मैं आप पाठकों को स्पष्ट करना चाहती हूँ कि नरक की यात्राओं में मैंने वहाँ की जो बातें जानी हैं, उनके लिए मेरी चेतना जाग्रत अवस्था में बुद्ध की शक्ति के सहारे वहाँ गई थी। मैं सपने में वहाँ नहीं गई थी, न ही ये बातें तियानदाओ, यीगुआनदाओ आदि की तरह फ़ूजी विधि से पूछकर जानी गई थीं। मैं स्वयं बौद्ध धर्म की शरण ग्रहण कर चुकी हूँ, सदा शाकाहार करती हूँ और पंचशील का पालन करने वाली

त्रिरत्न की शिष्या हूँ। मेरा नाम आ यू है। ऊपर कही गई मेरी प्रत्येक बात सत्य है। मैं पुण्य समर्पित करती हूँ कि सभी जीव बुद्धत्व प्राप्त करें।[11]

17/दूसरी बार न्यायसभा में उपस्थित होकर सुनवाई सुनना—प्राचीन पुस्तकों में वर्णित सत्कर्मों को पुरस्कृत करने और दुष्कर्मों को दंडित करने वाले दो विभागों को अपनी आँखों से देखना

मैं, आ यू, हाल में लगातार यौन दुराचार के नरकों का निरीक्षण करती रही हूँ। समूचे नरकजगत में यौन दुराचार का नरक सबसे अधिक भूमि घेरने वाला और सबसे विस्तृत नरक है। इससे स्पष्ट है कि यौन दुराचार आज मनुष्यलोक की एक बहुत बड़ी और अत्यंत गंभीर समस्या है। महान प्रज्ञा से संपन्न बुद्ध ने बहुत पहले अनेक सूत्रों में इस समस्या की भविष्यवाणी की थी और इसका विस्तृत वर्णन किया था। उन्होंने हमें बहुत विस्तार से यह भी बताया था कि जन्म से ही हमारे साथ जुड़े और हमें जकड़े रहने वाले इस मूल आसक्ति भाव को पूरी तरह कैसे दूर किया जाए। हम सभी को सूत्रों का अधिक अध्ययन करना चाहिए, ताकि समझ सकें कि यौन उच्छृंखलता कहाँ से आती है और उसका समाधान कैसे किया जाए। सूत्र इतने अधिक हैं कि एक साथ सबका उल्लेख करना संभव नहीं है। उदाहरण के लिए:

《बुद्ध द्वारा उपदिष्ट धर्म के पूर्ण विनाश का सूत्र》 में कहा गया है: “नैतिकता नहीं रहेगी; कामोन्माद, अशुद्धता और अराजकता होगी; स्त्री-पुरुष का भेद नहीं रहेगा.....कल्प समाप्त होने को होगा, इसलिए दिन और महीने छोटे होते जाएँगे, मनुष्यों की आयु घटती जाएगी और चालीस वर्ष में सिर के बाल सफ़ेद हो जाएँगे। पुरुष कामासक्त होंगे, वीर्य चुक जाने से अकाल मृत्यु पाएँगे; कुछ साठ वर्ष तक जिएँगे। पुरुषों की आयु छोटी होगी और स्त्रियों की लंबी; वे सत्तर, नब्बे, यहाँ तक कि सौ वर्ष तक जिएँगी।”

《बुद्ध द्वारा उपदिष्ट बयालीस अध्यायों का सूत्र》 कहता है:
“वासना तुम्हारे मन में जन्म लेती है,
मन विचारों से जन्म लेता है;
दोनों मन जब शांत हो जाते हैं,
तब न रूप रहता है, न क्रिया।”

《महाबुद्धोष्णीष तथागत के गुप्त हेतु, साधना और साक्षात्कार के पूर्ण अर्थ तथा बोधिसत्त्वों की असंख्य चर्याओं का शूरंगम सूत्र》 में और भी स्पष्ट रूप से कहा गया है: “यदि समस्त लोकों की छह गतियों के जीवों के मन में कामवासना न हो, तो वे उसके साथ जन्म-मरण के निरंतर चक्र में नहीं पड़ेंगे। तुम समाधि का अभ्यास मूलतः सांसारिक क्लेशों से बाहर निकलने के लिए करते हो; यदि कामासक्त मन को दूर न किया, तो संसार की धूल से बाहर नहीं निकल सकते। भले ही तुम्हारे पास बहुत ज्ञान हो और ध्यान-समाधि सामने प्रकट हो जाए, यदि कामवासना का उच्छेद नहीं किया, तो निश्चित ही मार[12] के मार्ग में गिरोगे.....”

बुद्ध ने सूत्रों में बड़ी करुणा और बार-बार समझाने के साथ सभी को बताया है कि यौन उच्छृंखलता अपने ही मन की विपरीत धारणाओं से आती है। मन विचारों से जन्म लेता है; जन्म-मरण के चक्र में घूमते रहने का यह बीज हर किसी के भीतर है। बुद्ध हमें सिखाते हैं कि कामवासना के उद्गम को शरीर और मन, दोनों में पूरी तरह काट देना आवश्यक है। बौद्ध सूत्र में कहा गया है:
“मैंने अशुभ कर्म किए,
जले हुए लकड़ी के खंभे जैसा हूँ;
इस जीवन में शोभा नहीं,
अगले जीवन में भी यही होगा।
घर के भीतर शोभा नहीं,

बाहर भी यही दशा है;
बुरे हेतु से बुरे कर्म रचता हूँ,
उनके कारण दुर्गति में जाता हूँ।
अगले जीवन में पीड़ा भोगूँगा,
न जाने कहाँ रहूँगा;
सभी देवता सुनेंगे
मेरे करुण विलाप और रोने की ध्वनि;
कोई बचाने वाला नहीं होगा,
निश्चित ही नरक में प्रवेश करूँगा।"

आशा है कि जिन सभी लोगों को इस लेख को पढ़ने का अवसर मिले, वे सम्यक श्रद्धा और सम्यक स्मृति से संपन्न हों, सद्धर्म का अभ्यास करें और दुःख से मुक्त होकर सुख पाएँ।

बुद्ध की शक्ति के अनुग्रह के लिए कृतज्ञ हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ!

मैं, आ यू, हाथ जोड़कर परलोक के न्यायाधिकारी को प्रणाम करती हूँ!

परलोक के न्यायाधिकारी ने गंभीरता से कहा: "आज न्यायसभा में दो अपराधी आत्माएँ सुनवाई के लिए आई हैं—एक पुरुष और एक स्त्री। पुरुष वेश्यावृत्ति का दलाल था और स्त्री वेश्यालय चलाने वाली थी।"

मैंने कहा: "अच्छा! न्यायाधिकारी जी, आ यू को सुनवाई सुनने देने की व्यवस्था करने के लिए धन्यवाद।"

आह! पहुँचते ही मेज़ पर बहुत ज़ोर से प्रहार किए जाने की आवाज़ सुनाई दी।

आह! मैंने देखा कि परलोक के सातवें न्यायालय के राजा ताइशान बहुत क्रोधित थे। वे लगभग अपना आसन छोड़ ही चुके थे; खड़े होकर नीचे की ओर झुके और अपराधी आत्माओं को ज़ोर से डाँटा: "धृष्ट अपराधी आत्माओ! तुम्हारी आत्माएँ

परलोक में आ चुकी हैं, फिर भी कुतर्क करके अपने को सही ठहराती हो! यह क्या कि दोनों की सहमति थी, भोजन और कामवासना स्वभाव हैं, और इससे जीवन के दुःख दूर होते हैं? यह सब सरासर बकवास है। तुम पति-पत्नी मनुष्यलोक में एक सुखी, साधन-संपन्न परिवार थे और स्थिर जीवन बिता रहे थे। लेकिन ईमानदार काम करने के बजाय तुमने पैसे के लिए अनजान युवतियों और स्त्रियों को फुसलाया और धोखे से भर्ती किया, उनसे वेश्यावृत्ति कराई। यह तुम्हारा पहला अपराध है। फिर तुमने छल की योजनाएँ बनाकर उन्हें अपने जाल में फँसाया और उसके बाद उनके शरीर की कमाई का शोषण किया। यह दूसरा अपराध है। तुमने जानबूझकर युवतियों और स्त्रियों को नशीले पदार्थों, जुए, शराब और धूम्रपान की लत लगाई, उन पर भारी कर्ज़ चढ़ाया और उसके सहारे उन्हें अपने नियंत्रण में रखा, ताकि वे वेश्यावृत्ति छोड़ न सकें। यह तीसरा अपराध है। जब वे दुर्भाग्य से गर्भवती हुईं, तो तुमने जानबूझकर उनके गर्भपात की व्यवस्था की और निर्दोष जीवनों को हानि पहुँचाई। यह चौथा अपराध है। स्वर्गीय और नैतिक व्यवस्था का उल्लंघन करने वाले ये आचरण अत्यंत लज्जाजनक हैं!”

राजा ताइशान के पास परलोक के दो उच्च अधिकारी थे। एक सत्कर्म पुरस्कार विभाग के प्रमुख थे। मैंने देखा कि उन्होंने बैंगनी-काले रंग का लंबा चोगा पहन रखा था। उनका चेहरा शांत था और उस पर हल्की-सी मुस्कान थी। नरक में ऐसा चेहरा देख पाना भी बहुत दुर्लभ था। मैंने परलोक में जितने भी अधिकारी देखे थे, सबके चेहरे बहुत गंभीर, डरावने और अत्यंत उग्र थे। दूसरे दुष्कर्म दंड विभाग के प्रमुख थे। उन्होंने गहरे हरे रंग का लंबा चोगा पहन रखा था। उनका चेहरा अत्यंत उग्र और क्रुद्ध था, और उनकी आँखों से धुँधली सफ़ेद रहस्यमय ज्योति निकल रही थी। उनकी एक नज़र पड़ते ही पूरे शरीर में बेचैनी होने लगती थी। दोनों विभागाध्यक्षों की टोपियों की बनावट एक जैसी थी, और हर एक की टोपी का रंग उसके वस्त्रों के रंग से मेल खाता था।

तभी राजा ताइशान की आवाज़ सुनाई दी: “दुष्कर्म दंड की बही प्रस्तुत करो और तुरंत पढ़कर सुनाओ।” मैंने दुष्कर्म दंड विभाग के प्रमुख को अभिलेख की बही निकालते देखा। अरे! वह सचमुच बहुत लंबी बही थी। विभागाध्यक्ष का रूप भी बहुत कठोर था। उन्होंने उन दोनों अपराधी आत्माओं के सारे अपराध पढ़कर सुनाने शुरू किए। उनके दुष्कर्म सचमुच चरम सीमा तक पहुँच चुके थे। आप सभी को समझाने के लिए मैं उनमें से कुछ का वर्णन करती हूँ।

इन दोनों अपराधी आत्माओं ने जीवित रहते कुछ सुंदर युवतियों को अपने धन कमाने के साधन के रूप में नियंत्रण में रखने के लिए उनसे बार-बार बहुत से गर्भपात कराए और उन्हें बुरी आदतें भी लगाईं। बाद में उनमें से कुछ को ऐसे पुरुषों ने, जिनसे उनका कर्म-संबंध था, विवाह करके अपने घर पत्नी या दूसरी पत्नी के रूप में रखा। लेकिन कुछ के संतान पैदा न कर पाने के कारण उनके परिवार टूट गए। कुछ को पहले नशीले पदार्थ लेने और गर्भपात कराने के कारण शरीर में आजीवन रहने वाले दुष्प्रभाव हो गए, जैसे दीर्घकालिक स्त्रीरोग, केंद्रीय तंत्रिका तंत्र की गड़बड़ी तथा हाथ-पैरों का सुन्न पड़ना आदि। उनमें से एक को मानसिक विक्षिप्तता के कारण उसके पति ने छोड़ दिया। फिर परिवार वालों ने भी उसे त्याग दिया और वह सड़कों पर भटकने लगी। ऐसी अनेक घटनाएँ थीं जिन्हें सुनना भी असह्य था।

राजा ताइशान ने कहा: “विकराल रूप और बाहर निकले नुकीले दाँतों वाले दोनों प्रेत-प्रहरी, आदेश सुनो! इन्हें तुरंत नीचे ले जाओ! इन्हें यानहुआ फ़ानगुन नरक ले जाओ और पहले 100,000 वर्ष तक दंड दो। उसके बाद देखें कि इनके मन में पश्चात्ताप आया है या नहीं; फिर आगे का निर्णय किया जाएगा।” उस समय दोनों अपराधी आत्माओं के पैर बुरी तरह काँप रहे थे और उनके शरीर लगातार थरथरा रहे थे, लेकिन अब हर बात के लिए बहुत देर हो चुकी थी।

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: “ऐसी अपराधी आत्माओं को सामान्यतः बहुत, बहुत लंबे समय तक नरक में दंड भोगना पड़ता है। उन्होंने जिन-जिन जीवों

को हानि पहुँचाई है, उन सभी को इनके उकसावे पर नशीले पदार्थ लेने, गर्भपात कराने आदि से हुए हर दुष्प्रभाव से पूरी तरह मुक्त होना होगा। जब वे सभी दुष्प्रभाव पूरी तरह समाप्त हो जाएँगे, तभी इनके महानरक से निकलने की संभावना होगी।"

मैंने परलोक के न्यायाधिकारी से पूछा: "यदि किसी आचरण ने लोगों के विचारों पर बहुत गहरा और दूरगामी हानिकारक प्रभाव डाला हो, और पूरी तरह ठीक होने में कई जन्म लग सकते हों, तो क्या कई जन्मों तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी?" परलोक के न्यायाधिकारी ने उत्तर दिया: "हाँ! हानि पहुँचने के बाद हर व्यक्ति के ठीक होने की अवधि अलग होती है; किसी की लंबी और किसी की छोटी। निश्चय ही, जितना कम समय लगे, उतना अच्छा है। लेकिन कुछ आत्माओं की आसक्ति इतनी प्रबल होती है कि एक समस्या को सुलझाने में ही 1,000 वर्ष लग जाते हैं। कुछ आत्माएँ किसी एक क्षेत्र में अटकी रह सकती हैं और वहाँ से जाने को तैयार नहीं होतीं; इसका कारण आसक्ति है। पहले एक युवा वेश्या थी। वह कुछ सुंदर थी और सौभाग्य से उसे कोई विशेष बुरी लत नहीं लगी थी; उसने केवल धूम्रपान और शराब पीना सीखा था। वास्तव में उसे स्वयं धूम्रपान और शराब पीना पसंद नहीं था; उसने काम की आवश्यकता के कारण इन्हें सीखा था। दलाल और वेश्यालय चलाने वाली स्त्री के उकसावे और व्यवस्था के कारण उसने मात्र डेढ़ वर्ष में छह बार गर्भपात कराया। बाद में उससे कर्म-संबंध रखने वाले एक व्यापारी ने उससे विवाह कर लिया और उसे अपने घर पत्नी बनाकर ले गया। व्यापारी को पता नहीं था कि इतनी कम उम्र में ही वह छह बार गर्भपात करा चुकी थी। विवाह के बाद गर्भपात के दुष्प्रभावों के कारण वह जीवन भर संतान पैदा करने में असमर्थ रही और उसे स्त्रीरोग भी थे। इसलिए कुछ ही समय बाद उस व्यापारी ने वंश चलाने के लिए अपनी नई प्रेमिका से भी विवाह कर लिया। संतान पैदा न कर पाने के कारण त्याग दिए जाने की बात वह वेश्या मन से स्वीकार नहीं कर सकी। उसकी आयु समाप्त होने के बाद उसका आत्मिक शरीर प्रेतगति में ही 1,000 वर्ष तक अटका रहा। जब उसे अपने कर्म-संबंध के अनुरूप सद्धर्म मिला, तभी वह प्रेतगति से बाहर निकली।"

परलोक के न्यायाधिकारी ने आगे कहा: “मैं तुम्हें केवल मोटे तौर पर समझा रहा हूँ, क्योंकि नरक में दंड भोगने आने वाली हर अपराधी आत्मा के साथ उन अन्य आत्माओं के विषय भी जुड़े होते हैं जिन्हें उसने हानि पहुँचाई है। मूलतः उस अपराधी आत्मा से आहत प्रत्येक जीव को, चाहे वह छह गतियों में से किसी भी गति में हो, पहले दुःख से मुक्त होना होगा। उसके बाद ही वह अपराधी आत्मा नरक से निकल सकती है। अभी जिन दो अपराधी आत्माओं की बात हुई, उन्हें वास्तव में कितने समय तक नरक में अपने अपराधों का फल भोगना होगा, इसका निश्चित निर्णय अभी नहीं किया जा सकता। यह तो केवल शुरुआत है।”

“अच्छा! आज यहीं तक। अब लौट जाओ!”

“जी, न्यायाधिकारी जी!”

मैं, आ यू, हाथ जोड़कर परलोक के न्यायाधिकारी को प्रणाम करके विदा लेती हूँ! न्यायाधिकारी जी के प्रति कृतज्ञ हूँ!

श्वेत कमल पर सवार होकर लौटती हूँ।

18/अश्लील पुस्तकों, पत्रिकाओं और डिस्क को दूसरों में बाँटने तथा प्रसारित करने का नारकीय कर्मफल

पिछले कुछ समय से अनेक कामों में व्यस्त रहने और एकांतवास में आंतरिक साधना करने के कारण मुझे, आ यू को, नरक जाकर लेख लिखने के लिए सामग्री जुटाने का अवसर नहीं मिला। आप सभी से बहुत क्षमा चाहती हूँ कि आपको इतने समय तक प्रतीक्षा करनी पड़ी! लेख लिखने के लिए मैं नरक तभी जाती हूँ जब मेरी मानसिक अवस्था सबसे अच्छी होती है। हर बार नरक जाने पर मेरी कुछ मूल जीवनशक्ति खर्च होती है, और लौटने के बाद लगातार मंत्र जप करके उसकी पूर्ति करनी पड़ती है। आज मेरी मानसिक अवस्था अच्छी है, लेकिन दूसरे आयाम की शक्तियाँ फिर मुझे रोकने आई हैं और मुझे लिखने नहीं दे रही हैं। उनकी शक्ति भी कम नहीं है! उन्होंने मेरा फिर आधा दिन खर्च करा दिया। एक दिन भी शीलों का पालन न करना मार[13] के अनुचर बन जाना है; शीलों का पालन अवश्य करना चाहिए। मैं, आ यू, ऐसा ही सोचती हूँ। जब भी मुझे कोई बाधा मिलती है, मैं शीलपालन की इस मानसिक साधना से उसे पार करती हूँ। यह साधना बौद्ध धर्म की है और बहुत उपयोगी है। मैं इसे आप सभी के साथ साझा कर रही हूँ। अब तक इसे जितनी बार अपनाया है, हर बार यह सफल रही है।

निर्वाण से पहले बुद्ध ने आनंद से कहा था: “धर्म के अवसान के युग में शीलों को अपना गुरु बनाओ; धर्म का आश्रय लो, व्यक्ति का नहीं।” 《महाप्रज्ञापारमिता शास्त्र*द्वितीय खंड》 में कहा गया है: “बुद्ध क्षांति को कवच, वीर्य को इस्पात का कवच, शीलपालन को महान अश्व, ध्यान को उत्तम धनुष और प्रज्ञा को उत्तम बाण

बनाते हैं। बाहर वे माराज की सेना को परास्त करते हैं, भीतर क्लेशरूपी चोरों का नाश करते हैं; इसे अर्हत[14] कहते हैं।" और 《बुद्ध द्वारा उपदिष्ट शक्र के प्रश्नों का सूत्र》 में कहा गया है: "बुद्ध के निषेधों और शीलों का पालन नहीं किया, अब लज्जा अनुभव करनी चाहिए।" शीलों का पालन सचमुच अत्यंत महत्त्वपूर्ण है!

मन की शक्ति, आओ! नमो महामयूरी विद्याराज्ञी![15] नमो महामयूरी विद्याराज्ञी! अब मैं इन बाधाओं को तोड़कर तुरंत नरक जाऊँगी।

बुद्ध और बोधिसत्त्वों के अधिष्ठान के लिए कृतज्ञ हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ! तुरंत नरक पहुँच जाती हूँ!

अमिताभ बुद्ध! मैं, आ यू, परलोक के न्यायाधिकारी के सामने हाथ जोड़ती हूँ!

आज मैं, आ यू, परलोक के न्यायाधिकारी से अश्लील पुस्तकों, पत्रिकाओं और डिस्क को दूसरों में प्रसारित करने के कर्मफल के बारे में पूछना चाहती हूँ।

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: "अच्छा प्रश्न है। इस समय मनुष्यलोक में बहुत अधिक किशोर और युवा ऐसा बुरा आचरण करते हैं। आ यू, वापस जाकर मनुष्यलोक के उन जीवों को समझाना मत भूलना जिनमें यह बुरी आदत है। उन्हें तुरंत अपने पिछले दोषों को दृढ़ता से सुधारना चाहिए, सदाचार करना चाहिए और सत्कर्म संचित करने चाहिए, ताकि वे भयावह नारकीय कर्मफल से बच सकें और स्वयं को तथा दूसरों को हानि न पहुँचाएँ। यह संदेश बहुत महत्त्वपूर्ण है, इसे याद रखना!"

"जी, न्यायाधिकारी जी! मैं, आ यू, लौटते ही इसे लिख दूँगी।"

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: "मनुष्यलोक में जो भी जीव स्वयं अश्लील पुस्तकें, पत्रिकाएँ और डिस्क दूसरों तक पहुँचाते हैं या कंप्यूटर पर उनका प्रसार करते हैं, उनका कर्मफल अश्लील पुस्तकें, पत्रिकाएँ और डिस्क बेचने वाले जीवों के कर्मफल के समान है। उन्हें 100,000 वर्ष तक नरक का फल भोगना पड़ता है।

यह सामान्य दंड है। गंभीर मामलों में तो उनके प्रसारित किए हुए अश्लील प्रकाशनों और डिस्क के मनुष्यलोक से लुप्त होने तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है; तभी वे नरक के दुःख से मुक्त हो सकते हैं। वह अपरिमित और असीम दुःख है। जो जीव अश्लील पुस्तकें, पत्रिकाएँ और डिस्क प्रसारित करना शुरू करते हैं, उनके प्रत्येक प्रसारण को उनके काले और सफ़ेद शुभ-अशुभ कर्मलेखक जन्मसहचर देवता तुरंत दर्ज कर लेते हैं, और उनका सौभाग्य तथा जीवनकाल घट जाता है। जीवित रहते ही पहले परलोक के प्रेत-प्रहरी उनकी जीवित आत्मा को पकड़कर कोड़े और डंडों के नरक में दंड भोगने ले जाते हैं। कोड़े और डंडों के नरक का पहले परिचय दिया जा चुका है, इसलिए यहाँ विस्तार से नहीं बताऊँगा। अर्थात् मनुष्यलोक में उन जीवों को सिरदर्द महसूस होता है और उनकी चेतना धुँधली, उलझी हुई तथा अस्पष्ट हो जाती है। अधिकांश लोगों को लगता है कि उन्हें बुखार है और वे बुरे सपने देख रहे हैं; जागने पर उनके पूरे शरीर में चुभता हुआ दर्द होता है। यदि जीवित रहते उनकी जीवित आत्मा को पकड़कर कोड़े और डंडों के नरक में दंड देने के बाद वे अपनी गलतियाँ सुधारकर नया जीवन शुरू करें, तो उनका नारकीय कर्मफल कम या माफ़ किया जा सकता है। लेकिन अंतिम निर्णय प्रत्येक वास्तविक मामले को देखकर ही किया जाएगा। जो हठपूर्वक अपनी भूल से चिपके रहते हैं और समझते नहीं, उनका सौभाग्य समाप्त होते ही वे सीधे यौन दुराचार के नरक में कर्मफल भोगने जाते हैं। साथ ही यह भी देखा जाता है कि उन्होंने किस प्रकार की अश्लील पुस्तकें, पत्रिकाएँ और डिस्क प्रसारित की थीं। यदि उन्होंने केवल हस्तमैथुन की सामग्री प्रसारित की हो, तो वे गोले निगलने वाले नरक में कर्मफल भोगने जाते हैं; यदि केवल कंप्यूटर पर अश्लील चित्र प्रसारित किए हों, तो विद्युत्-प्रकाश नेत्र नरक में जाते हैं; यदि केवल एक पुरुष और दो स्त्रियों या एक स्त्री और दो पुरुषों के यौन दुराचार की डिस्क प्रसारित की हों, तो दाँतेदार पहियों, भेड़ियों और साँपों के नरक में जाते हैं; यदि केवल निकट संबंधियों के बीच यौन दुराचार की डिस्क प्रसारित की हों, तो उलटे पहियों और बर्फ़ीले आकाश के नरक में दंड भोगने जाते हैं। ऐसे सभी प्रकार

गिनाए नहीं जा सकते। यदि ऊपर बताए गए सभी प्रकारों को प्रसारित करने का अपराध किया हो, तो यौन दुराचार के प्रत्येक नरक में एक-एक करके कर्मफल भोगना होगा। आ यू, अभी जिन यौन दुराचार के नरकों का उल्लेख किया है, तुम उन सभी का निरीक्षण कर चुकी हो। अब लौटकर मनुष्यलोक के जीवों को बता सकती हो कि अश्लील पुस्तकें, पत्रिकाएँ और डिस्क प्रसारित करने वाले जीव अपरिमित और असीम नारकीय दुष्कर्म रच रहे हैं। उन्हें यह बुरी आदत जल्द से जल्द छोड़ देनी चाहिए और दूसरों तथा स्वयं को हानि नहीं पहुँचानी चाहिए। अब तकनीक विकसित हो गई है; कंप्यूटर से कुछ ही सेकंड में सूचना पूरे संसार में फैल सकती है। लेकिन क्या कभी सोचा है? मनुष्य की आध्यात्मिक प्रकृति को हानि पहुँचाने वाली ऐसी सूचना फैलाकर व्यक्ति अनजाने ही एक क्षण में अपने लिए अपरिमित और असीम नारकीय दुष्कर्मों के बीज बो देता है। मनुष्यलोक के जीव इस दुर्लभ मनुष्य शरीर को अधिक मूल्य दें। अन्यथा आकाश और धरती की शुद्ध ऊर्जा का संतुलन बिगड़ जाएगा और मनुष्यलोक पर विपत्तियाँ अवश्य आएँगी, ताकि जीव अपने भीतर झाँककर आत्मपरीक्षण करें। तब बहुत देर हो चुकी होगी। जब विपत्तियाँ आएँगी, तब दुष्कर्मों का फल पक चुका होगा; मनुष्यलोक निश्चय ही अत्यंत पीड़ित होगा और चारों ओर दुःखद दृश्य दिखाई देंगे। हमारे बुद्ध करुणामय हैं, इसलिए उन्होंने विशेष रूप से तुम्हें, आ यू को, परलोक का निरीक्षण करने भेजा है। तुम जल्द से जल्द लौटो और मनुष्यलोक के जीवों को वे सभी वास्तविक बातें बताओ जो तुमने देखी हैं!"

मैं, आ यू, साष्टांग प्रणाम करके परलोक के न्यायाधिकारी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती हूँ! आपने बहुत परिश्रम किया!

श्वेत कमल पर सवार होकर लौटती हूँ।

19/जीवों के मूल यांग से युक्त शरीर को बचाना —मनुष्यलोक की अश्लील वस्तुओं का निपटारा कैसे किया जाए, इस पर परलोक का आधिकारिक दृष्टिकोण

बुद्ध की शक्ति के अनुग्रह के लिए कृतज्ञ हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ।

अमिताभ बुद्ध! मैं, आ यू, परलोक के न्यायाधिकारी के सामने हाथ जोड़ती हूँ!

आज मैं परलोक के न्यायाधिकारी से पूछना चाहती हूँ: "अश्लील वस्तुओं का निपटारा कैसे करना चाहिए और इन वस्तुओं को नष्ट करने आदि का क्या पुण्य है?"

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: "अश्लील वस्तुओं का निपटारा उन्हें नष्ट करके ही करना चाहिए। ऐसी वस्तुएँ मनुष्यलोक में बची नहीं रहनी चाहिए; उनका पूरी तरह उन्मूलन करना आवश्यक है। जब तक ऐसी वस्तुएँ मौजूद हैं, मनुष्य की जन्मजात आध्यात्मिक प्रकृति दूषित होगी। यह दूषण सीधे और तेज़ी से मनुष्य की जन्मजात आध्यात्मिक प्रकृति की ज्योति को नष्ट करता है।"

प्रत्येक व्यक्ति का जन्मजात मूल यांग परम शुद्ध, परम यांग और प्रकाशमय होता है।[16] यदि मनुष्य की आध्यात्मिक प्रकृति की ज्योति क्षीण होकर मंद पड़ जाए या लुप्त हो जाए, तो उसका यह जीवन अपने अंत की ओर बढ़ चुका होता है। कुछ लोग सोचते हैं कि देख लेने में कोई हानि नहीं है; जब तक उसे व्यवहार में न उतारें, उसे यौन ज्ञान या यौन शिक्षा समझ सकते हैं। वास्तव में यह विचार गलत है।

अश्लील वस्तुएँ एक बार भी नहीं देखनी चाहिए। एक बार देखने से भी मनुष्य की जन्मजात आध्यात्मिक ज्योति दूषित हो जाती है। इसके अतिरिक्त, मन की

भूमि में अश्लीलता का एक बीज बोया जा चुका होता है। भविष्य में फिर प्रतिकूल परिस्थितियों से सामना होने पर मन को नियंत्रित रखना और उसे दोबारा विचलित होने से रोकना बहुत कठिन हो जाता है।

यदि शुद्ध यांग शरीर वाले किशोर और युवा अश्लील वस्तुएँ देख लें, तो उनका मन अवश्य डगमगाएगा; केवल डगमगाने की मात्रा हर व्यक्ति में अलग होगी। विशेष रूप से आज के उच्च तकनीक वाले कंप्यूटर युग में अश्लील वेबसाइटें बेरोकटोक फैल रही हैं। बहुत से लोगों का मन इतना विचलित हो जाता है कि वे उसे सँभाल नहीं पाते। इससे हस्तमैथुन आदि होता है और उनका परम शुद्ध मूल यांग तुरंत खो जाता है। यदि वह पूरी तरह न भी खोए, तो भी उसका कुछ अंश चुपचाप खो जाता है और समय बीतने के साथ यह यौन दुराचार का कारण बनता है।

अश्लील वस्तुएँ मनुष्य के यौन संयम और नैतिकता को गंभीर रूप से नष्ट करती हैं। वे जीवों की सारी लज्जा और मर्यादा मिटा देती हैं, नैतिक पतन लाती हैं, वर्तमान जीवन में सौभाग्य और आयु घटाती हैं, पूर्वजों को अपमानित करती हैं और वंश की आगे की पीढ़ियों को समाप्त करती हैं। इसके अतिरिक्त वे यौन दुराचार के नारकीय दुष्फल भी रचती हैं, जिनके कारण नरक में अनेक प्रकार की अत्यंत बड़ी पीड़ाएँ भोगनी होंगी।

पिछले लेखों में यौन दुराचार के विभिन्न बड़े नरकों के अपरिमित और असीम कर्मफलों का विस्तार से परिचय दिया जा चुका है। वास्तव में उनसे निकलने का कोई समय दिखाई नहीं देता। अनेक परिवारों का उजड़ना और उनके सदस्यों की मृत्यु यौन दुराचार के कारण होती है। अश्लील वस्तुएँ ही यौन दुराचार करवाने वाली मुख्य दोषी हैं। वे मन को विषाक्त करती हैं, स्वर्गीय नैतिक व्यवस्था को नष्ट करती हैं और मानवीय संबंधों की मर्यादा बिगाड़ती हैं। वे सांसारिक विषों से भी अधिक घातक हैं और मनुष्य की आध्यात्मिक प्रकृति तथा प्रज्ञामय जीवन को विषाक्त करती हैं। विष तो केवल मनुष्य के एक जीवन को नष्ट करता है; अश्लील वस्तुएँ उसके शुद्ध, निष्कपट मूल यांग से युक्त शरीर को नष्ट करती हैं, जीवन समय से

पहले समाप्त कर देती हैं और नरक में अपरिमित तथा असीम दंड भोगने पहुँचाती हैं। यहाँ तक कि बड़ी कठिनाई से नरक से निकलने के बाद भी यौन दुराचार के अनेक कर्मफल चुकाने बाकी रहते हैं। उदाहरण के लिए, यौन दुराचार से जुड़े विभिन्न रोग होना और मन में तरह-तरह की पीड़ाएँ होना आदि—इन सभी को एक-एक करके गिनाया नहीं जा सकता।

जिन जीवों के पास आर्थिक साधन हैं, वे अपनी सामर्थ्य के अनुसार अश्लील वस्तुएँ खरीदकर नष्ट कर सकते हैं। प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं को अश्लील वस्तुएँ प्रकाशित करनी या बेचनी नहीं चाहिए। निर्देशकों और कलाकारों को अश्लील फ़िल्मों का काम स्वीकार नहीं करना चाहिए और न स्वयं ऐसी फ़िल्में बनानी चाहिए। लेखकों, चित्रकारों और पुस्तक प्रकाशित करने वाले किसी भी व्यक्ति को अश्लील पुस्तकों या पत्रिकाओं के लिए लेखन नहीं करना चाहिए और न अश्लील चित्र बनाने चाहिए। यदि कोई कंपनी का मालिक, किसी क्षेत्र का प्रमुख या राजा हो, और उसके पास पर्याप्त प्रभाव हो, तो उसे अश्लील वस्तुओं के अस्तित्व पर कठोर प्रतिबंध लगाकर उन्हें पूरी तरह समाप्त करना चाहिए। ऐसी वस्तुओं का पता लगते ही उसे उनके संपूर्ण उन्मूलन और विनाश का आदेश देना चाहिए। जिनके पास न आर्थिक साधन हैं और न ऊपर बताई गई कोई अन्य स्थिति, वे परिस्थितियों और उपलब्ध अवसरों के अनुसार संबंधित लोगों को अश्लील वस्तुएँ नष्ट करने के लिए समझाने-बुझाने का पूरा प्रयास कर सकते हैं।

यदि कोई भी जीव ऊपर बताए गए किसी भी तरीके से अश्लील वस्तुओं को नष्ट करने का भरसक प्रयास करे, तो इस जीवन में उसका सौभाग्य बढ़ेगा और उसकी आयु बढ़ेगी, लोग उसका सम्मान करेंगे, उसकी संपत्ति बिखरेगी नहीं और उसकी प्रज्ञा बढ़ेगी। यदि वह साधक है और धर्म के अनुरूप संसार से परे जाने की कामना करता है, तो उसकी कामना पूरी होगी और उसकी साधना भी क्रमशः उन्नत होगी। परलोक में उसके व्यक्तिगत शुभ-अशुभ कर्मों और जीवन-मृत्यु के अभिलेख में एक महान सत्कर्म का पुण्य दर्ज किया जाएगा। यह महान पुण्य अतीत में

उत्पन्न किए गए, नरक में ले जाने वाले अशुभ कारणों को कम या समाप्त करने के लिए पर्याप्त है। प्रत्येक मामले का विशिष्ट निर्णय बुद्धों, बोधिसत्त्वों और परलोक के उच्च अधिकारियों से करवाना होगा।

“आ यू! आज के लिए इतना ही। जल्दी लौटकर जनसाधारण के लिए लेख लिखो।”

“जी, न्यायाधिकारी!” मैंने हाथ जोड़कर आभार व्यक्त किया!

श्वेत कमल पर सवार होकर लौटती हूँ।

20/गर्भपात का कर्मफल और शिशु आत्माओं की अन्यायपूर्ण मृत्यु का रुदन-नगर

बुद्ध के अधिष्ठान के लिए आभार! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ!

अमिताभ बुद्ध!

न्यायाधिकारी! आज मैं आपसे गर्भपात के कर्मफल के बारे में पूछना चाहती हूँ।

न्यायाधिकारी: "गर्भपात के लिए परलोक में कठोर दंड दिया जाता है। परलोक के विधान में तीन प्रकार के गुप्त पुण्य निर्धारित हैं: पहला, किसी का जीवन बचाना; दूसरा, विधवा को अपना सतीत्व बनाए रखने में सहायता देना; तीसरा, ऐसा परम सत्कर्म करना जिसके बारे में किसी को पता न चले। कर्मफल के नियम में गुप्त पुण्य भाग्य बदलने के लिए पर्याप्त है। प्राचीन काल से आज तक इसके अनेक प्रसिद्ध उदाहरण हैं—गुप्त पुण्य के कारण ही लोग मानव लोक में उच्च अधिकारी और प्रतिष्ठित व्यक्ति बने तथा उनके वंशज यशस्वी हुए। तांग राजवंश के प्रधानमंत्री दी रनजिए जब युवा अवस्था में परीक्षा देने राजधानी जा रहे थे, तब एक सराय में ठहरे। देर रात उस सराय की सुंदर विधवा मालकिन ने उन्हें रिझाने का प्रयास किया, जिससे वे सतर्क हो गए। अपने दृढ़ और सच्चरित्र मन के कारण उन्होंने न केवल सावधानी से यौन दुराचार से स्वयं को बचाए रखा, बल्कि उस सुंदर विधवा को स्त्रीधर्म की मर्यादा बनाए रखने के लिए भी समझाया। उन्होंने अपने भीतर कामवासना शांत करने के लिए अपनाई जाने वाली शरीर की अशुचिता पर चिंतन की विधि उसे ध्यानपूर्वक सिखाई। उस स्त्री ने इस प्रकार चिंतन किया तो उसके मन में लज्जा उत्पन्न हुई और उसने आजीवन निष्ठा तथा धर्म की मर्यादा निभाई। बाद में दी रनजिए का नाम संसार भर में प्रसिद्ध हुआ, क्योंकि उन्होंने सहज ही सामने आ गए इस रूप-प्रलोभन का लोभ नहीं किया था। यदि मानव लोक के लोग अपने

भाग्य में निर्धारित कर्म-संबंधों की परीक्षा पार कर सकें, शुद्ध शील का दृढ़ता से पालन करें और अपने उच्च चरित्र को अक्षुण्ण रखें, तो स्वर्गीय व्यवस्था निश्चित ही उनके साथ अन्याय नहीं करेगी। परलोक के विधान के अनुसार भी उनके व्यक्तिगत जीवन-मृत्यु के अभिलेख में पुरस्कारस्वरूप महान सत्कर्म का गुप्त पुण्य अवश्य जोड़ा जाएगा, जिससे उनकी आशीष और प्रज्ञा बढ़ेंगी। गर्भपात वास्तव में किसी जीव का जीवन छीनना है और यह प्राणिहत्या से विरत रहने के शील का उल्लंघन है। बच्चा अभी जन्मा भी नहीं होता और स्वभाव से निष्कपट होता है, फिर भी उसे मार दिया जाता है। यह माता-पिता की हत्या करने और बुद्ध के शरीर से रक्त बहाने के समान अपराध है। साथ ही, इससे बच्चे के साथ एक बुरा कर्म-संबंध भी बनता है। जैसा कहा जाता है, न उपकार हो, न बैर, तो पारिवारिक संबंध नहीं बनता।

बच्चों और माता-पिता का कर्म-संबंध दो प्रकार का होता है: ऋण वसूलने का और ऋण चुकाने का। यदि बच्चा ऋण चुकाने आया था, लेकिन मारे जाने के कारण उसके मन में द्वेष उत्पन्न हो गया, तो वह संबंध बुरा कर्म-संबंध बन जाता है। यदि बच्चा पहले से ही ऋण वसूलने आया था, तो बात और भी कठिन हो जाती है। बुरे कर्म-संबंध में क्रोध और द्वेष जुड़ने से ऋणग्रस्त होने का कर्म-संबंध और गहरा हो जाता है।

गर्भपात की तीन स्थितियाँ होती हैं। पहली, माता-पिता जानबूझकर गर्भपात नहीं करवाते, बल्कि बच्चे का पुण्यफल पर्याप्त नहीं होता। उदाहरण के लिए, गर्भ में ही भ्रूण की मृत्यु हो जाना, मोलर गर्भावस्था होना या गर्भवती स्त्री का बीमार होना आदि विभिन्न कारणों से शिशु जन्म नहीं ले पाता। यदि ऐसा कारण हो, तो बड़ों को पश्चात्ताप करना चाहिए, सूत्रपाठ करके शिशु के उद्धार के लिए पुण्य समर्पित करना चाहिए, ताकि वह शीघ्र दुःख से मुक्त होकर सुख प्राप्त कर सके।

दूसरी, खराब आर्थिक स्थिति के कारण गर्भपात करवाना। परलोक का विधान इसकी अनुमति नहीं देता। आर्थिक समस्या के कारण प्राणिहत्या नहीं की जा

सकती। किसी स्थिति से निपटने का तरीका बहुत महत्त्वपूर्ण है। मानव लोक में चाहे कितना भी कष्ट सहना पड़े, वह गर्भपात के बाद नरक में उतरकर कर्मफल भोगने से एक करोड़ गुना बेहतर है। यह अवश्य याद रखना! यह भी संभव है कि वह शिशु उपकार चुकाने आया हो और उसके जन्म के बाद परिवार की आर्थिक स्थिति बदलकर समृद्ध और सुख-संपन्न हो जाए। बेशक, यह प्रत्येक वास्तविक मामले पर निर्भर करता है। इस प्रकार गर्भपात करवाने से जीवनकाल में पुण्यफल घटेगा—स्वास्थ्य, कामकाज, धन-सौभाग्य आदि, सब कम हो जाएँगे—और तलवारों के वन के नरक में उतरकर 1000 वर्ष तक कर्मफल भोगना पड़ेगा। यदि वे अविवाहित हों, तो पहले कोड़ों और डंडों के नरक में 500 वर्ष तक कर्मफल भोगना होगा। उसके बाद मनुष्य के रूप में पुनर्जन्म लेने पर भी प्राणिहत्या का शेष कर्मफल चुकाना होगा। उदाहरण के लिए, स्त्रियों को स्त्रीरोग होंगे और पुरुषों को भी प्रजनन तंत्र से संबंधित रोग होंगे।

तीसरी स्थिति आज मानव लोक में सबसे अधिक है। बहुत-से अविवाहित स्त्री-पुरुष गर्भ ठहरते ही गर्भपात करवा लेते हैं। इस कर्म का फल सबसे भारी है। जीवनकाल में पुण्यफल घटता है और आयु समाप्त होने पर पहले कोड़ों और डंडों के नरक में 800 वर्ष तक, फिर तलवारों के वन के नरक में 2000 वर्ष तक कर्मफल भोगना पड़ता है। गर्भपात करवाने वाली स्त्री का अपराध पुरुष से अधिक भारी होगा, क्योंकि गर्भपात करवाने का अंतिम निर्णय स्त्री ही करती है। इसलिए उसका अपराध कुछ अधिक भारी होता है। इसके विपरीत, यदि पुरुष स्त्री से गर्भपात करवाने को कहे, लेकिन अंत में स्त्री भ्रूण को बचाकर बच्चे को जन्म दे, तो पुरुष के खाते में एक दुष्कर्म दर्ज होगा और स्त्री के खाते में एक सत्कर्म का गुप्त पुण्य दर्ज होगा। यदि पुरुष बाद में पश्चात्ताप करे, बच्चे की अच्छी देखभाल करे और मानव लोक के लोगों को गर्भपात न करवाने के लिए भरसक समझाए, तो दूसरों को

गर्भपात के लिए उकसाने का यह दुष्कर्म माफ़ किया जा सकता है। आ यू, क्या तुम वहाँ जाकर देखना चाहती हो?"

मैंने कहा: "हाँ, अवश्य!" हम बहुत जल्दी वहाँ पहुँच गए। यह स्थान यौन दुराचार के नरक से अलग था। यौन दुराचार का नरक कामुक विचारों और पीड़ा की आवाज़ों से भरा रहता है, जबकि यहाँ अत्यंत गहरे द्वेष और पीड़ा से भरी चीखें तथा रोने की आवाज़ें थीं। ऊपर देखा तो चार बड़े चीनी अक्षरों में लिखा था: "枉死哭城", अर्थात "अन्यायपूर्ण मृत्यु का रुदन नगर"।

अरे! कितने सारे नन्हे-नन्हे लोग हैं! वे इतने घने हैं कि जगह खाली ही नहीं दिखती, और सब रो रहे हैं। उनका रुदन इतना करुण था कि उन्हें देखकर मेरे भी आँसू बहने लगे। कुछ शिशु ज़ोर-ज़ोर से चीख रहे थे और कुछ रक्त के गोले जैसे दिख रहे थे।

न्यायाधिकारी ने कहा कि गर्भपात के समय डॉक्टर ने उन्हें ऐसा बना दिया था। एक शिशु आत्मा अत्यधिक भयभीत हो गई थी और अब तक वहाँ सिकुड़कर एक गोले की तरह पड़ी थी। वास्तव में अब वह अपना शरीर फैला सकती थी, लेकिन अब भी उस पीड़ा से चिपके रहने की अवस्था से बाहर नहीं निकल पा रही थी। मैंने न्यायाधिकारी से पूछा कि उसे कब इस तरह कष्ट सहना नहीं पड़ेगा। न्यायाधिकारी ने कहा कि यह इस पर निर्भर करेगा कि उस शिशु आत्मा के माता-पिता उससे क्षमा माँगते हैं या उसके लिए पुण्यकर्म करके पुण्य समर्पित करते हैं या नहीं। एक और बच्ची की आत्मा अपनी माँ को पुकार रही थी। मैंने न्यायाधिकारी से पूछा कि जिस शिशु आत्मा का अभी जन्म ही नहीं हुआ, वह 'माँ' कैसे पुकार सकती है। न्यायाधिकारी ने कहा कि यदि ये शिशु मानव लोक में मनुष्य बनकर जन्म लेते, तो उन्हें एक वर्ष की आयु के बाद बोलना सीखना शुरू करना होता। लेकिन अब वे मानव लोक में नहीं हैं। नरक में आने पर वे आध्यात्मिक सत्ता के रूप में हैं। आध्यात्मिक सत्ताओं में अभिज्ञा (अलौकिक क्षमता) होती है और वे मानसिक

संकल्प तथा विचार के माध्यम से काम करती हैं। कुल मिलाकर, यहाँ की शिशु आत्माओं की दशा सचमुच बहुत दयनीय है। वे सभी निरंतर रोती-चीखती रहती हैं। आह! स्वर्गीय व्यवस्था का गुण जीवन का पोषण करना है। हमें अपने स्वार्थ के लिए निर्दोष नन्हे जीवनों की निर्दयता से हत्या कभी नहीं करनी चाहिए।

न्यायाधिकारी ने मुझे बताया कि यह "अन्यायपूर्ण मृत्यु का रुदन नगर" नया बनाया गया है। हमारे बात करते समय भी शिशु आत्माएँ लगातार यहाँ प्रवेश कर रही थीं। सचमुच कितनी अधिक थीं!

तभी मैंने शिशुओं का एक बड़ा समूह देखा, जो हाथों में पीला कागज़ लिए उड़कर बाहर आ रहा था। मैं हैरान हो ही रही थी कि न्यायाधिकारी ने कहा कि वे परलोक के अधिपति यमराज से स्वीकृत आदेश-पत्र लिए हुए हैं। इस आदेश-पत्र के होने पर परलोक के प्रहरी उन्हें यहाँ से बाहर जाने देते हैं और वे अपने माता-पिता को खोजने जा सकते हैं। अधिकतर वे अपनी माँ के शरीर से चिपककर उसे अस्वस्थ कर देते हैं। वे शरीर के किस स्थान पर चिपकेंगे, यह शिशु आत्मा की पसंद पर निर्भर करता है। कुछ शिशु आत्माएँ माँ के पेट में लौटना पसंद करती हैं और गर्भाशय के भीतर चिपक जाती हैं। कुछ माँ की छाती से चिपकना पसंद करती हैं, इत्यादि। कुछ लगातार माँ या पिता के पीछे लगी रहती हैं और कुछ माता-पिता को सोने नहीं देतीं। कुल मिलाकर, वे किसी भी समय परेशानी खड़ी करती रहती हैं। यदि दूसरे बच्चे जन्म लें, तो ये शिशु आत्माएँ परिवार की शांति बिगाड़ती हैं। उदाहरण के लिए, वे छोटे भाइयों और बहनों को मारती हैं और जानबूझकर अनेक घटनाएँ पैदा करती हैं, ताकि माता-पिता के प्रति अपना आक्रोश व्यक्त कर सकें।

यहाँ दाईं ओर एक पुराना नगर है, जो 70 वर्ष पहले का है। उसे "रक्त-मलिन नगर" कहते हैं। अब "रक्त-मलिन नगर" में जगह पर्याप्त नहीं रह गई है। उसके भीतर की शिशु आत्माओं में अकेलेपन का भाव अधिक प्रबल लगता है। न्यायाधिकारी ने कहा कि जिन शिशु आत्माओं का गर्भपात जानबूझकर नहीं किया

गया था, उन सभी को यहाँ रखा जाता है। ओह! तो यह बात है। इसीलिए वे सभी अकेले-अकेले रो रही थीं।

न्यायाधिकारी ने यह भी कहा कि 70 वर्ष पहले बहुत कम लोग जानबूझकर गर्भपात करवाते थे। उस समय अधिकतर ऐसी शिशु आत्माएँ थीं जो पर्याप्त पुण्यफल न होने के कारण जन्म नहीं ले सकी थीं। लेकिन आज मानव लोक में अधिकतर गर्भपात जानबूझकर किए जाते हैं। मानव लोक की संभोग के बाद ली जाने वाली गर्भनिरोधक गोली लेना भी प्राणिहत्या का अपराध है। शिशु आत्माएँ पहले ही गर्भ में आ चुकी होती हैं, और ऐसी गोलियाँ लेने से सफलतापूर्वक गर्भपात किए गए शिशुओं की संख्या भी असंख्य है।[17]

न्यायाधिकारी ने फिर कहा: "आजकल मानव लोक से गर्भपात में मारे गए शिशुओं की आत्माएँ हर दिन यहाँ हाज़िर होने आती हैं। उनमें से नब्बे प्रतिशत का गर्भपात यौन दुराचार के कारण हुआ होता है। यह प्राणिहत्या का एक महान दुष्कर्म है। यौन दुराचार में प्राणिहत्या जुड़ने से सामूहिक दुष्कर्म की एक विपत्ति बनेगी। जब इस कर्म की शक्ति स्वर्ग और पृथ्वी का संतुलन बिगाड़ने की सीमा तक पहुँच जाएगी, तब मानव लोक में निश्चित ही आपदा आएगी। यह इन्हीं द्वेषपूर्ण भावों के कारण होगा। उन्हें अपना आक्रोश निकालना है और इस भारी दुष्कर्म के एक हिस्से को आपदा के माध्यम से क्षीण करना है। आ यू! जल्दी लौटो और मानव लोक के सत्त्वों को गर्भपात के इस कर्मफल के बारे में सचेत करो!"

जी! न्यायाधिकारी, आज आपने बहुत परिश्रम किया!

मैं, आ यू, परलोक के न्यायाधिकारी के सामने हाथ जोड़ती हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर लौटती हूँ।

मैं आप सबके साथ 《महारत्नकूट सूत्र》 के खंड 56, 《बुद्ध द्वारा उपदिष्ट गर्भ में प्रवेश की सभा—चौदहवीं सभा का पहला भाग》 का एक अंश साझा करना चाहती हूँ। बुद्ध ने कहा: "पूर्वकर्मों के अनुसार जिस स्थान पर जन्म लेना होता है,

उससे उत्पन्न अंतराभव की आकृति भी वैसी ही होती है।[18] देव का अंतराभव हो तो सिर ऊपर की ओर होता है; मनुष्य, तिर्यक् और प्रेत के अंतराभव क्षैतिज अवस्था में आगे बढ़ते हैं; नरक का अंतराभव हो तो सिर सीधे नीचे की ओर होता है। सभी अंतराभवों में अभिज्ञा होती है। वे आकाश में चलते हैं और दिव्यचक्षु की भाँति दूर से अपने जन्म लेने का स्थान देख लेते हैं।"

"माता-पिता और संतान के बीच परस्पर आकर्षित करने वाला कर्म हो, तभी वह माँ के गर्भ में प्रवेश करता है। जब वह अंतराभव गर्भ में प्रवेश करना चाहता है, तो उसका चित्त विपर्यस्त हो जाता है। यदि वह पुरुष है, तो माँ के प्रति आसक्ति और पिता के प्रति द्वेष उत्पन्न होता है; यदि वह स्त्री है, तो पिता के प्रति आसक्ति और माँ के प्रति द्वेष उत्पन्न होता है।"

प्रत्येक जीवन के आगमन के लिए माता और पिता दोनों के साथ विविध कर्म-संबंधों का पूरा होना आवश्यक है। कर्म-संबंध न हो तो गर्भ में प्रवेश नहीं होता। संबंध के कारण जो जीवन आया है, उसे सँजोना चाहिए। संबंध शुभ हो या अशुभ, जब कारण और परिस्थितियाँ एकत्र होते हैं, तो उनका फल स्वयं ही भोगना पड़ता है। कामना है कि गर्भपात करवा चुके सभी सत्त्व सच्चे मन से पश्चात्ताप करें, बुद्ध का नाम जपें और इन दयनीय नन्ही शिशु आत्माओं को पुण्य समर्पित करें। कामना है कि वे शीघ्र पश्चिमी विशुद्ध भूमि में पुनर्जन्म लें और दुःख से मुक्त होकर सुख प्राप्त करें!

21/शिशु आत्माओं का तीव्र अभियोग—यमराज की पीली आदेश-पट्टिका

बुद्ध की शक्ति के अनुग्रह के लिए कृतज्ञ हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ!

अमिताभ बुद्ध! मैं, आ यू, परलोक के न्यायाधिकारी के सामने हाथ जोड़ती हूँ!

न्यायाधिकारी "अन्यायपूर्ण मृत्यु के रुदन नगर" की शिशु आत्माओं के मामलों का निपटारा कर रहे थे। मैंने एक बालिका की आत्मा को ज़ोर से चीखते सुना: "मैं तुमसे घृणा करती हूँ, बेहद घृणा करती हूँ! तुम्हें कभी नहीं छोड़ूँगी। जन्म-जन्मांतर तक तुम्हारी मृत्यु कभी शांति से नहीं होगी। तुम्हें कभी नहीं छोड़ूँगी। बदला लेने के लिए मैं निश्चित ही फिर तुम्हें खोजने आऊँगी।" वह लगातार पीड़ा से चीख रही थी। अरे! इतनी नन्ही शिशु आत्मा के मन में इतना प्रबल द्वेष! इस बालिका की आत्मा दूसरी शिशु आत्माओं से कुछ बड़ी दिख रही थी। न्यायाधिकारी ने कहा कि उस बालिका को गर्भ में रहते 6 महीने से अधिक हो चुके थे। माता-पिता को उसके लड़की होने का पता चला तो दूसरी बार उसका गर्भपात कर दिया गया। दोनों बार 6 महीने से अधिक की गर्भावस्था में उसका गर्भपात किया गया था। इसलिए उस बालिका की आत्मा ने परलोक के अधिपति यमराज से शिकायत की और यमराज ने उसे ऋण वसूलने के लिए फिर गर्भ में प्रवेश करने की अनुमति दे दी।

मैंने सोचा, उसके पास जाकर कुछ बात करूँ। मैंने उसके सामने एक बार 'अमिताभ बुद्ध' कहा और उससे पूछा कि वह माता-पिता से इतनी घृणा क्यों करती है। क्यों न यह बात छोड़ दे और उन्हें फिर खोजने न जाए? आखिर उन्हें लड़की नहीं चाहिए। यदि वह वहाँ जन्म भी लेगी, तो वे उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करेंगे। फिर यह कष्ट क्यों उठाना?

इस पर उस बालिका की आत्मा फिर फूट-फूटकर रोने लगी। उसने कहा कि ऐसा नहीं हो सकता। चाहे संसार के किसी भी छोर तक जाना पड़े, वह इस बात का बदला ज़रूर लेगी और माता-पिता को कभी नहीं छोड़ेगी।

उसने बहुत उत्तेजित और व्यथित होकर कहा कि वे दूसरी बार उसकी हत्या कर चुके हैं। दूसरी बार गर्भपात करते समय डॉक्टर ने भी कहा था कि ऐसा करना ख़तरनाक होगा, लेकिन उसके माता-पिता ने कहा कि सबसे ज़रूरी बात यह है कि माँ की जान सुरक्षित रहे और उसे कुछ न हो। बच्चा तो उन्हें चाहिए ही नहीं, इसलिए माँ के लिए सबसे लाभकारी तरीका अपनाकर यह काम कर दिया जाए।

बालिका की आत्मा ने रोते हुए बताया कि उस समय उसने माँ के पेट में अपने हाथ-पैर पूरी ताकत से चलाए थे, इस आशा से कि कुछ पहले बाहर आ सके। लेकिन डॉक्टर ने हाथ से उसका सिर दबाकर एक इंजेक्शन लगाया, जिसके बाद अचानक उसे चक्कर, पूरे शरीर में दर्द और निर्बलता महसूस होने लगी। फिर डॉक्टर ने कैंची से पहले उसके दाएँ हाथ को 2 टुकड़ों में काटा और चिमटी से पकड़कर बाहर निकाला। उसके बाद उसके पैरों को 4 टुकड़ों में काटा। पैरों को सक्शन कप से खींचकर बाहर निकाला गया। उस समय उसे तीव्र पीड़ा और हड्डियों तक चुभने वाली ठंड महसूस हो रही थी। उसके धड़ के साथ भी ऐसा ही किया गया।

बालिका की आत्मा ने रोते हुए आगे कहा: “सिर, मेरे कान और आँखें एक-एक टुकड़ा करके काटे गए। विशेषकर सिर काटे जाने पर सबसे अधिक दर्द हुआ। डॉक्टर ने मेरे सिर पर कई बार कैंची चलाई। उसने नुकीले चाकू के आकार के हुक से मुझे खींचकर बाहर निकाला और चिमटी से भी मुझे पकड़ा, इत्यादि। डॉक्टर जब भी मुझे काटती, मुझे बहुत तेज़ दर्द होता। पूरे शरीर में विरोध करने की शक्ति नहीं थी और रक्त लगातार बहता रहा। इस पीड़ा को मैं कभी, कभी नहीं भूलूँगी। विशेषकर इस बार गर्भपात करने वाली डॉक्टर का अनुभव अधिक नहीं था। वह पिछली बार के डॉक्टर की तुलना में धीरे काम करती थी और उससे गलती भी हुई। मुझे कुछ

कम बार काटकर भी निकाला जा सकता था, लेकिन डॉक्टर ने गलती की और काम ठीक से नहीं किया, इसलिए उसने कुछ अधिक उपकरण इस्तेमाल किए, जिससे मेरी पीड़ा बढ़ी। उदाहरण के लिए, मथने की छड़, सक्शन कप और हुक आदि का इस्तेमाल पिछली बार से अधिक बार किया गया। ये सारी पीड़ाएँ सिर्फ़ इसलिए थीं कि उन दोनों को मैं नहीं चाहिए थी। मैं डॉक्टर को परेशान नहीं करूँगी, क्योंकि डॉक्टर ने पहले उन्हें मुझे जन्म देने का सुझाव दिया था, लेकिन उन्होंने नहीं सुना। उन्होंने ही मुझे सूर्य का प्रकाश देखने से रोका। गलती उन्हीं की है। वे बार-बार मुझे मरवाना चाहते थे। मैं उन दोनों से सदा बेहद घृणा करती रहूँगी। मैं चाहती हूँ कि उनकी मृत्यु कभी शांति से न हो, कभी शांति से न हो! मैं उन्हें कभी नहीं छोड़ूँगी।" फिर पीड़ा से भरा रुदन शुरू हो गया। आह! सचमुच! कितना गहरा द्वेष और प्रतिशोध का भाव था। लगता है कि मानव लोक के इन माता-पिता को सचमुच गहन पश्चात्ताप करने की आवश्यकता है। आखिर लड़का होने और लड़की होने में क्या अंतर है!

न्यायाधिकारी ने कहा: "यमराज ने इस बालिका की आत्मा को उन्हीं माता-पिता के परिवार में ऋण वसूलने के लिए फिर जन्म लेने की अनुमति दे दी है। इस बार इस बालिका की आत्मा पीला आदेश-पत्र हाथ में लेकर अपनी माँ के गर्भाशय में रह सकती है। जब उसका मानव आकार बन जाएगा, तब यह पीला आदेश-पत्र ठीक जननांग वाले स्थान पर होगा और डॉक्टर उसे गलती से लड़का समझ लेगा। माँ की गर्भावस्था के दौरान इस बालिका की आत्मा को माता-पिता दोनों का स्नेह मिलेगा और वे उसके आगमन की प्रतीक्षा करेंगे। बेशक, अंत में वे निराश होंगे, क्योंकि जन्म लेने वाला बच्चा लड़की होगा। यह यमराज का निर्णय है। उन्होंने मर्यादा का पालन नहीं किया, परलोक के विधान की व्यवस्था भंग की और मनुष्य की हत्या का अपराध किया। इन माता-पिता की पारिवारिक स्थिति और पुण्यफल मूलतः अच्छे थे, लेकिन दो बार गर्भपात के रूप में प्राणिहत्या करने के कारण उनके पुण्यफल और आयु में हर स्तर पर कटौती कर दी गई है। आगे चलकर उन्हें इस बालिका की आत्मा से

मिलने वाले संतान के अनादर का कर्मफल भी भोगना होगा। वास्तव में ऐसा नहीं है कि यमराज ने निर्णय दिया हो कि इन माता-पिता को भविष्य में दंड और कष्ट सहना ही होगा। बात केवल यह है कि इन माता-पिता ने स्वयं ब्रह्मांड के उस नियम का पालन नहीं किया जिसके अनुसार मनुष्य की हत्या नहीं करनी चाहिए। यदि पहली गर्भावस्था में ही उन्होंने इस शिशु आत्मा को जन्म दे दिया होता, तो उनके पुण्यफल और आयु में हर स्तर पर कटौती नहीं होती। जैसा कारण बनाया जाता है, वैसा ही फल मिलता है। किसी भी जीव की हत्या करने पर भविष्य में उसी के हाथों मारे जाने, अल्पायु होने और अनेक रोगों से ग्रस्त होने का कर्मफल भोगना होगा। युग और तकनीक चाहे कितनी ही तेज़ी से विकसित हों, परलोक के विधान में गुप्त पुण्य के तीन मूल नियम—किसी का जीवन बचाना, विधवा को अपना सतीत्व बनाए रखने में सहायता देना और ऐसा परम सत्कर्म करना जिसके बारे में किसी को पता न चले—ये तीनों कभी नहीं बदलेंगे। स्वर्ग, पृथ्वी और मानवीय संबंधों की मर्यादा के मानदंड भी कभी नहीं बदलेंगे। हर जीवन को जीवित रहने का अधिकार है। परलोक में प्रतिदिन बहुत अधिक शिशु आत्माएँ हाज़िर होने आती हैं, क्योंकि मानव लोक में उनके भावी माता-पिता ने जानबूझकर गर्भपात करवाया होता है। परलोक का विधान इस प्रकार मनुष्य की हत्या करने वाले जीवों को कठोर दंड देगा। केवल दूसरों को गर्भपात के लिए उकसाने से भी आशीष और आयु घटती हैं, तो स्वयं गर्भपात करवाने की बात ही क्या। इसके विपरीत, दूसरों को गर्भपात न करवाने के लिए समझाने से आशीष और आयु बढ़ सकती हैं। परलोक में उस व्यक्ति के जीवन-मृत्यु के अभिलेख में एक महान सत्कर्म का गुप्त पुण्य दर्ज होगा। इस प्रकार अपना और दूसरों का, दोनों का हित होता है।”

न्यायाधिकारी ने आ यू को आगे समझाते हुए कहा: “आज मानव लोक के जीवों में कर्मफल की समझ का बहुत गंभीर अभाव है। वे सोचते हैं कि बच्चा अभी जन्मा ही नहीं, इसलिए उसे कुछ पता नहीं होता। वास्तव में, गर्भ धारण होने के बाद कोई

जीवन मनुष्य के समान ही होता है, केवल उसका जीवन अभी बहुत नाज़ुक होता है। उसके पास स्मृति होती है और वह पीड़ा भी महसूस कर सकता है। विशेषकर जिन शिशु आत्माओं का मानव आकार बन चुका है, उन्हें दर्द का अनुभव केवल एक महीने से गर्भ में स्थित शिशुओं की तुलना में अधिक तीव्र होता है, और आगे भी इसी प्रकार होता है। आ यू, 'अन्यायपूर्ण मृत्यु के रुदन नगर' की शिशु आत्माओं के अभियोग सुनोगी तो समझ जाओगी कि मानव लोक में गर्भपात करवाने वाली माताओं के स्त्रीरोग, कमर-दर्द, सिरदर्द और लंबे उपचार के बाद भी ठीक न होने वाले तरह-तरह के हठीले शारीरिक रोगों का इन शिशु आत्माओं से संबंध है।"[19]

इस "अन्यायपूर्ण मृत्यु के रुदन नगर" को देखा तो वह सचमुच अतुलनीय रूप से विशाल था। अपनी क्षमता से मैं उसकी सीमा देख ही नहीं पा रही थी। उसके भीतर रोने की आवाज़ें लगातार गूँज रही थीं और कानों को बहरा कर देने वाली थीं। सचमुच अत्यंत दयनीय दशा थी!

लौटने से पहले मैंने सोचा कि उस बालिका की आत्मा से फिर मिल लूँ जो शीघ्र ही गर्भ में प्रवेश करने वाली थी। मैंने कहा: "अमिताभ बुद्ध! छोटी बहन, मत रोओ। याद रखना कि जन्म लेने के बाद माता-पिता के प्रति आदर और सेवाभाव रखना है! आखिर माँ को दस महीने गर्भ धारण करना होता है[20] और यह भी बहुत कष्टदायक है। फिर बैर का बदला बैर से लेने का अंत कब होगा? अब जब यमराज ने तुम्हें आदेश-पत्र दे ही दिया है और इस बार तुम्हें फिर गर्भपात की पीड़ा नहीं सहनी पड़ेगी, तो इस बात को जाने दो।" बालिका की आत्मा ने तुरंत क्रोधित होकर उत्तर दिया कि यह असंभव है और वह उन्हें कभी नहीं छोड़ेगी।

मैंने कहा: "ऐसा सोचो! यदि यमराज का आदेश-पत्र न होता, तो पता नहीं तुम्हें फिर गर्भ में प्रवेश करने के लिए कितने समय तक प्रतीक्षा करनी पड़ती। तुम्हें यमराज का आभार मानना चाहिए!" मेरी यह बात सुनकर उसने रोना बंद करना शुरू किया। ऐसा लगा कि वह इस बात से सहमत है कि उसे यमराज का आभार

मानना चाहिए। मैंने कहा कि उसे यमराज के उपकार के लिए कृतज्ञ होना चाहिए। उसने उत्तर दिया कि वह यमराज का आभार मानेगी, लेकिन फिर भी माता-पिता को नहीं छोड़ेगी।

"अच्छा, छोटी बहन! मैं अब जा रही हूँ। अमिताभ बुद्ध! आशा है कि आगे तुम्हारे साथ फिर कोई अप्रिय घटना नहीं होगी। अपना खूब ध्यान रखना।"

न्यायाधिकारी के सामने हाथ जोड़े! धन्यवाद, न्यायाधिकारी!

आज मैं विदा लेती हूँ। श्वेत कमल पर सवार होकर लौटती हूँ!

22/गर्भपात करने वाले डॉक्टरों का इस जन्म और अगले जन्म का कर्मफल—विखंडन नरक में 100000 वर्ष का दंडात्मक कारावास

जिस शहर में मैं रहती हूँ, वहाँ के समाचारपत्रों में अक्सर ऐसी खबरें छपती हैं कि कुछ किशोरियाँ गर्भपात के बाद घर में बेहोश हो गईं और उन्हें एम्बुलेंस से उपचार के लिए अस्पताल ले जाना पड़ा; या उन्होंने अभी-अभी जन्मे शिशु को मारकर फेंक दिया। कुछ तो उसे मारे बिना ही सीधे बीसवीं या तीसवीं मंज़िल से बाहर फेंक देती हैं। यह सचमुच घोर अनुचित है। इसका कारण आज के समाज का दूषित वातावरण है। हर ओर खराब विचारों वाले विज्ञापन हैं। घड़ी बेचने के विज्ञापन में भी गहरे गले के कपड़े पहने लड़की दिखाई जाती है और उसमें कहा जाता है कि संबंध सदा बना रहे, इसकी परवाह नहीं, बस कभी उसे पा लिया था, यही मायने रखता है। अंतर्वस्त्रों, वज़न घटाने आदि के दूसरे विज्ञापन तो और भी देखने योग्य नहीं हैं। स्त्री-पुरुष के प्रेम और भोग के ऐसे तरह-तरह के चित्र तथा वीडियो विज्ञापन बहुत अधिक हैं जो लोगों की चेतना को सुन्न कर देते हैं। इसके साथ ही मीडिया लगातार लोकप्रिय सितारों के व्यभिचारपूर्ण निजी जीवन, अनियंत्रित यौन आचरण और विवाहेतर संबंधों की खबरें प्रसारित करता रहता है। इससे नैतिक धारणाएँ गिरती हैं और आज के किशोर-किशोरियाँ भटककर यह मानने लगते हैं कि यही समय के सबसे आगे चलना है। परिणामस्वरूप, यौन विषयों का पर्याप्त ज्ञान न होने पर भी किशोर-किशोरियों का यौन व्यवहार निर्भीक और उन्मुक्त हो गया है। वास्तव में यह आध्यात्मिक पतन है।

मीडिया की इन्हीं नकारात्मक खबरों का प्रभाव गर्भपात की स्थिति को दिन-ब-दिन और गंभीर बना रहा है तथा अनेक सामाजिक समस्याएँ भी उत्पन्न कर रहा है।

केवल लोगों को इसका पता नहीं है, इसलिए इसे गंभीरता से नहीं लिया गया। जानकारी के अनुसार, जापान में कम-से-कम दो हज़ार मंदिर ऐसे हैं जो विशेष रूप से शिशु आत्माओं को भेंट चढ़ाने के लिए हैं। इससे जापान में गर्भपात की चौंकाने वाली संख्या का पता चलता है। ताइवान में भी 1997 में वार्षिक गर्भपातों की अनुमानित संख्या तीन लाख थी, 1999 में चार लाख और 2000 में पाँच लाख थी। ये आँकड़े केवल नमूनों के आधार पर निकाले गए अनुमान हैं; सटीक वास्तविक आँकड़े सार्वजनिक नहीं किए जाते।

अमेरिका के मिनेसोटा राज्य में किए गए एक अध्ययन से पता चलता है कि गर्भपात के बाद छह महीनों के भीतर किशोरियों की आत्महत्या की दर गर्भपात न करवाने वाली किशोरियों की दर से दस गुनी है। अन्य संबंधित अध्ययन भी बताते हैं कि कई बार गर्भपात करवा चुकी किशोरियों में गर्भपात के छह महीनों के भीतर आत्महत्या और मानसिक अव्यवस्था का जोखिम और अधिक बढ़ जाता है।[21]

आइए, फिर देखें कि बौद्ध सूत्र प्राणिहत्या के कर्मफल के बारे में क्या कहते हैं। इस विषय पर सचमुच बहुत-से ग्रंथ हैं। पहले 《उपासक-शील सूत्र》 में कही गई यह बात देखें: “सभी जीव प्राणिहत्या के कारण वर्तमान जीवन में कुरूपता, दुर्बलता, बदनामी और अल्पायु पाते हैं; उनकी संपत्ति घटती है, स्वजनों से बिछोह होता है, सज्जन और आर्य उनकी निंदा करते हैं तथा लोग उन पर विश्वास नहीं करते। अपराध दूसरे करते हैं, लेकिन अनायास उसकी विपत्ति उन पर आ पड़ती है। इसे वर्तमान जीवन में दुष्कर्म का फल कहते हैं। इस शरीर को छोड़ने के बाद उन्हें नरक में गिरना होगा, अनेक कष्ट और संताप सहने होंगे, भूख-प्यास के साथ लंबा जीवन भोगना होगा तथा कुरूपता, दुर्बलता और बदनामी जैसी स्थितियाँ सहनी होंगी। इसे अगले जीवन में दुष्कर्म का फल कहते हैं। यदि उन्हें मानव शरीर मिल भी जाए, तो फिर कुरूपता, अल्पायु और दरिद्रता भोगनी होगी। ऐसे एक दुष्ट व्यक्ति के कर्मजनित कारणों और परिस्थितियों की शक्ति से बाहरी संसार के सभी प्रकार के अनाज,

वृक्षों के फल और लताओं के फल घट जाते हैं। उस व्यक्ति से उत्पन्न विपत्ति फैलकर एक पूरे जगत को प्रभावित करती है।"

अब देखें कि बुद्ध 《ब्रह्मजाल सूत्र》 में क्या कहते हैं: "सभी पुरुष मेरे पिता हैं। सभी स्त्रियाँ मेरी माता हैं। जन्म-जन्मांतर में ऐसा कोई जन्म नहीं जिसमें मैंने उनसे जन्म न लिया हो।" बुद्ध ने कहा: "बुद्धपुत्रों! स्वयं प्राणिहत्या करना, दूसरों से प्राणिहत्या करवाना, उपाय करके प्राणिहत्या करना, प्राणिहत्या की प्रशंसा करना, किसी को ऐसा करते देखकर प्रसन्न होना, यहाँ तक कि मंत्रों से प्राणिहत्या करना —प्राणिहत्या के हेतु, उसकी परिस्थितियाँ, उसकी विधियाँ और उसका कर्म—इन सबके संबंध में, किसी भी प्राणधारी जीव को जानबूझकर नहीं मारना चाहिए। बोधिसत्त्व को सदा करुणा और माता-पिता के प्रति आदर-सेवा का भाव उत्पन्न करना चाहिए तथा सभी जीवों को बचाने और उनकी रक्षा करने के उपाय करने चाहिए। इसके विपरीत, यदि वह मन को उच्छृंखल छोड़कर अपने सुख के लिए प्राणिहत्या करता है, तो यह बोधिसत्त्व का पाराजिक अपराध है।" बुद्ध अनेक सूत्रों में प्राणिहत्या के कारण नरक में मिलने वाले कर्मफल का विस्तार से वर्णन कर चुके हैं।[22]

अब नरक जाकर परलोक के न्यायाधिकारी से पूछती हूँ कि दूसरों का गर्भपात करने वाले चिकित्सकों को क्या कर्मफल मिलता है?

बुद्ध की शक्ति से आशीर्वाद और संरक्षण की प्रार्थना करती हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ!

अमिताभ बुद्ध! मैं, आ यू, परलोक के न्यायाधिकारी को हाथ जोड़कर प्रणाम करती हूँ!

आज मैं परलोक के न्यायाधिकारी से पूछना चाहती हूँ कि दूसरों का गर्भपात करने वाले चिकित्सकों को क्या कर्मफल मिलता है?

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: “70 वर्ष पहले गर्भपात करने वाले चिकित्सकों को केवल चीख-पुकार के नरक में 1,000 वर्ष, तलवार-पत्र नरक में 1,000 वर्ष, हृदय-विदारण नरक में 1,000 वर्ष, हिमशीत नरक में 1,000 वर्ष और नेत्र-बेधन नरक में 1,000 वर्ष बिताने पड़ते थे। जब तक उनके द्वारा पीड़ित सभी शिशु-आत्माएँ सफलतापूर्वक मनुष्य लोक में जन्म नहीं ले लेतीं, तब तक वे नरक के कष्ट से मुक्त नहीं हो सकते थे। उनकी आत्मिक चेतना कितनी सँभली है, यह देखकर फिर तय किया जाता था कि वे कब मनुष्य लोक में पुनर्जन्म लेंगे। मनुष्य लोक में पुनर्जन्म लेने पर वे अल्पायु और अनेक रोगों से ग्रस्त होते थे। आम तौर पर कंधों, गर्दन, हाथ-पैर आदि अंगों का सुन्न पड़ना, अत्यधिक घबराहट, सिरदर्द, कमर और पीठ में दर्द, मिर्गी, पुराना नासाशोथ, विभिन्न स्त्रीरोग, पति-पत्नी के बीच संभोग न हो पाना, स्तन कैंसर, गर्भाशय कैंसर, रात में बार-बार पेशाब आना आदि होता था। एक बार में सभी रोग-लक्षणों को पूरी तरह बताना संभव नहीं। कुल मिलाकर, गर्भपात करने वाले चिकित्सक ने उस समय शिशु-आत्माओं को जैसे-जैसे कष्ट सहाए थे, मनुष्य लोक में मानव के रूप में पुनर्जन्म लेने पर उसे भी बीमारी के रूप में वे कष्ट अवश्य सहने पड़ते थे। मनुष्य लोक की दवाएँ उन्हें ठीक नहीं कर सकतीं। जब तक उस कर्म की शक्ति समाप्त न हो, रोग ठीक नहीं होता; उसके समाप्त होने पर रोग ठीक हो जाता है। यह 70 वर्ष पहले दूसरों का गर्भपात करने वाले चिकित्सकों का कर्मफल था।[23]

आज जीवितों के लोक में गर्भपात करने वाले चिकित्सकों का कर्मफल यह है कि जीते-जी ही उनके सौभाग्य और आयु में हर स्तर पर कटौती हो चुकी होती है। पारिवारिक भाग्य, कार्यक्षेत्र का भाग्य और धन का भाग्य, सब घट जाते हैं। सबसे पहले सिरदर्द, कमर और पीठ में दर्द, कंधों तथा हाथों में दर्द दिखाई देते हैं। आयु समाप्त होने के बाद उन्हें पहले विखंडन नरक में 1,00,000 वर्ष कर्मफल भोगना पड़ता है। उसके बाद उन्हें अभी बताए गए प्रत्येक नरक में दंड भोगने के लिए भेजा

जाता है। आज दूसरों का गर्भपात करने वाले चिकित्सक प्रतिदिन बड़ी संख्या में प्राणिहत्या करते हैं और इससे बहुत-से जीवन जुड़े होते हैं। साथ ही, आज उपयोग किए जाने वाले गर्भपात के उपकरणों से शिशु-आत्माओं को पहुँचने वाली क्षति और उसके बाद के दुष्प्रभाव भी पहले से अधिक हैं। इसलिए आज गर्भपात करने वाले चिकित्सकों द्वारा बोए गए दुष्कर्म भी अधिक भारी हैं।

वास्तव में, इन भावी माता-पिता के गर्भपात करवाने के बाद शिशु-आत्माओं में द्वेष उत्पन्न होता है, जिससे आत्माओं के कारण बाधाएँ आने के मामले भी बहुत होते हैं। पहले तुमने हाथों में पीले आदेश-पत्रक लिए जिन शिशु-आत्माओं को देखा था, वे सब अपने भावी माता-पिता से बदला लेने बाहर जा रही थीं। इसी को आत्माओं से उत्पन्न बाधा कहते हैं। उनसे आने वाली विपत्तियाँ अनेक प्रकार की होती हैं। हल्के मामलों में वे शरीर पर अधिकार कर लेती हैं, जिससे व्यक्ति लंबे समय तक बीमार रहता है और दवाएँ लेता रहता है; गंभीर मामलों में जान का खतरा तक हो सकता है। इसके अलावा, बहुत-से बच्चे वास्तव में अपने ही पूर्वजों के पुनर्जन्म होते हैं।

आ यू, अब तुम 'विखंडन नरक' जाकर देखो! लौटकर विस्तार से लिखना, ताकि संसार के लोग सावधान हों!"

अच्छा! परलोक के न्यायाधिकारी के प्रति आभार! मैं तुरंत 'विखंडन नरक' पहुँचती हूँ।

मैंने देखा कि प्रत्येक नरक की एक विशेषता है: भीतर प्रवेश करने से पहले ही पीड़ा से उठती, कानों को बहरा कर देने वाली चीखें और कराहें सुनाई देने लगती हैं। यह नरक की कभी न बदलने वाली विशेषता है। इसलिए यह कहना बिल्कुल सही है कि सबसे अधिक कष्ट नरक में हैं। भूलकर भी नरक मत आना। तभी मैंने कुछ स्त्री-आत्माओं को देखा। बहुत-से यक्ष उन्हें छोटे, गोल, लाल रंग के लोहे के छिद्रों में हाँक रहे थे, जिनमें तीखी सड़ांध भरी थी। प्रत्येक के लिए एक अलग लोहे का छिद्र था। वे छिद्र इतने छोटे थे कि इस तरह ज़बरदस्ती ठूँसने पर भी स्त्री-आत्माओं

के शरीर उनमें घुस ही नहीं सकते थे! स्त्री-आत्माएँ मुड़कर भागीं, लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। यक्ष बहुत क्रूर थे! वे क्रोध में ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते हुए हाथों के नुकीले काँटेदार शस्त्रों से स्त्री-आत्माओं को बींधकर उठाते और लोहे के छिद्रों में ज़बरदस्ती ठूँस देते। स्त्री-आत्माओं का पूरा शरीर खून से भर गया, हाथ-पैर टूट गए, और अंततः वे पूरी की पूरी भीतर चली गईं। फिर यक्षों ने लोहे के छिद्रों की ओर पंखा झला। स्त्री-आत्माएँ ऐसी हो गईं मानो कुछ हुआ ही न हो; उनका पूरा शरीर फिर पहले जैसा हो गया। तभी यक्षों ने फिर नुकीले चाकू जैसे हुक निकाले और स्त्री-आत्माओं को उनमें फँसाकर बाहर खींचने लगे। स्त्री-आत्माएँ दर्द से चीख रही थीं; उनका बाहर निकलना संभव ही नहीं था। तब यक्षों ने कैंचियाँ लीं और स्त्री-आत्माओं को टुकड़े-टुकड़े काटकर निकाला। ज़मीन खून से भर गई। शरीर का प्रत्येक भाग बाहर निकल आने पर यक्षों ने चूषण-पात्रों से उन सभी भागों को खींचकर एक साथ जोड़ दिया और वे फिर जीवित हो गईं। यही चक्र फिर दोहराया गया और ऐसा पीड़ादायक दंड लगातार चलता रहा। आह! यह सचमुच अत्यंत भयानक था। मैं आगे और नहीं देखना चाहती थी। यह असहनीय पीड़ा थी! अमिताभ बुद्ध! भूलकर भी दूसरों को हानि पहुँचाने वाले काम मत करना। यह बच्चे को जन्म देने की पीड़ा से न जाने कितने सैकड़ों-हज़ारों गुना अधिक कष्टदायक है!

परलोक के न्यायाधिकारी, आपने कष्ट उठाया। मैं, आ यू, आपको हाथ जोड़कर प्रणाम करती हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर लौटती हूँ।

23/बच्चे, कृपया मत रोओ—परलोक के न्यायाधिकारी गर्भपात के परिहार के उपाय विस्तार से समझाते हैं

बुद्ध की शक्ति के अनुग्रह के लिए कृतज्ञ हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ!

अमिताभ बुद्ध! मैं, आ यू, परलोक के न्यायाधिकारी को साष्टांग प्रणाम करती हूँ!

आज मैं परलोक के न्यायाधिकारी से पूछना चाहती हूँ: “गर्भपात के परिहार के क्या उपाय हैं, और आप लोग इस परिहार के विषय को कैसे देखते हैं?”

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: “जीवितों के लोक में माता-पिता के मामले में गर्भपात किसी भी कारण से हुआ हो, यदि गर्भपात संपन्न हो गया, तो प्राणिहत्या का कर्म पूरा हो चुका है। नरक की जीवन-मृत्यु की बही में यह दर्ज हो जाता है कि किस वर्ष और किस महीने एक अजन्मे शिशु की आत्मा की हत्या की गई। आयु समाप्त होने पर उन्हें नरक में परलोक के महान सभागार में मुकदमे और दंड के लिए जाना होगा। यदि गर्भपात इसलिए हुआ कि शिशु-आत्मा के पास मनुष्य लोक में जन्म लेने के लिए पर्याप्त पुण्यफल नहीं था, तो ऐसे माता-पिता को नरक में जाकर दंड नहीं भोगना पड़ता। फिर भी उन्हें अपने कर्म और पुण्यफल की कमी के लिए पश्चात्ताप करना चाहिए, जिसके कारण वे उस शिशु को सफलतापूर्वक मनुष्य लोक में नहीं ला सके। उन्हें पश्चात्ताप करके पुण्य समर्पित करना चाहिए और कामना करनी चाहिए कि शिशु-आत्मा शीघ्र ऊपर उठकर किसी सुगति में जन्म ले सके। हर बात कारण और फल के संबंधों से जुड़ी है। शिशु-आत्मा गर्भ में प्रवेश कर पाती है क्योंकि उसके और भावी माता-पिता के बीच पिछले जन्मों के शुभ-अशुभ कर्मों से

जुड़े असंख्य कारण-फल संबंध होते हैं। बीच में ही उसकी मृत्यु हो जाना परलोक के विधान के अंतर्गत ऐसा निश्चित कर्म है जिसे बदला नहीं जा सकता। इसका कारण यह है कि शिशु-आत्मा और भावी माता-पिता, दोनों ने पिछले जन्मों में प्राणिहत्या, चोरी और यौन दुराचार के कर्म किए थे।

गर्भपात शिशु-आत्मा के लिए पीड़ादायक होता है। अधिकांश मामलों में शिशु-आत्मा ने जितनी पीड़ा सही है, भविष्य में भावी माता-पिता को भी उतनी ही पीड़ा एक बार सहनी पड़ती है। इसके अलावा, दो ऐसे कारण हैं जिनसे दंड भोगने की अवधि दुगुनी हो जाती है। पहला, यदि समय का अंतर लंबा हो, तो अवधि दुगुनी करनी पड़ती है। समय का अंतर गर्भपात के समय से गिना जाता है। यदि भावी माता-पिता लगातार पश्चात्ताप न करें, ऐसा मानें जैसे कुछ हुआ ही न हो और कारण-फल तथा कर्मफल के चक्र पर विश्वास न करें, जबकि शिशु-आत्मा अकेली नरक के 'अन्यायपूर्ण मृत्यु के रुदन-नगर' में पीड़ा से आँसू बहाती, कष्ट सहती और द्वेष रखती रहे, तो शिशु-आत्मा का कष्ट लगातार खिंचता जाता है और उसका द्वेष भी अधिक गहरा होता जाता है। कुछ मामलों में मनुष्य लोक के भावी माता-पिता का पुण्यफल अधिक होता है, इसलिए उन्हें तत्काल कर्मफल नहीं भोगना पड़ता। उन्हें उनके पुण्यफल के समाप्त होने के बाद ही फल मिलता है। कुछ को तो अगले जन्म तक प्रतीक्षा करनी पड़ सकती है। ऐसे मामलों में समय कुछ अधिक लंबा हो जाता है। लेकिन परलोक के विधान में कारण और फल समय, युग या रूप-रंग बदलने से कभी अस्त-व्यस्त नहीं होते। ऐसा नहीं कि फल मिलेगा ही नहीं; बस उसका समय अभी नहीं आया है। कारण-फल के नियम में तनिक भी चूक नहीं होती। इस पूरी अवधि में बने कर्म-संबंधों का फल गर्भपात करवाने वाले माता-पिता को लौटकर मिलेगा। इसलिए गर्भपात करवा चुके सभी भावी माता-पिता को जल्द से जल्द सच्चे मन से पश्चात्ताप करना चाहिए और इस समस्या का सामना करके इसका समाधान करना चाहिए। अन्यथा शिशु-आत्मा के ऋण वसूलने के कर्मफल का

सामना अवश्य करना पड़ेगा और परलोक के अटल विधान के कठोर फल से बचना भी कठिन होगा।

दूसरा कारण यह है कि यदि शिशु-आत्मा की अपनी बात से चिपके रहने की प्रवृत्ति विशेष रूप से प्रबल हो, तो दंड की अवधि दुगुनी करनी पड़ती है। गर्भपात के बाद जीवितों के लोक में माता-पिता में विशेषकर माँ का अपराध कुछ अधिक भारी होता है, क्योंकि गर्भपात का अंतिम निर्णय माँ ही करती है। जीवितों के लोक में बहुत-सी माताएँ अंतिम क्षण में गर्भपात न करवाने का निर्णय लेती हैं। ऐसी माताएँ जीवन बचाने का पुण्य संचित कर सकती हैं। जिन शिशु-आत्माओं की हठपूर्वक चिपके रहने की प्रवृत्ति प्रबल होती है, वे प्रायः ऋण वसूलने के लिए जन्म लेने वाले बच्चे होते हैं। दुर्भाग्य से उन्हें फिर गर्भपात का भाग्य झेलना पड़ता है, जिससे यह अशुभ कर्म-संबंध बहुत गहरा हो जाता है। अर्थात, गर्भ में आने के समय ही उनका द्वेष बहुत गहरा था; उस पर गर्भपात की पीड़ा और द्वेष जुड़ जाने से यह अशुभ संबंध अत्यंत गहरा हो जाता है। इसलिए उसका फल भोगते समय दंड दुगुना हो जाता है।

गर्भपात के परिहार के दो उपाय हैं। एक आंतरिक शक्ति पर निर्भर करता है, अर्थात मन से किए गए सच्चे पश्चात्ताप की शक्ति से इसे सुलझाना। दूसरा बाहरी शक्ति पर निर्भर करता है: पुण्य संचित करना और भलाई करना, जिससे इस घटना को लेकर शिशु-आत्मा का द्वेष धीरे-धीरे कम हो। केवल इन्हीं दो उपायों से परिहार संभव है। प्रत्येक मामले में कितना समय लगेगा, इस पर एक ही नियम नहीं लगाया जा सकता। निश्चय ही, जितने अधिक गर्भपात करवाए गए हों, उतना ही अधिक समय लगेगा, क्योंकि प्रत्येक गर्भपात से एक शिशु-आत्मा के साथ अशुभ कर्म-संबंध बनता है। यह अशुभ संबंध कितना गहरा है, यह भावी माता-पिता और उस शिशु-आत्मा के पिछले जन्मों के कर्मों पर निर्भर करता है। यदि संबंध शुभ था, तो स्थिति कुछ बेहतर होती है। वह उपकार का प्रतिदान करने आई थी, इसलिए स्वाभाविक रूप से आगे की परेशानियाँ कम होंगी। लेकिन गर्भपात शिशु-आत्मा को पीड़ा देता

है, इसलिए पहले का शुभ संबंध अशुभ संबंध में बदल जाता है। यदि वह अशुभ संबंध के कारण आई थी, तो गर्भपात से स्थिति और बिगड़ती है तथा द्वेष और गहरा हो जाता है। हर गर्भपात शिशु-आत्मा को बहुत अधिक पीड़ा देता है। पीड़ा की मात्रा प्रत्येक मामले में अलग होती है। सामान्यतः वह भ्रूण के आकार के साथ धीरे-धीरे बढ़ती है: भ्रूण जितना बड़ा होता है, पीड़ा उतनी अधिक और द्वेष भी उतना ही प्रबल होता है।[24]

गर्भपात के कर्मफल की उत्पत्ति के कई पहलू हैं। वर्तमान में गर्भपात से मारी गई अधिकांश शिशु-आत्माओं की यह स्थिति लोगों के यौन दुराचार के कारण होती है। यही गंभीर समस्या है। गर्भपात के कर्म से जुड़े लोगों में भावी माता-पिता, चिकित्सक और दूसरों को गर्भपात करवाने के लिए उकसाने वाले वे लोग शामिल हैं जिनके उकसाने पर गर्भपात हो गया हो। इन सभी को नरक का कर्मफल भोगना पड़ता है। यदि एक शिशु-आत्मा का गर्भपात किया गया है, तो देखना होता है कि उसका द्वेष और उसकी चिपके रहने की प्रवृत्ति कितनी प्रबल है। लेकिन वे गहरे हों या हल्के, अशुभ संबंध बन चुका है। जिसने घंटी बाँधी है, उसे खोलना भी उसी का काम है।[25] गर्भपात किसी भी कारण से हुआ हो, जीवितों के लोक के भावी माता-पिता को गहरी लज्जा और पश्चात्ताप का भाव उत्पन्न करना ही चाहिए। गर्भपात के बाद उन्हें प्रतिदिन अत्यंत सच्चे मन से शिशु-आत्माओं से क्षमा माँगनी चाहिए, ताकि इससे उनका द्वेष कम हो। शिशु-आत्माएँ आत्माएँ हैं और उनमें दूसरों के मन को जानने की क्षमता होती है। वे जीवितों के लोक में अपने माता-पिता के विचार जान सकती हैं, इसलिए सच्चे मन से करना आवश्यक है। यदि यह केवल औपचारिकता निभाने के लिए यंत्रवत किया गया हो, सच्चा पश्चात्ताप न हो, तो इसका कोई लाभ नहीं। इसे अत्यंत सच्चे मन से, पर्याप्त निष्ठा और व्याकुल विनय के साथ प्रतिदिन करना चाहिए। आरंभ में बहुत-सी असुविधाजनक अनुभूतियाँ हो सकती हैं। सबसे सामान्य हैं सिरदर्द, छाती में दर्द, हाथ-पैरों में दर्द, कमर और पीठ में दर्द तथा

मानसिक तनाव आदि। इन सबकी गिनती नहीं की जा सकती और ये व्यक्ति-व्यक्ति में अलग होती हैं। जीवितों के लोक के थोड़े-से भावी माता-पिता को शरीर में कुछ विशेष पीड़ाएँ सहनी पड़ती हैं। यह शिशु-आत्मा के साथ उनके कर्म-संबंध पर निर्भर करता है। ऊपर बताई गई पीड़ा की अनुभूति सामान्यतः प्रत्येक भावी माता-पिता को होती है। कुछ भावी माता-पिता को ऊपर बताई गई सभी पीड़ाएँ होती हैं। कुछ का गर्भपात-संबंधी कर्मभार उतना भारी नहीं होता: उन्होंने जानबूझकर गर्भपात नहीं किया, बल्कि भ्रूण के पास मनुष्य लोक में जन्म लेने के लिए पर्याप्त पुण्यफल नहीं था, इसलिए गर्भपात हुआ। ऐसे माता-पिता की स्थिति अपेक्षाकृत कुछ बेहतर होती है। फिर भी उन्हें पश्चात्ताप करना चाहिए, ताकि शिशु-आत्मा शीघ्र ऊपर उठ सके। नरक की शिशु-आत्माएँ गर्भपात होने के बाद से ही 'अन्यायपूर्ण मृत्यु के रुदन-नगर' में रहती हैं। वे दुःख और क्रोध के साथ प्रतीक्षा करती हैं कि यमराज शीघ्र निर्णय देकर परलोक के पीले आदेश-पत्रक जारी करने की अनुमति दें। ये आदेश-पत्रक जारी होते ही वे बदला लेने मनुष्य लोक में आ सकती हैं। उस समय मनुष्य लोक में भावी माता-पिता का भाग्य हर ओर से अवश्य गिरने लगता है। नौकरी, व्यवसाय, स्वास्थ्य और लोगों से संबंध आदि, सभी में तरह-तरह की बाधाएँ आने लगती हैं। मनुष्य लोक में प्रतिदिन बहुत-से भावी माता-पिता गर्भपात करवाते हैं, और इसी से जीवितों के लोक में अनेक रोग उत्पन्न होते हैं। उदाहरण के लिए, बार-बार इलाज के बाद भी ठीक न होने वाला आधासीसी का दर्द, विभिन्न जटिल स्त्रीरोग, यौन रोग तथा मनोविकृति (साइकोसिस) आदि, ये सब गर्भपात के कारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोगों का समाधान सच्चे पश्चात्ताप की शक्ति और भलाई करके पुण्य संचित करने से ही हो सकता है। अन्यथा केवल धन, समय और मनुष्य लोक की दवाएँ व्यर्थ जाती हैं। संभव है कि पूरे जीवन में भी समाधान न हो और अधूरा कर्मफल अगले जन्म तक खिंचकर वहाँ जारी रहे। इसका परिहार मन के विचारों के स्तर पर करना आवश्यक है। मनुष्य के मन में उठने वाले विचार अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। उसका एक

विचार भी समय और स्थान को पार करके शुभ या अशुभ घटनाओं को घटित करने के लिए पर्याप्त है। याद रखो, गर्भपात के बाद स्वयं पश्चात्ताप करना चाहिए; पैसे देकर किसी दूसरे को अपनी ओर से पश्चात्ताप और सूत्र-पाठ करने का काम सौंपना नहीं चाहिए। जीवितों के लोक में शिशु-आत्माओं की पूजा और अर्पण के बहुत-से स्थान हैं। वास्तव में, उनमें से अधिकांश प्रभावहीन हैं और केवल धन व्यर्थ होता है।[26]

गर्भपात करवाने वाले भावी माता-पिता को एक ओर प्रतिदिन अत्यंत सच्चे मन से शिशु-आत्माओं के सामने पश्चात्ताप करके क्षमा माँगनी चाहिए, और दूसरी ओर स्वयं《क्षितिगर्भ सूत्र》या अन्य बौद्ध सूत्रों का पाठ करना चाहिए। जिनकी क्षमता अनुमति देती हो, उन्हें अधिकाधिक जीवों को मुक्त करके उसका पुण्य शिशु-आत्माओं को समर्पित करना चाहिए। गर्भपात प्राणिहत्या का कार्य है; इससे दुष्कर्म संचित होते हैं और पीड़ा आती है। गर्भपात के बाद प्रत्येक भावी माँ के मन में एक अनाम अपराधबोध अवश्य उत्पन्न होता है। यह अपराधबोध गर्भपात के कर्मफल के कारण होता है। इसे दूर करने के लिए मन से किए गए पश्चात्ताप की शक्ति द्वारा शिशु-आत्मा की क्षमा प्राप्त करनी चाहिए। कुछ भावी माताएँ शायद कहें कि उन्हें ऐसा अनुभव नहीं होता। वास्तव में ऐसा नहीं कि वह है ही नहीं; उनकी जमी हुई आदतें और क्लेश इतने भारी हैं, अर्थात उनके कर्मावरण इतने भारी हैं, कि उन्होंने इस अनुभूति को ढक दिया है। जीवों को मुक्त करना जीवन बचाना है और इससे मंगल फल आता है। जब जीव मुक्त किए जाते हैं, तो वे प्रसन्न और कृतज्ञ होते हैं तथा उनसे शुभ संबंध भी बनते हैं। जीवों को मुक्त करके उसका पुण्य शिशु-आत्माओं को समर्पित करना चाहिए, ताकि वे शीघ्र दुःख से छूटकर सुख प्राप्त करें और ऊपर उठकर शुद्धभूमि पहुँचें।

परलोक भी गर्भपात के परिहार के उपायों को महत्त्व देता है। वर्तमान में जीवितों का लोक यौन दुराचार से भ्रमित और अस्त-व्यस्त युग में पहुँच चुका है। यौन दुराचार

के परिणामस्वरूप होने वाला गर्भपात युवाओं के लिए रोज़मर्रा की बात बन गया है। यौन दुराचार की दूषित ऊर्जा और गर्भपात से उपजे द्वेष की ऊर्जा मनुष्य लोक में भर गई है। ये प्रकृति के संतुलन को गंभीर रूप से प्रभावित करती हैं और अवश्य ही प्राकृतिक तथा मानवजनित विपत्तियों को बुलाएँगी।

परलोक के अधिपति यमराज ने आदेश दिया है कि जीवितों के लोक के जो भी प्राणी सच्चे मन से पश्चात्ताप करके गर्भपात के मामले का समाधान करें, स्वयं आगे सदा के लिए गर्भपात त्यागने का संकल्प लें और साथ ही यह संदेश एक-दूसरे तक पहुँचाकर दूसरों को गर्भपात से रोकें, वे पुण्यकर्म से अपने अपराध का प्रायश्चित्त कर सकते हैं। परलोक में उनकी व्यक्तिगत जीवन-मृत्यु की बही में एक बड़ा पुण्यकर्म दर्ज किया जाएगा। परिस्थिति के अनुसार गर्भपात के कारण मिलने वाला नरक का कर्मफल और दंड घटाया या माफ़ भी किया जा सकता है। अंतिम निर्णय प्रत्येक मामले की विशिष्ट परिस्थितियों को देखकर होगा।”

“अच्छा! आ यू, आज के लिए इतना ही। लौटकर जल्दी लेख लिखो!”

अमिताभ बुद्ध! मैं, आ यू, परलोक के न्यायाधिकारी को साष्टांग प्रणाम करके आभार व्यक्त करती हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर लौटती हूँ!

24/बच्चे, माँ तुमसे प्यार करती है—परलोक के न्यायाधिकारी संसार की सभी माताओं को गंभीर और स्नेहपूर्ण शिक्षा देते हैं!

बुद्ध की शक्ति के अनुग्रह के लिए कृतज्ञ हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ!

अमिताभ बुद्ध! मैं, आ यू, हाथ जोड़कर परलोक के न्यायाधिकारी को प्रणाम करती हूँ!

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: “आ यू! तुम कुछ समय से नहीं आई हो!”

“जी, न्यायाधिकारी! मुझे, आ यू को, लज्जा आती है। हाल में सांसारिक कामों में बहुत व्यस्त रही हूँ। मुझे आपसे सीखकर दिन-रात सभी जीवों की सेवा करनी चाहिए। आगे अधिक बार आऊँगी।”

आज मैं, आ यू, परलोक के न्यायाधिकारी से गर्भपात के बाद की शिशु-आत्माओं के बारे में कुछ प्रश्न पूछना चाहती हूँ।

“न्यायाधिकारी, कृपया बताइए, जीवितों के लोक में गर्भपात करवाने वाली माताओं के सूत्र-पाठ और जीवों को मुक्त करने से उत्पन्न पुण्य क्या अन्यायपूर्ण मृत्यु के रुदन-नगर में रहने वाली शिशु-आत्माओं को मिल सकता है? कौन-सा सूत्र पढ़ना सबसे अच्छा है? कितना पाठ करने पर फल मिलता है? पुण्य मिलने के बाद शिशु-आत्माएँ कहाँ जाती हैं? क्या जीवित लोगों को शिशु-आत्माओं के लिए अपने घर या बौद्ध उपासना-गृह में स्मृति-पट्टिका स्थापित करनी चाहिए, ताकि वे धूप का अर्पण ग्रहण कर सकें और सूत्र-पाठ सुन सकें? क्या ऐसा करना उपयोगी है? क्या

अन्यायपूर्ण मृत्यु के रुदन-नगर में शिशु-आत्माएँ बड़ी होती हैं? वे किससे अपना जीवन बनाए रखती हैं?"

परलोक के न्यायाधिकारी ने उत्तर दिया: "हाँ, उन्हें पुण्य मिलता है। जीवितों के लोक में माता-पिता या संबंधी जो भी शुभ कार्य करते हैं और उनका पुण्य जिस निर्दिष्ट उद्देश्य से समर्पित करते हैं, उसके अनुसार हम शिशु-आत्माओं को उसका भाग देते हैं। उदाहरण के लिए, जीवों को मुक्त करना, सूत्र-पाठ करना, बुद्ध को अर्पण करना, दान देना, पुल बनवाना और सड़क बनवाना आदि। पुण्य अधिक हो, तो शिशु-आत्मा को मिलने वाला भाग भी उसी अनुपात में अधिक होता है; पुण्य कम हो, तो उसका भाग भी कम होता है। प्रत्येक शुभ कार्य का पुण्य कितना होगा, यह उस कार्य को करने वाले की प्रेरणा पर निर्भर करता है। अर्थात, यदि भलाई करने वाले का उद्देश्य सभी जीवों को दुःख से निकालकर सुख देना तथा संकट और पीड़ा से बचाना हो, बदले में कुछ पाने का लेशमात्र भी विचार न हो और भलाई करने के बाद मन उसमें अटका न रहे, तो पुण्य बिना माँगे अपने आप मिलता है। ऐसा व्यक्ति असीम, अपरिमित और विशाल पुण्य प्राप्त कर सकता है। यदि यह असीम, अपरिमित और विशाल पुण्य अन्यायपूर्ण मृत्यु के रुदन-नगर की शिशु-आत्मा को समर्पित किया जाए, तो वह गर्भपात के 49 दिनों के भीतर अवश्य ऊपर उठकर सुगति में पहुँच सकती है। जहाँ तक पुण्य के बँटवारे की बात है, यदि पुण्य के 7 भाग हों, तो जीवितों के लोक में भलाई करने वाले को 6 भाग मिलते हैं और परलोक की शिशु-आत्मा को 1 भाग मिल सकता है।"[27]

"सूत्र-पाठ की बात करें, तो मृत आत्माओं के उद्धार के लिए 《क्षितिगर्भ सूत्र》 का पाठ सबसे उपयुक्त है। बोधिसत्त्व क्षितिगर्भ ने अपनी महान मैत्री और करुणा से यह संकल्प लिया: 'जब तक नरक खाली नहीं हो जाते, मैं बुद्धत्व प्राप्त न करने की प्रतिज्ञा करता हूँ।' नरक के प्राणियों से बोधिसत्त्व क्षितिगर्भ का संबंध सबसे गहरा है। कम से कम 49 बार पूरा पाठ करना चाहिए। हमारे परलोक के

अभिलेखों में जिस शिशु-आत्मा का उद्धार सबसे जल्दी हुआ, उसकी जीवितों के लोक की माँ ने गर्भपात करवाने के बाद 《क्षितिगर्भ सूत्र》 का 49 बार पूरा पाठ किया था। साथ ही वह निरंतर बड़े संकल्प लेकर भलाई करती रही। अब उसकी शिशु-आत्मा ऊपर उठ चुकी है। बाद में वह माँ भी एक ऐसी निर्मल साधिका बन गई जो सचमुच अपना और दूसरों का हित करती है। गर्भपात के पहले दिन से गिनने पर 49वें दिन शिशु-आत्मा का उद्धार हुआ। लेकिन जीवितों के लोक में गर्भपात करवाने वाली ऐसी माताएँ अत्यंत कम हैं; कहा जा सकता है कि दस हज़ार में एक भी नहीं। वर्तमान में परलोक आने वाली लगभग सभी शिशु-आत्माओं को अपनाने वाला कोई नहीं होता। जीवितों के लोक में गर्भपात करवाने वाले ऐसे माता-पिता सचमुच बहुत कम हैं जो मन से पश्चात्ताप करने को तैयार हों! बहुत-से लोग समझते हैं कि दिखाई नहीं देता, तो कोई बात ही नहीं। वास्तव में यह गलत है। परलोक के अन्यायपूर्ण मृत्यु के रुदन-नगर में ये शिशु-आत्माएँ प्रत्येक दिन पीड़ा में बिताती हैं। जीवितों के लोक में उनके माता-पिता अब भी इस द्वेष और इस गाँठ को सुलझाने का मन नहीं बनाते हैं, और समय बीतने के साथ द्वेष की यह गाँठ बढ़ती ही जाएगी। जब जीवितों के लोक में माता-पिता का पुण्यफल समाप्त होता है, तभी कारण और परिस्थितियाँ एकत्र होते हैं। शिशु-आत्माएँ बदला लेने उनके द्वार पर अवश्य आएँगी। परलोक के विधान के अंतर्गत भी वे कानून के जाल से नहीं बच पाएँगे। तब सचमुच सुख का अंत और दुःख का आरंभ होगा। वे किस प्रकार दुःखद फल भोगेंगे, यह थोड़े शब्दों में कहना कठिन है। सिर से पैर तक तरह-तरह के रोग हो सकते हैं, यहाँ तक कि परिवार उजड़ सकता है और उसके सदस्यों की मृत्यु भी हो सकती है।”[28]

“प्रत्येक शिशु-आत्मा को अलग मात्रा में पुण्य की आवश्यकता होती है, क्योंकि प्रत्येक मामले में उपकार और वैर के संबंध अलग होते हैं। स्वाभाविक है कि उन्हें सुलझाने में लगने वाला समय भी अलग होगा। यदि वह उपकार का प्रतिदान करने आई थी, तो स्थिति कुछ बेहतर होती है। लेकिन गर्भपात से उसमें नया द्वेष भी उत्पन्न

हो जाता है। इसलिए कहते हैं कि उपकार और वैर इस तरह उलझ जाते हैं कि उन्हें सुलझाना कठिन होता है। हम किसी भी समय उपकार और वैर के नए संबंध बना सकते हैं। यदि वह बदला लेने आई थी, तो स्थिति और भी बिगड़ती है और दुःख असहनीय हो जाता है।"

"शिशु-आत्मा को पुण्य मिलने के बाद वह अपने कर्मों के अनुसार ऊपर उठकर परलोक के अन्यायपूर्ण मृत्यु के रुदन-नगर से निकल जाती है। ऊपर उठने की स्थितियाँ मुख्यतः तीन प्रकार की होती हैं। पहली, जिनका पुण्यफल पर्याप्त है, वे इस पुण्य के सहारे पश्चिमी शुद्धभूमि में पहुँच सकती हैं। लेकिन इस प्रकार शुद्धभूमि में पहुँचने वाली शिशु-आत्माएँ बहुत ही कम हैं। दूसरी, कुछ ऊपर उठकर देवलोक में देव बनती हैं। तीसरी, कुछ ऊपर उठकर मनुष्य लोक में आती हैं। चाहे वे पश्चिमी शुद्धभूमि, देवलोक या मनुष्य लोक में जाएँ, शिशु-आत्मा के अपने पुण्यफल के अनुसार उनमें ऊँचे-नीचे स्तरों का भेद होता है। पश्चिमी शुद्धभूमि में कमल के नौ स्तरों का भेद है। देवलोक में भी कामधातु, रूपधातु और अरूपधातु के स्वर्गलोकों का भेद है। मनुष्य लोक में भी धन और प्रतिष्ठा तथा दरिद्रता और निम्न स्थिति का भेद है। पुण्य मिलने के बाद शिशु-आत्मा कहाँ जाएगी, यह इस पर निर्भर करता है कि जीवितों के लोक में गर्भपात करवाने वाले माता-पिता का पुण्य कितना है और क्या उसमें से शिशु-आत्मा को उसके उद्धार के लिए पर्याप्त भाग दिया जा सकता है। शिशु-आत्मा जितनी जल्दी ऊपर उठती है, जीवितों के लोक में गर्भपात करवाने वाले माता-पिता की विपत्तियों का समाधान भी उतनी ही जल्दी होता है। कामना है कि जीवितों के लोक में कभी गर्भपात करवा चुके सभी भावी माता-पिता जल्द से जल्द गर्भपात के उस दुष्कर्म के लिए पश्चात्ताप का मन बनाएँ जो नरक में ले जाता है, भरपूर भलाई करके पुण्य संचित करें और अन्यायपूर्ण मृत्यु के रुदन-नगर में अपने असहाय बच्चों का उद्धार करें।"[29]

"शिशु-आत्माओं के लिए स्मृति-पट्टिका स्थापित करने की बात करें, तो जीवितों के लोक के भावी माता-पिता को अपने घर में ऐसी पट्टिका स्थापित करने की आवश्यकता नहीं है। ऐसा करने से शिशु-आत्मा के ऊपर उठने में केवल देर होगी, यहाँ तक कि दूसरी आत्माएँ आकर्षित होकर उस पट्टिका में निवास करने लग सकती हैं। जहाँ तक बौद्ध उपासना-गृह में स्मृति-पट्टिका स्थापित करके धूप का अर्पण ग्रहण करने और सूत्र-पाठ सुनने की व्यवस्था करने का प्रश्न है, उसका प्रभाव अवश्य होता है। लेकिन वह बौद्ध उपासना-गृह निर्मल तथा सिद्धांत और धर्म के अनुरूप होना चाहिए, तभी उद्धार का प्रभाव उत्पन्न हो सकता है। वर्तमान में जीवितों के लोक में बहुत-से स्थान स्वयं को अमुक बौद्ध उपासना-गृह कहते हैं और दावा करते हैं कि वहाँ उच्च प्रज्ञा और अलौकिक शक्तियों वाले धर्माचार्य विराजमान हैं, जो विशेष रूप से शिशु-आत्माओं का उद्धार करते हैं, आदि। उनके कामों को देखें, तो वास्तव में वे पैसे ठगने के तरीके हैं। उन्हें काम सौंपने वाले का धन, समय और मानसिक ऊर्जा ही व्यर्थ होती है। यहाँ तक कि वह दुष्ट आत्माओं और राक्षसी शक्तियों को आकर्षित करके उनके आवेश का शिकार हो सकता है। गर्भपात से मारी गई शिशु-आत्माओं का द्वेष जीवितों के लोक में अपने भावी माता-पिता के प्रति ही होता है। जिसने घंटी बाँधी है, उसे खोलना भी उसी का काम है। किसी दूसरे को पैसे देकर अपनी ओर से शिशु-आत्मा से क्षमा माँगने को कहने की अपेक्षा, स्वयं सच्चे मन से पश्चात्ताप करने का प्रभाव अधिक शीघ्र और बेहतर होता है।"[30]

"जब गर्भपात के बाद शिशु-आत्माएँ अन्यायपूर्ण मृत्यु के रुदन-नगर में आती हैं, तो उनमें से अधिकांश मनुष्य लोक के लगभग छह महीने के शिशु का रूप धारण करती हैं। फिर पुनर्जन्म लेने या ऊपर उठने तक वे इसी रूप में रहती हैं। अन्यायपूर्ण मृत्यु के रुदन-नगर में शिशु-आत्माएँ स्पर्श के माध्यम से आहार ग्रहण करती हैं। यदि जीवितों के लोक में उनके भावी माता-पिता उनके लिए पूजन और अर्पण करें, तो वे भोजन का सार ग्रहण कर सकती हैं। दुख की बात है कि इन परित्यक्त शिशु-

आत्माओं के लिए कोई भी पूजन या अर्पण नहीं करता। केवल पीड़ा ही उनका साथ देती है, इसलिए वे प्रतिदिन दुख से फूट-फूटकर रोती हैं। शिशु-आत्माओं का द्वेष उनके माता-पिता के पुण्य और सौभाग्य को निरंतर चुपचाप क्षीण करता रहता है। जीवितों के लोक में माता-पिता की आयु पूरी होने के बाद, उनके बीच उपकार और वैर के दुखद उलझाव का एक और दौर शुरू होता है। इसलिए जीवितों के लोक के सभी प्राणियों को सलाह है कि गर्भपात न करवाएँ। जिन्होंने कभी गर्भपात करवाया है, उन्हें अवश्य भलाई करके पुण्य संचित करना चाहिए, भरपूर सत्कर्म करने चाहिए और पुण्य से अपने अपराध का प्रायश्चित्त करना चाहिए। यदि परलोक के इन विधानों का संदेश एक से दूसरे तक पहुँचाया जाए और इससे अपराध करने वाले सच्चे मन से पश्चात्ताप करें, तो परलोक का प्रशासन इस संदेश को फैलाने वालों के अपराधों का भार भी घटा सकता है।”[31]

मैं, आ यू, हाथ जोड़कर परलोक के न्यायाधिकारी का आभार व्यक्त करती हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर लौटती हूँ!

25/परलोक के विधानों में स्त्रियों का यौन शील और विवाहपूर्व यौन संबंध

अमिताभ बुद्ध! मैं, आ यू, हाथ जोड़कर परलोक के न्यायाधिकारी को प्रणाम करती हूँ

आज मैं, आ यू, परलोक के न्यायाधिकारी से पूछना चाहती हूँ कि परलोक का प्रशासन स्त्रियों के शील और विवाहपूर्व यौन संबंधों के विषय को किस दृष्टि से देखता है?

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: "स्त्रियों को तीन आज्ञापालनों और चार गुणों पर ध्यान देना चाहिए। यहाँ गुण से आशय शील की पवित्रता है। यदि कोई स्त्री पति की मृत्यु या तलाक के बाद जीवन भर एक ही पति के प्रति निष्ठावान रहते हुए दोबारा विवाह न करने का संकल्प करती है और आयु पूरी होने तक अपने शील की रक्षा करती है, तो परलोक का प्रशासन उसकी व्यक्तिगत जीवन-मृत्यु बही में शील की रक्षा का एक पुण्यकर्म दर्ज करेगा। यदि उसने जीवितों के लोक में कोई अन्य बड़ा अपराध नहीं किया हो, तो आयु पूरी होने पर वह देवलोक में उठ सकती है, या स्त्री से पुरुष का शरीर पाने जैसे शुभ कर्मफल प्राप्त कर सकती है। यदि वह अपने शील की रक्षा नहीं करती, तो जीवित रहते हुए उसका सौभाग्य और आयु घटते हैं, और वह अगली पीढ़ी के सामने भी बुरा उदाहरण प्रस्तुत करती है। लेकिन आधुनिक स्त्रियाँ अब शील की पवित्रता का ध्यान ही नहीं रखतीं![32]

आज के समाज में कर्म और फल की शिक्षा तथा प्राचीन काल की नैतिक शिक्षा का गंभीर अभाव है। प्राचीन काल में स्त्रियों को तीन आज्ञापालनों और चार गुणों का पालन करना होता था। उन्हें स्त्री के सदाचार, वाणी, कामकाज और रूप-सज्जा पर ध्यान देना होता था। पहले स्त्रियों के चलने के ढंग, बाहरी रूप और हाव-भाव तथा बोलने के स्वर तक के नियम थे। पहले स्त्रियाँ घर की दहलीज से तीन कदम

भी बाहर नहीं निकलती थीं; आज ऐसा नहीं है। आज अधिकांश स्त्रियाँ समाज में बाहर निकलकर काम करती हैं। उनके पास उच्च शिक्षा और कुशलता से काम करने की क्षमता भी है। कुछ तो कामकाज की योग्यता के सभी पहलुओं में पुरुषों से भी आगे हैं। अब वह समय नहीं रहा जब कहा जाता था कि स्त्री में प्रतिभा न होना ही उसका गुण है। इसलिए आज बहुत-सी स्त्रियाँ, मन में सद्गुण की सोच विकसित करने वाली शिक्षा के अभाव में, इस उन्नत तकनीक के युग के साथ बहते हुए टेलीविज़न और इंटरनेट माध्यमों के प्रदूषण से प्रभावित होकर शील की पवित्रता की उपेक्षा करती हैं।

स्त्री होने के नाते अपने आचरण पर अवश्य संयम रखना चाहिए। जब अपने भावनात्मक जीवन में परिवर्तन आए, तो विशेष रूप से आत्मपरीक्षण करना चाहिए और मर्यादा से बाहर का कोई आचरण नहीं करना चाहिए। अन्यथा शील खो देना यौन दुराचार का अपराध है। यौन दुराचार करने का अर्थ है नरक के असीम, अपार दुखों के अशुभ कारण बोना। यहाँ मेरी कामना है कि संसार की सभी स्त्रियाँ अपने शील की रक्षा कर सकें।

विवाहपूर्व यौन संबंधों की बात करें, तो वे हम मनुष्यों की प्रकाशमय आध्यात्मिक प्रकृति को गंभीर क्षति पहुँचाते हैं। जन्म के समय, कौमार्य की अवस्था में, प्रत्येक व्यक्ति की अपनी आध्यात्मिक प्रकृति प्रकाशमय होती है; केवल उसके प्रकाश की मात्रा अलग-अलग होती है। बाद में मनुष्य लोक के प्रदूषण के साथ यह प्रकाश धीरे-धीरे घटता जाता है और यहाँ तक कि धूसर और अँधेरा हो जाता है। जब वह धूसर और अँधेरा हो जाता है, तो व्यक्ति के जीवन में विपत्तियाँ आने लगती हैं। अवश्य ही, कुछ लोग साधना के माध्यम से अपनी धूसर और अँधेरी आध्यात्मिक प्रकृति को इसी जीवन में फिर से प्रकाशमय बना सकते हैं।

विवाह वास्तव में हम मनुष्यों को वंश आगे बढ़ाने का एक अवसर देता है। मानवीय संबंधों की मर्यादा के अंतर्गत यौन संबंध वंश आगे बढ़ाने के लिए बनाए

जाते हैं। सामान्य समय में भी उनकी अति नहीं करनी चाहिए, अन्यथा हमारा पुण्यफल और आयु घटेंगे। परलोक के विधानों के अनुसार मनुष्य को विवाहपूर्व यौन संबंधों पर प्रतिबंध के नियम का कड़ाई से पालन करके अपने सदाचार की रक्षा करनी चाहिए। विवाह के दिन से ही यौन संबंध बनाए जा सकते हैं। यदि विवाह से पहले ही यौन संबंध बनाए जाएँ, तो वह यौन दुराचार का अपराध है। बाद में उसी व्यक्ति से विवाह कर लेने पर भी यह उल्लंघन माना जाता है और इससे पुण्यफल तथा आयु घटते हैं। यदि विवाह से पहले विपरीत लिंग के एक से अधिक व्यक्तियों के साथ यौन संबंध बनाए जाएँ, तो पुण्यफल और भी अधिक घटेगा, और नरक में ले जाने वाले अशुभ कारण भी बनेंगे। विस्तृत निर्णय हर मामले को अलग देखकर और यह जानकर करना होगा कि विशेष रूप से कौन-कौन से यौन दुराचार किए गए थे।

जब हम मनुष्य विवाह से पहले पहली बार यौन संबंध बनाते हैं, अर्थात जिस क्षण अपना कौमार्य खोते हैं, उसी क्षण से हमारी अपनी आध्यात्मिक प्रकृति का प्रकाश मंद पड़ने लगता है। यह मंद पड़ना हमारे अन्य पक्षों में भी गिरावट लाता है, जिसमें पुण्यफल, धन-सौभाग्य और आयु का घटना शामिल है। इसलिए सभी को इस विषय पर ध्यान देना चाहिए। प्रेम और कामना के क्षणिक आवेग में, मन हुआ तो कर लिया—ऐसा करके मनुष्य लोक में जन्म से प्राप्त अपने बहुमूल्य मानव शरीर को व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए। बहुत-से काम ऐसे हैं जिन्हें युवावस्था में ही साधना पड़ता है।

हमें अपनी मानसिक शक्ति और ऊर्जा कुछ सार्थक कामों में लगानी चाहिए। उन्हें अपने प्रेम और कामना की आसक्ति में नहीं खपाना चाहिए। ऐसा करना न केवल निरर्थक है, बल्कि नरक में ले जाने वाले अशुभ कारण भी बोता है।”

“अच्छा, आ यू! आज के लिए इतना ही। अभी लौट जाओ, अगली बार फिर आना।”

“अमिताभ बुद्ध! परलोक के न्यायाधिकारी, आपकी शिक्षा के लिए आभार!”

मैं, आ यू, हाथ जोड़कर और झुककर आभार व्यक्त करती हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर लौटती हूँ!

26/परलोक के विधानों में जीवित मनुष्यों की बिजली गिरने से मृत्यु का रहस्य

अमिताभ बुद्ध! मैं, आ यू, हाथ जोड़कर परलोक के न्यायाधिकारी को प्रणाम करती हूँ

आज मैं परलोक के न्यायाधिकारी से पूछना चाहती हूँ: "प्राचीन काल में यौन दुराचार करने वालों के बिजली गिरने से मरने के मामले हुए थे। ऐसा क्यों होता था? उन्हें किसी दूसरे रूप में कर्मफल क्यों नहीं मिलता था, जैसे कोई गंभीर बीमारी होना?"

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: "प्राचीन काल में यौन दुराचार करने वालों के बिजली गिरने से मरने के दो कारण थे। पहला: परलोक का प्रशासन यौन दुराचार करने वाले प्राणियों को बिजली गिराकर दंडित करता था, ताकि जीवितों के लोक के प्राणी जानें कि यौन दुराचार के कारण इसी जीवन में बुरी मृत्यु का कर्मफल भुगतना पड़ता है। यह प्रत्यक्ष दिखाई देने वाला वास्तविक दंड था, जिससे चेतन प्राणी एक-दूसरे को सावधान कर सकें। दूसरा: यौन दुराचार करने वाले व्यक्ति के अपने दुष्ट विचार अत्यंत प्रबल होते थे, वह पश्चात्ताप करके सुधरना नहीं जानता था, और उसके यौन दुराचार तथा अन्य काले कर्मों का भार बहुत अधिक होता था। इसी कारण वह बिजली गिरने का कर्मफल आकर्षित करता था। आयु पूरी होने पर वह नरक में जाता और दस हज़ार कल्पों तक तरह-तरह के दुख फिर भोगता, और उसके लिए वहाँ से निकलने का कोई दिन नहीं होता।[33]

गर्जन-देव वास्तव में देवलोक के एक मान्य देव हैं। उनका विशेष दायित्व वर्षा होने या मौसम खराब होने पर गर्जना कराना है। हर बार कितनी बार गर्जना होगी, यह भी नियमों से निर्धारित है। यदि कोई बिजली गिरने से मारा जाता है, तो यह कदापि संयोग नहीं होता। अवश्य ही गर्जन-देव को परलोक के प्रशासन से उसके विधानों

के अनुसार लिखित आदेश मिला होता है कि अमुक दिन, अमुक समय, अमुक पते पर, अमुक घर के अमुक व्यक्ति को खुले आकाश के नीचे बिजली गिरने से मृत्यु का कर्मफल भुगतना है। सामान्यतः ऐसे मृत्यु-कर्मफल के लिए गर्जन-देव पहले गर्जना कराते हैं, फिर बिल्कुल सही अपराधी आत्मा को पकड़कर बाहर ले आते हैं और खुले आकाश के नीचे बिजली से मार देते हैं। अपराधी आत्मा को पकड़कर बाहर खुले आकाश के नीचे क्यों मारा जाता है? क्योंकि बिजली से अग्नि की चमक निकलती है और निर्दोषों को हानि नहीं पहुँचानी होती, इसलिए सामान्यतः अपराधी आत्मा को बाहर लाकर खुले आकाश के नीचे दंड दिया जाता है।[34]

प्राचीन काल में बिजली गिरने के बहुत-से मामलों में यही दंड दिया जाता था। उस समय यौन दुराचार करने वाले लोग आज जितने अधिक नहीं थे। प्राचीन काल में एक बार बिजली गिराने से अनेक प्राणी इतने झकझोर दिए जाते थे कि अपने मन और स्वभाव को सँवारने लगते थे। लेकिन आज लोगों के मन में प्राचीन काल जैसी सरलता नहीं रही है।

समस्त बुराइयों में यौन दुराचार सबसे आगे है, और सभी सदाचारों में माता-पिता के प्रति भक्ति पहले आती है। यौन दुराचार करने वाले न केवल अपना सौभाग्य और आयु घटाते हैं, बल्कि समाज के आचार-विचार को भी गंभीर रूप से बिगाड़ते हैं। वे दूसरों को और स्वयं को हानि पहुँचाते हैं; यह माता-पिता के प्रति अभक्ति का आचरण भी है। प्राचीन और आधुनिक काल में, अपने देश और विदेश में, कितने ही वीरों का उज्ज्वल भविष्य यौन दुराचार के कारण नष्ट हुआ है।

यौन दुराचार मनुष्य को पतन की ओर ले जाता है और उसके मन को अपनी मूल प्रकृति से भटका देता है। उसमें डूबे हुए लोग यहाँ तक कि मृत्यु को प्राप्त हो सकते हैं। परलोक के विधानों में माता-पिता के प्रति भक्तिभाव रखने वालों के साथ सबसे अच्छा व्यवहार किया जाता है और यौन दुराचार करने वालों को कठोर दंड दिया जाता है। यहाँ सभी को सलाह है कि करुणाशीलता, धर्मनिष्ठा, मर्यादा, विवेक

और विश्वसनीयता का दृढ़ता से पालन करें, अधिक भलाई करके पुण्य संचित करें, अपनी-अपनी जन्मजात आध्यात्मिक प्रकृति के प्रकाश की रक्षा करें और नरक में ले जाने वाले अशुभ कारण न बनाएँ।”[35]

मैं, आ यू, हाथ जोड़कर परलोक के न्यायाधिकारी का आभार व्यक्त करती हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर लौटती हूँ!

27/समलैंगिकता की अंतिम गति—लियानश्यांग महानरक

बुद्धों और बोधिसत्त्वों के करुणामय उद्धार के लिए आभार! बुद्ध और बोधिसत्त्व हर क्षण प्राणियों का ही ध्यान रखते हैं। मनुष्य लोक में चौबीस घंटे बीत चुके हैं। मैं, आ यू, श्वेत कमल पर सवार होकर फिर नरक में आई हूँ। क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व अभी भी नरक में प्राणियों का उद्धार कर रहे हैं। पता चला कि कल की कर्म और फल संबंधी धर्मसभा अभी समाप्त ही नहीं हुई है!

क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व को फिर देखकर मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ। मैं, आ यू, आकाश और धर्मधातु के सभी प्राणियों की ओर से क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व को साष्टांग प्रणाम करती हूँ! बोधिसत्त्व का बुद्ध-प्रकाश समस्त आकाश में व्याप्त है—कितना निर्मल, कितना शीतल, कितना करुणामय है वह। इससे मुझे अवतंसक सूत्र में बुद्ध के ये वचन याद आते हैं: “संसार में बाधारहित निर्मल मैत्री, क्योंकि वह महान प्रकाश फैलाकर सबको समान रूप से आलोकित करती है; आकाश में व्याप्त निर्मल मैत्री, क्योंकि प्राणियों की रक्षा और उद्धार के लिए वह हर स्थान तक पहुँचती है; धर्म को आलंबन बनाने वाली निर्मल मैत्री, क्योंकि वह तथता के सत्य धर्म का साक्षात्कार करती है; आलंबनरहित निर्मल मैत्री, क्योंकि वह बोधिसत्त्व की जन्म से मुक्त प्रकृति में प्रवेश करती है; हित करने वाली निर्मल मैत्री, क्योंकि उसका प्रत्येक कार्य आनंद उत्पन्न करता है। थकान और ऊब से रहित निर्मल करुणा, क्योंकि वह सभी प्राणियों के बदले दुख सहती है और उसे श्रम नहीं मानती; कठिन स्थानों में जन्म लेने वाली निर्मल करुणा, क्योंकि उसका उद्देश्य प्राणियों का उद्धार है; शुभ गतियों में जन्म लेने वाली निर्मल करुणा, क्योंकि वह अनित्यता प्रकट करती है; मिथ्या मार्ग में दृढ़ प्राणियों के प्रति निर्मल करुणा, क्योंकि वह कल्पों तक अपनी महान प्रतिज्ञा नहीं

छोड़ती। बोधिसत्त्व के आचरण का निरंतर, अविच्छिन्न अभ्यास करते हुए, महाकरुणा से प्राणियों को अपनाती है।”[36]

क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व की महान मैत्री सचमुच किसी आलंबन पर निर्भर नहीं है, और उनकी महाकरुणा सभी को अपने समान एक ही स्वरूप मानती है। बोधिसत्त्व के निर्मल, करुणामय बुद्ध-प्रकाश में धर्म की अनंत ध्वनियाँ हैं। मैं, आ यू, भी क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व के महान करुणामय हृदय से सीखकर प्राणियों की सेवा करूँगी। क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व के निर्मल, करुणामय प्रकाश के आशीर्वाद से नरक शीतल हो गया है।

मैं, आ यू, सभी को कुछ समझाना चाहती हूँ। नरक अत्यंत विशाल है और उसके अलग-अलग प्रकार हैं। अभी मैं यौन दुराचार के नरक का भ्रमण कर रही हूँ। ‘यौन दुराचार का नरक’ एक समग्र नाम है; यह समूचे नरक-क्षेत्र के महानरकों में से एक है। यौन दुराचार के नरक के अंतर्गत अठारह छोटे नरक और हैं। इन अठारह छोटे नरकों में किए गए यौन दुराचार की प्रकृति के अनुसार अलग-अलग दंडफल मिलते हैं। कुछ लोगों ने संभवतः अपने पूरे जीवन में केवल अनुचित समय पर यौन संबंध बनाने का अपराध किया हो—अर्थात चंद्रमास की पहली या पंद्रहवीं तिथि, उपवास और शील-पालन के छह दिनों, बुद्धों और बोधिसत्त्वों की जन्मतिथियों, देवताओं द्वारा मनुष्य लोक की अच्छाई-बुराई का निरीक्षण करने के दिनों, दिन के समय, परिजनों के उत्सव के दिनों या उनकी मृत्यु-तिथियों पर, अथवा जब पुरुष और स्त्री दोनों रोगग्रस्त हों; या अनुचित स्थान पर यौन संबंध बनाने का अपराध किया हो—अर्थात पति-पत्नी के सोने के पलंग के केंद्रीय बिंदु से बाहर, यहाँ तक कि पुरुष का पलंग के पास ज़मीन पर खड़ा होना और स्त्री का पलंग के किनारे लेटना भी अनुचित स्थान की श्रेणी में आता है, अन्य स्थानों की तो बात ही क्या; या अनुचित शारीरिक भागों में यौन क्रिया करने का अपराध किया हो—अर्थात स्त्री के प्रसवमार्ग के अतिरिक्त अन्य सभी शारीरिक भाग इस श्रेणी में आते हैं। ऐसे लोगों को केवल

लोहे के गोले निगलने का दंडफल भुगतना पड़ता है। वास्तव में हर नरक का दंड अत्यंत पीड़ादायक है।[37]

मैं, आ यू, परलोक के न्यायाधिकारी को प्रणाम करती हूँ! आज मैं उनसे समलैंगिकता के विषय में पूछना चाहती हूँ। परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: "समलैंगिकता भी यौन दुराचार का अपराध है। आयु पूरी होने पर व्यक्ति यौन दुराचार के नरक के अंतर्गत लियानश्यांग नरक में पाँच सौ वर्ष का दंड भुगतने जाता है। यदि उसने अन्य यौन दुराचार भी किए हों, तो फिर यौन दुराचार के दूसरे नरकों में क्रमशः जाकर उनके दंडफल भुगतता है।"

तभी परलोक के न्यायाधिकारी मुझे तुरंत लियानश्यांग नरक ले गए। यहाँ सभी पुरुष और स्त्री आत्माएँ एक ही प्रकार का कर्मफल भुगत रही थीं। मैंने देखा कि इन पुरुष और स्त्री आत्माओं को मानव-वृक्ष का दंड मिलने के समय में कुछ अंतर था। शायद आगे देखने से समझ में आ जाए। उनमें एक पुरुष आत्मा को मैं पहचानती थी—यह तो BLX है। वह बहुत प्रसिद्ध गायक था। जीवित रहते हुए उसके बहुत-से पुरुष और स्त्री प्रशंसक थे, और उसने अनेक संगीत कार्यक्रम किए थे। अब वह कुछ सोचता हुआ दिखाई दे रहा था। तभी मनुष्य के आकार का एक चलने वाला वृक्ष आया। उसे देखकर उसने प्रसन्नता से उसका हाथ पकड़ा, फिर उसे गले लगाकर अंतरंग होना चाहा। वृक्ष ने तुरंत अपनी शाखाओं और पत्तियों से उसे बाँध लिया और टहनियों से उसके सिर पर लगातार प्रहार करने लगा। मार खाते-खाते उसका सिर फट गया, रक्त बहने लगा और वह बेसुध हो गया। इसके बाद वृक्ष की पत्तियों से उसकी ओर हवा की एक लहर आई, तो वह धीरे-धीरे ठीक होने लगा। तब मानव-वृक्ष चला गया।

यह देखकर मैंने परलोक के न्यायाधिकारी से पूछा: "क्या वृक्ष के चले जाने का अर्थ है कि दंड पूरा हो गया?" परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: "नहीं! क्योंकि समलैंगिकता विचार के स्तर पर एक प्रकार का गलत प्रेम है। अभी तुमने जिन

आत्माओं को देखा, उन सभी के पास ऐसे विचार उठने के बाद ही मानव-वृक्ष आकर्षित होकर आए। कुछ के ऐसे विचारों के बीच का अंतराल थोड़ा लंबा होता है, जिसका अर्थ है कि इस प्रकार की प्रेम-कामना उनमें कुछ कम प्रबल है। जिनमें ये विचार जल्दी-जल्दी उठते हैं, वे अधिक भारी दंडफल भुगतते हैं।"

मैंने परलोक के न्यायाधिकारी से पूछा: "क्या अपराधी आत्मा जब ऐसे विचार नहीं करती, तो उसे दंडफल नहीं भुगतना पड़ता?"

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: "यदि वह ऐसे विचार करना पूरी तरह बंद कर दे, तो इस नरक से जा सकती है। समस्त कर्मशक्ति उलटी समझ और भ्रांत कल्पनाओं से आती है। इसके अतिरिक्त, कुछ समलैंगिक व्यक्तियों के नरक-संबंधी कर्म कुछ हल्के होते हैं। उदाहरण के लिए, किसी का शरीर पुरुष का है, लेकिन पिछले अनेक जन्मों में वह स्त्री था। इस जन्म में पुरुष शरीर पाने के बाद भी उसके अवचेतन में स्त्री की सोच का ढंग बना रहता है और वह बदल नहीं पाता। इसलिए उसे स्त्रियाँ पसंद नहीं होतीं और पहले की तरह पुरुष ही पसंद होते हैं। इसके उलट स्त्री शरीर के मामले में भी यही बात लागू होती है। मनुष्य लोक में समान लिंग के व्यक्तियों के बीच प्रेम होने और यौन दुराचार के अपराध का यह मुख्य कारण है। इस प्रकार के समलैंगिक व्यक्ति यदि अन्य यौन दुराचार नहीं करते, केवल साथ रहने के लिए एक साथी चाहते हैं, लेकिन एक-दूसरे को पति-पत्नी कहते हैं, तो उन्हें लियानश्यांग नरक में पचास नरक-वर्ष तक दंड भोगना होगा। यदि यहाँ पचास वर्ष के दंड के दौरान अपराधी आत्मा के समलैंगिक यौन दुराचार के सभी बीज मिट जाएँ, तो वह समय से पहले इस नरक से निकल सकती है। यदि वे तब भी न मिटें, तो तीस वर्ष का अतिरिक्त दंड भुगतना होगा।"[38]

लियानश्यांग नरक के पास एक महानरक था, जिसके भीतर कुछ भी नहीं था। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ, क्योंकि हर नरक दुख भोगते प्राणियों से भरा होता है। मैंने ऐसा नरक कभी नहीं देखा था जिसमें कोई भी न हो। इसलिए मैंने परलोक के

न्यायाधिकारी से पूछा: “यह नरक बिल्कुल खाली क्यों है?” परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: “इस समय मनुष्य लोक में कुछ प्राणी एक विशेष प्रकार की कामोत्तेजक औषधि पर शोध कर रहे हैं। अभी वह शोध और विकास की अवस्था में है। सफल होने के बाद वे उसे बाज़ार में बेचने के लिए उतारेंगे। यह नरक उस कामोत्तेजक औषधि के शोध में भाग लेने वाले सभी प्राणियों के भविष्य में दंड भोगने के लिए तैयार रखा गया है।”

मैंने परलोक के न्यायाधिकारी से फिर पूछा: “तो क्या इसका अर्थ है कि विचारों में यौन दुराचार-विरति के शील का उल्लंघन करना भी उल्लंघन माना जाता है?”

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: “हाँ! जब भी ऐसा विचार उठता है, वह शरीर की मूल ची को पहले ही विचलित कर चुका होता है और शुद्ध ची को क्षति पहुँच चुकी होती है!”[39]

आज फिर मुझे बहुत लाभ हुआ। मैं, आ यू, परलोक के न्यायाधिकारी का आभार व्यक्त करती हूँ!

परलोक के न्यायाधिकारी को साष्टांग प्रणाम! श्वेत कमल पर सवार होकर लौटती हूँ।

28/मिंगगुआंग छुझुआन सभा-भवन में क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व के दर्शन और वंदना

बुद्ध की शक्ति के अनुग्रह के लिए कृतज्ञ हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ!

अमिताभ बुद्ध! मैं, आ यू, परलोक के न्यायाधिकारी के सामने हाथ जोड़ती हूँ!

“परलोक के न्यायाधिकारी! कृपया बताएँ, क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व नरक में प्राणियों का उद्धार किस प्रकार करते हैं? क्या मैं वहाँ जाकर देख सकती हूँ?”

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: “क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व निरंतर नरक में दुखी प्राणियों का उद्धार करके उन्हें दुख-सागर से बाहर निकालते रहते हैं। वे एक पल के लिए भी नहीं रुके हैं। हमारे परलोक में ‘मिंगगुआंग छुझुआन’ नाम का एक धर्मसभा-भवन है। क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व निरंतर ‘मिंगगुआंग छुझुआन’ सभा-भवन में परलोक के प्राणियों को धर्मोपदेश और मार्गदर्शन देते हैं।”

मैंने उत्सुकता से पूछा: “क्या नरक में हर क्षण दुख नहीं भोगना पड़ता? फिर धर्म सुनने का समय कहाँ मिलता है! और जिनका दंडफल पूरा हो चुका हो, क्या वे तुरंत नरक से निकलकर पुनर्जन्म के चक्र में आगे नहीं बढ़ जाते?”

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: “वास्तव में नरक के प्राणी और मनुष्य लोक के प्राणी समान ही हैं। वे सभी छह गतियों के पुनर्जन्म-चक्र से पतित होकर यहाँ आए हैं। कुछ ऊपर के देवलोक, असुर लोक या मनुष्य लोक से आए हैं, तो कुछ तीन दुर्गतियों में से प्रेत गति और पशु गति से घूमते हुए यहाँ पहुँचे हैं। उनके मन की मूल प्रकृति समान है; सभी में अपने मूल स्वभाव का जन्मजात प्रकाश पूर्ण रूप से विद्यमान है। बस उलटी समझ और भ्रांत कल्पनाओं के कारण वे अपने मन की मूल प्रकृति से भटक गए और जीवों को मारने और उनकी जान लेने वाले तरह-तरह के

शील-विरुद्ध कार्य करके स्वयं पतित हुए। प्रत्येक आत्मा के लिए एक दिन ऐसा आएगा जब वह अपनी मूल प्रकृति के प्रकाश में लौटेगी, लेकिन इसमें लगने वाले समय में आकाश-पाताल का अंतर होगा। नरक में आने वाले सभी प्राणियों को अपनी जन्मजात आध्यात्मिक प्रकृति का प्रकाश पुनः प्राप्त करने के लिए बहुत, बहुत लंबा समय चाहिए। इसका कारण यह है कि नरक की आत्माओं में दूषित आदतों और दुष्कर्मों का भार बहुत अधिक होता है। अत्यंत दुर्लभ रूप से यदि पश्चात्ताप का एक विचार उठ भी जाए, तो वे शीघ्र ही पीड़ा और दुष्कर्मों के वश में फिर आ जाती हैं। क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व ने यह महान प्रतिज्ञा की है: 'जब तक नरक खाली नहीं होगा, मैं बुद्ध नहीं बनूँगा; सभी प्राणियों का उद्धार होने पर ही बोधि प्राप्त करूँगा!' बोधिसत्त्व ने करुणावश यमराज से कहा: 'परलोक में दंड भोग रही किसी भी आत्मा के मन में यदि एक क्षण के लिए भी पश्चात्ताप का विचार उठे, तो वह मिंगगुआंग छुझुआन सभा-भवन में धर्म सुनने आ सकती है और कुछ समय के लिए दंड से मुक्त रह सकती है।'"

मैंने कहा: "यह तो सचमुच बहुत अच्छा है! तब तो नरक के बहुत-से प्राणी ऊपर उठ गए होंगे।"

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: "नरक में दंड भोग रहे प्राणियों की संख्या वास्तव में अनंत है। आ यू, तुम पहले यौन दुराचार के नरक का भ्रमण कर चुकी हो। यौन दुराचार के नरक के अंतर्गत आने वाले 'कोड़ों और डंडों के नरक' में ही इतने प्राणी हैं कि जहाँ तक दृष्टि जाए, उनका अंत नहीं दिखाई देता। बहुत-से नरक तो ऐसे हैं जहाँ तुम अभी गई ही नहीं हो। उनकी तुलना में ऐसे प्राणी बहुत, बहुत कम हैं जिनके मन में पश्चात्ताप का एक विचार उठ सके। बुद्ध और बोधिसत्त्व करुणामय हैं। वे हर क्षण दुखी प्राणियों के उद्धार के लिए उनकी ग्रहण-क्षमता के अनुसार शिक्षा देते हैं और तरह-तरह की कुशल व्यवस्थाएँ भी करते हैं। लेकिन क्या प्राणियों ने कभी सच्चे मन से इसे समझा है? आ यू, तुम्हारा नरक में आकर यह कार्य करना

भी बुद्ध की करुणामय व्यवस्था है। परलोक का प्रशासन भी आशा करता है कि इस अवसर से लोगों के मन निर्मल हो सकेंगे, प्राणी कर्म और फल में गहरा विश्वास करेंगे और नरक में ले जाने वाले दुष्कर्म नहीं करेंगे।"

हम नरक के मिंगगुआंग छुझुआन सभा-भवन पहुँच गए। क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व को साष्टांग प्रणाम! क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व को देखते ही मेरी आँखें भावावेश के आँसुओं से भर जाती हैं और कृतज्ञता अपने आप उमड़ आती है! मैं फिर सभी प्राणियों की ओर से क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व को साष्टांग प्रणाम करती हूँ! कामना है कि सभी प्राणी दुख से मुक्त होकर सुख पाएँ; कामना है कि सभी प्राणी प्रसन्न और आनंदित रहें; कामना है कि सभी प्राणी उत्साहपूर्वक साधना करके शीघ्र बोधि और बुद्धत्व का फल प्राप्त करें।

इस समय क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व सभी को पाँच शीलों का उपदेश दे रहे थे। मैंने देखा कि मिंगगुआंग छुझुआन सभा-भवन के भीतर बहुत-से धर्माचार्य थे! मेरे मन में यह विचार उठते ही परलोक के न्यायाधिकारी ने तुरंत मुझे समझाया।[40]

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: "इन धर्माचार्यों में बहुत-से ऐसे हैं जिन्होंने यौन दुराचार-विरति और चोरी से विरति के शीलों का उल्लंघन किया था। यहाँ धर्म सुनने आए इन सभी ने नरक में दंड भोगा है; कुछ का दंड अभी भी चल रहा है। वे केवल इसलिए यहाँ धर्म सुनने आ सके हैं कि उनके मन में पश्चात्ताप का एक विचार उठा। जब किसी आत्मा के मन में पश्चात्ताप उठता है, तो उसके हृदय के प्रकाश में थोड़ा-सा परिवर्तन होता है। तब परलोक के प्रेत-दूत उस अपराधी आत्मा का दंड कुछ समय के लिए रोक देते हैं और उसे मिंगगुआंग छुझुआन सभा-भवन में धर्म सुनने ले आते हैं। यहाँ धर्म सुनने आने वाली सभी आत्माओं में एक बात समान है: वे जानती हैं कि यहाँ दंड नहीं भुगतना पड़ता। इसलिए वे सभी इस अवसर को अत्यंत मूल्यवान मानती हैं, और लगभग सभी क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व की करुणा से अपनाई जाती हैं।"

मैंने देखा कि यहाँ की अधिकांश आत्माओं के शरीर का प्रकाश गहरा धूसर था। कुछ का गहरा नीला-हरा, कुछ का गहरा लाल और कुछ का काला था। वे सभी हल्की-हल्की तैर रही थीं। तभी मैंने एक आत्मा को फूट-फूटकर रोते और आँसू बहाते देखा; उसके मन में गहरी लज्जा और पश्चात्ताप उत्पन्न हो रहा था। उसी समय उसके शरीर का प्रकाश गहरे धूसर से हल्के धूसर में बदलने लगा। स्पष्ट था कि आत्मा कुछ हल्की महसूस कर रही थी।

परलोक के न्यायाधिकारी ने समझाया: "यह अपराधी आत्मा अपने पिछले जन्म में प्राण-सार और प्राण-ऊर्जा चुराने वाला प्रेत थी। ऐसा प्रेत बनने से पहले वह एक साधक था। उसमें दान देने की भावना थी, लेकिन वह शीलों का पालन नहीं करता था। शीलों का पालन न करने के कारण वह प्रेत गति में पतित हुआ और प्राण-सार और प्राण-ऊर्जा चुराने वाला प्रेत बन गया। प्रेत गति में पतित होने के बाद वह जीवित मनुष्यों और शीलों का पालन न करने वाले साधकों की प्राण-ऊर्जा निरंतर चुराकर जीवित रहता था। इस तरह वह बहुत जल्दी पतित होकर नरक में आ गया।"[41]

तभी मैंने देखा कि वह अपराधी आत्मा फूट-फूटकर रोते और आँसू बहाते हुए घुटनों के बल बैठ गई और क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व से पश्चात्ताप स्वीकार करने की प्रार्थना करने लगी। उसने प्रतिज्ञा की: "क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व, कृपा करें! आपके इस शिष्य ने भूल की है! मैं जन्म-जन्मांतर तक सद्धर्म की साधना और रक्षा करूँगा। मैं सदा क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व के धर्म की रक्षा करूँगा।" क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व ने प्रसन्नतापूर्वक उस आत्मा का पश्चात्ताप स्वीकार किया। फिर प्रेत-दूत उसे बाहर ले गए। परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा कि वह शीघ्र ही मनुष्य लोक में जन्म लेने जाएगा।

यह मिंगगुआंग छुझुआन सभा-भवन नरक का एकमात्र ऐसा स्थान है जहाँ भयावह अँधेरे और ठंडक का एहसास नहीं होता। यह कुछ-कुछ नरक के भीतर की अँगीठी जैसा है। सामान्यतः जब मैं नरक में बहुत देर तक रहती हूँ, तो मेरे शरीर का

तापमान बहुत कम हो जाता है, लेकिन आज ठीक महसूस हो रहा है। क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व के करुणामय आशीर्वाद की शक्ति के लिए अत्यंत आभार!

क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व की दिव्य शक्ति के सहारे मैंने यहाँ की आत्माओं को और देखा। मैंने पाया कि बहुत-सी आत्माओं के हृदय का प्रकाश बढ़ रहा था और वे सभी ऊपर की ओर तैर रही थीं।

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: "जिन भी आत्माओं के हृदय का प्रकाश बढ़ गया है, वे मनुष्य लोक में जन्म ले सकती हैं। उन्हें अपने मन और स्वभाव को सँवारने का एक और अवसर दिया जाता है।"

मैं बहुत प्रसन्न हूँ! मैं, आ यू, उन सभी के लिए कामना करती हूँ कि वे प्रसन्न और आनंदित रहें, दुख से मुक्त होकर सुख पाएँ और उत्साहपूर्वक सद्धर्म की साधना करें।

द्वार की ओर फिर देखा, तो बहुत-सी नई आत्माएँ आ गई थीं। लगता है कि क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व विश्राम नहीं कर पाएँगे—अभी इतने अधिक प्राणी हैं। और नरक भी असीम रूप से विशाल है। सचमुच पता नहीं, कब सबका उद्धार करके उसे खाली किया जा सकेगा।

मैं, आ यू, परलोक के न्यायाधिकारी से पूछना चाहती हूँ: "अभी जिस आत्मा को प्रेत-दूत ले गए थे, उसका अगला जीवन कैसा होगा?"

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: "मैं तुम्हें ले चलकर दिखाता हूँ!"

हम तुरंत परलोक के न्याय-सभा भवन पहुँच गए। मैंने उस फूट-फूटकर रोती और आँसू बहाती आत्मा को देखा। वह ज़मीन पर घुटनों के बल बैठी यमराज के निर्णय के लिए आभार व्यक्त कर रही थी। मैंने उसे कहते सुना: "यमराज के निर्णय के लिए आभार! क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व की करुणा के लिए आभार! अब से मैं अवश्य अपना मन और आचरण पूरी तरह बदलूँगा और सच्चे मन से सद्धर्म की साधना

करूँगा।” इसके बाद उस आत्मा को मेंग पो का सूप पीने और पुनर्जन्म लेने के लिए ले जाया गया।[42]

मैंने परलोक के न्यायाधिकारी से पूछा: “भविष्य में इस आत्मा का क्या होगा?” तब न्यायाधिकारी ने जीवन-मृत्यु की बही खोली और उसे देखकर कहा: “इस आत्मा को ऐसे परिवार में जन्म लेने का दंडादेश मिला है जहाँ सम्यक ज्ञान और सम्यक दृष्टि नहीं हैं। उसका जीवन संपन्न होगा, लेकिन उसका स्वास्थ्य जीवन भर ख़राब रहेगा। कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी, पर छोटी-मोटी बीमारियाँ लगातार लगी रहेंगी। उसके भाग्य में बार-बार लोगों से धोखा खाना लिखा है। तीस वर्ष की उम्र में वह साधना शुरू करेगा और उसे क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व का संसार में विद्यमान एक निर्मित रूप मिलेगा, जो उसे धर्ममार्ग पर ले जाएगा। इस जन्म में उसकी साधना में बहुत-सी मार-बाधाएँ आएँगी और जीवन के अंत में उसे अंतिम विदाई देने वाला कोई पुत्र नहीं होगा। ये उसके प्राण-सार और प्राण-ऊर्जा चुराने वाले प्रेत होने के शेष कर्मफल हैं। जहाँ तक संपन्न जीवन की बात है, वह उसके साधक रहते हुए दान देने का फल है। ख़राब स्वास्थ्य और साधना की अनेक मार-बाधाएँ दूसरों का प्राण-सार, प्राण-ऊर्जा और चेतना चूसने का फल हैं। उसके लिए यह जीवन एक बड़ी कसौटी, एक बड़ी परीक्षा होगा—मन की परीक्षा। संपन्न जीवन के बावजूद उसके मन में अक्सर चोरी करने का विचार उठेगा; यह उसके कर्मबल के कारण होगा। यदि वह अपनी मर्यादा में रह सके, शीलों का अच्छी तरह पालन करे, ख़राब स्वास्थ्य पर शिकायत न करे, धोखा मिलने पर बदला न ले, मार-बाधाओं का भी शांत मन से सामना करे और चोरी का विचार उठते ही पश्चात्ताप करे, तो इस जीवन के बाद उसकी आत्मिक चेतना का उत्थान जारी रह सकता है। यदि इसके विपरीत हुआ, तो संभव है कि फिर नरक में भेंट हो।”[43]

मैंने कहा: “ऐसा तो नहीं होगा न! फिर नरक में आना पड़ेगा?”

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: “हम तो इन बातों के अभ्यस्त हो चुके हैं। जिन प्राणियों को क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व अभी-अभी नरक से मुक्त कराते हैं और जो सफलतापूर्वक मनुष्यलोक में जन्म लेते हैं, वे थोड़े ही समय बाद फिर लौट आते हैं। इसलिए क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व यहाँ निरंतर प्राणियों को बचाकर बाहर निकालते रहते हैं। अभी उस आत्मा ने सद्धर्म की रक्षा और समर्थन करने का महान संकल्प किया था, इसलिए क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व ने विशेष रूप से अपना एक निर्मित रूप मनुष्यलोक में भेजा है, ताकि उसे धर्ममार्ग पर ले जाए। इसलिए हमें अपने भीतर एक क्षण के लिए उठने वाले महान बोधिचित्त को भी छोटा नहीं समझना चाहिए। मन का वही एक संकल्प बुद्धों और बोधिसत्त्वों को तुम्हारे उद्धार के लिए बुला लेता है। बस, बुद्ध और बोधिसत्त्व प्राणियों के पास होते हैं, फिर भी प्राणी इसे जान नहीं पाते।”

“न्यायाधिकारी, मैं आपकी अत्यंत आभारी हूँ। आज आपने मुझे, आ यू को, फिर बहुत-से सिद्धांत सिखाए!”

मैं, आ यू, हाथ जोड़कर परलोक के न्यायाधिकारी का आभार व्यक्त करती हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर लौटती हूँ।

29/दिव्य मणि के मंत्र की असीम शक्ति—दक्षिण के तीन पवित्र महात्माओं को नरक के घोर दुःखों से जीवों का उद्धार करते हुए प्रत्यक्ष देखना

जब से मैंने 《परलोक के अटल विधान》 लिखने का निश्चय किया है, तब से लगातार अनेक बाधाएँ आती रही हैं। जब हम लोगों के मन को शुद्ध करने और उन्हें भलाई की ओर प्रेरित करने के काम का संकल्प लेते हैं, तो हमें तरह-तरह की परीक्षाओं का सामना अवश्य करना पड़ता है। लेकिन भलाई की ओर प्रवृत्त अत्यंत सच्चा और शुद्ध मन किसी भी परीक्षा या बाधा से बिल्कुल नहीं डरता। मुझे, आ यू को, विश्वास है कि यदि शील-पालन का संकल्प दृढ़, अत्यंत सच्चा और शुद्ध बनाए रखा जाए, तो बुद्ध और बोधिसत्त्व अवश्य अधिष्ठान देंगे, जिससे बाधाएँ टूटेंगी। इन तरह-तरह की बाधाओं का उद्देश्य यही है कि मैं 《परलोक के अटल विधान》 लिखना बंद कर दूँ।[44]

जब मैंने लिखना शुरू किया था, तब मार-बाधाएँ विशेष रूप से अधिक थीं। मैं पहले ही बहुत कम सोती थी, और मानवेतर प्राणी हमेशा मेरे सोते समय आकर बहुत व्यवधान डालते और मेरी ऊर्जा क्षीण करते थे। बाद में जब उनका उद्देश्य समझ में आया, तो मैंने सपनों में उन मानवेतर प्राणियों से उलझना बंद कर दिया। इससे ऊर्जा व्यर्थ जाती थी और पुस्तक का लेखन प्रभावित होता था। क्योंकि 《परलोक के अटल विधान》 लिखने का काम मैं तभी कर सकती हूँ, जब मेरी अवस्था सबसे अच्छी हो।

हाल में कुछ शारीरिक पीड़ा सहनी पड़ी है, इसलिए अब मुझे अपना मनोबल स्वयं मज़बूत करना शुरू करना होगा। आज मैं, आ यू, सभी बाधाओं और शारीरिक पीड़ा को साधना की प्रेरक शक्ति में बदलूँगी। मेरी कामना है कि संसार के सभी प्राणियों की बाधाएँ और कष्ट मैं अकेली उनके स्थान पर सहूँ, और वे सब मेरी, आ यू की, साधना की प्रेरक शक्ति बन जाएँ।

मुझे इतने मनोयोग से शिक्षा देने वाले मेरे उपकारी गुरु को साष्टांग प्रणाम! सद्धर्म की साधना करके महान सिद्धियाँ प्राप्त करने वाले सभी पूर्वाचार्यों और महागुणी साधकों को साष्टांग प्रणाम!

दसों दिशाओं के सभी बुद्धों और बोधिसत्त्वों को साष्टांग प्रणाम! क्षितिगर्भ महाबोधिसत्त्व को साष्टांग प्रणाम!

आज मैं, आ यू, क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व के दिव्य प्रताप और अधिष्ठान-बल के सहारे बाधाएँ पार करके नरक जाऊँगी और वहाँ क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व को नरक के प्राणियों का उद्धार करते हुए प्रत्यक्ष देखूँगी, ताकि उसका यथार्थ वृत्तांत लिख सकूँ!

नमो क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व! नमो क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व! नमो क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व! नमो महान प्रणिधानधारी क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व! नमो महान प्रणिधानधारी क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व! नमो महान प्रणिधानधारी क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व!

मैं, आ यू, भी क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व का अनुकरण करके दुःखों से पीड़ित प्राणियों को दुःख-सागर से पार उतारूँगी। 《परलोक के अटल विधान》 यथाशीघ्र प्रकाशित होना ही चाहिए, ताकि मनुष्यलोक के भ्रमित और भटके हुए प्राणी मुड़कर मुक्ति के तट पर पहुँचें, बुराई छोड़कर भलाई अपनाएँ और अपनी जन्मजात आत्मिक चेतना का प्रकाश शीघ्र पुनः प्राप्त करें।

क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व की बुद्ध-शक्ति के अधिष्ठान के लिए आभार! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान!

नरक पहुँच गई! क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व को साष्टांग प्रणाम! क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व करुणापूर्वक मुस्कुराए! बोधिसत्त्व सदैव इतनी करुणा से प्रचंड प्रकाश बिखेरते हैं! क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व ने एक करुणामय प्रव्रजित का रूप धारण किया था और पूर्ण पद्मासन में बैठे थे। इस बार जिस कमल पर क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व बैठे थे, उसका रंग नीला-हरा था। मैंने पहली बार बोधिसत्त्व को नीले-हरे कमल पर बैठे देखा। बोधिसत्त्व के बाएँ हाथ में एक गुलाबी मणि और दाएँ हाथ में स्वर्णिम खक्खर था। उनके पास दी तिंग नाम का एक सवारी-प्राणी भी था। बोधिसत्त्व की बाईं ओर धर्माचार्य दाओमिंग और दाईं ओर धर्मपाल मिन गोंग सेवा में खड़े थे। मैंने धर्माचार्य और धर्मपाल को साष्टांग प्रणाम किया![45]

इस बार मैं क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व के दिव्य प्रताप और अधिष्ठान-बल के सहारे सीधे नरक में पहुँची थी; नरक के भीतर के दूसरे रास्तों से होकर नहीं गई थी। हम आकाश में रहकर नीचे देख रहे थे। मैं क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व से नीचे खड़ी थी, अर्थात नरक के कुछ अधिक निकट थी। मुझे पहले ही दुःखभरी चीखें सुनाई देने लगी थीं। मैंने देखा कि क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व नरक में प्रकाश बिखेरकर अधिष्ठान दे रहे थे।

धर्माचार्य दाओमिंग ने बताया कि इस नरक का नाम “चीत्कार नरक” है। आज क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व एक पापी आत्मा को बचाकर ऊपर उठाने के लिए इस नरक में आए थे। क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व की दया और करुणा पाना कितना महान पुण्यफल है!

धर्माचार्य दाओमिंग ने कहा कि उस पापी आत्मा के वंशज दिन-रात 《क्षितिगर्भ सूत्र》 का पाठ करते थे, और उन्हीं के पाठ से प्रेरित होकर बोधिसत्त्व आए थे। अपने पिछले जन्मों में से एक जन्म में यह पापी आत्मा प्रव्रजित साधक थी। उस प्रव्रजित जीवन में शील-पालन पर्याप्त शुद्ध न होने के कारण उसे मुक्ति नहीं मिली। उसके बाद उसने मनुष्यलोक के एक धनवान और प्रतिष्ठित परिवार में जन्म लिया और उसका पतन शुरू हुआ। यौन दुराचार से विरत रहने का शील तोड़ने के बाद उसका पतन निरंतर होता गया, यहाँ तक कि वह नरक में आ गिरी।

तब क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व ने मिन गोंग को नीचे जाने का संकेत दिया। मिन गोंग ने नीचे जाकर दो प्रेत-प्रहरियों से कहा: “क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व XXX नाम की एक पापी पुरुष आत्मा से मिलना चाहते हैं।” थोड़ी देर में प्रेत-प्रहरी एक पुरुष आत्मा को बाहर ले आए, जो पीड़ा से तड़प रही थी, खून बहा रही थी और जिसका पूरा शरीर काँप रहा था। वह पीड़ा के कारण एक शब्द भी नहीं बोल पा रहा था। कुल मिलाकर, वह न प्रेत जैसा दिखता था, न ही किसी तरह मनुष्य जैसा। उसकी आत्मिक देह इतनी दुर्बल थी कि ऐसा लगता था, यदि इस समय तेज़ हवा का एक झोंका भी लगे, तो न जाने उसे कहाँ उड़ा ले जाए।

क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व ने उस पुरुष आत्मा को उपदेश देते हुए कहा: “आज जीवित मनुष्य आ यू नरक का अवलोकन करने आई है। उसका उद्देश्य परलोक द्वारा निर्धारित एक सदाचार-ग्रंथ, 《परलोक के अटल विधान》, लिखना है, ताकि मनुष्यलोक के प्राणियों का उद्धार हो, वे पाँच शीलों और दस कुशल कर्मों का पालन करें, अपना मन शुद्ध करें, भलाई करके पुण्य संचित करें और जीवन के अंत में नरक के पीड़ादायक कर्मफल से बचें। अब आ यू को बताओ कि तुम नरक में कैसे आए? इस समय तुम्हें कैसा अनुभव हो रहा है?”[46]

पुरुष आत्मा ने सिर हिलाया, लेकिन बोल नहीं पाया। तब धर्माचार्य दाओमिंग ने क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व के हाथ से गुलाबी मणि ली और नीचे उस पापी आत्मा के पास उतरे। धर्माचार्य ने तेज़ी से क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व का धर्मकाय-मुद्रा मंत्र पढ़ा: “唵。钵啰末邻陀宁。娑婆诃。” मणि से तुरंत प्रचंड प्रकाश निकला, जिसने पूरे चीत्कार नरक को आलोकित कर दिया। इस नरक की पीड़ा उसी क्षण अस्थायी रूप से थमकर कम हो गई और सभी पापी आत्माओं ने तत्काल तन-मन में शांति और स्थिरता अनुभव की। उस पुरुष आत्मा की पीड़ा तुरंत दूर हो गई। उसे ऐसा लगा मानो शरीर में गर्माहट की एक प्रबल धारा प्रवाहित हो रही हो, और अंततः

वह बोलने लगा। यहाँ तक कि मुझे भी उस उष्ण शक्ति का अधिष्ठान अनुभव हुआ।
47

पुरुष आत्मा ने बताया कि जीवनकाल में उसने यौन दुराचार किया था। उसे सद्धर्म की साधना करने वाले एक गृहस्थ साधक से ईर्ष्या भी थी। उसे यह सहन नहीं होता था कि वह गृहस्थ साधक जगह-जगह सद्धर्म का प्रचार करता और लोगों का सम्मान पाता था। इसलिए उसने उस गृहस्थ पर अशुद्ध शील-पालन का झूठा आरोप लगाया। इस निंदा के कारण अनेक श्रद्धालु उससे दूर चले गए और उनकी धर्म-साधना का प्रज्ञा-जीवन कट गया। यद्यपि वह स्वयं सामान्यतः बुद्धधर्म की साधना करता था, फिर भी जीवन के अंत में कर्मफल भोगने के लिए नरक में गिरा, जहाँ हर मिनट, हर सेकंड अत्यंत पीड़ादायक था। सौभाग्य से अब मनुष्यलोक में उसका बेटा बड़ा हो गया था और उसने बुद्धधर्म सीखना शुरू कर दिया था। वह बहुत लगनशील था और हर दिन 《क्षितिगर्भ सूत्र》 का पाठ करके उसका पुण्य उसे समर्पित करता था।

तब वह पुरुष आत्मा घुटनों के बल बैठकर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी और आँसू बहाते हुए बोली: “महाकरुणामय क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व, कृपया मुझे यहाँ से बचाकर निकालिए। यहाँ की पीड़ा सचमुच असहनीय है! मैं अवश्य अपने जीवन को सुधारूँगा और सत्कर्म करके अपने अपराधों का प्रायश्चित्त करूँगा। मैं शपथ लेता हूँ कि जन्म-जन्मांतर सद्धर्म की साधना करूँगा और उसकी रक्षा तथा समर्थन करूँगा। कृपया मुझे बाहर निकालिए। अब तो मेरा बच्चा भी माता-पिता के प्रति कर्तव्यनिष्ठ होना समझता है और हर दिन 《क्षितिगर्भ सूत्र》 का पाठ करके मुझे पुण्य समर्पित करता है, जबकि मैंने ऐसे कर्म किए जिनका बुरा फल नरक है। मैं भी जन्म-जन्मांतर मनुष्यलोक में जन्म लेना चाहता हूँ, शुद्ध शीलों का पालन करना चाहता हूँ और मनुष्यलोक में एक अच्छा व्यक्ति बनकर समाज को योगदान देना चाहता हूँ।”

क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व का अधिष्ठान पाकर उस पापी आत्मा को याद आया कि उसने पहले क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व के पवित्र नाम का जप किया था। अब वह मन ही मन निरंतर 'नमो क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व' जपने लगा और उसके मन का प्रकाश भी उज्ज्वल होने लगा। पुरुष आत्मा ने भी अनुभव किया कि उसका शरीर हल्का होने लगा था। वह और भी निरंतर 'नमो क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व' जपता रहा और उसका शरीर ऊपर उठकर तैरने लगा। मैंने क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व से पूछा: "यह पुरुष आत्मा इतनी जल्दी ऊपर कैसे उठ सकती है?"

क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व ने उपदेश दिया: "जब यह पुरुष आत्मा पिछले जन्म में प्रव्रजित थी, तब यद्यपि इसका शील-पालन पूरी तरह शुद्ध नहीं था, फिर भी इसने कभी शुद्ध रूप से भिक्षु-शीलों का पालन किया था। इसी पुण्यफल के कारण इसने मनुष्यलोक में जन्म लिया और सातों जन्मों में धनवान तथा प्रतिष्ठित परिवार पाए, साथ ही माता-पिता के प्रति कर्तव्यनिष्ठ संतान भी मिली। लेकिन सातवें जन्म में यौन दुराचार से विरत रहने का शील तोड़ने और निंदा करने के बाद यह दंड भोगने के लिए नरक में गिरा। इस बार इसका उत्थान इसलिए हुआ है कि इसके कर्तव्यनिष्ठ पुत्र ने मनुष्यलोक में इसके लिए भलाई करके पुण्य संचित किया, महान बोधिचित्त उत्पन्न किया और उस पुण्य को समर्पित किया; इस समर्पण की महान शक्ति के कारण इसका उत्थान हुआ है। इसके साथ ही यह पुरुष आत्मा स्वयं भी सच्चे मन से पश्चात्ताप कर रही है। बुद्ध और बोधिसत्त्व ऐसे किसी भी प्राणी को नहीं छोड़ते जिसका उद्धार किया जा सकता हो।"

क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व ने यह भी कहा कि मनुष्यलोक में जन्म लेने के बाद इस पुरुष आत्मा को यौन दुराचार और निंदा के शेष कर्मफल भोगते रहना होगा। उसे स्त्री-शरीर मिलेगा और तलाक़ का कर्मफल भोगना होगा। वह सच बोलेगी, फिर भी लोग विश्वास नहीं करेंगे। लेकिन स्त्री-शरीर में जन्म लेने के बाद वह बुद्धधर्म की साधना अवश्य करेगी। यदि वह दृढ़ विश्वास के साथ साधना कर सके, सद्धर्म की

रक्षा और समर्थन करे तथा नरक में किए हुए अपने वचन निभाए, तो उसकी आत्मिक देह धीरे-धीरे अपना प्रकाश पुनः प्राप्त करेगी।

अब इस नरक की दूसरी आत्मा, एक स्त्री आत्मा, को देखा। प्रेत-प्रहरी उसे बाहर लाए। धर्माचार्य दाओमिंग ने मंत्र पढ़ा और मणि ने फिर प्रकाश बिखेरकर उस स्त्री आत्मा को अधिष्ठान दिया। उसकी आत्मिक देह की दशा कुछ अधिक ख़राब थी, इसलिए धर्माचार्य को थोड़ी अधिक देर तक मंत्र पढ़ना पड़ा। धर्म-शक्ति का अधिष्ठान मिलने पर स्त्री आत्मा की बोलने की क्षमता लौटने लगी।

उसने बताया कि जीवित रहते वह सामान्यतः सभी लोगों से कटु और कठोर बातें करती थी। विशेष रूप से उसे अपने पति की पूर्व पत्नी की संतान से बहुत ईर्ष्या थी। वह अक्सर उस बच्चे को मारती-पीटती और डाँटती थी, जिससे उसे चोटें लगतीं और खून बहता था। उसने बच्चे को भूखा रखकर बेहोश कर दिया और फिर पीट-पीटकर मार डाला। वह अपनी सास के प्रति भी कर्तव्यनिष्ठ नहीं थी। बुरा व्यवहार करने के अलावा वह सास के सिर पर भी मारती थी; कभी-कभी इतनी मारती कि उनका सिर फट जाता और खून बहने लगता। परिवार में शांति बनाए रखने के लिए सास यह कहने का साहस भी नहीं करती थीं कि बहू ने उन्हें मारा है। अंततः उसने उस वृद्धा को भी इतना क्रोध और संताप दिया कि उनकी मृत्यु हो गई। वृद्धा और बच्चे ने यमराज के न्याय-सभा भवन में शिकायत की। उसकी मृत्यु के बाद उसे चीत्कार नरक में दंड भुगतने के साथ-साथ अन्य नरकों के दंड भी सुनाए गए। अभी वह चीत्कार नरक में आई ही थी और पहले से ही अत्यंत पीड़ा में थी। आगे के दिन कैसे कटेंगे!

स्त्री आत्मा ने भी घुटनों के बल बैठकर क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व से उसे नरक से बचाकर निकालने की प्रार्थना की। क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व ने उसे उपदेश दिया: “यदि पहले जानती कि आज यह दशा होगी, तो तब ऐसा क्यों करती? यह यमराज का दंडादेश है। सभी सदाचरणों में माता-पिता के प्रति कर्तव्यनिष्ठा पहले स्थान पर है।

यमराज मनुष्यलोक के कर्तव्यनिष्ठ पुत्र-पुत्रियों का सबसे अधिक सम्मान करते हैं। जीवन भर श्रद्धापूर्वक माता-पिता की सेवा और भरण-पोषण करके भी उनके पालन-पोषण के उपकार का बदला नहीं चुकाया जा सकता; फिर उनके साथ क्रूर व्यवहार करने का साहस कैसे किया जा सकता है? माता-पिता के प्रति कर्तव्यहीनता परलोक के विधान में अक्षम्य अपराध है। तुम्हें गहरा पश्चात्ताप करना चाहिए। स्वर्ग का सद्गुण जीवन का पोषण करना है। पति की पूर्व पत्नी के बच्चे के लिए अपनी जन्मदात्री माँ को खो देना पहले ही मन में एक बड़ा अभाव था। तुम्हें उसे अपनी सगी संतान मानकर मनोयोग से उसकी देखभाल करनी चाहिए थी, ताकि उसके मन का वह अभाव भर सके। लेकिन तुमने तो अपने पूर्व पति के बच्चे को मारा-पीटा, डाँटा, भूखा रखकर बेहोश किया और पीट-पीटकर मार डाला। एक छोटे, निहत्थे बच्चे को पीटकर मारना सचमुच दुष्ट और विषैला हृदय होने का प्रमाण है। जैसा कारण, वैसा फल। तुम्हें गहरा पश्चात्ताप करना होगा। तुम्हारी सहायता केवल तुम स्वयं कर सकती हो।”[48]

स्त्री आत्मा पीड़ा में घुटनों के बल बैठकर क्षमा माँगने लगी और बोली: “बोधिसत्त्व, मुझे बचाइए! मैं आपके सामने माथा टेकती हूँ। जीवित रहते किसी को भी मेरे दोष बताने की अनुमति नहीं थी। कोई मेरे बारे में एक भी आलोचनात्मक बात कहता, तो मैं तुरंत उसे अपशब्द कहती, यहाँ तक कि मारती भी थी। मुझे लोगों के सिर पर मारना सबसे अधिक पसंद था। सिर पर मारने से सामने वाला बेहोश हो सकता था और मैं जीत जाती थी। मुझे जीतना पसंद था; मैं कभी हार नहीं मानती थी। आज बोधिसत्त्व की बातें सुनकर मुझे पता चला कि मैंने गंभीर ग़लतियाँ की हैं। मैं अपनी ग़लती समझ गई हूँ। बोधिसत्त्व, कृपया मुझे बचाइए! मैं नरक से बाहर जाना चाहती हूँ।” तब प्रेत-प्रहरी उस स्त्री आत्मा को वापस ले गए।

मैंने देखा कि स्त्री आत्मा के मन का प्रकाश पहले जितना मद्धिम नहीं था, लेकिन अभी भी बहुत उज्ज्वल नहीं था। मैंने क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व से पूछा: “क्या उस स्त्री आत्मा को नरक से निकलने से पहले नरक के अपने सारे कर्मफल भोगने ही होंगे?”

क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व ने उपदेश दिया: “आज के इस कर्म-संबंध से भविष्य में मनुष्यलोक में जन्म लेने पर उसे सद्धर्म से भेंट और साधना करने का अवसर मिल सकता है। लेकिन वह बहुत दूर की बात है। अभी पहले एक शुभ संबंध का बीज बो देते हैं!”

क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व के उपदेश के लिए आभार! वह मानो परम शुद्ध घृत और अमृत की वर्षा थी, जो सीधे तन-मन में उतर गई!

मैंने बोधिसत्त्व को प्रणाम करके आभार व्यक्त किया और पहले विदा ली!

साष्टांग प्रणाम! नमो क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व!

धर्माचार्य दाओमिंग को साष्टांग प्रणाम!

धर्मपाल मिन गोंग को साष्टांग प्रणाम!

श्वेत कमल पर सवार होकर लौटती हूँ।

30/परलोक के न्यायाधिकारी ने युली का सत्य बताया—《युली बाओछाओ》 और 《परलोक के अटल विधान》 की रक्षा और समर्थन में पूरी शक्ति लगाना

बुद्ध की शक्ति के अनुग्रह के लिए कृतज्ञ हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ!

अमिताभ बुद्ध! मैं, आ यू, परलोक के न्यायाधिकारी के सामने हाथ जोड़ती हूँ!

मैंने परलोक के न्यायाधिकारी से पूछा: “मनुष्यलोक में लंबे समय से प्रचलित 《युली बाओछाओ》[49] नामक पुस्तक सत्य है या असत्य?” न्यायाधिकारी ने उत्तर दिया: “《युली बाओछाओ》 सत्य है। यह भी एक अमूल्य ग्रंथ है, जिसे परलोक के फ़ेंगदू सम्राट, परलोक-अधिपति यमराज ने महान करुणा से विशेष रूप से मनुष्यलोक में प्रसारित कराया था। दानची नाम के एक साधक ने ध्यान-समाधि के दौरान परलोक की यात्रा की और बाद में उसे 《युली बाओछाओ》 की पांडुलिपि के रूप में लिखा। इसके बाद उन्होंने वह पांडुलिपि अपने शिष्य, दाओ-साधक[50] वूमी को सौंपी। वूमी के माध्यम से ही मनुष्यलोक में उसका प्रसार शुरू हुआ। उस समय नरकों की यात्रा करने के बाद दाओ-साधक दानची ने तुरंत पुस्तक प्रकाशित करके मनुष्यलोक में नहीं बाँटी थी। अपनी मृत्यु और ऊर्ध्वगमन से ठीक पहले ही उन्होंने शिष्य वूमी को उसे मनुष्यलोक में प्रसारित करने का दायित्व सौंपा था।

पहले के नरक आज की तुलना में बहुत छोटे थे। नरकों के फ़ेंगदू सम्राट, परलोक-अधिपति यमराज केवल एक हैं और वे परलोक के सर्वोच्च शासक हैं। उनके अधीन दस न्याय-सभाओं के यमराज थे, जो शासन के दूसरे सर्वोच्च स्तर पर थे और फ़ेंगदू सम्राट, परलोक-अधिपति यमराज के आदेशों का पालन करते थे। ये दस न्याय-सभाओं के यमराज अपनी-अपनी सभा के अधीन आने वाले छोटे-बड़े नरकों का प्रबंधन करते थे। आज भी परलोक के सर्वोच्च शासक एक ही परलोक-अधिपति यमराज हैं, लेकिन उनके अधीन यमराजों की पहले की संख्या दस में दो और जुड़ गए हैं। इस प्रकार अब कुल बारह न्याय-सभाओं के यमराज हैं। फिर भी दो यमराज बढ़ जाने से काम का बोझ कम नहीं हुआ है। विशेष रूप से यौन दुराचार के नरकों के यमराज पर काम का बोझ उनकी क्षमता से बहुत अधिक है।

आज के नरकों में, यहाँ तक कि उन दस न्याय-सभाओं के नरकों का क्षेत्रफल भी बहुत बढ़ गया है। आ यू, कुछ समय पहले तुम जिन यौन दुराचार के नरकों को देखने गई थीं, वे नरक-क्षेत्र के पश्चिम और उत्तर में हैं। यौन दुराचार के नरकों की ओर भी अब छिंगपिंग राजा नाम के एक यमराज हैं, जो विशेष रूप से उस क्षेत्र के सभी छोटे-बड़े यौन दुराचार के नरकों का प्रबंधन करते हैं। इस समय हमारे परलोक में सबसे अधिक भूमि घेरने वाला नरक यौन दुराचार का नरक है। उसके भीतर नए नरकों के निर्माण के अनुकूल व्यवस्था करने के लिए परलोक ने कुछ भीतरी नरकों के स्थान भी बदले हैं। इसके अतिरिक्त, परलोक में हाइशान राजा नाम के एक यमराज हैं, जो दक्षिण के लिंगशिंग नरक का प्रबंधन करते हैं। इस लिंगशिंग नरक के अधीन आठ नरक हैं। इनमें एक बड़ा 'अन्यायपूर्ण मृत्यु के रुदन-नगर का नरक' है, जिसे तुम पहले देख चुकी हो। इसके अलावा भोजन व्यर्थ करने वालों के लिए बड़ा 'पाँच अनाजों की भरपूर फ़सल का नरक', बड़ा 'मिथ्या दृष्टि और निंदा का नरक', 'वज्रयान नरक'[51] आदि हैं। आज के बहुत-से लोग इन नरकों में पहुँचते हैं। हाइशान राजा दक्षिण में इन नवनिर्मित नरकों का प्रबंधन करते हैं, और दानची ने

इनमें से किसी भी नए नरक की यात्रा नहीं की थी। पुराने समय में लोगों के मन अपेक्षाकृत सरल और भले थे; स्थिति इतनी नहीं बिगड़ी थी कि दंड देने के लिए यौन दुराचार के इतने नरकों की आवश्यकता पड़े। पहले भी बुरे कर्म करने वाले लोग अवश्य थे, लेकिन वे आज की तरह इतने उन्मत्त और खुलेआम ऐसा करने वाले नहीं थे। पहले दस न्याय-सभाओं के नरक ही मनुष्यलोक में पतित होकर दस अकुशल कर्म[52] करने वाले तरह-तरह के प्राणियों को दंड देने के लिए पर्याप्त थे। अब मनुष्यलोक में बुरे कर्म करने वाले बहुत अधिक हैं और भलाई करने वाले बहुत कम। पाँच सौ लोगों में एक भी ऐसा नहीं होता जो भलाई करता हो और शीलों का पालन करता हो, जबकि बुरे कर्म करने और शील तोड़ने वाले हर जगह हैं।

《युली बाओछाओ》 और 《परलोक के अटल विधान》, दोनों परलोक से प्रसारित महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं, जिनका उद्देश्य लोगों के मन को समझाकर सुधारना है। 《परलोक के अटल विधान》 में वर्णन अधिक स्पष्ट और विस्तृत होगा; उसमें परलोक की वर्तमान स्थिति का सबसे यथार्थ चित्र होगा। साथ ही, अब तुम्हारा दायित्व बहुत बड़ा है। देवराज और परलोक के अधिपति यमराज, दोनों आशा कर रहे हैं कि 《परलोक के अटल विधान》 शीघ्र मनुष्यलोक में प्रसारित हो, जल्द से जल्द लोगों के मन को सुधारने और मनुष्यलोक को शुद्ध करने का प्रभाव उत्पन्न करे तथा हर दिन निरंतर नरक में गिरने वाले मनुष्यों की विशाल संख्या को कम करे। आज इतना ही। कोई प्रश्न हो तो फिर आना।”

अमिताभ बुद्ध! परलोक के न्यायाधिकारी के प्रति कृतज्ञ हूँ! मैं, आ यू, हाथ जोड़कर परलोक के न्यायाधिकारी को प्रणाम करती हूँ!

श्वेत कमल पर सवार होकर लौटती हूँ।

31/अवीचि महानरक[53] के दंड, जिन्हें देखना भी असहनीय है; दिव्य प्राणी दी तिंग ने परहित के आचरण की साधना पर उपदेश दिया

बुद्ध की शक्ति के अनुग्रह के लिए कृतज्ञ हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ!

अमिताभ बुद्ध! मैं, आ यू, हाथ जोड़कर परलोक के न्यायाधिकारी को प्रणाम करती हूँ!

मैंने परलोक के न्यायाधिकारी से पूछा: “क्या आज मैं देख सकती हूँ कि क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व नरक में दुःखों से कैसे बचाते हैं?”

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: “क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व के बहुत-से प्रतिरूप हैं, जो अलग-अलग छोटे-बड़े नरकों में दुःख दूर करते हैं। आ यू, तुम कौन-सा नरक देखना चाहती हो?”

“मैंने मनुष्यलोक में सुना है कि क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व के तीन निर्मित रूप हैं: एक नरक में, एक मनुष्यलोक में और एक स्वर्ग में। क्या ऐसा ही है?”

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: “क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व ऐसे महाबोधिसत्त्व हैं जिन्होंने यह महान प्रणिधान किया है: ‘जब तक नरक रिक्त नहीं हो जाते, मैं बुद्धत्व प्राप्त नहीं करूँगा।’ आज नरक भले ही रिक्त नहीं हुए हैं, लेकिन वास्तव में उनके पुण्य और गुणों की सिद्धि पहले ही हो चुकी है। बोधिसत्त्व केवल नरक, मनुष्यलोक और देवलोक के प्राणियों का उद्धार ही नहीं करते; वे अपने प्रतिरूप अन्य लोकों के नरकों में भी भेजते हैं, ताकि वहाँ के दुःखी प्राणियों का उद्धार हो। उन अन्य लोकों के नरकों को भी सभी का उद्धार करके रिक्त करना है। दूसरे कालों और स्थानों के

प्राणियों को बचाने के लिए भी बोधिसत्त्व अपने प्रतिरूप भेजते हैं। बोधिसत्त्व के प्रतिरूप केवल तीन नहीं हैं; उनके हज़ारों-लाखों-खरबों प्रतिरूप हैं। प्रत्येक प्रतिरूप अलग-अलग जगतों में जाकर सभी चेतन प्राणियों का उद्धार करता है। क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व का मनुष्यलोक के प्राणियों से विशेष कर्म-संबंध है, क्योंकि नरक में गिरने वाले प्राणियों में मनुष्यलोक के प्राणी ही सबसे अधिक होते हैं। इसलिए हमें बोधिसत्त्व की करुणामय शिक्षा और मार्गदर्शन के लिए आभारी होना चाहिए।

मनुष्यलोक में क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व के बहुत-से निर्मित रूप हैं। कुछ ने अभी जन्म लिया है और उनकी उम्र तीन वर्ष भी नहीं हुई है, कुछ अभी पढ़ रहे हैं और कुछ वयस्क हो चुके हैं। भविष्य में वे चुपचाप बुद्ध के प्रज्ञा-जीवन[54] को आगे बढ़ाने का काम करेंगे और परिस्थितियों तथा कर्म-संबंधों के अनुसार सभी चेतन प्राणियों को धर्ममार्ग पर लाएँगे। क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व के कुछ निर्मित रूप जीवन भर बिना प्रसिद्धि के प्राणियों का उद्धार करते हैं और किसी को उनका पता नहीं चलता। कुछ धर्म-साधना केंद्र स्थापित करके सद्धर्म का प्रचार करेंगे। चाहे जो भी रूप हो, यह बोधिसत्त्व की अदृश्य व्यवस्था है।

संभव है कि हमारे आसपास ही क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व का कोई निर्मित रूप हो, जो अपने आचरण का उदाहरण देकर हमें धीरे-धीरे प्रभावित कर रहा हो और चुपचाप अपने दोषपूर्ण स्वभाव को सुधारना सिखा रहा हो। बस, हम बोधिसत्त्व को पहचान नहीं पाते और उन्हें साधारण मनुष्य समझते हैं। बोधिसत्त्व भी अपनी पहचान प्रकट नहीं करते। हमें क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व की तरह विशाल संकल्प रखना सीखना चाहिए। बोधिसत्त्व ने प्राणियों के उद्धार का प्रणिधान किया और उसी प्रणिधान से उनका आचरण आरंभ हुआ। इसलिए बोधिसत्त्व का चित्त दसों दिशाओं में व्याप्त है और उनका प्रणिधान भी दसों दिशाओं के समस्त आकाश और धर्मधातु[55] में व्याप्त है। बोधिसत्त्व का प्रणिधान ऐसा है कि आकाश की सीमा हो सकती है, पर उनके प्रणिधान की नहीं। उदाहरण के लिए, यदि हम एक बार भिक्षा माँगने वालों को दान

देने का संकल्प करते हैं, तो संकल्प केवल एक बार किया गया, लेकिन दान देने का आचरण अनगिनत बार और जन्म-जन्मांतर तक चलता है। तुम्हारे अंतर्मन में जन्म-जन्मांतर भिक्षा माँगने वालों को दान देने का बीज बना रहेगा। प्रणिधान एक है, आचरण अनेक हैं। यदि एक बार भी कोई भिक्षा माँगने वाला दिखे और उसे दान न दिया जाए, तो यह प्रणिधान की शक्ति के विरुद्ध जाना है। हमें क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व की तरह प्राणियों के उद्धार का शुभ प्रणिधान करना सीखना चाहिए। बोधिसत्त्व हर क्षण अपने प्रणिधान को आचरण में उतारते हैं। यदि हर क्षण प्रणिधान को आचरण में उतारा जाए, तो बार-बार सिद्धि प्राप्त होती है; बार-बार सिद्धि प्राप्त होने से दिव्य शक्ति उत्पन्न होती है। जितने अधिक प्राणियों का उद्धार होता है, दिव्य शक्ति उतनी ही बढ़ती है और पुण्य-बल भी उतना ही बड़ा होता है। हर क्षण निरंतर प्राणियों का उद्धार करते रहने से दिव्य शक्ति भी असीम और अनंत हो जाती है। असीम और अनंत अभिज्ञा-बल से असीम और अनंत प्रतिरूप प्रकट किए जा सकते हैं, जो असीम और अनंत जगतों में जाकर प्राणियों का उद्धार करते हैं।

हमारे नरकों में क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व के निर्मित रूप और भी अधिक हैं। पिछली बार तुमने 'मिंगगुआंग छुझुआन धर्मसभा-भवन' देखा था। क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व हर दिन सुबह, दोपहर और शाम, तीन बार नरक में धर्म का उपदेश देते हैं। धर्म सुनने के बाद पापी आत्माओं के भीतर कुशल-मूल अंकुरित होते हैं और उनके अंकुरित होने से मन में पश्चात्ताप उत्पन्न होता है। जैसे ही वे पश्चात्ताप करती हैं, क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व उन्हें नरक से बाहर भेज देते हैं। एक स्थिति यह भी होती है कि यदि पापी आत्माओं का पुण्यफल पर्याप्त हो, तो क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व अपना एक प्रतिरूप उनके पास प्रकट करके उन्हें धर्ममार्ग पर ले जाते हैं। यह नरक में प्राणियों का उद्धार करने के क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व के तरीकों में से एक है। हर दिन वे सफलतापूर्वक अनगिनत पापी आत्माओं को नरक से मुक्त कराते हैं। यदि नरक के दुःखी प्राणियों को क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व का उद्धार न मिले, तो न जाने उनकी संख्या कितने गुना और बढ़ जाए।

एक अन्य तरीका यह है कि क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व वंशजों की अपने माता-पिता और पूर्वजों के प्रति श्रद्धा तथा सेवाभाव की मात्रा के अनुसार उनके दिवंगत परिजनों को दुःख से उबारने की व्यवस्था भी करते हैं। अर्थात्, वंशज जीवितों के संसार में 'क्षितिगर्भ सूत्र' का पाठ करें, क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व का नाम जपें, बुद्ध को नमन करें, साष्टांग प्रणाम करें, अर्पण करें, प्राणियों को मुक्त करें, लोगों को सद्मार्ग पर लाने के लिए बौद्ध सूत्र और सदाचार की पुस्तकें छपवाएँ, निराश्रितों, अकेले पड़े लोगों और निर्धनों की सहायता करें—इस प्रकार लोगों को अच्छाई की ओर प्रेरित करने तथा सत्कर्म करके पुण्य संचित करने के जितने भी कार्य हैं, उनका पुण्य-बल नरक में पड़े अपने पूर्वजों को समर्पित करें, तो बोधिसत्त्व ऐसी पापी आत्माओं को नरक से मुक्त कराने की व्यवस्था करते हैं।

क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व यह भी देखते हैं कि पापी आत्मा के उद्धार के लिए आवश्यक हेतु और परिस्थितियाँ पूरी हुई हैं या नहीं। कुछ पापी आत्माओं के कोई परिजन या वंशज उनके उद्धार के लिए सत्कर्म नहीं करते, लेकिन उनके पिछले जन्मों में कुछ कुशल-मूल, पुण्य और अनुकूल संबंध होते हैं। उदाहरण के लिए, बहुत-से प्रव्रजित साधक शील भंग करने के कारण नरक में गिरे होते हैं, फिर भी उनके जीवन में ऐसे समय भी रहे होते हैं जब उन्होंने निर्मल रूप से शील का पालन किया और सत्कर्म किए। कुछ ने किसी पिछले जन्म में एक क्षण के लिए भी श्रद्धा से क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व को निहारा हो, या कभी सहज ही एक क्षण मन शांत करके धर्म सुना हो, या क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व के पवित्र नाम का जाप किया हो, तो बोधिसत्त्व बिना बुलाए ही ऐसे प्राणियों को धर्ममार्ग पर लाने आ जाते हैं।"

मैंने कहा, "तो आज अवीचि नरक देखने चलते हैं, जिसका नाम सुनकर ही हर कोई डर जाता है! पता नहीं, आज क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व अवीचि नरक जाएँगे या नहीं?"

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा, “क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व हर नरक में पधारते हैं। आ यू, तुमने अभी अवीचि नरक नहीं देखा है, तो मेरे साथ आओ!”

अवीचि नरक पहुँचने के लिए कुछ गलियारों से होकर जाना पड़ता है। रास्ते भर तरह-तरह की पीड़ाभरी चीखें और कराहें लगातार सुनाई दे रही थीं। नरक घोर शोक, भय और पीड़ा से भरा था। अब समझ में आया कि ‘परलोक के अटल विधान’ लिखना शुरू करने से पहले बोधिसत्त्व ने मुझे गंभीरता और लगन से साधना करने को क्यों कहा था। जिसकी ध्यान-स्थिरता थोड़ी भी कम हो, वह नरक के प्रबल नकारात्मक चुंबकीय क्षेत्र में डूब जाएगा। यह सचमुच मनुष्यों के आने की जगह नहीं है। कामना है कि नरक के दुःखी प्राणी शीघ्र मुक्त होकर ऊपर उठ सकें! यदि बुद्ध-बल ने मुझे अपने घेरे में लेकर अधिष्ठान न दिया होता, तो उस क्षेत्र में डूबने से बच भी जाती, तब भी मेरी आधे से अधिक प्राणशक्ति खर्च हो जाती। बुद्ध-बल के अधिष्ठान के प्रति कृतज्ञ हूँ! बुद्ध के उपकार का प्रतिदान करने के लिए मुझे यह कार्य अवश्य अच्छी तरह पूरा करना है!

इसी समय मेरे दिल की धड़कन तेज़ होने लगी! अत्यंत भयावह आवाज़ें सुनाई देने लगीं। यह जगह देखने में बिल्कुल सुनसान और बहुत साधारण थी। यह यौन दुराचार के नरक जैसी अपेक्षाकृत आधुनिक जगह नहीं थी; इस नरक में एक के बाद एक कई दरवाज़े कसकर बंद थे। ओह! यहाँ तापमान बहुत ऊँचा है! बेहद गर्मी महसूस हो रही है!

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा, “यहाँ की पापी आत्माओं के लिए प्रवेश तो है, निकास नहीं। इस नरक में आने वाली सभी आत्माओं के पापों का घड़ा भर चुका होता है। भीतर ज़मीन के नीचे लावे का तापमान एक हज़ार डिग्री से अधिक है। इसे हमारे नरकों की सबसे कठोर यातना कहा जा सकता है!”

ओह! एक हज़ार डिग्री? कितना डरावना है! ‘परलोक के अटल विधान’ लिखने के लिए हिम्मत जुटाकर देखना ही होगा! बुद्ध-बल के अधिष्ठान से मैं अवीचि नरक

की एक छोटी-सी लोहे की खिड़की से भीतर देख सकी। यह नरक बहुत बड़ा नहीं था। बाहर से इसका आकार कुछ-कुछ मनुष्य की नाक जैसा था और भीतर एक काला गड्ढा था। यह काला गड्ढा ज़मीन के नीचे के लावे तक जाता था। लावे से धुआँ उठ रहा था और वह अत्यंत दहकता दिखाई देता था। पापी आत्माओं को इस धुआँ उठते लावे में पूरी तरह उबालने के बाद ऊपर उछाल दिया जाता था। ऊपर उछालने का अर्थ किसी दूसरी जगह फेंकना नहीं था, बल्कि लावे के ऊपर उठते तपते धुएँ में उछालकर झुलसाना था। उनके आत्मिक शरीर अभी बहाल भी नहीं हुए होते और वे अब भी घोर पीड़ा से कराह और चीख रहे होते कि खौलता लावा उन्हें फिर खींचकर यातना देने लगता। तब आत्मिक शरीर से फिर एक मर्मांतक चीख निकलती। अवीचि नरक में इसी तरह बिना किसी विराम के यातना का चक्र चलता रहता है। यह सचमुच अत्यंत भीषण था!

अभी तो यहाँ अँधेरा और गर्मी थी, अचानक इतनी अनुपम शीतलता कहाँ से आ गई? सिर उठाकर देखा तो आदरणीय क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व करुणापूर्वक पधार चुके थे। क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व को प्रणाम! आज क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व ने सौम्य करुणामय रूप प्रकट नहीं किया था, बल्कि खड़े हुए क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व का रौद्र रूप[56] धारण किया था। उनके पीछे का प्रभामंडल एक बड़ा गोल सुनहरा प्रकाशवृत्त था। उनके चरण नीले-हरे कमल पर थे और उस नीले-हरे कमल के नीचे प्रचंड अग्नि जल रही थी। लेकिन इस अग्नि से घुटनभरी गर्मी का अनुभव नहीं होता था; उलटे, ऐसा लगता था मानो वह विकारपूर्ण विचारों को दूर कर रही हो। बोधिसत्त्व के बाएँ हाथ में जो मणि थी, वह अग्नि जैसी लाल थी, और दाएँ हाथ में पकड़े सुनहरे खक्खर दंड[57] के शीर्ष पर आज एक लाल कमल भी था। आज क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व में मारों का दमन करने वाली विशेष दिव्य शक्ति दिखाई दे रही थी। उन्हें देखते ही मन में कोई भी विकारपूर्ण विचार लाने का साहस नहीं होता था। मन गंभीर श्रद्धा और भयमिश्रित आदर से भर जाता था। मैंने पहली बार क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व को इतना गंभीर देखा था। धर्माचार्य दाओमिंग और धर्मरक्षक मिन गोंग में कोई विशेष अंतर

नहीं था। धर्माचार्य दाओमिंग ने गरिमामय भिक्षु का रूप धारण किया था और दोनों हाथों को आड़ा रखकर मार-दमन मुद्रा बनाई हुई थी। धर्मरक्षक मिन गोंग हाथ जोड़े बोधिसत्त्व के पास खड़े थे। लेकिन आज उनके वाहन दी तिंग का शरीर बड़ा हो गया था और वह भी रौद्र रूप में था।

अचानक परलोक का एक अधिकारी सूचना देने आया कि न्यायसभा में कोई मामला है, जिसे निपटाने के लिए न्यायाधिकारी को वहाँ जाना होगा। तब न्यायाधिकारी ने मुझे स्वयं घूमकर देखने को कहा और बताया कि कोई प्रश्न हो तो क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व से पूछ सकती हूँ। मैंने हाथ जोड़कर न्यायाधिकारी को प्रणाम किया और उनका आभार माना!

इस समय क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व ने मुझे उड़कर ऊपर आने का संकेत किया। थोड़ी देर में अवीचि नरक का द्वार खोला जाना था और उन्हें चिंता थी कि तपता लावा मुझे हानि पहुँचा सकता है। इसलिए क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व की दिव्य शक्ति के सहारे मैं भी ऊपर उठकर उनके नीचे की ओर आ गई और हवा में खड़ी हो गई। तभी धर्मरक्षक मिन गोंग नीचे उतरकर अवीचि नरक के एक के बाद एक लगे लोहे के द्वारों के सामने पहुँचे। दो परलोक प्रहरी द्वार खोलकर बाहर आए और तुरंत सावधानी से उसे फिर बंद कर दिया। उन्होंने कहा कि उन्हें चिंता थी कि लावे की छींटें धर्मरक्षक मिन गोंग पर न पड़ जाएँ। धर्मरक्षक मिन गोंग ने कहा कि परलोक के अधिपति का आदेश है कि आ यू को उदाहरणों के रूप में जानकारी देने के लिए कुछ पापी आत्माओं को बाहर लाया जा सकता है। क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व ने तीन पापी आत्माओं को बाहर लाने को कहा था, जबकि सामान्यतः अवीचि नरक से एक भी पापी आत्मा को बाहर नहीं निकाला जा सकता। इसलिए प्रहरी फिर भीतर गए और तीन पापी आत्माओं को बाहर ले आए। उनमें दो पुरुष आत्माएँ और एक स्त्री आत्मा थी। वे इतनी पीड़ा में थीं कि खड़ी भी नहीं हो सकती थीं और एक भी शब्द नहीं बोल पा रही थीं। उनके पूरे शरीर पर कीचड़ लगा था और वे गल-सड़कर पहचान से परे हो गए थे। उनकी दशा अत्यंत दयनीय थी। उन्हें देखकर मेरा रोने का मन हुआ!

इसी समय धर्माचार्य दाओमिंग ने क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व के हाथ से लाल मणि लेकर मंत्र जपना शुरू किया। बोधिसत्त्व की मणि से तेज़ प्रकाश निकला, जिसने पूरे अवीचि नरक को प्रकाशित कर दिया। पूरा अवीचि नरक तुरंत अत्यंत शीतल और शांत हो गया। पीड़ा की आवाज़ें बंद हो गईं और लावा भी गर्म नहीं रहा। मेरा सारा तनाव मिट गया और उसकी जगह स्थिरता, अपनापन और सहजता का अनुभव होने लगा। ध्यान से सुना तो पता चला कि वह क्षितिगर्भ धारणी थी। मुझे यह मंत्र बहुत प्रिय है। धर्माचार्य के कुछ देर जप करने के बाद तीनों पापी आत्माओं की संवेदना धीरे-धीरे लौटने लगी और वे होश में आ गईं। पुरुष आत्माएँ अब ज़मीन पर घुटने टेक सकती थीं।

क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व ने कहा, "जीवित संसार की शांगगुआन युहुआ को परलोक द्वारा निर्धारित सदाचार की पुस्तक 'परलोक के अटल विधान' लिखनी है, जिससे संसार के लोगों को बुराई छोड़कर सही मार्ग पर आने की प्रेरणा मिले। अब तुम आ यू को बताओ कि अवीचि नरक में कैसे आए और जीवित रहते तुमने क्या किया था?" पुरुष आत्मा ने फूट-फूटकर रोते हुए कहा कि जीवित रहते वह विशेष रूप से यौन दुराचार के लिए कामोत्तेजक दवाएँ विकसित करता था। उसने स्वयं कुछ अश्लील पुस्तकें और हस्तमैथुन की सीडी भी बनाई थीं। जीवित रहते उसने बहुत धन कमाया था और पूरे जीवन में बस यही गलत काम किए थे। अब उसे अपनी गलती समझ में आ गई थी और वह बोधिसत्त्व से प्राण बचाने की गुहार लगा रहा था। क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व ने उसे उपदेश दिया, "यौन दुराचार की कामोत्तेजक दवाएँ तथा अश्लील पुस्तकें और सीडी मनुष्यों के सुंदर चित्त-स्वभाव को बिगाड़ती हैं। विशेष रूप से हस्तमैथुन की सीडी शुद्ध यांग देह वाले लड़कों[58] के चित्त-स्वभाव को विचलित करती हैं। यदि उन्हें यह बुरी आदत लग जाए, तो वे शरीर को क्षति पहुँचाने, जीवन को हानि पहुँचाने और प्रज्ञा-जीवन को काट देने वाले नरक के मार्ग पर चल पड़ते हैं। परलोक के विधान में यह अक्षम्य है। जीवितों के संसार में तुम्हारे बनाए यौन दुराचार के सामान पूरी तरह समाप्त होने के बाद ही तुम नरक छोड़ सकते हो।"

बोधिसत्त्व का उपदेश समाप्त होते ही उस पुरुष पापी आत्मा को तुरंत फिर भीतर धकेल दिया गया।

अब स्त्री आत्मा की बारी थी। उसने कहा, "जीवित रहते मैं सुंदर थी, उच्च शिक्षा प्राप्त थी और बात करने में निपुण थी, लेकिन मेरे भीतर लोभ और अहंकार बहुत प्रबल थे तथा ईर्ष्या भी बहुत थी। विवाहित होते हुए भी मैं अपने पति को तुच्छ समझती थी और अपने सास-ससुर की सेवा और सम्मान भी नहीं करती थी। मैं अक्सर उनसे अपशब्द कहती थी और मेरी बातें कटु तथा चुभने वाली होती थीं। मैंने अपने रूप का उपयोग करके गुप्त रूप से कई विवाहेतर संबंध बनाए। अपनी चतुर बातों से मैं उन पुरुषों को अपना सारा धन मुझे देने के लिए राज़ी कर लेती थी। फिर मैं उनके भीतर हीनता की भावना पैदा कर देती थी और उन्हें इतना क्षुब्ध करती थी कि वे मर जाते थे। मैं अपने को बहुत चतुर समझती थी और सोचती थी कि किसी को कुछ पता नहीं है। जिन तीन पुरुषों को मैंने क्षोभ से मार डाला था, उन्होंने मृत्यु के बाद यमराज के यहाँ शिकायत की। यमराज ने उन तीनों को मनुष्यलोक में ऊपर जाकर मेरी आत्मा पकड़ने और दंड भुगतने के लिए नरक में लाने का आदेश दिया। अवीचि नरक में आने से पहले मैं अन्य नरकों में तरह-तरह की यातनाएँ भुगत चुकी हूँ। बोधिसत्त्व, कृपया मुझे यहाँ से बाहर निकाल दीजिए। बाहर निकलने के बाद मैं अवश्य नए सिरे से सदाचारी जीवन जिऊँगी और फिर किसी को धोखा नहीं दूँगी।"

क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व ने कहा, "तुम्हारे नैन-नक्श सुडौल हैं क्योंकि पिछले जन्म में तुमने बुद्ध के सामने सच्ची श्रद्धा से फूल अर्पित किए थे। तुम्हारी वाक्पटुता और बुद्धि पिछले जन्म में सूत्रों का पाठ करने और धर्म सुनने का फल हैं। लेकिन अहंकार के कारण तुम्हारा जीवन सीधे पतन की ओर चला गया। तुम्हें पश्चात्ताप करना चाहिए और चार महान उपकारों[59] की विशालता पर गहराई से चिंतन करना चाहिए। इसी अवीचि नरक में रहकर भली-भाँति पश्चात्ताप करो!" क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व की बात समाप्त होते ही परलोक के प्रहरियों ने उस स्त्री आत्मा को काँटे से गोदकर भीतर फेंक दिया। केवल एक भीषण चीख सुनाई दी।

अब दूसरे पुरुष की आत्मा की बारी थी। उसने कहा कि जीवित रहते वह नकली औषधीय सामग्री बनाकर स्वयं बेचता था। वह नकली शराब भी बेचता था और गुप्त रूप से हथियारों की तस्करी करता था। बहुत धन कमाने के बाद उसकी कंपनी लगातार बड़ी होती गई। अपनी कंपनी की प्रसिद्धि बढ़ाने के लिए वह दूसरों की प्रतिष्ठा पर लांछन भी लगाता था। नरक में आने के बाद उसे अपनी गलती समझ में आ गई थी, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी!

पुरुष आत्मा ने कहा, "बोधिसत्त्व, कृपया मुझे यहाँ से बाहर निकाल दीजिए। मैं आपसे विनती करता हूँ, यहाँ सचमुच असहनीय पीड़ा है! मुझे आपके पास रहने वाला एक और कुत्ता बनना पड़े तो भी स्वीकार है। मैं आपके इस कुत्ते के पीछे-पीछे चल सकता हूँ और आपके पास एक छोटा कुत्ता बनकर बिना थकान या शिकायत की परवाह किए आपकी सेवा कर सकता हूँ। बोधिसत्त्व, कृपया मुझे यहाँ से बचाकर निकाल दीजिए!"

क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व ने उपदेश दिया, "नकली औषधीय सामग्री बेचना और हथियारों की तस्करी करना लोगों के जीवन को गंभीर हानि पहुँचाता है। जीवितों के संसार के कानून भी इन्हें सख़्ती से प्रतिबंधित करते हैं, और परलोक के विधान में इनकी सज़ा और भी कठोर है। मृत्यु के बाद अवीचि नरक में डाल दिया जाता है और कभी मुक्त होकर ऊपर नहीं उठा जा सकता। तुम्हें अवीचि नरक में रहकर भली-भाँति पश्चात्ताप करना होगा! मेरे पास यह जो है, यह कुत्ता नहीं है। इसका नाम दी तिंग है। दी तिंग साधना करता है। यह मेरे चित्त-स्वभाव से प्रकट हुआ है; यह छह गतियों के जन्म-मरण चक्र से आया हुआ कोई पशु नहीं है।"

"क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व, सादर निवेदन है, क्या मैं दी तिंग से कुछ बातें कर सकती हूँ?"

क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व ने कहा, "आ यू, बोलो!"

मैंने कहा, "अमिताभ बुद्ध! दी तिंग! तो आप भी साधना कर रहे हैं! मैं तो समझती थी कि दी तिंग हर दिन केवल बोधिसत्त्व के साथ चलते रहते हैं। सचमुच, दी तिंग का सौभाग्य देखकर मेरे मन में भी ऐसी अभिलाषा होती है! आप दिन-रात क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व के साथ हर जगह प्राणियों का उद्धार करने जा सकते हैं। मैं आपके पुण्य की अनुमोदना करती हूँ!"

दी तिंग ने कहा, "आ यू, आप बहुत विनम्र हैं! हम सभी साधना कर रहे हैं। जैसा कहा जाता है, जिस स्थान पर हों, उसी के अनुरूप कार्य करें। प्रत्येक चेतन प्राणी को अपनी शक्ति का पूरा उपयोग करना चाहिए और अपने कर्तव्य ठीक से निभाने चाहिए। अपने सभी कर्तव्य बिना किसी त्रुटि के पूरे करते हुए दूसरों की सहायता, अर्थात् परहित के कार्य भी करने चाहिए। दूसरों की सहायता करना वास्तव में अपने लिए पुण्य संचित करने में सहायता करना है। जब तक हमने बुद्धत्व का फल प्राप्त नहीं किया है, तब तक हमारे सभी तथाकथित परहित के कार्य स्वहित भी हैं, क्योंकि हमारा अपना पुण्य अभी पूर्ण नहीं हुआ है। पुण्य पूर्ण होने से पहले हमें अपने पुण्य का संभार जुटाते रहना है। इसलिए दूसरों की सहायता और परहित करना अपनी साधना का संभार संचित करना ही है। केवल बुद्ध का पुण्य पूर्ण है, इसलिए केवल बुद्ध के विषय में कहा जा सकता है कि वे पूर्णतः परहित कर रहे हैं। मेरा सौभाग्य है कि बोधिसत्त्व करुणापूर्वक मेरा ध्यान रखते और रक्षा करते हैं, जिससे मुझे भी धीरे-धीरे सीखने का अवसर मिलता है।"

मैंने कहा, "दी तिंग, इन बातों के लिए आभार! आप सचमुच एक महान बोधिसत्त्व के साथ रहने वाले धर्मरक्षक हैं। आपकी बातें भी असाधारण हैं। सचमुच अनुमोदना करती हूँ, अनुमोदना करती हूँ!"

मैंने क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व से पूछा, "अभी उस स्त्री आत्मा के बारे में बोधिसत्त्व ने कहा था कि उसने पिछले जन्म में बुद्ध-धर्म सीखा था। लेकिन अब उसे अवीचि

नरक में डाल दिया गया है, जहाँ से वह कभी मुक्त होकर ऊपर नहीं उठ सकती। तो क्या इसका अर्थ यह है कि उसके लिए कोई आशा ही नहीं बची?"

क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व ने उपदेश दिया, "अभी मैंने उसे पश्चात्ताप करने को कहा था। यद्यपि वह मुँह से अपने को सुधारने की बात कह रही थी, वास्तव में उसके चित्त-स्वभाव में अभी सच्चे पश्चात्ताप का समय नहीं आया है। बस अवीचि नरक की पीड़ा बहुत अधिक है, इसलिए वह तुरंत यहाँ से निकलना चाहती है। कुछ और समय बीतने पर, जब उसका चित्त-स्वभाव अधिक निर्मल होगा, मैं फिर यहाँ आकर उसका उद्धार करूँगा। अभी उसे अवीचि नरक में अपने चित्त-स्वभाव को और परिष्कृत करना होगा।"

मैंने कहा, "क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व वास्तव में अपना यह प्रण निभाते हैं कि जब तक नरक खाली नहीं हो जाते, तब तक बुद्धत्व प्राप्त नहीं करेंगे। मैं कितनी चाहती हूँ कि बोधिसत्त्व के साथ रहकर सीख सकूँ!"

क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व के उपदेश और मार्गदर्शन के लिए मैं असीम कृतज्ञ हूँ!

शिष्या आ यू अपने परम उपकारी रक्षक, दशचक्रों से दुःख दूर करने वाले[60], परलोक और जीवितों के लोक—दोनों का हित करने वाले, महान पवित्र, महान करुणामय, महान प्रणिधानधारी क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व महासत्त्व को पूरे हृदय से मस्तक झुकाकर प्रणाम करती है!

श्वेत कमल पर सवार होकर लौटती हूँ।

32/परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: “पवित्र माता मरियम अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्व का निर्मित रूप हैं”—अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्व की दुःख दूर करने के लिए नरक-यात्रा

बुद्ध की शक्ति के अनुग्रह के लिए कृतज्ञ हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ!

अमिताभ बुद्ध! मैं, आ यू, परलोक के न्यायाधिकारी के सामने हाथ जोड़ती हूँ!

“न्यायाधिकारी जी! मैं पूछना चाहती हूँ कि नरक में प्रायः रहने वाले क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व के अतिरिक्त क्या अन्य संत भी नरक में दुःख दूर करते हैं?”

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा, “हाँ! अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्व, मंजुश्री बोधिसत्त्व, अमिताभ बुद्ध, भैषज्यगुरु बुद्ध और अन्य भी हैं। अवलोकितेश्वर, मंजुश्री और क्षितिगर्भ जैसे बोधिसत्त्व यद्यपि बोधिसत्त्व के रूप में प्रकट होते हैं, वास्तव में वे बुद्ध के सभी पुण्य-गुणों से संपन्न हैं और बुद्ध से उनका कोई अंतर नहीं है। जैसा कहा जाता है, ‘एक बुद्ध संसार में प्रकट होते हैं, तो हज़ार बुद्ध उनका समर्थन और संरक्षण करते हैं।’

अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्व बहुत दूर अतीत के कल्पों में ही बुद्धत्व प्राप्त कर चुके थे। उनका नाम झेंगफ़ामिंग तथागत था। मंजुश्री बोधिसत्त्व सात बुद्धों की माता[61] हैं। बुद्धों और बोधिसत्त्वों में कोई पहले या दूसरे स्थान पर नहीं है। सभी समान हैं; उनका प्रकाश एक-दूसरे को आलोकित करता है और एक-दूसरे से अनुरूप होता है। बुद्ध ब्रह्मांड में सर्वाधिक निर्मल, परम प्रज्ञा और उच्चतम प्रकाश से युक्त सत्ता हैं। बुद्ध महान दिव्य शक्ति से संपन्न हैं; ऐसा कुछ नहीं जो वे कर न सकें, ऐसा कुछ नहीं जो वे जानते न हों। सभी बुद्ध समान रूप से निरपेक्ष महामैत्री और समस्त प्राणियों को अपने से अभिन्न मानने वाली महाकरुणा से युक्त हैं। निरपेक्ष महामैत्री और अभिन्नता

की महाकरुणा का अर्थ यह है कि बुद्ध की प्रज्ञा और भावनाएँ सदैव सर्वोच्च संतुलन पर बनी रहती हैं। दोनों परस्पर मिलकर एक साथ कार्य करती हैं। अर्थात्, प्रज्ञा और करुणा के संयुक्त संचालन से जो स्नेह प्रकट होता है, वह समभावपूर्ण होता है। उसमें शत्रु और प्रियजन, जातीय समूह या संप्रदाय का भेद नहीं होता। यहाँ तक कि अल्पायु और दुर्बल जीव-जंतुओं तथा वनस्पतियों को भी समान रूप से करुणा और उद्धार दिया जाता है। बुद्ध और मनुष्य में यही अंतर है। मनुष्य प्रज्ञा और भावनाओं के बीच ऐसा उच्च संतुलन नहीं बना सकते, इसलिए वे नरक में आकर प्राणियों का उद्धार नहीं कर सकते। बुद्ध किसी भी समय नरक में आ सकते हैं।

बुद्ध और बोधिसत्त्व नरक में प्राणियों का उद्धार करने आते हैं तो कर्मफल के नियम के अनुसार ही कार्य करते हैं; वे उसे भंग नहीं करते। नरक में एक प्रकार के ऐसे प्राणी हैं जो जीवितों के संसार से वहाँ गिरे हैं। जीवित रहते उन्होंने लगन से साधना की थी, लेकिन शील का पालन नहीं किया था, इसलिए उन्हें अपने बुरे कर्मों का नरक में कठोर फल भुगतना पड़ता है। जब वे परलोक की न्यायसभा में आते हैं, तो उनमें से कुछ पूछताछ या दंड सुनाए जाने के समय बुद्धों और बोधिसत्त्वों के मंत्र स्मृति से सुनाने लगते हैं। जैसे ही वे इन मंत्रों का जाप करते हैं, प्रबल दिव्य शक्ति उत्पन्न होती है जो पापी आत्मा की रक्षा कर सकती है। तब यमराज प्रहरियों से उन्हें हिरासत में ले जाकर मेंग पो के मंडप में मेंग पो का सूप पिलाने को कहते हैं। इसके तुरंत बाद उन्हें मनुष्यलोक में गर्भ में प्रवेश करने के लिए भेज दिया जाता है, जहाँ उनकी गर्भ में ही मृत्यु हो जाती है। सभी आत्मिक शरीरों को गर्भ में प्रवेश करने के बाद दस महीने के गर्भरूपी कारागार[62] का कष्ट सहना पड़ता है। वे माता के संकरे गर्भाशय में सिकुड़कर सात से दस महीने तक रहते हैं। हर आत्मिक शरीर के माता के शरीर में रहने की अवधि अलग होती है; यह कर्म-बल पर निर्भर करती है। इस संकरे कारागार में रहना ही आत्मिक शरीर के लिए बहुत कष्टदायक है, और उसे दिन-रात माता की भावनाओं में होने वाले परिवर्तन भी सहने पड़ते हैं। माता के भोजन की ठंडक या गर्मी भी भ्रूण को शीत और उष्ण नरकों जैसी पीड़ा देती है। गर्भरूपी

कारागार के इन अनेक कष्टों के बीच आत्मिक शरीर पिछले जन्म की साधना के मंत्र आसानी से भूल जाता है। केवल महान साधकों को माता के गर्भ में रहते हुए गर्भरूपी कारागार का कष्ट नहीं सहना पड़ता। महान साधक गर्भ में प्रवेश करने के बाद स्वतंत्र रूप से भीतर-बाहर आ-जा सकते हैं। वे कुछ समय गर्भ से बाहर रहते हैं और बाहर से अधिष्ठान देकर माता के भीतर के भौतिक शरीर को सामान्य रूप से विकसित और बड़ा होने देते हैं। जन्म के समय ही वे विधिवत् गर्भ में प्रवेश करते हैं। सभी साधारण आत्मिक शरीर गर्भ में प्रवेश करने के बाद फिर बाहर नहीं निकल सकते और उन्हें जन्म तक गर्भरूपी कारागार का कष्ट सहना ही पड़ता है।

गर्भ में मृत्यु होने से जब पापी आत्माएँ मंत्र भूल जाती हैं, तब उन्हें अपने पापों का निर्णय सुनने के लिए फिर नरक में लाया जाता है। यदि वे अब भी मंत्र न भूली हों, तो उन्हें इसी तरह बार-बार गर्भ में मृत्यु की प्रक्रिया से गुज़रना पड़ता है, जब तक कि वे मंत्र पूरी तरह न भूल जाएँ; तब वे फिर नरक का कर्मफल भुगतती हैं। बुद्ध और बोधिसत्त्व नरक में प्राणियों का उद्धार करने तभी आते हैं, जब नरक का कर्मफल भुगतने के बाद पापी आत्मा के मन में पश्चात्ताप उत्पन्न हो। तब वे उसके चित्त-स्वभाव के बहाल होने के हेतु और परिस्थितियों को देखकर आते हैं।

अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्व अक्सर नरक में दुःख दूर करते हैं। हाल ही में वे यौन दुराचार के नरक में प्राणियों का उद्धार करने आए हैं। मैं तुम्हें वहाँ दिखाने ले चलता हूँ। यौन दुराचार के नरक में पड़े युवाओं में से बहुत कम के माता-पिता जीवितों के संसार में उनके लिए पुण्य संचित करके समर्पित करते हैं, जिससे अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्व नरक में आकर उनका उद्धार करने के लिए प्रेरित हों। बुद्ध ने 'सर्वव्यापी द्वार अध्याय[63]' में कहा है, 'बुद्ध ने अक्षयमति बोधिसत्त्व से कहा: कुलपुत्र! यदि असंख्य सैकड़ों, हज़ारों, लाखों और करोड़ों प्राणी अनेक कष्टों से पीड़ित हों और इन अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्व के विषय में सुनकर एकाग्र मन से उनका नाम पुकारें, तो अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्व तुरंत उनकी आवाज़ों को जान लेते हैं और वे सभी मुक्त हो जाते हैं।'"

पहुँच गए! लगा कि यहाँ बुद्ध का प्रकाश पड़ रहा है। तुरंत वातावरण शीतल और शांत हो गया। कितनी निर्मल शांति थी, जिससे तन-मन को सुख मिल रहा था! परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा कि अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्व विद्युत्-नेत्र और लोहे के गोलों के नरक में एक किशोर का उद्धार कर रहे हैं!

शिष्या शांगगुआन युहुआ अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्व को पंचांग प्रणाम[64] करती है! मैंने देखा कि बोधिसत्त्व ने कैथोलिक धर्म की पवित्र माता मरियम[65] का करुणामय रूप प्रकट किया था। परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा कि पवित्र माता मरियम वास्तव में अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्व के निर्मित रूपों में से एक हैं।

बुद्ध ने 'सर्वव्यापी द्वार अध्याय' में कहा है, "अक्षयमति बोधिसत्त्व ने बुद्ध से निवेदन किया: भगवन्! अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्व इस सहा लोक में किस प्रकार विचरण करते हैं? वे प्राणियों को धर्म का उपदेश किस प्रकार देते हैं? उनके उपाय-कौशल की शक्ति कैसे कार्य करती है? बुद्ध ने अक्षयमति बोधिसत्त्व से कहा: कुलपुत्र! यदि किसी देश के प्राणियों का उद्धार बुद्ध के रूप से होना हो, तो अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्व बुद्ध का रूप प्रकट करके उन्हें धर्म का उपदेश देते हैं। जिनका उद्धार प्रत्येकबुद्ध[66] के रूप से होना हो, उनके लिए प्रत्येकबुद्ध का रूप प्रकट करके धर्म का उपदेश देते हैं।" अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्व परिस्थितियों के अनुसार प्राणियों का उद्धार करते हैं और उन्हीं के अनुरूप रूप प्रकट करते हैं।

विद्युत्-नेत्र और लोहे के गोलों के नरक में उस किशोर को देखकर लगा कि उसका चेहरा बहुत परिचित है। आह! याद आ गया! एक वर्ष पहले मैंने अंतिम संस्कार गृह के शोक-कक्ष में उसका स्मृति-चित्र देखा था। उसका शोक-कक्ष मेरे रिश्तेदार के शोक-कक्ष के ठीक बगल में था। उस समय उसके माता-पिता ने कैथोलिक रीति से अंतिम संस्कार किया था। उन्होंने न धूप जलाई थी, न बौद्ध अनुष्ठान किए थे; केवल धर्मग्रंथों का पाठ और प्रार्थना की थी। पिछली बार न्यायाधिकारी ने बताया था कि इस लड़के की बारह वर्ष की आयु में मृत्यु हो गई

थी। वह अपने माता-पिता का इकलौता पुत्र था। वे हर दिन आँसू बहाते थे और अब तक उस दुःख से उबर नहीं पाए थे। वे कैथोलिक धर्म मानते थे और केवल इतना जानते थे कि हर दिन पवित्र माता मरियम से प्रार्थना करें और गरीबों की सहायता करके सत्कर्म करें। उनके ऐसा करने से करुणामय अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्व उस लड़के को धर्ममार्ग पर लाने के लिए आए थे।

अब मैंने देखा कि पवित्र माता मरियम के शरीर से फिर श्वेत, निर्मल, करुणामय प्रकाश निकल रहा था। वह प्रकाश पूरे नरक को आलोकित कर रहा था। नरक शीतल हो गया था और सभी यातनाएँ अस्थायी रूप से रुक गई थीं। मुझे याद है, पिछले वर्ष जब मैंने विद्युत्-नेत्र और लोहे के गोलों का नरक देखा था, तब इस किशोर की दशा सचमुच बहुत दयनीय थी। ज़मीन पर हर ओर रक्त बह रहा था और दृश्य देखा नहीं जाता था। किशोर ने हाथ से अपने शरीर पर क्रूस का चिह्न बनाया और पावन माता मरियम के प्रति आभार व्यक्त किया। उसने कहा कि उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि वह स्वयं पवित्र माता के दर्शन कर सकेगा।

इस समय पवित्र माता मरियम ने करुणामय, कोमल स्वर में उपदेश दिया, “तुम्हारा शरीर, बाल और त्वचा तुम्हें माता-पिता से मिले हैं। बच्चे, जीवित संसार में तुम्हारी नियत आयु अभी पूरी नहीं हुई थी, फिर भी तुम्हारी आत्मा परलोक पहुँच गई। क्या तुम जानते हो कि जीवित संसार में तुम्हारे माता-पिता को ऐसा लगता है मानो उनके हृदय में दस हज़ार बाण चुभ रहे हों?”

किशोर अपने आँसू नहीं रोक पाया। उसका चेहरा आँसुओं से भीग गया और उसने रोते हुए कहा, “यदि समय पीछे लौट सकता, तो मैं फिर कभी कोई अश्लील प्रकाशन नहीं देखता। आज मैं पावन माता मरियम के सामने पूरे हृदय से पश्चात्ताप करना चाहता हूँ। मैं अपने माता-पिता के सामने भी पश्चात्ताप करना चाहता हूँ, लेकिन अब उनसे बात ही नहीं कर सकता। मैं कुपुत्र हूँ! मैं मरने योग्य हूँ! मेरे माता-पिता मुझसे बेहद प्रेम करते थे। मुझे जो भी चाहिए होता, वे मेरी माँग पूरी करते थे।

भौतिक सुविधाओं की कोई कमी नहीं थी। मैं बड़े घर में रहता था और दो घरेलू कर्मचारियों द्वारा दिन-रात मेरी देखभाल की जाती थी। मैं माता-पिता के प्यार को भी गहराई से अनुभव करता था। लेकिन अब केवल यही आशा कर सकता हूँ कि अगले जन्म में उनके पालन-पोषण के उपकार का प्रतिदान कर सकूँ।

वास्तव में शुरू में मैंने जिज्ञासावश ऐसा किया था। तब मैं केवल छह वर्ष का था। मैंने कंप्यूटर पर अश्लील वेबसाइटें देखीं। [संपादकीय टिप्पणी — ZH-L0739-S01: बच्चे से संबंधित यौन विवरण यहाँ रोके गए हैं। यह जानबूझकर छोड़ा गया अंश है; इसे पूर्ण, असंक्षिप्त अनुवाद न माना जाए।] बाद में मुझे लत लग गई, और यह आदत बन गई। [संपादकीय टिप्पणी — ZH-L0739-S02: बच्चे से संबंधित यौन विवरण यहाँ रोके गए हैं। यह जानबूझकर छोड़ा गया अंश है; इसे पूर्ण, असंक्षिप्त अनुवाद न माना जाए।] मेरे माता-पिता काम में बहुत व्यस्त रहते थे। वे हर दिन सुबह जल्दी निकलते और रात को देर से लौटते थे। आम तौर पर स्कूल के बाद घरेलू सहायिकाएँ ही मेरे साथ रहती थीं। जब माता-पिता घर पर नहीं होते थे, तब ये दोनों घरेलू सहायिकाएँ अक्सर अपने दोस्तों से फ़ोन पर बातें करती रहती थीं। मुझे कमरे में देखकर वे सोचती थीं कि मैं बहुत अच्छा बच्चा हूँ, इसलिए मुझे टोकती भी नहीं थीं।

ऐसा चलते-चलते जब मैं दस वर्ष का हुआ, तो मेरी कमर में दर्द होने लगा। पूरा शरीर बहुत थका रहता, शक्ति नहीं रहती और हमेशा लगता कि नींद पूरी नहीं हुई। चलने के लिए भी लाठी का सहारा लेना पड़ता था। मैं पूरी तरह एक नन्हे बूढ़े जैसा हो गया था। माँ मुझे बहुत-से चिकित्सकों के पास ले गई, लेकिन कोई मुझे ठीक नहीं कर पाया। बाद में एक पारंपरिक चीनी चिकित्सक ने बताया कि मेरी वृक्क-शक्ति गंभीर रूप से क्षीण हो गई है[67] और मैं बुढ़ापे से पहले ही जर्जर हो गया हूँ। तभी माता-पिता को मेरे हस्तमैथुन करने का पता चला। उन्होंने मुझे डाँटा, फिर भी बेटे के प्रति उनका प्रेम गहरा था, इसलिए वे मुझे बड़े-बड़े प्रसिद्ध चिकित्सकों के

पास ले जाते रहे। मुझे भी हस्तमैथुन की हानि महसूस होने लगी थी, इसलिए कुछ समय के लिए मैंने इसे रोक दिया। माता-पिता को लगा कि मैं सुधर गया हूँ, तो उन्होंने मेरी निगरानी में भी ढील देनी शुरू कर दी।

दवा लेते समय मेरे मन में अश्लील तस्वीरें और आवाज़ें लगातार उभरती रहती थीं। ये तस्वीरें और आवाज़ें मेरे मन से निकल ही नहीं पाती थीं। मैं जानता था कि यह अच्छा नहीं है, लेकिन अपने पर बिल्कुल काबू नहीं रख पाता था। [संपादकीय टिप्पणी — ZH-L0741-S02: बच्चे से संबंधित यौन विवरण यहाँ रोके गए हैं। यह जानबूझकर छोड़ा गया अंश है; इसे पूर्ण, असंक्षिप्त अनुवाद न माना जाए।] [संपादकीय टिप्पणी — ZH-L0741-S03: बच्चे से संबंधित यौन विवरण यहाँ रोके गए हैं। यह जानबूझकर छोड़ा गया अंश है; इसे पूर्ण, असंक्षिप्त अनुवाद न माना जाए।] बहुत, बहुत थकान महसूस होती थी और चक्कर भी आते थे। अंततः जब मैं बारह वर्ष का था, तो बैलमुख और अश्वमुख मुझे लोहे की बड़ी जंजीर से घसीटकर दंड भोगने के लिए नरक ले आए। [संपादकीय टिप्पणी — ZH-L0741-S04: बच्चे से संबंधित यौन विवरण यहाँ रोके गए हैं। यह जानबूझकर छोड़ा गया अंश है; इसे पूर्ण, असंक्षिप्त अनुवाद न माना जाए।] यह बात कहने का साहस नहीं होता था और इसे मन में दबाए रखता था। आज सब कुछ कह पाने से मन बहुत हल्का लग रहा है। मेरे बहुत-से सहपाठी भी अश्लील वेबसाइट देखते हैं और उनके माता-पिता को पता नहीं है। मैं यहाँ से निकलना चाहता हूँ। पावन माता, कृपा करके मुझे बचाकर स्वर्गराज्य ले चलिए। मैं स्वर्गराज्य से अपने सहपाठियों को बताना चाहता हूँ कि वे फिर अश्लील वेबसाइट न देखें और हस्तमैथुन का बुरा आचरण तो बिल्कुल न करें!”

माता मरियम ने उपदेश दिया, “जीवितों के संसार में तुम्हारे माता-पिता आज भी हर दिन तुम्हें याद करते हैं!” किशोर ने कहा, “पावन माता! कृपा करके मुझे यहाँ से बचाकर बाहर निकालिए। अब मैं स्वर्गराज्य नहीं जाऊँगा। मैं अपने सहपाठियों

की सहायता करना चाहता हूँ और सभी लड़कों को समझाना चाहता हूँ कि वे अश्लील वेबसाइट न देखें, हस्तमैथुन न करें। यदि मैं ऐसा न कर पाया, तो मेरे दोनों हाथ टूटकर अलग हो जाएँगे और मेरा मुँह सड़ जाएगा।"

माता मरियम ने उपदेश दिया, "तुम्हारे मन में पूरी तरह सुधरने की इच्छा है, यह बहुत अच्छा है! सभी दोष मन से उत्पन्न होते हैं; मन ही उन्हें रचता है। तुम्हें विचार और भाव उठते समय ही साधना करनी चाहिए और हर समय सम्यक् स्मृति बनाए रखनी चाहिए। तब स्वाभाविक रूप से दूषित विचार तुम्हें मलिन नहीं करेंगे। चेतन प्राणियों को यौन दुराचार की बुरी आदत छोड़ने के लिए समझाने का तुम्हारा संकल्प शुभ है। लेकिन यह संकल्प करना कि यदि तुम ऐसा नहीं कर पाए तो तुम्हारे दोनों हाथ टूटकर अलग हो जाएँगे और मुँह सड़ जाएगा, अशुभ संकल्प है। अशुभ संकल्प करने से सम्यक् स्मृति खो जाती है। हम संकल्प कर सकते हैं, लेकिन शुभ संकल्प करने चाहिए, अशुभ नहीं। शुभ और अशुभ, दोनों तरह के संकल्प एक-एक कारण हैं। कारण है तो फल भी होगा। संकल्प किया है, तो एक दिन वह अवश्य पूरा होगा। संकल्प एक अदृश्य शक्ति है और यह अदृश्य शक्ति जन्म-जन्मांतर तक हमें आगे बढ़ाने का काम करती है। शुभ संकल्प बार-बार किए जा सकते हैं; वे हमारी आध्यात्मिक ज्योति को विकसित और उन्नत करेंगे। अशुभ संकल्प कभी नहीं करने चाहिए। अशुभ संकल्प करने से एक दुष्चक्र पैदा होता है और अपने किए का फल स्वयं भोगना पड़ता है। इससे भी बढ़कर, वह दूसरों और अन्य प्राणियों को हानि पहुँचाता है, दूसरों का और अपना अहित करता है। अशुभ संकल्प पतन का कारण है और शुभ संकल्प जीवन के प्रकाश की ओर बढ़ने की आधारशिला है।"

बोधिसत्त्व के अधिष्ठान और उद्धारकारी मार्गदर्शन से किशोर के चित्त का प्रकाश आरंभिक गहरे लाल रंग से बदलकर अब हल्का श्वेत हो गया था। उसका आत्मिक शरीर ऊपर उठकर उच्चतर गति में जा रहा था। मैंने परलोक के न्यायाधिकारी से पूछा कि किशोर को नरक में गिरे अभी अधिक समय नहीं हुआ था और उसने अपना दंड भी पूरा नहीं भोगा था, फिर उसे इतनी जल्दी उच्चतर गति कैसे मिल गई?

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा, “किशोर का चित्त-स्वभाव स्वयं बहुत बुरा नहीं था। केवल इसलिए कि माता-पिता अत्यधिक व्यस्त थे और समय पर उसे अच्छी, सकारात्मक शिक्षा नहीं दे पाए, वह सम्यक् ज्ञान और सम्यक् दृष्टि से रहित वातावरण में भटक गया और नरक में गिर पड़ा। अब उसे अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्व का उद्धारकारी सहारा मिला है और बोधिसत्त्व की दिव्य शक्ति के बल पर उसे मुक्ति मिली है। साथ ही, किशोर ने सच्चे मन से पश्चात्ताप किया है। इन दोनों के एक साथ होने पर ही इतनी जल्दी उच्चतर गति मिल सकी।”

आज फिर बहुत कुछ सीखने को मिला! मुझे समझाने के लिए परलोक के न्यायाधिकारी ने जो परिश्रम किया, उसके लिए धन्यवाद!

मैं, आ यू, परलोक के न्यायाधिकारी के सामने हाथ जोड़ती हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर लौटती हूँ।

उपसंहार

परलोक के विधान अटल हैं, बुद्ध करुणामय हैं

कुछ इंटरनेट पाठकों ने पूछा कि परलोक के विधान को "अटल" क्यों कहा गया है? परलोक के विधान को कर्मफल भी कहा जा सकता है। यह कर्मफल की अपरिवर्तनीयता है, ब्रह्मांड का नियम है। अटल होने का अर्थ कर्मफल की अनिवार्यता है, जो किसी भी चीज़ के कारण बदलती नहीं। जैसा कारण बोया जाता है, वैसा ही फल मिलता है। कर्मफल अतीत, वर्तमान और भविष्य—तीनों कालों के जन्मों में व्याप्त है, इसलिए कभी-कभी वह इसी जन्म में दिखाई दे, यह आवश्यक नहीं। लेकिन कर्मफल वास्तविक है, मिथ्या नहीं। पहचान, पद, धन, प्रतिष्ठा, स्त्री या पुरुष होने, कम या अधिक आयु अथवा त्वचा के रंग जैसे भेदों के कारण उसमें कोई अपवाद या अंतर नहीं होता। कर्मफल के सामने सभी प्राणी समान हैं, इसलिए उसे अटल भी कहा जा सकता है।

परलोक के विधान अटल हैं, किंतु बुद्ध करुणामय हैं। यद्यपि कर्मफल का नियम नहीं बदलता, फिर भी जब तक शुभ या अशुभ कर्म का फल बन नहीं चुका होता, तब तक बीच की जिन सहायक परिस्थितियों को प्रत्यय कहा जाता है, उन्हें अपनी गलतियाँ सुधारकर और सदाचार अपनाकर बदला जा सकता है। सभी बुद्ध और बोधिसत्त्व महान मैत्री और महान करुणा से सदा बिना थके समस्त प्राणियों का हित करते रहते हैं। वे प्रत्येक की क्षमता के अनुसार शिक्षा देते हैं, परिस्थितियों के अनुसार मार्ग दिखाते हैं और निरंतर सद्धर्म का चक्र घुमाते रहते हैं। इसी से प्राणियों को दुःख छोड़कर सुख पाने का आश्रय, अंतिम मुक्ति का मार्ग और शीघ्र पार पहुँचने के लिए प्रकाश मिलता है।

आज के युग में सदाचारी लोग तो हैं, लेकिन कर्मफल को न समझने और बुरे कर्म करने की प्रवृत्ति अधिक प्रबल है। आपदाएँ, युद्ध और रोग बार-बार सामने आते हैं। दिव्य शक्ति, पुण्य की शक्ति, करुणा की शक्ति, शुभ कर्म की शक्ति और पुण्य-समर्पण की शक्ति मिलकर काम करें, तब भी यह केवल लक्षणों का उपचार है। जड़ का उपचार करने के लिए आवश्यक है कि हर व्यक्ति कर्मफल को समझे, कुमार्ग छोड़कर सन्मार्ग पर आए और बुराई त्यागकर भलाई अपनाए। परिस्थितियाँ मन के अनुसार बदलती हैं, इसलिए सभी बुद्ध सदा धर्मचक्र घुमाते रहते हैं।

《परलोक के अटल विधान》 समय और परिस्थितियों की आवश्यकता के अनुरूप सामने आई है। यह बुद्धों और बोधिसत्त्वों की समस्त प्राणियों पर दया और उनकी करुणामय व्यवस्था का परिणाम है। आदरणीया वरिष्ठ शांगगुआन युहुआ ने भी परिश्रम से पीछे हटे बिना साहसपूर्वक यह भारी दायित्व उठाया और पूरे मन तथा पूरी शक्ति से जनसेवा की। कुछ लोग कर्मफल को न समझकर बुरे कर्म करते हैं और बार-बार समझाने पर भी नहीं सुनते। फिर भी बुद्ध और बोधिसत्त्व प्राणियों को दुःख भोगते नहीं देख सकते। इसलिए वे प्राणियों को नरक की वास्तविकता दिखाते हैं, ताकि उनमें सच्चा पश्चात्ताप और सुधार का मन जागे। जिन्होंने अभी ऐसे कर्म नहीं किए हैं, वे भी जानकर उनसे बच सकते हैं। यह मानो नरक के आगे रक्षा की एक अंतिम रेखा खड़ी करना है, मानो नरक के द्वार पर ही तुम्हें रोक लेने की आशा हो, ताकि तुम दुःख भोगने भीतर न जाओ। बुद्ध और बोधिसत्त्व हर समय, हर स्थान पर जो रक्षा और उद्धार का उपकार करते हैं, उसका वर्णन कभी पूरा हो सकता है?

यदि 《परलोक के अटल विधान》 पढ़कर तुम सचमुच पश्चात्ताप करो, सुधर जाओ, फिर ऐसे कर्म न करो, इसे व्यापक रूप से फैलाओ और दूसरों को सुधारने में सहायता करो, तो नरक का द्वार अपने आप बंद हो जाएगा। लेकिन यदि फिर भी न सुनो, न विश्वास करो और मनमाने कर्म करते रहो, तो नरक का विशाल द्वार तुम स्वयं खोलोगे और कोई तुम्हें रोक नहीं सकेगा। पर तुम्हें यह जानना चाहिए कि उस

समय क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व नरक में तुम्हें इस रूप में देखना चाहते हैं कि तुम बोधिसत्त्व मार्ग पर चलते हुए प्राणियों का उद्धार करने नरक आए हो; वे तुम्हें बुरे कर्मों का फल भोगते हुए फिर से नहीं देखना चाहते!

आप सभी अपना ध्यान रखें! अमिताभ बुद्ध!

दाओलान, आदरपूर्वक हाथ जोड़कर

देश की रक्षा, जनता से प्रेम; कर्मफल की स्पष्ट समझ

मनुष्य संसार में जीता है, आखिर किसलिए? दुःखी विवश होकर दुःख भोगते हैं; सुखी अपने पुण्य से मिले सुख के सहारे बुरे कर्म करते हैं और फिर उन्हें भी दुःख भोगना पड़ता है। यह उलटफेर बार-बार चलता रहता है। यदि कारण और फल की समझ न हो, तो क्या यह उत्तम मानव जन्म व्यर्थ नहीं बीत जाएगा?

महाचार्य यिनगुआंग ने एक बार देश की रक्षा और आपदाओं के शमन के लिए आयोजित धर्मसभा में उपदेश दिया था कि देश की रक्षा और जनता से प्रेम का मुख्य आधार कर्मफल में गहरा विश्वास, शाकाहार, जीवों को मुक्त करना, शीलों का पालन और बुद्ध-नाम का स्मरण आदि हैं। महाचार्य यिनगुआंग ने कहा, “आज संसार पर जो विपत्तियाँ आ रही हैं और हम जो अनेक आपदाएँ भोग रहे हैं, वे सभी अतीत के बुरे कर्मों से उत्पन्न हुई हैं; इसीलिए आज हमें दुःखद फल भोगने पड़ रहे हैं। दुःखद फल से बचना है, तो दुःख का कारण हटाना होगा। दुःख का कारण क्या है? लोभ, द्वेष और मोह—ये तीन विष हैं। शुभ कारण क्या है? प्राणियों की सहायता और लोगों का हित करना। यदि हर व्यक्ति कर्मफल का सिद्धांत स्पष्ट रूप से समझ ले, तो वह कोई बुराई न करे और सभी भले कर्म अपनाए; तब आपदाओं के उठने का कोई आधार ही नहीं रहेगा। किंतु आज लोग कर्मफल का सिद्धांत नहीं जानते। उनके हृदय स्वार्थपूर्ण इच्छाओं से भरे हैं और ऐसी कोई बुराई नहीं जो वे न करते हों। वे केवल अपने को जानते हैं, दूसरों के अस्तित्व का ध्यान नहीं रखते। कर्मफल ही वह

महान आधार है जिससे संत संसार का शासन करते हैं और तथागत प्राणियों का उद्धार करते हैं। बुद्ध ने कहा: 'पिछले जन्म के कारण जानने हों, तो वे इस जन्म में भोगे जाने वाले फल हैं। अगले जन्म के फल जानने हों, तो वे इस जन्म में किए जाने वाले कर्म हैं।' 《ई जिंग》 कहता है: 'जो परिवार भलाई संचित करता है, उसकी शुभता आगे भी बनी रहती है; जो परिवार बुराई संचित करता है, उसकी विपत्तियाँ आगे भी बनी रहती हैं।' 《शू जिंग》 कहता है:[68] 'भलाई करने पर अनेक शुभफल उतरते हैं; बुराई करने पर अनेक विपत्तियाँ उतरती हैं।' इसका सिद्धांत ठीक वही है जो हमारे बुद्ध ने कर्मफल के विषय में बताया है।" देश की रक्षा और जनता से प्रेम करने की महाचार्य की सच्ची, उत्कट भावना इन शब्दों में जीवंत हो उठती है। प्रत्येक वाक्य सत्य व्यक्त करता है और प्रत्येक अक्षर करुणा से भरा है।

《परलोक के अटल विधान》 विधिवत संसार के लोगों के सामने बुरे कर्मों के दुःखद फल प्रस्तुत करती है। लोग कहते हैं, "हम देखते हैं कि बुरे कर्मों का फल इस जन्म में प्रकट नहीं हुआ, इसलिए कर्मफल का सिद्धांत विश्वास करने योग्य नहीं है।" फिर वे अपनी इच्छाओं को खुली छूट देते हैं, मनमानी करते हैं और दूसरों के साथ अपना भी अहित करते हैं। वे नहीं जानते कि विधान का जाल बहुत विशाल है; उसके फंदे दूर-दूर दिखते हैं, पर उससे कुछ बच नहीं निकलता। अतीत, वर्तमान और भविष्य के जन्मों का कर्मफल प्राचीन काल से आज तक व्याप्त है। ऐसा नहीं कि प्रतिफल नहीं मिलेगा; उसका समय अभी नहीं आया है। इसलिए विशेष रूप से यह उपाय-द्वार खोला गया है, ताकि लोग दुःखद फल जानकर दुःख के कारण दूर करें और बुराई छोड़कर भलाई करें।

दुःख के कारणों में से एक, यौन दुराचार, के विषय में महाचार्य यिनगुआंग ने कहा, "यह आकाशीय नैतिक व्यवस्था के विरुद्ध है और मानवीय संबंधों की मर्यादा को अस्त-व्यस्त करता है। ऐसा व्यक्ति जीवित रहते हुए वस्त्र पहना पशु है और

मरने पर तीन दुर्गतियों में गिरता है, जहाँ से करोड़ों-अरबों कल्पों तक बाहर नहीं निकल सकता।"[69] देश का भविष्य प्रतिभाशाली लोगों पर निर्भर है। प्रतिभाशाली लोगों में महत्त्वपूर्ण है उनकी गुणवत्ता, और गुणवत्ता के केंद्र में सदाचार तथा योग्यता हैं। यदि संसार के लोग अधिक यौन दुराचार करें, तो उनका सदाचार नष्ट होता है, योग्यता क्षीण होती है और विपत्तियों का अंत नहीं रहता। इसी जीवन में शरीर दुर्बल और क्षीण हो जाता है, बुढ़ापा जल्दी आता है, रोग अधिक होते हैं और कठिनाई से ठीक होने वाले स्त्रीरोग होने की आशंका बढ़ती है; यहाँ तक कि संतान उत्पन्न करने की क्षमता भी समाप्त हो सकती है। अधिक यौन दुराचार करने से परिवार टूटते हैं और उनमें कलह बढ़ती है, पत्नी और संतान बिछुड़ जाते हैं, अनेक पुराने द्वेष जमा होते हैं, काम में विफलता मिलती है, प्रतिष्ठा मिट्टी में मिल जाती है, सौभाग्य और धन घटते हैं तथा आयु कम होती है। किशोर अश्लील सामग्री देखकर हस्तमैथुन और यौन दुराचार करते हैं, अपने सुंदर यौवन को क्षति पहुँचाते हैं तथा सदाचार और शरीर नष्ट करते हैं। किशोर ही देश का भविष्य हैं; क्या यह पीड़ा और खेद की बात नहीं? यह सचमुच देश और मनुष्यों को हानि पहुँचाने वाला छिपा हुआ हथियार है! अदृश्य ढंग से मनुष्य को नष्ट करता है, अदृश्य ढंग से उसे हानि पहुँचाता है![70]

प्रश्न: आपकी बात सही है, लेकिन तर्क और समझदारी की बातें करके भी लोगों के मन को समझाया और दिशा दी जा सकती है। फिर नरक के इतने दंड और रक्तरंजित दृश्य लिखकर लोगों के मन में भय, घुटन, डर और बेचैनी पैदा करना आवश्यक क्यों है? इसके अलावा, अधिकांश लोग नरक के अस्तित्व पर विश्वास ही नहीं करते। क्या यह अपने रास्ते में स्वयं बाधा खड़ी करना नहीं है?

उत्तर: रोग के अनुकूल हो, तभी औषधि अच्छी होती है। आज संसार के बहुत-से लोग कर्मफल पर विश्वास नहीं करते; अतीत, वर्तमान और भविष्य के जन्मों के कर्मफल के विषय में तो और भी कहते हैं कि उसे देख पाना कठिन है। यह विशेष अधिकार वाला उपाय-द्वार इसलिए खोला गया है कि लोग देख सकें कि बुरे कर्मों

का बुरा फल अवश्य मिलता है, ताकि संसार में रहते हुए वे पिछली गलतियाँ सुधारें, आने वाले जीवन को सँवारें और दुर्गति में गिरने से बचें। इसके अतिरिक्त, पुस्तक में कर्मफल के नियमों पर अनेक उपदेश भी हैं। इसमें सिद्धांत और घटनाओं, दोनों को समान महत्त्व दिया गया है; वे एक-दूसरे के पूरक हैं और एक-दूसरे को स्पष्ट करते हैं। इससे लोग परिणामों का भय जानकर रुकते हैं और रुकना जानकर सुधरते हैं। तब नरक का द्वार टूट जाता है और बोधि का मार्ग खुल जाता है।

प्रश्न: क्या 《परलोक के अटल विधान》 में लिखा सच है? मानो तो है, न मानो तो नहीं है। मैं इसे न पढ़ूँ, तो और अधिक निश्चिंत रहूँगा।

उत्तर: मानो तो है, न मानो तो नहीं है। सभी के लिए एक ही बात है। 《परलोक के अटल विधान》 में कही गई बातें सच हैं या नहीं, इसका मानदंड बुद्ध द्वारा उपदिष्ट कर्मफल के नियम होने चाहिए। यह पुस्तक नरक में बुरे कर्मों के प्रतिफल के एक छोटे-से अंश का आज विस्तार से वर्णन करती है, ताकि लोगों को भलाई की ओर ले जाए। इसका आधार यह नहीं होना चाहिए कि हमने स्वयं उसे देखा है या नहीं। जैसे बाह्य अंतरिक्ष के खगोलीय पिंड, अतीत में हमारे विज्ञान की सीमाओं के कारण खोजे न जा सके हों, तो इससे उनका अस्तित्व मिट नहीं जाता। क्या अभी दिखाई न देने का अर्थ न होना है? इसलिए सटीक रूप से कहा जाए, तो हो सकता है कि मनुष्य ने अभी उसे न देखा हो, लेकिन वह यह नहीं कह सकता कि वह निश्चित रूप से है ही नहीं।

हर परिस्थिति में मनुष्य के रूप में अपने कर्तव्य का पालन किया जाए, तो शरीर और मन शांत तथा संतुलित रहते हैं, परिवार सुखी और सौहार्दपूर्ण होता है और समाज में सद्भाव रहता है। देश का आधार लोग हैं और लोगों की जड़ सदाचार है। सच यही है कि सदाचार के बिना देश उन्नति नहीं कर सकता और सदाचार के बिना मनुष्य अपनी नींव स्थापित नहीं कर सकता!

दाओलान, आदरपूर्वक हाथ जोड़कर

परलोक के अटल विधान — खंड दो

विषय-सूची

0/लेखिका की भूमिका.....215

1/जीवन-मृत्यु की बही.....218

2/तो सब कुछ पहले ही लिखा जा चुका था! — मानव भाग्य का कूट और आयु का बढ़ना-घटना; जीवन-मृत्यु की बही देखकर आकाशीय रहस्य जानना!.....219

3/अंततः उस दुष्कर्म-दर्पण के दर्शन हुए जिसकी चर्चा लंबे समय से सुनती आई थी—दुष्कर्म-दर्पण के मंच के सामने कोई भला व्यक्ति नहीं!.....227

4/परलोक के सर्वोच्च अधिपति, सम्राट यमराज.....234

5/《परलोक का आत्मिक सत्ता संबंधी आधिकारिक पत्र》—बैलमुख और अश्वमुख मनुष्य की आयु पूरी होने पर की जाने वाली समस्त कार्यवाही विस्तार से बताते हैं.....236

6/सदाचार और दुराचार प्राचीन काल से बर्फ़ और अंगारे जैसे रहे हैं; निंदा और प्रशंसा में आज सत्य और असत्य का निर्णय हो! — एक युग के राष्ट्रनायक सेनापति यूए फ़ेई से भेंट और बीते दिनों की घटनाओं का विस्तृत वृत्तांत.....243

7/मेंग पो के सूप का एक प्याला, उपकार और वैर दोनों भुला दे! — यूवांग मंच का प्रत्यक्ष भ्रमण.....254

8/भोजन बरबाद करने का दर्दनाक कर्मफल—पाँच अनाजों की भरपूर फ़सल नरक.....264

9/बुद्ध का स्वयं दिया हुआ उपदेश: भोजन और पेय बरबाद करने पर अवश्य नरक में गिरकर कष्ट भोगना पड़ता है!.....271

10/बुद्ध कहते हैं: स्वादिष्ट भोजन के प्रति आसक्ति और पेट भरने से भी अधिक खाना मनुष्य को आसानी से दुर्गतियों में गिरा सकता है!.....273

11/मनुष्य कठिन परिश्रम से संचित अपना सौभाग्य और आयु धूम्रपान से व्यर्थ गँवा देता है!.....274

12/डोंगयुए सम्राट की पदोन्नति और दक्षिण जम्बूद्वीप की विपत्तियाँ.....285

13 / पुण्य और सद्गुण से युक्त धर्मनिष्ठ देवता—भूमि-देव तुदी गोंग.....294

14/एक झूठ के परिणाम छोटे भी हो सकते हैं और बड़े भी — 'बर्फ़ीली ठंड में जीभ उखाड़ने और शरीर को चूर-चूर करने वाले नरक' का भ्रमण.....300

15/अशोभन वाणी का भयंकर दंड—काँटेदार साँप द्वारा जीभ लपेटकर तोड़ दिए जाने वाला काँच-कंप्यूटर नरक.....309

16/उड़ती कीलों से जीभ काटना—फूट डालने वाली वाणी के नरक के दंड का प्रथम दर्शन.....314

17/कठोर वाणी का कर्मफल—अत्यंत पीड़ादायक विषैले साँपों और आँतों में कील ठोकने का नरक.....320

18/कभी काँटे से मछली न पकड़ें—अकेली आत्मा द्वारा तलवारों के समुद्र में अकेले काँटा डालने का नरक.....335

19/आ यू नगर-रक्षक देव से भेंट करती है.....349

परिशिष्ट.....357

यौन दुराचार के लिए परलोक के दंड-विधान.....357

गुआन पवित्र सम्राट के यौन दुराचार से विरत रहने के सूत्र की व्याख्या.....365

वेनचांग सम्राट का यौन दुराचार से विरत रहने का बहुमूल्य उपदेश.....402

महागुरु यिनगुआंग द्वारा संशोधित ‘शौकांग बाओज्यान’ में शरीर की रक्षा और जीवन सँभालने के लिए संयम की तिथियों तथा स्वर्ग, पृथ्वी और मनुष्य से संबंधित निषिद्ध दिनों की तालिका.....405

‘परलोक के अटल विधान’ से जुड़ी मेरी कहानी.....406

0/लेखिका की भूमिका

अमिताभ बुद्ध! आप सभी को नमस्कार!

बुद्ध के प्रति कृतज्ञ हूँ कि उन्होंने मुझ विनीत साधिका को 《परलोक के अटल विधान》 लिखने का पावन अवसर प्रदान किया। मैं, आ यू, अत्यंत लज्जित हूँ कि अपने कर्मबल की अनेक बाधाओं के कारण बुद्ध की इच्छा और आकाशीय इच्छा के अनुरूप इस पुस्तक को शीघ्र पूरा नहीं कर पाई। इसके लिए मैं सभी के सामने गहरा पश्चात्ताप करती हूँ। मैं महायान बोधिसत्त्वों की प्राणियों के प्रति बिना किसी शर्त वाली महान मैत्री और सबको अपने ही समान मानने वाली महान करुणा की भावना सीखूँगी और 《परलोक के अटल विधान》 का शेष लेखन पूरा करती रहूँगी।

《परलोक के अटल विधान》 लिखना शुरू करने के बाद से मेरा ज्ञान और अनुभव तो बढ़ा ही है, साथ ही मुझे ऐसी अनेक घटनाओं का सामना भी करना पड़ा है जो इस जीवन में पहले कभी नहीं हुई थीं। उन्होंने सचमुच मेरे मनोबल की कठिन परीक्षा ली है और मेरी मानसिक शक्ति तथा ऊर्जा को बहुत क्षीण किया है। जब मेरी मानसिक शक्ति और ऊर्जा कम होती है, तो मैं नरक नहीं जा पाती। इससे लेख लिखने में देर होती है और इसी कारण 《परलोक के अटल विधान》 अब तक पूरी नहीं हो पाई है।

《परलोक के अटल विधान》 लिखने से मुझे जो सबसे गहरा अनुभव हुआ है, वह शीलों का पालन करने के महत्त्व की गहरी समझ है। बहुत-से लोग सोचते हैं कि शीलों का पालन उनसे बहुत दूर की बात है, वह तो गृहत्यागी साधकों का काम है और हम सामान्य मनुष्यों से उसका कोई संबंध नहीं। यह सोच सचमुच कर्मफल के अनुरूप नहीं है और न ही परलोक के विधान के अनुकूल है। वास्तव में सभी महान

सिद्धि प्राप्त करने वालों के लिए आवश्यक है कि जब वे साधना के कारण बोने की अवस्था में सामान्य मनुष्य ही हों, तभी से सिद्धांत और धर्म के अनुसार सभी शीलों की सावधानीपूर्वक रक्षा करें।

शीलों का पालन मनुष्य होने का आधार है। कोई भी व्यक्ति यदि पाँच शीलों का पालन करे, तो वह अनेक पुण्यगुणों से संपन्न होगा।[71] जो भी शील भंग करता है, वह सौभाग्य और आयु घटाने वाले परलोक के अटल विधान से बच नहीं सकता। यदि वह शीलों का पालन करने वाला बौद्ध अनुयायी है, तो उसके दोषों में शील-भंग का एक और दोष जुड़ जाएगा। भविष्य में उसे स्वयं ही सारे दुःखद फल भोगने होंगे।

मेरा एक और गहरा अनुभव बुद्ध की महान करुणा की शक्ति का है। यह अनुपम महान करुणा-शक्ति हम दुःखी प्राणियों को दुःख से निकालकर सुख तक ले जा सकती है। हमें केवल हृदय में कृतज्ञता रखकर सच्चे मन से बुद्ध-नाम का स्मरण और पश्चात्ताप करना है; इतना ही अंधकारमय नरक की पीड़ा देने वाले पापकर्मों को मिटाने के लिए पर्याप्त है।

हम सभी सामान्य मनुष्य हैं और सामान्य मनुष्य होने के कारण अतीत में हमसे अनेक गलत विचार और आचरण हुए ही हैं। जब हमें अपने गलत और अनुचित आचरण का पता चले, तो तुरंत उसे सुधार लेना चाहिए और फिर कभी नहीं दोहराना चाहिए। अपने शेष जीवन में मृत्यु तक शीलों का भली-भाँति पालन करें, भलाई और पुण्य संचित करें, बुद्ध-नाम का स्मरण करें और जीवों को मुक्त करें। यदि दुर्भाग्यवश शुद्धभूमि में पुनर्जन्म न भी मिल सके, तब भी परलोक के शासक यमराज अवश्य ही हमारे साथ नरमी बरतेंगे और हमारे पापकर्म क्षमा करेंगे।

ये मुझ लज्जित, विनीत साधिका आ यू के थोड़े-से अनुभव हैं, जिन्हें लिखकर मैं सभी श्रद्धालुओं के साथ साझा कर रही हूँ!

यहाँ मैं सच्चे मन से कामना करती हूँ कि हमारे दक्षिण जम्बूद्वीप के सभी चेतन प्राणी[72] पवित्र जीवन जी सकें, जीवन भर यौन दुराचार न करें, पति-पत्नी पवित्रता से साथ साधना करें और सभी शुभ परिस्थितियों से संपन्न हों!

मैं यह भी कामना करती हूँ कि समस्त आकाश और धर्मधातु के सभी चेतन प्राणी पवित्र शीलों का पालन करके सिद्धि प्राप्त करें, महान बोधिचित्त उत्पन्न करें, कोई बुराई न करें, सभी भले कर्म अपनाएँ, लगन से बुद्ध-नाम का स्मरण और साधना करें, शरीर और मन को पवित्र बनाएँ तथा कमल से जन्म लें![73]

लज्जित विनीत साधिका शांगगुआन युहुआ की ओर से सादर

1/जीवन-मृत्यु की बही

आ यू ने जो देखा, उसके अनुसार जीवन-मृत्यु की बही का रंग हल्का पीला है। उसके आवरण पर कुछ रेखाओं वाले अलंकरण हैं और उस पर 「生死簿」, अर्थात् "जीवन-मृत्यु की बही", ये तीन चीनी अक्षर लिखे हैं। उसकी बनावट और जिल्द पुराने समय की धागे से सिली हुई पुस्तकों जैसी है।

हल्के पीले रंग वाली बही में आत्मिक शरीर के जीवित रहते हुए जीवन की सभी शुभ-अशुभ घटनाएँ, विपत्तियाँ और सौभाग्य दर्ज हैं। परलोक के न्यायाधिकारी के हाथ में गहरे लाल रंग की जीवन-मृत्यु की एक और बही भी है, जिसमें परलोक के आत्मिक शरीरों का विस्तृत विवरण दर्ज है। उसकी बनावट और जिल्द हल्के पीले रंग वाली बही जैसी ही है; केवल रंग अलग है।

2/तो सब कुछ पहले ही लिखा जा चुका था! — मानव भाग्य का कूट और आयु का बढ़ना-घटना; जीवन-मृत्यु की बही देखकर आकाशीय रहस्य जानना!

बुद्ध की शक्ति के अनुग्रह के लिए कृतज्ञ हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ!

अमिताभ बुद्ध! मैं, आ यू, हाथ जोड़कर परलोक के न्यायाधिकारी को प्रणाम करती हूँ!

“न्यायाधिकारी महोदय! आज मैं कुछ प्रश्न पूछना चाहती हूँ। कहा जाता है कि कुछ जीवित मनुष्य परलोक की जीवन-मृत्यु की बही देख सकते हैं। क्या यह सच है? क्या जीवन-मृत्यु की बही वास्तव में है, और वह कैसी पुस्तक है? सुना है कि जीवितों के संसार में भाग्य की गणना करके जीवन-मृत्यु की बही में दर्ज बातें जानी जा सकती हैं? कोई कितना खाएगा और कितना पहनेगा, क्या यह जन्म से पहले ही तय हो जाता है? यदि जन्म के समय आयु तय हो चुकी है, तो क्या शरीर के स्वास्थ्य का ध्यान रखना, नियमित दिनचर्या रखना, संयमित भोजन करना और अधिक व्यायाम करना जैसे उपाय पहले से निर्धारित आयु बढ़ा सकते हैं? या जो तय है, उसे बिल्कुल नहीं बदला जा सकता? क्या भाग्य बदला जा सकता है? क्या आयु बढ़ाने की प्रार्थना सफल हो सकती है? आयु बढ़ने या घटने की कोई मात्रात्मक सीमा है? धन्यवाद, न्यायाधिकारी महोदय!”

परलोक के न्यायाधिकारी ने उत्तर दिया, “जीवितों के संसार में वास्तव में ऐसे लोग हैं जो परलोक आकर जीवन-मृत्यु की बही देख सकते हैं। जो जीवित लोग

परलोक आकर यह बही देख सकते हैं, वे निश्चय ही साधारण मनुष्य नहीं होते; उनके कुछ विशेष कारण और परिस्थितियाँ अवश्य होती हैं। जिन जीवित लोगों की आयु समाप्त नहीं हुई है, वे परलोक नहीं आ सकते। परलोक आने वाले लोग मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं। पहले वे हैं जो अपने कर्मबल के अनुसार आते हैं। अर्थात्, उन्होंने जीवित रहते हुए नरक में ले जाने वाले अनेक बुरे कर्म किए होते हैं और वे अपनी इच्छा से नहीं, कर्मों के अनुसार उनका फल भोगने यहाँ आते हैं। संक्षेप में, वे शरीर, वाणी और मन—इन तीन प्रकार के बुरे कर्मों के दोषी होते हैं। शरीर के कर्मों में जीवहत्या, चोरी और यौन दुराचार की तीन मुख्य श्रेणियाँ आती हैं। वाणी के कर्मों में झूठ बोलना, व्यर्थ या लंपट वाणी, कटु वाणी और फूट डालने वाली वाणी की चार मुख्य श्रेणियाँ आती हैं। मन के कर्मों में लोभ, द्वेष और मोह की तीन मुख्य श्रेणियाँ आती हैं।

जीवितों के संसार के जिन प्राणियों ने ऊपर बताए गए शरीर के तीन, वाणी के चार और मन के तीन बुरे कर्म किए हैं, उनकी आयु समाप्त होने के बाद उनकी आत्मा परलोक लौटती है। यहाँ मैंने केवल संक्षेप में मोटी बात कही है। विस्तार में और भी बहुत-सी श्रेणियाँ हैं, जिनका यहाँ वर्णन नहीं करूँगा। कुछ प्राणियों के जीवन के कर्म न अच्छे होते हैं, न बुरे; अच्छे-बुरे आधे-आधे होते हैं। आयु समाप्त होने पर वे प्रेतगति के सामान्य निवासियों के क्षेत्र में जन्म लेते हैं। वे भी पहले प्रकार में आते हैं।

दूसरे प्रकार के लोग बुद्ध की शक्ति, संकल्प की शक्ति और पुण्य की शक्ति के अनुसार आते हैं। ऐसे जीवित व्यक्ति निश्चय ही वे साधक होते हैं जिन्हें मानव संसार में कोई विशेष दायित्व मिला होता है। ये साधक पवित्र शीलों का कठोरता से पालन करते हैं, परिस्थितियों के अनुसार स्थान-स्थान पर दुःखी प्राणियों की सहायता और उद्धार करते हैं तथा चेतन प्राणियों को दुःख से निकालकर सुख तक पहुँचाते हैं। प्राणियों का उद्धार करने के लिए वे हर जगह सद्धर्म का प्रचार करते हैं। ऐसे

साधक यदि प्राणियों का उद्धार करने के उद्देश्य से आएँ, तो परलोक में जीवन-मृत्यु की बही देख सकते हैं, लेकिन ऐसी घटनाएँ अत्यंत दुर्लभ हैं।

परलोक में जीवन-मृत्यु की बही परलोक के न्यायाधिकारी के प्रबंधन में रहती है और सामान्यतः न्यायाधिकारी ही उसे हाथ में लिए रहते हैं। जीवन-मृत्यु की बही में विस्तार से दर्ज है कि प्रत्येक व्यक्ति को पुण्यफल कम मिलेगा या अधिक—अर्थात् वह कितना खाएगा, कितना पहनेगा, उसके खेत, घर और पारिवारिक संपत्ति, माता-पिता, भाई-बहन और अन्य निकट संबंधी, रोग, आपदाएँ और विपत्तियाँ कैसी होंगी; उसकी आयु कितनी होगी, यह भी विस्तार से दर्ज है।

उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति किस वर्ष, किस महीने, किस दिन, किस घंटे, किस मिनट और किस स्थान पर अपनी आयु पूरी करेगा—ये सब बातें मानव संसार में जन्म लेने से पहले ही जीवन-मृत्यु की बही में लिख दी जाती हैं और इन्हें मनमाने ढंग से बदला नहीं जा सकता। परिवर्तन के लिए प्रत्येक प्राणी के साथ रहने वाले जन्मसहचर देवताओं द्वारा दिए गए विवरण आवश्यक हैं। फिर परलोक के सर्वोच्च यमराज की अनुमति मिलने पर ही बदलाव किया जा सकता है।

जीवितों के संसार में भाग्य की गणना से जीवन-मृत्यु की बही में दर्ज बातें जानी जा सकती हैं। भाग्य बताने वाले को केवल किसी व्यक्ति के जन्म के सटीक आठ अक्षर—बा-ज़ी[74]—चाहिए; उनसे वह उस व्यक्ति के पूरे जीवन के शुभ-अशुभ, सौभाग्य और विपत्तियों की गणना कर सकता है। लेकिन वह केवल गणना कर सकता है, उन्हें बदल नहीं सकता। जीवितों के संसार में जगह-जगह लोग भाग्य, धन-सौभाग्य, विवाह, आजीविका आदि बदलने का दावा करते हैं। इनमें से अधिकांश दावे धन बटोरने के उद्देश्य से अपनाई गई व्यापारिक तरकीबों में से हैं। बहुत-से लोग इसलिए चकित हो जाते हैं कि भाग्य बताने वाला उनके अतीत की घटनाएँ या परिवार के सदस्यों की संख्या आदि सही-सही बता देता है, और वे समझते हैं कि किसी बड़े ज्ञानी से भेंट हो गई है। कुछ भाग्य बताने वाले गणना-विद्याओं में निपुण

होने के कारण ये बातें निकाल सकते हैं, लेकिन वास्तव में बहुत-से मामलों में किसी आत्मिक सत्ता का उन पर आवेश होता है।

आत्मिक सत्ताओं के पास दूसरों का मन जानने जैसी अलौकिक शक्तियाँ होती हैं। वे जिस व्यक्ति का भाग्य बताया जा रहा है, उसके मन के विचार और अतीत की कुछ घटनाएँ जान सकती हैं। लेकिन जीवित लोग यह भेद बिल्कुल नहीं कर पाते। वे उलटे अपने को सौभाग्यशाली मानते हैं कि किसी बड़े ज्ञानी से मिले हैं और फिर भाग्य बताने वाले की हर आज्ञा मानने लगते हैं। इसके बाद भाग्य बदलने, आपसी संबंध सुधारने, आजीविका के सौभाग्य, विवाह के सौभाग्य और स्वास्थ्य के सौभाग्य को बढ़ाने तथा फ़ेंगशुई की विशेष व्यवस्थाएँ[75] लगाने जैसी तथाकथित समग्र भाग्य-सुधार योजनाओं की एक शृंखला शुरू हो जाती है। उन्हें पता ही नहीं चलता कि बहुत धन खर्च हो गया और बहुत समय भी व्यर्थ चला गया, जबकि वास्तव में पहले से निर्धारित भाग्य में तनिक भी परिवर्तन नहीं हुआ। आपदाएँ वैसे ही आती हैं, बीमारी भी होती है और अंततः मरना भी पड़ता है।

भाग्य बदलने के लिए किसी भाग्य बताने वाले के पास जाकर उससे अपना भाग्य बदलवाना उपाय नहीं है; यदि सचमुच भाग्य को नए सिरे से लिखना है, तो यह अपने ही बल पर करना होगा। अधिक सत्कर्म करो और अपने प्रयासों से अधिक सौभाग्य अर्जित करो; तब भाग्य पूछने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी। पुण्य होगा तो सहायता करने वाले लोग अपने आप मिलेंगे, और स्वास्थ्य, परिवार, आजीविका, विवाह आदि भी अपने आप अनुकूल होंगे। दूसरे अधिक से अधिक पास रहकर तुम्हें याद दिला सकते हैं। सत्कर्म तो स्वयं ही वास्तविक रूप में करने होंगे, सदा उन्हें मन में रखते हुए, सुबह-शाम बिना रुके। तब पहले से निर्धारित भाग्य बदल सकता है और व्यक्ति की जीवन-मृत्यु की बही उसी समय से नए सिरे से लिखी जा सकती है!

आ यू, तुम्हें यह जानना चाहिए कि कुछ लोग जीवन भर अपने शरीर और स्वास्थ्य की देखभाल करें, नियमित दिनचर्या रखें, संयमित भोजन करें, पर्याप्त नींद

लें और अधिक व्यायाम करें, तो भी इन बातों से उनकी मूलतः निर्धारित आयु नहीं बढ़ेगी; ये निर्धारित आयु को बदल ही नहीं सकतीं। हाँ, सामान्य दिनों में शरीर की अच्छी देखभाल करने से स्वाभाविक रूप से बीमारी के कारण होने वाली कुछ शारीरिक पीड़ा कम भोगनी पड़ेगी।[76]

वास्तव में अधिकांश जीव अपने भाग्य में बहुत बड़ा परिवर्तन नहीं कर पाते। उनका पूरा जीवन साधारण ढंग से मृत्यु की ओर बढ़ता रहता है, और फिर वे अपने कर्मों के अनुसार संबंधित गति में दोबारा जन्म-मरण के चक्र में प्रवाहित होते हैं। फिर भी, कोई भी जीव यदि अच्छा काम करे—भले ही वह देखने में बहुत छोटा और नगण्य हो—और उसका सच्चा संकल्प दूसरों का हित करना हो, तो भविष्य में मिलने वाला उसका शुभ फल अत्यंत बड़ा हो सकता है और उससे उसका भाग्य बदल सकता है। दो प्रकार के लोग निर्धारित भाग्य के मार्ग को प्रभावित कर सकते हैं: अत्यंत दुष्ट और अत्यंत सदाचारी लोग। अत्यंत दुष्ट व्यक्ति मृत्यु के बाद सीधे नीचे गिरकर नरक में कर्मफल भोगने जाता है। दूसरी ओर, अत्यंत सदाचारी व्यक्ति माता-पिता के प्रति अपनी भक्ति से आकाश तक को द्रवित करता है, बहुत गुप्त पुण्य संचित करता है और दुःख तथा विपत्ति में पड़े लोगों को बचाता है। उसके पुण्यफल असीम रूप से बढ़ते हैं; वह भी अपने मूल निर्धारित भाग्य की सीमा तोड़कर धीरे-धीरे ऊपर उठ सकता है और मृत्यु के बाद देवलोक में जन्म लेकर सुख भोग सकता है।

जहाँ तक आयु बढ़ाने की प्रार्थना के बारे में तुम्हारे प्रश्न का संबंध है, वह पूरी हो सकती है। लेकिन आयु में वृद्धि की सीमा होती है और इसके लिए उचित सिद्धांतों तथा धर्म के अनुरूप प्रार्थना करनी चाहिए। उचित सिद्धांतों तथा धर्म के अनुरूप होने का अर्थ यह है कि यदि अपना शरीर अस्वस्थ हो और अपनी देह को पोषण देने के लिए अतिरिक्त आहार की आवश्यकता हो, तो अपनी देह का पोषण करने के लिए पशुओं का जीवन बिल्कुल नहीं लेना चाहिए। स्वर्ग में जीवन के प्रति करुणा का गुण

है। यदि अपनी जीवन-रक्षा के लिए दूसरे जीवों की जान लेकर शरीर को सँभाला जाए, तो परलोक के विधान इसे कठोरता से निषिद्ध करते हैं। इससे आयु बढ़ना तो संभव नहीं होता, उलटे जीवन का एक ऋण और चढ़ जाता है, जो भविष्य में बुरे फल लाता है। आयु बढ़ाने की प्रार्थना करने वालों को याद रखना चाहिए कि सबसे पहले शाकाहारी होना अनिवार्य है। दूसरों का जीवन नष्ट करके स्वयं दीर्घायु कैसे हो सकते हो? जिनका जीवन लिया गया है, उनके मन में निश्चित ही रोष और अन्याय का भाव होगा, और वे अवश्य प्रतिशोध का अवसर खोजेंगे। इसलिए शाकाहार आयु बढ़ाने की आधारशिला है। इसके अतिरिक्त, महान करुणा का भाव जगाकर सभी जीवों को दुःख से मुक्त करके सुख तक पहुँचाना चाहिए, महान बोधिचित्त[77] उत्पन्न करके व्यापक रूप से सभी जीवों का उद्धार करना चाहिए, और जीवन भर शाकाहार तथा बंदी जीवों को मुक्त करने का आचरण करना चाहिए। यदि सचमुच ऐसा किया जाए, तो जीवन-मृत्यु की बही में दर्ज आयु अवश्य बढ़ेगी। कितनी बढ़ेगी, यह संकल्प की व्यापकता और पुण्य की मात्रा के आधार पर तय होगा।

मेरे हाथ में जो जीवन-मृत्यु की बही है, उसमें कुछ ऐसे लोग भी हैं जिनकी आयु बिना माँगे ही बढ़ी है। उनमें कुछ साधारण जीव हैं, जिन्होंने सभी सत्त्वों के उद्धार का कोई महान संकल्प नहीं किया। उन्होंने केवल एक सच्चे भाव से, दूसरों की सहायता करने की इच्छा से, रास्ते में अन्याय देखकर या संकट की घड़ी में करुणा उत्पन्न होने पर किसी दुःखी जीव का जीवन बचाया। ऐसे जीवों के विषय में जन्मसहचर देवता नियमित प्रतिवेदन देते हैं और उनकी आयु बढ़ा दी जाती है, लेकिन उन्हें स्वयं यह पता नहीं होता कि उनकी आयु बढ़ चुकी है। ऐसे मामलों में सामान्यतः आयु 6 से 12 वर्ष बढ़ती है। यदि किसी जीव ने विशेष रूप से बहुत अधिक गुप्त पुण्य संचित किया हो और वह एक जीवन में उसका पूरा उपभोग न कर सके, तो उसे कई जन्मों में बाँटकर दीर्घायु का फल भोगने दिया जाएगा। मनुष्यलोक की आयु की एक निर्धारित

मर्यादा है; परलोक के विधान के पुरस्कार और दंड प्राकृतिक नियमों को नहीं तोड़ेंगे।"

तब मैं, आ यू, परलोक के न्यायाधिकारी से फिर पूछना चाहती थी: "बुद्ध ने सूत्रों में लोगों को कम खाने, कम सोने, यहाँ तक कि बिना सोए साधना करने की शिक्षा दी है। क्या इससे स्वास्थ्य और आयु प्रभावित होंगे?"

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: "बुद्ध ब्रह्मांड में महान प्रज्ञा से संपन्न साधक हैं। साधना के जिस मार्ग पर हम चलते हैं, उस पर बुद्ध स्वयं एक-एक कदम चल चुके हैं। बुद्ध इस अनुभव से गुज़र चुके हैं, इसलिए स्वाभाविक रूप से जानते हैं कि लोगों को इस साधना-पथ पर चलने की शिक्षा कैसे देनी है। बुद्ध का लोगों को इस प्रकार साधना सिखाना स्वास्थ्य और आयु को प्रभावित नहीं करेगा। केवल शरीर, वाणी और मन से दुष्कर्म करना, या जीवन में आगे चलकर शरीर की देखभाल न करना, मनमाने ढंग से अत्यधिक खाना-पीना, दिन-रात की दिनचर्या उलट देना, भावनाओं पर नियंत्रण खो देना आदि कारण ही आयु को प्रभावित करते हैं।

कम खाना और कम सोना शरीर की बहुत अच्छी देखभाल है। वास्तव में हम मनुष्य बिना खाए और बिना सोए भी रह सकते हैं। यदि कोई व्यक्ति प्रत्येक क्षण अपनी साँसों को प्रकृति के साथ सामंजस्य में ला सके और आकाश तथा मनुष्य की एकता[78] प्राप्त कर सके, तो वह स्वाभाविक रूप से स्वस्थ और दीर्घायु होगा; तब वह बिना खाए और बिना सोए रह सकेगा तथा जन्म लेने से पहले के प्रकाश में लौट सकेगा। लेकिन साधारण लोग ऐसा नहीं कर सकते। इसलिए बुद्ध ने लोगों को क्रमशः आगे बढ़ते हुए पहले कम खाने की शिक्षा दी। कम खाने से स्वाभाविक रूप से नींद कम होती है, और फिर आगे चलकर बिना सोए उत्साहपूर्वक साधना की जाती है।[79]

अभी कहा ही था कि कोई व्यक्ति कितना खाएगा, यह उसके जन्म लेने से पहले ही निर्धारित हो जाता है। अब कम खाना इस जन्म के मूल पुण्यफल को संचित

करना है। लंबे समय तक इस तरह कम खाते और कम सोते हुए, यहाँ तक कि बिना सोए उत्साहपूर्वक साधना करने से, दिन-महीने बीतने के साथ निश्चित ही और बड़े पुण्यफल तथा और बड़े शुभ फल मिलेंगे। फिर इससे आयु प्रभावित कैसे होगी? अच्छा! आ यू, क्या तुम समझ गईं?" मैंने सिर हिलाकर समझने का संकेत दिया।

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: "आज यहीं तक। कोई प्रश्न हो तो फिर आना, तुम्हारा स्वागत है!"

"अच्छा! अमिताभ बुद्ध! परलोक के न्यायाधिकारी, आपका आभार!"

मैंने हाथ जोड़कर परलोक के न्यायाधिकारी को प्रणाम किया! श्वेत कमल पर सवार होकर वापस लौटी!

3/अंततः उस दुष्कर्म-दर्पण के दर्शन हुए जिसकी चर्चा लंबे समय से सुनती आई थी—दुष्कर्म-दर्पण के मंच के सामने कोई भला व्यक्ति नहीं!

बुद्ध की शक्ति के अनुग्रह के लिए कृतज्ञ हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ!

अमिताभ बुद्ध! मैं, आ यू, हाथ जोड़कर परलोक के न्यायाधिकारी को प्रणाम करती हूँ!

“आज मैं परलोक के न्यायाधिकारी से पूछना चाहती हूँ: कथाओं में जिस दुष्कर्म-दर्पण के मंच की चर्चा होती है, वह कैसा है? जब मैं बहुत छोटी थी, तब अक्सर घर के बुज़ुर्गों को बातचीत में कहते सुनती थी कि मृत्यु के बाद मनुष्य को परलोक में जाकर दुष्कर्म-दर्पण के मंच के सामने अपना प्रतिबिंब दिखाना पड़ता है। पता नहीं यह सही है या नहीं। मेरा उसे जाकर देखने का बहुत मन है।”

परलोक के न्यायाधिकारी ने समझाया: “दुष्कर्म-दर्पण का मंच विशेष रूप से दुष्कर्म करने वालों के लिए बनाया गया है। हर व्यक्ति के मन की गहराई में मानो दुष्कर्म-दर्पण का एक रिकॉर्डर होता है। जीवित मनुष्य प्रतिदिन जो भी अच्छे या बुरे काम करता है, वे सभी उस दुष्कर्म-दर्पण के रिकॉर्डर में दर्ज और चित्रित हो जाते हैं। जन्मसहचर देवता भी गुप्त रूप से एक-एक करके उनका लेखा रखते हैं।

दुष्कर्म-दर्पण के मंच की सामग्री जीवितों के संसार के दिव्य वृक्षों की लकड़ी और काँच-मणि से ली गई है; फिर आकाश और धरती की यिन-यांग आध्यात्मिक ऊर्जा को एकत्र करके उसे आकार दिया गया है। आकाश और धरती की यिन-यांग आध्यात्मिक ऊर्जा में यांग प्रकाशमय सत्कर्मों का प्रतीक है। जो मनुष्य जीवन भर

सत्कर्म करता है, उसकी आत्मिक चेतना प्रकाशमय होती है। जब वह दुष्कर्म-दर्पण के मंच पर आता है, तो वहाँ केवल प्रकाश होता है, कोई दृश्य नहीं चलता। इसलिए भले लोगों को दुष्कर्म-दर्पण में दिखाने की आवश्यकता नहीं होती। यिन अंधकार और छाया, अर्थात् दुष्कर्मों का प्रतीक है। कोई जीवित मनुष्य जीवन में जब भी कोई दुष्कर्म करता है, चाहे वह कितना ही गुप्त क्यों न हो, उसे अपने मन में उसका स्पष्ट ज्ञान होता है। वे सभी उसके आलयविज्ञान[80] में, उसके मन की गहराई के दर्पण में संचित हो जाते हैं, और उसके अंतर्मन में एक छाया दिखाई देती है।

दुष्कर्म-दर्पण का मंच मूलतः यिन और यांग, इन दोनों ऊर्जाओं के संयोग से बना है। जैसे ही उसका सामना दोषी आत्मा के दुष्कर्मों की यिन आध्यात्मिक ऊर्जा से होता है, वे तुरंत एक-दूसरे से जुड़कर संचार करने लगती हैं और उस दोषी आत्मा के पूरे जीवन के दुष्कर्म तत्काल दिखाए जाने लगते हैं। दोषी आत्मा का वास्तविक रूप पूरी तरह उजागर हो जाता है; कुछ भी छिपा नहीं रहता और कहीं छिपने की गुंजाइश नहीं होती। यही 《अवतंसक सूत्र》 में कहा गया है: 'यदि कोई जानना चाहे तीनों कालों के समस्त बुद्धों को, तो उसे धर्मधातु के स्वभाव को देखना चाहिए; सब कुछ केवल मन से निर्मित है।' अर्थात् यह मन का प्रक्षेपण है।[81]

दोषी आत्मा के दुष्कर्म-दर्पण के मंच के सामने खड़े होते ही उसके जीवन के सभी छोटे-बड़े गुप्त दुष्कर्म एक-एक करके दिखाए जाने लगते हैं। जब दुष्कर्म-दर्पण का मंच उन्हें दिखाता है, तो उसके आसपास खड़े सभी जीव उस दोषी आत्मा के सारे पाप और दुष्कर्म एक साथ देख सकते हैं। बहुत-सी दोषी आत्माएँ लज्जा, पश्चात्ताप और भय अनुभव करती हैं, लेकिन तब पछतावे का कोई उपाय नहीं बचता। वे केवल विवश होकर भयानक भूत-प्रहरियों द्वारा घसीटकर ले जाई जाती हैं, ताकि नरक के लंबे और पीड़ादायक दंड आगे भोगें।

यदि कोई मनुष्य जीवन भर सत्कर्म और पुण्य का संचय करे, निष्कपट और उज्ज्वल रहे, उसके मन में तनिक भी छिपाव न हो और उसके शरीर में परम शुभ, शुद्ध

यांग ऊर्जा हो, तो दुष्कर्म-दर्पण के मंच के सामने आने पर दर्पण बिल्कुल खाली रहता है। जीवन भर सत्कर्म करने वालों को दुष्कर्म-दर्पण के मंच पर दिखाने के लिए आने की आवश्यकता ही नहीं होती। आयु पूरी होने पर उनकी आत्मिक चेतना की प्रकाशमयता के स्तर के अनुसार वे सीधे उच्चतर लोकों में उठ जाते हैं। जिसकी आत्मिक चेतना जितनी अधिक प्रकाशमय होती है, वह उतना ही ऊपर उठता है। कुछ अन्य दिशाओं के उन बुद्ध-क्षेत्रों में चले जाते हैं जिनसे उनका कर्मसंबंध है; कुछ को पुण्य और सद्गुण से संपन्न शुभ देवता ले जाकर देवलोक में जन्म दिलाते हैं। जो आत्मिक सत्ताएँ न भली हैं, न बुरी, उन्हें दस सभागृहों में न्यायिक सुनवाई के बाद मनुष्यलोक में जन्म लेने के लिए भेजा जाता है। उनके पुण्यफल की मात्रा के अनुसार वे पुरुष या स्त्री, धनी और प्रतिष्ठित या गरीब, दीर्घायु या अल्पायु आदि के रूप में जन्म लेते हैं। दुष्कर्म करने वालों को दुष्कर्म-दर्पण के मंच के सामने आना पड़ता है। उनके जीवन भर के सभी दुष्कर्म आँखों के सामने आ जाते हैं, और फिर भूत-प्रहरी उन्हें लज्जित तथा विवश अवस्था में ले जाते हैं।”

“आ यू, मेरे साथ परलोक के कर्म-दर्पण के महान सभागृह को देखने चलो।”

“जैसी आज्ञा, परलोक के न्यायाधिकारी!”

अब सामने बहुत-से लोग दिखाई दे रहे हैं। वहाँ एक बहुत चौड़ा, अंडाकार बड़ा दर्पण है। परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा कि यही दुष्कर्म-दर्पण का मंच है। दर्पण के सबसे ऊपर लिखा है, ‘दुष्कर्म-दर्पण के मंच के सामने कोई भला व्यक्ति नहीं।’ परलोक के न्यायाधिकारी ने मुझे उसका माप लेने को कहा।

उस दुष्कर्म-दर्पण के मंच की ऊँचाई लगभग 3.3 मीटर और चौड़ाई 1.8 मीटर है। देखने में लगता है कि नीले-हरे रंग का एक आयताकार लकड़ी का आधार, जिस पर उभरी हुई नक्काशी है, दुष्कर्म-दर्पण को थामे हुए है। दर्पण का सामने वाला भाग काँच-मणि का है। काँच-मणि के किनारे नीले-हरे रंग की उभरी हुई लकड़ी की नक्काशी से घिरे हैं, और यही काँच-मणि वह बड़ा परदा है जिस पर दोषी आत्मा के

जीवन भर के दुष्कर्म दिखाए जाते हैं। दुष्कर्म-दर्पण के मंच की नीली-हरी उभरी हुई लकड़ी की नक्काशी से झिलमिलाती रहस्यमय मंद रोशनी निकलती है। साथ में खड़े क्रूर और विकराल भूत-प्रहरियों को देखकर बहुत भय लगता है! ऊपर से दुष्कर्म-दर्पण के मंच पर कुछ दोषी आत्माओं के वे गुप्त दुष्कर्म दिखाए जा रहे हैं जिन्हें उनके जीवनकाल में कोई नहीं जानता था। अब अपराधी और उसके अपराध का प्रमाण दोनों सामने हैं। यह देखकर सचमुच दिल दहल जाता है, और भय और भी बढ़ जाता है!

यहाँ की दोषी आत्माओं की आयु अभी-अभी पूरी हुई है। वे सभी परलोक का वातावरण महसूस कर पा रही हैं; अधिकांश के चेहरे उदासी और चिंता से भरे हैं। अभी एक पुरुष को कहते सुना: 'मैंने जीवन भर कभी हत्या या आगज़नी नहीं की। मुझे यहाँ घसीटकर क्यों लाए हो? मुझे बाहर जाने दो!' देखा कि दो क्रूर भूत-प्रहरी एक पुरुष को खींचते हुए लाए और दुष्कर्म-दर्पण के मंच के सामने ज़ोर से धकेल दिया। उसे अत्यंत पीड़ा के साथ घुटनों के बल बैठने को मजबूर किया गया। चौड़े दुष्कर्म-दर्पण में तुरंत उस पुरुष के जीवन के यौन दुराचार के दृश्य उभर आए। इसमें एक से अधिक स्त्रियाँ थीं; दृश्य बिल्कुल देखने योग्य नहीं थे। इसे अत्यंत घोर यौन दुराचार कहा जाता है। उसने अपनी विधिवत् विवाहिता पत्नी को इतना दुःख और क्रोध दिया कि वह बीमार पड़कर बिस्तर पर पड़ गई और घुट-घुटकर मर गई। अच्छा हुआ कि ये चीज़ें मुझे प्रभावित नहीं कर सकतीं, नहीं तो देखने के बाद आँखें धोनी पड़तीं! इस समय उस दोषी आत्मा के दोनों पैर काँपने लगे थे और भूत-प्रहरी उसे घसीटकर ले गए।

फिर अगली दोषी स्त्री-आत्मा को देखा। वह स्त्री देखने में शालीन थी और उसके नैन-नक्श भी सुघड़ थे। पता नहीं उसने क्या अपराध किया था? दुष्कर्म-दर्पण में दिखा कि उसने अपने मित्र के साथ मिलकर एक ऐसे पुरुष उपासक पर झूठे आरोप लगाए थे जो शील का कठोर पालन करता और धर्म का प्रचार करता था।

यह दोषी स्त्री स्वयं बौद्ध धर्म सीखती थी और बौद्ध शिक्षाओं का उसका ज्ञान भी बहुत व्यापक था। दुर्भाग्य से, ईर्ष्या के कारण उसने जानबूझकर उस शीलनिष्ठ धर्मप्रचारक पुरुष उपासक को बदनाम किया और उस पर आरोप लगाया कि उसने अमुक व्यक्ति का बलात्कार किया था। उसके झूठे आरोप सफल हुए और कोई भी उस उपासक से धर्म सुनने नहीं आया। इसलिए उस पुरुष उपासक को एकांत में रहकर साधना करनी पड़ी।

इस दोषी स्त्री-आत्मा ने उस पुरुष उपासक को अपने मित्र से भी अधिक बदनाम किया था। उसके मित्र को बौद्ध धर्म का उतना ज्ञान नहीं था जितना उसे था; उस मित्र में प्रज्ञा की कमी थी और दूसरों की बातें दोहराने की प्रवृत्ति थी; उसने केवल दूसरों के पीछे चलकर बदनामी की। लेकिन इस दोषी आत्मा ने सोची-समझी योजना से उस पुरुष उपासक को बदनाम करने के लिए हर उपाय अपनाया और अंततः उसे एकांत में रहकर साधना करने पर विवश कर दिया।

उस दोषी स्त्री-आत्मा को भी इस बदनामी के कारण गले का कैंसर हुआ[82] और साथ में जटिलताएँ भी हुईं। उसके मुँह और नाक से लंबे समय तक मवाद बहता रहा। वह अस्पताल में पड़ी रही, नस में ड्रिप लगी रही, और अंततः पीड़ा में उसकी आयु पूरी हुई। अब उस दोषी स्त्री-आत्मा को पता चल गया था कि बड़ी विपत्ति सिर पर आ गई है। वह तुरंत घुटनों के बल गिरकर क्षमा माँगने लगी। भूत-प्रहरी ने क्रूरता से उसके मुँह में काँटा भोंकते हुए कहा: "देखूँ, अब आगे तुम सद्धर्म को बदनाम करने और लोगों के प्रज्ञा-जीवन को काटने[83] का साहस करती हो या नहीं! अब चलो, यमराज के सामने!"

वह स्त्री-आत्मा सचमुच दयनीय थी! यदि पहले ही जानती कि ऐसा होगा, तो तब ऐसा करती ही क्यों? सद्धर्म के प्रसार को नष्ट करना सत्त्वों के मुक्ति-पथ को काट देना है; यह गंभीर दुष्कर्म है जिसका प्रतिफल नरक में मिलता है। बदनाम करने वालों को दंडित करने के लिए परलोक के विधान में तरह-तरह की सजाएँ हैं। लेकिन

जब वे नरक के इन कर्मफलों को भोग चुकेंगे, तब न जाने संसार किस वर्ष और किस महीने में पहुँच चुका होगा!

इसके बाद भी पीछे एक लंबी कतार थी। सभी दोषी आत्माएँ पंक्ति में खड़ी थीं। वे इतनी अधिक थीं कि कतार का अंत दिखाई ही नहीं देता था। सबको दुष्कर्म-दर्पण के मंच के सामने आना था। इससे स्पष्ट है कि मनुष्यलोक में दुष्कर्म करने वाले सचमुच बहुत, बहुत अधिक हैं!

आज समय की कमी के कारण अधिक मामले नहीं देख पाई। वास्तव में इस 《दुष्कर्म-दर्पण के मंच》 को देखना कुछ कष्टदायक है, क्योंकि उसमें सब शीलभंग से जुड़ी बातें ही हैं। बच्चों के लिए अनुपयुक्त सामग्री के अतिरिक्त बहुत-सी भयावह, रक्तरंजित घटनाएँ भी हैं—हत्या के रक्तपात भरे दृश्य, मनुष्यों को क्रूरता से हानि पहुँचाने के तरह-तरह के दृश्य, एक-दूसरे के विरुद्ध चालें चलना आदि। हाय!!! इतने समय में हर दोषी आत्मा से एक-एक करके बातचीत करना संभव नहीं था, और मैं बहुत विस्तार से वर्णन करना भी नहीं चाहती। यदि विस्तार से वर्णन करूँ, तो यह 《परलोक के अटल विधान》 निश्चित ही अत्यंत भयावह, रोंगटे खड़े कर देने वाली पुस्तक बन जाएगी।

आखिरकार, सबको इस बहुमूल्य मनुष्य-देह का अच्छी तरह आदर करना चाहिए, पाँच शीलों और दस शुभ आचरणों का पालन करके अधिक पुण्य तथा सद्गुण संचित करने चाहिए। कम से कम अगला मनुष्य-जन्म तो सुरक्षित रखना ही चाहिए। किसी भी दशा में नरक में मत गिरना। नरक सचमुच अत्यंत, अत्यंत पीड़ादायक है; वहाँ आधा मिनट ठहरना भी सहना कठिन है!

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: “आज यहीं तक। आ यू, आप पहले लौटकर लेख लिखिए और संसार के लोगों को सचेत कीजिए कि वे अपने आचरण तथा मन को अधिक सँवारें और दृढ़ता से सत्कर्म करें। यह सोचकर कि न मनुष्य जानेंगे, न आकाश को पता चलेगा, नरक में गिराने वाले दुष्कर्म न करें। उन्हें जानना चाहिए

कि दुष्कर्म-दर्पण के मंच के सामने छोटे-बड़े सभी दुष्कर्म बिना किसी अपवाद के प्रकट हो जाते हैं। आशा है कि संसार के लोग स्वयं अपने ऊपर परलोक के अटल विधान का कठोर प्रतिफल नहीं बुलाएँगे!"

"अमिताभ बुद्ध! परलोक के न्यायाधिकारी, आपका आभार!"

मैंने हाथ जोड़कर परलोक के न्यायाधिकारी को प्रणाम किया! श्वेत कमल पर सवार होकर वापस लौटी!

4/परलोक के सर्वोच्च अधिपति, सम्राट यमराज

फ़ेंगदू सम्राट का रूप कैसा है, अब मैं, आ यू, जैसा देखा है वैसा ही आप सबको बताती हूँ:

परलोक के सर्वोच्च अधिपति, सम्राट यमराज, अर्थात् फ़ेंगदू सम्राट, हृष्ट-पुष्ट और बलिष्ठ हैं। उनका कद ऊँचा है और उनका व्यक्तित्व प्रतापपूर्ण है; उन्हें देखकर अत्यंत गंभीर होने का आभास होता है। सम्राट का चेहरा गोल है, नैन-नक्श सुघड़ हैं और बड़ी आँखों में क्रोधपूर्ण दृष्टि है। उनकी भौंहें और आँखें, दोनों अत्यंत प्रबल अधिकार और प्रताप का भाव प्रकट करती हैं।

सम्राट सत्कर्म करने वालों को देखकर मुस्कराते हैं। जब वे मुस्कराते हैं, तो उनका चेहरा शांत और सौम्य दिखता है। लेकिन दोषी आत्माओं के प्रति वे असाधारण रूप से गंभीर और क्रुद्ध होते हैं। उनकी भौंहें और आँखें ऊपर को उठ जाती हैं, जिससे उन्हें देखते ही भय लगता है।

जब सम्राट दोषी आत्माओं को डाँटते हैं, तो उनकी आवाज़ से कान गूँज उठते हैं। उनकी आँखें पहले ही छोटी नहीं हैं, और क्रोध में वे और बड़ी हो जाती हैं। मुँह भी बहुत चौड़ा खुलता है। वे मेज़ पर ज़ोर से हाथ पटकते हैं, जिससे दोषी आत्माएँ पूरी तरह भयभीत हो जाती हैं! सम्राट को देखकर हमेशा ऐसा लगता है कि अनजान लोग पास न आएँ।

सम्राट की टोपी पर एक आयताकार भाग है, जिसके आगे और पीछे झालरें लटकती हैं। आयताकार भाग काला है और झालरें सफ़ेद हैं। टोपी बहुत प्रतापपूर्ण दिखाई देती है। उस पर मनुष्यलोक के पर्वतों, नदियों और धरती के चित्र हैं। वह प्राचीन काल की राजकीय टोपी की शैली में है और उसमें कुल पाँच रंग हैं। टोपी के बीच में एक माणिक है। माणिक के दोनों ओर लहरों के आकार में नीला समुद्र है। समुद्र के ऊपर मिट्टी के पीले रंग की धरती है और धरती के ऊपर हरे वन तथा ऊँचे

पर्वत हैं। पूरे चित्र का संयोजन अत्यंत भव्य है; मानो मनुष्यलोक के सभी पर्वत, नदियाँ और धरती टोपी पर एकत्र कर दिए गए हों।

सम्राट के पहने हुए राजकीय वस्त्र पर छह गतियों के जन्म-मरण चक्र का चित्र है, जिसके रंग चमकीले और सतरंगी हैं। छह गतियों के जन्म-मरण चक्र का चित्र गोल है और बराबर के पाँच भागों में बाँटा गया है। सबसे ऊपर देवगति और असुरगति हैं। वहाँ नर और नारी देव उड़ रहे हैं तथा असुर संघर्ष करते हुए देवसेना से युद्ध कर रहे हैं। देवगति और मनुष्यगति के सामने नरकगति है। नरक में तेल की कड़ाहियों में दोषी आत्माएँ उबाली जा रही हैं, भूत-प्रहरी दोषी आत्माओं को पीट रहे हैं, कुछ दोषी आत्माएँ ताँबे के स्तंभों से लिपटी हैं, आदि। देवलोक के बगल में, घड़ी की सुई की दिशा में, मनुष्यगति है। मनुष्यगति के लोग तीन प्रकार के हैं: धनी और प्रतिष्ठित लोग, मज़दूर और गरीब किसान। मनुष्यगति के नीचे, घड़ी की सुई की दिशा में, प्रेतगति है। वहाँ बड़े पेट वाले भूखे प्रेत, भूखे और बहुत दुबले-पतले छोटे प्रेत, धुएँ और आग वाले प्रेत आदि हैं। प्रेतगति के सामने की दिशा में तरह-तरह के पशु, पालतू पक्षी और जंगली जानवर आदि हैं।

5/《परलोक का आत्मिक सत्ता संबंधी आधिकारिक पत्र》—बैलमुख और अश्वमुख मनुष्य की आयु पूरी होने पर की जाने वाली समस्त कार्यवाही विस्तार से बताते हैं

हाल में मुझे लगता है कि मनुष्यलोक के बहुत-से शहरों में मौसम हर दिन पल-पल बदल रहा है, विशेषकर समुद्रतटीय क्षेत्रों में। एक पल हर ओर धूप फैली होती है और आग-से लाल बड़े सूरज की गर्मी से लोग पसीने में तर हो जाते हैं; अगले ही पल तेज़ हवा चलने लगती है और मूसलाधार वर्षा होती है। बाहर निकले लोगों के छाते यदि कुछ छोटे हों, तो वे हवा से उलट जाते हैं और लोग पूरी तरह भीग जाते हैं। हाल में ऐसा मौसम लगभग हर दिन कई बार होता है। समुद्रतटीय क्षेत्रों में रहने पर तो हवा, लहरों और मौसम में बदलाव और भी अधिक होता है। शरीर की प्रतिरोधक क्षमता थोड़ी भी कम हो, तो सर्दी-जुकाम आसानी से हो जाता है।[84] आसपास बहुत-से लोग खराब मौसम, उमस भरी गर्मी और खराब हवा की शिकायत कर रहे हैं।

छोटे-बड़े शॉपिंग सेंटरों और दफ़्तर की इमारतों में जाएँ, तो भीतर एयर कंडीशनर की हवा बहुत ठंडी होती है। कभी गर्मी, कभी ठंड—इस तरह अचानक गर्म और ठंडा होना लोगों को कष्ट देता है। सभी आशा करते हैं कि मौसम अच्छा हो जाए और कुछ स्थिर हो। सबकी इस आशा के बावजूद वास्तविकता में मौसम वैसा ही बना रहता है। मनुष्य हमेशा चाहता है कि उसके आसपास की हर चीज़ अच्छी हो, लेकिन अधिकांश लोग यह अनदेखा कर देते हैं कि वे स्वयं सामान्यतः हमारी प्रकृति के साथ कैसा व्यवहार करते हैं।

हम प्रतिदिन एक बार इस्तेमाल करके फेंक दिए जाने वाले अनेक उत्पाद उपयोग करते हैं, जैसे खाने की चॉपस्टिक, टिश्यू और तरह-तरह की सुंदर पैकिंग। हर दिन हम पर्यावरण को प्रदूषित करने वाली बहुत-सी चीज़ें उत्पन्न करते हैं। जब हम प्रतिदिन अत्यंत सुंदर दैनिक उपयोग की वस्तुएँ, घरेलू बिजली के उपकरण, घर का साज-सामान और फ़र्नीचर, असली चमड़े के सोफ़े, चमड़े के कपड़े, असली रेशम के वस्त्र और तरह-तरह की मनोहारी सजावटी वस्तुएँ इस्तेमाल करते हैं, तो क्या हम सोचते हैं कि इन्हें खरीदने के लिए हमने केवल कुछ धन खर्च किया है, लेकिन इन्हें इतना सुंदर बनाने के पीछे बहुत-से अज्ञात, दयनीय जीवों का बलिदान हुआ है, या किसी सुंदर उत्पाद को बनाने के लिए असंख्य मानवीय और भौतिक संसाधन खर्च हुए हैं? इन वस्तुओं के पीछे जिन जीवों को निर्दयता से बलि चढ़ाकर मिटा दिया गया, क्या वे सचमुच मनुष्यों को एक भरपूर स्वादिष्ट भोजन देने और अपनी खाल उधड़वाकर मनुष्यों के पहनने के काम आने को सहर्ष तैयार थे? यदि उन छोटे पशुओं से पूछा जाए, तो मुझे विश्वास है कि वे अवश्य असहमत होंगे। यह पर्यावरण को गंभीर क्षति पहुँचाने और प्रदूषित करने वाले कारणों में से एक है।

दूसरा कारण मनुष्य के विचार हैं। हम प्रतिदिन सार्वजनिक परिवहन से यात्रा करते समय या सड़कों पर बहुत-से लोगों को देखते हैं। उनके चेहरे थकान, उदासी, ऊब, चिंता और भय प्रकट करते हैं। वास्तव में बहुत-से लोगों के शरीर पर आत्मिक सत्ताओं का आवेश होता है, इसलिए उनके लिए प्रसन्न और मनोनुकूल जीवन जीना बहुत कठिन होता है।

हम मनुष्यों के तरह-तरह के नकारात्मक विचार लगातार चारों ओर फैलते रहते हैं। मारे गए पशु भी जीवन और मृत्यु से जुड़े अनेक द्वेषपूर्ण विचार छोड़ते हैं, जो आसपास के वातावरण में गूँजते रहते हैं। वे सब प्रतिशोध के अवसर की प्रतीक्षा करते हैं और किसी भी समय मनुष्यों के लिए तरह-तरह की विपत्तियाँ उत्पन्न कर सकते हैं। हमारे विचार वास्तव में समूची प्रकृति के जलवायु परिवर्तन को सीधे

प्रभावित करते हैं। आज प्रकृति के मौसम में जिन परिवर्तनों को हमने अपने कर्मों से बुलाया है, वे ठीक हमारे मन से प्रतिदिन निकलने वाले विचारों के कर्मफल हैं। इसलिए सूत्र में कहा गया है: 'धर्मधातु के स्वभाव को देखना चाहिए; सब कुछ केवल मन से निर्मित है।'[85]

नमो अमिताभ बुद्ध! बुद्ध की शक्ति और अनुग्रह के लिए आभार! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ!

सामने बैलमुख और अश्वमुख दिखाई दे रहे हैं। पता नहीं वे कहाँ जा रहे हैं? चलकर उनका अभिवादन करती हूँ!

"अमिताभ बुद्ध! बैलमुख और अश्वमुख जी, कृपया बताइए, आप दोनों कहाँ जाने वाले हैं?"

बैलमुख भैया ने कहा: "ओह! आ यू, आप आ गईं। क्या 《परलोक के अटल विधान》 लिखकर पूरा कर लिया?"

"मुझे लज्जा आ रही है! मुझे और अधिक परिश्रम करना होगा। जितनी जल्दी हो सके इसे पूरा करूँगी। आप दोनों की चिंता और स्नेह के लिए आभार!

हर बार जब आप दोनों से मिलती हूँ, आप बहुत व्यस्त रहते हैं। मैं पूछना चाहती हूँ, क्या सामान्यतः आपको काम का तनाव होता है? यदि गलती से किसी दूसरे व्यक्ति को पकड़ लें, तो क्या परलोक के अधिपति यमराज आपको पद से हटा देंगे? आप दोनों हमेशा इतने कठोर और भयानक क्यों दिखते हैं? थोड़ा मुस्कराते क्यों नहीं? विशेषज्ञ कहते हैं कि मन को हमेशा प्रसन्न रखने से शरीर स्वस्थ रहता है और तनाव भी घट सकता है!"

बैलमुख भैया ने कहा: "हम बैलमुख और अश्वमुख परलोक के अग्रिम पंक्ति के कर्मचारी हैं। प्रतिदिन हमें परलोक से जारी किए गए मनुष्यों की आयु पूरी होने के

सूचना-पत्रों का एक बड़ा ढेर मिलता है। यही 《परलोक का आत्मिक सत्ता संबंधी आधिकारिक पत्र》 है, जिसे संक्षेप में परलोक-पत्र कहते हैं।

《परलोक का आत्मिक सत्ता संबंधी आधिकारिक पत्र》 दो रंगों का होता है: एक हल्का पीला और दूसरा गहरा लाल। हल्के पीले परलोक-पत्र को परलोक के सत्कर्म-पुरस्कार विभाग और दुष्कर्म-दंड विभाग के अधिकारी हाथ में लेकर जीवितों के संसार में आते हैं और मृत आत्माओं को परलोक में प्रवेश कराने के लिए लेने जाते हैं। केवल गहरे लाल परलोक-पत्र ही हम बैलमुख और अश्वमुख के हाथों में होते हैं।

हल्का पीला परलोक-पत्र दर्शाता है कि जिस मनुष्य की आयु पूरी हुई है, उसके सत्कर्म अधिक प्रबल हैं। गहरा लाल परलोक-पत्र दर्शाता है कि उसके दुष्कर्म अधिक प्रबल हैं और उसे तरह-तरह के नरकों में गिरकर दंड भोगना होगा।

《परलोक का आत्मिक सत्ता संबंधी आधिकारिक पत्र》 में यह लिखा होता है: जीवित संसार के अमुक व्यक्ति की आयु अमुक स्थान पर वर्ष XX, माह XX, दिनांक XX को, X बजे X मिनट X सेकंड पर पूरी होगी। किस घटना के कारण उसकी आयु पूरी होगी, इसका भी विस्तृत विवरण होता है। हम ठीक उसी समय और स्थान पर जाकर आत्मिक सत्ता को सीधे पकड़कर दंड भोगने के लिए परलोक ले आते हैं। हठी आत्मिक सत्ताओं के साथ हम बहुत कठोरता से पेश आते हैं और उन्हें धकेलकर परलोक में ले जाते हैं। हर व्यक्ति की आयु पूरी होने का स्थान और घटना अलग होती है, लेकिन अधिकांश लोग बीमारी के कारण अंतिम समय में अस्पताल में लेटे हुए मरते हैं। इसलिए अस्पताल बहुत से मनुष्यों की आयु पूरी होने का स्थान है और इसी कारण हम अक्सर आत्मिक सत्ताओं को पकड़कर न्याय के सामने लाने के लिए अस्पताल जाते हैं।

आम तौर पर हम गलत व्यक्ति को नहीं पकड़ते, क्योंकि 《परलोक का आत्मिक सत्ता संबंधी आधिकारिक पत्र》 में जीवित व्यक्ति की मृत्यु की प्रक्रिया पहले ही दिखाई देने लगती है। परलोक-पत्र मिलने पर हम उसे पहले एक बार देख लेते हैं। आयु पूरी होने से पहले हर मनुष्य के शरीर से एक प्रकार का प्रकाश निकलता रहता है, बस हर व्यक्ति के शरीर के प्रकाश की चमक अलग होती है। शरीर का प्रकाश जितना अधिक उज्ज्वल होता है, उतना ही यह दर्शाता है कि वह बहुत सदाचारी व्यक्ति है, यहाँ तक कि शुद्ध आचरण वाला साधक भी है। यदि मनुष्य के शरीर का प्रकाश पूरी तरह लुप्त हो जाए और वह नरक के काले प्रकाश से घिर जाए, तो वह ऐसी आत्मिक सत्ता है जिसे हमें, यानी बैलमुख और अश्वमुख को, पकड़कर परलोक लाना होता है। इन दोनों लक्षणों के प्रकट होने पर आम तौर पर गलती नहीं होती। यदि कभी सचमुच गलत आत्मिक सत्ता पकड़ ली जाए, तो हम उसे तुरंत मानव संसार में वापस भेज देते हैं और परलोक के अधिपति यमराज भी घटना के कारणों की विस्तृत जाँच करके उसका निपटारा करते हैं।

परलोक के अधिपति यमराज शीलों का उल्लंघन करने वाले प्राणियों को वास्तव में कठोर दंड देते हैं। लेकिन यदि हमने जानबूझकर गलती नहीं की हो, तो वे हमें अपनी भूल सुधारकर नया आरंभ करने का अवसर देते हैं। हर बात के पीछे अनेक कारण और परिणाम मिलकर काम करते हैं। स्वाभाविक है कि हम मामलों को बहुत सावधानी से सँभालते हैं। वरना यदि हम बार-बार गलत आत्मिक सत्ताओं को पकड़ लें, तो क्या हमारी व्यक्तिगत लापरवाही मानव संसार के परिवारों में त्रासदियाँ पैदा नहीं करेगी? परलोक के अधिपति यमराज हमें दंड न भी दें, तब भी हमें स्वयं कर्मफल का एक भारी ऋण उठाना पड़ेगा। आम तौर पर हम आत्मिक सत्ता की आयु पूरी होने से पहले ही घटनास्थल पर पहुँचकर वहाँ का वातावरण देखते हैं और उसकी पहचान संबंधी विवरण का मिलान करते हैं, ताकि गलत व्यक्ति न पकड़ा जाए।

आजकल हम प्रतिदिन जिन आयु पूरी कर चुकी आत्मिक सत्ताओं को पकड़ते हैं, उनमें लगभग सभी ऐसे मनुष्य होते हैं जिन्होंने यौन दुराचार संबंधी शील का उल्लंघन किया है। जिन आत्मिक सत्ताओं को हम पकड़कर परलोक लाते हैं, उन्होंने निश्चित रूप से जीवित रहते नरक में ले जाने वाले अनेक दुष्कर्म किए होते हैं। अब मानव संसार के अनगिनत लोगों में से अधिकांश ने यौन दुराचार का अपराध किया है। उनकी आत्मिक सत्ताओं का चुंबकीय क्षेत्र यौन दुराचार के भाव से बहुत घना होता है। उन्हें देखकर भला हम कैसे मुस्कुरा सकते हैं?

यौन दुराचार के ऐसे दुष्कर्म करने वाली कुछ अपराधी आत्माएँ आयु पूरी हो जाने के बाद भी यौन दुराचार के विचार फैलाती रहती हैं। यह आदत के स्वभाव बन जाने का परिणाम है। हमें कठोर और उग्र व्यवहार से ही इन अपराधी आत्माओं की चेतना वापस खींचकर उन्हें समझाना पड़ता है कि मानव संसार में उनके पुण्यफल समाप्त हो चुके हैं और अब उन्हें सच्चे मन से पश्चात्ताप करके नरक का दंड भोगना होगा।

वास्तव में हम भी मुस्कुराना चाहते हैं, लेकिन सचमुच मुस्कुरा नहीं पाते। जब तक 《परलोक के अटल विधान》 मानव संसार में बड़े पैमाने पर प्रसारित न हो, उसे पढ़कर हर व्यक्ति मानवीय संबंधों की मर्यादा न निभाए, नरक में ले जाने वाले दुष्कर्म करना न छोड़े और सारे नरक खाली न हो जाएँ, तब तक ऐसा नहीं हो सकता। उस समय हम भी अवश्य मुस्कुराएँगे।

अब बहुत अधिक मनुष्य नरक में गिर रहे हैं और हमारा काम बढ़ता ही जा रहा है। आ यू, आपको सचमुच जल्दी से 《परलोक के अटल विधान》 लिखकर पूरा करना चाहिए। आशा है कि यह सत्प्रेरक पुस्तक लोगों के मन को अच्छाई की ओर मोड़ेगी और मानव संसार में भविष्य में आने वाली तरह-तरह की विपत्तियों की दिशा बदल देगी।

अमिताभ बुद्ध! हमारे पास काम है, अवसर मिलने पर फिर बात करेंगे! आप आगे का भ्रमण जारी रखें, हम पहले चलते हैं। फिर मिलेंगे!”

अमिताभ बुद्ध! बैलमुख और अश्वमुख सचमुच कितनी तेज़ी से चलते हैं! अब तो वे दिखाई भी नहीं दे रहे। परलोक का हर कर्मचारी देखने में भले ही बहुत उग्र लगता हो, लेकिन सभी न्याय की भावना से भरे हैं और बहुत ज़िम्मेदार भी हैं। मुझे भी लौटकर अपना लेखन शीघ्र पूरा करने में जुटना चाहिए।

नमो अमिताभ बुद्ध! श्वेत कमल पर सवार होकर लौटती हूँ!

6/सदाचार और दुराचार प्राचीन काल से बर्फ़ और अंगारे जैसे रहे हैं; निंदा और प्रशंसा में आज सत्य और असत्य का निर्णय हो! — एक युग के राष्ट्रनायक सेनापति यूए फ़ेई से भेंट और बीते दिनों की घटनाओं का विस्तृत वृत्तांत

बुद्ध की शक्ति के अनुग्रह के लिए कृतज्ञ हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ!

अमिताभ बुद्ध! मैं, आ यू, हाथ जोड़कर परलोक के न्यायाधिकारी को प्रणाम करती हूँ!

“न्यायाधिकारी महोदय! आज मैं चाहती हूँ कि आप मुझे सेनापति यूए फ़ेई से मिलने ले जाएँ। मानव संसार में सेनापति के बारे में बहुत-सी कथाएँ प्रचलित हैं। बचपन में स्कूल में मैंने अपने शिक्षक को सेनापति यूए फ़ेई की प्रशंसा करते सुना था।”

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: “यूए फ़ेई परलोक के सेनापति हैं। आ यू, मेरे साथ आइए। मैं आपको सेनापति के निवास पर ले चलता हूँ, आप स्वयं सेनापति यूए फ़ेई से बातचीत कर लीजिए।”

पहुँच गए! मन में घबराहट भी है और प्रसन्नता भी! सामने मंदिर जैसी एक प्राचीन शैली की इमारत है। इमारत के बीचोंबीच लिखा है, “सेनापति यूए फ़ेई का निवास।” लाल मुख्य द्वार पर हथियार लिए चार यक्ष खड़े हैं। उनमें से एक ने परलोक के न्यायाधिकारी को देखते ही प्रणाम किया।

परलोक के न्यायाधिकारी ने यक्ष को निर्देश दिया कि वह सेनापति को सूचित करे: मानव संसार की एक बौद्ध गृहस्थ उपासिका, शांगगुआन युहुआ, परलोक द्वारा निर्दिष्ट 《परलोक के अटल विधान》 नामक पुस्तक लिखने वाली हैं। इसका उद्देश्य

मानव समाज के आचार-विचार को शुद्ध करना और आसक्ति में डूबकर शीलों का उल्लंघन करने वाले दुखी प्राणियों को उबारना है। इसके लिए उन्हें परलोक में कुछ सामग्री एकत्र करनी है और लोगों से बातचीत करनी है। अब शांगगुआन युहुआ सेनापति के दर्शन करके उनसे बातचीत करना चाहती हैं, अतः कृपया सूचना पहुँचा दें।

वह यक्ष तुरंत आगे बढ़कर सेनापति के निवास के भीतर सूचना देने चला गया। एक दूसरे यक्ष ने भी हमें निवास के सामने वाले कक्ष में ले जाकर बैठाया और थोड़ी देर चाय पीते हुए प्रतीक्षा करने की व्यवस्था की। इस सामने वाले कक्ष में एक दरवाज़ा था जो सीधे भीतर जाता था। हम बैठकर प्रतीक्षा करने लगे।

यहाँ का वातावरण नरक जैसा नहीं है; किसी अधिकारी के निवास जैसा लगता है। ड्यूटी पर तैनात यक्ष गश्त लगा रहे हैं। अभी द्वार पर मिला यक्ष बाहर आया। उसने बताया कि कुछ देर बाद सेनापति की बैठक है और उससे पहले उनके पास हमसे मिलने के लिए थोड़ा समय है। फिर यक्ष हमें भीतर वाले कक्ष में ले गया।

यह भीतरी कक्ष सामने वाले कक्ष से बहुत बड़ा है। उसके बीचोंबीच चार बड़े चीनी अक्षरों में लिखा है, “पूर्ण निष्ठा से देश की सेवा।” ये चार बड़े अक्षर अर्धप्रवाही सुलेख में लिखे प्रतीत होते हैं। उनसे न्याय की रक्षा करने वाली एक आभा और चुंबकीय क्षेत्र निकलता है। उन्हें देखकर लगता है मानो वे उछल रहे हों, गति और न्याय की भावना से भरे हों—मन भावविह्वल हो उठता है! बड़े कक्ष के बीचोंबीच कार्यालय की एक मेज़ है और सेनापति वहीं बैठे हैं। मैंने हाथ जोड़कर सेनापति यूए फ़ेई को प्रणाम किया!

मैं, साधारण प्रजा की स्त्री शांगगुआन युहुआ, सेनापति को प्रणाम करती हूँ!

सेनापति यूए फ़ेई: “औपचारिक प्रणाम रहने दीजिए! शांगगुआन युहुआ, आपको संकोच करने की आवश्यकता नहीं है। उठिए! जो कहना चाहती हैं, निःसंकोच सीधे कहिए।”

सेनापति यूए फ़ेई का रंग कुछ साँवला है और चेहरा बहुत गंभीर है, लेकिन वे परलोक के अनेक यमराजों जितने उग्र नहीं दिखते। उनमें एक प्रकार की गंभीरता और भरपूर न्यायभाव महसूस होता है। सेनापति ने परलोक के अधिकारी की धूसर रंग की पोशाक पहन रखी है।

सेनापति यूए फ़ेई: "शांगगुआन युहुआ, आपको यह 《परलोक के अटल विधान》 अच्छी तरह लिखनी चाहिए, ताकि मानव संसार के प्राणी जान सकें कि नरक में ले जाने वाले दुष्कर्म करने पर निश्चित ही वहाँ गिरकर असीम और अपार पीड़ा का कर्मफल भोगना पड़ता है। वहाँ गिरना आसान है, लेकिन बाहर निकलना बहुत, बहुत कठिन है। क्या आप मुझसे कुछ प्रश्न पूछना चाहती हैं?"

आ यू: "जी हाँ, सेनापति! मानव संसार में आपके बारे में बहुत-सी कथाएँ बची हुई हैं। उदाहरण के लिए, आपकी मृत्यु के लिए कौन ज़िम्मेदार था? अंततः छिन हुई ने आपकी जान ली थी या सम्राट ने? और अब आप उन दिनों अपने मारे जाने की घटना को किस दृष्टि से देखते हैं, उसके बारे में क्या सोचते हैं? जन-जन में लोकप्रिय और युगों से गाया जाता रहा 《मान जियांग होंग》 गीत क्या वास्तव में आपकी रचना है? यह भी कहा जाता है कि आप तीन राज्यों के काल के झांग फ़ेई के पुनर्जन्म थे। क्या ऐसा हुआ था? मैं आपसे ये प्रश्न पूछना चाहती हूँ। और अब आप परलोक में सेनापति हैं, तो छिन हुई कहाँ है? कृपया मुझ सामान्य स्त्री की शंकाएँ दूर करने का कष्ट करें।"

सेनापति यूए फ़ेई: "जीवित रहते वास्तव में छिन हुई ने ही मेरी जान ली थी। उस समय छिन हुई लगातार मुझसे ईर्ष्या करता था। आरंभ में उसे मुझसे केवल ईर्ष्या थी। वह इस बात से ईर्ष्या करता था कि सम्राट मेरी देशभक्ति की सराहना करते थे। इसलिए वह अक्सर सम्राट के सामने कुछ ऐसी बातें कहता या ऐसे काम करता था जिनसे मेरी युद्ध-योजनाओं में बाधा आए। उसने युद्ध आरंभ होने से ठीक

पहले भी कई बार मेरी युद्ध-योजनाओं के विरोध में सुझाव दिए, लेकिन बार-बार प्रयास करने पर भी सफल नहीं हुआ।

उस समय मैंने नहीं सोचा था कि वह मेरी हत्या का विचार करेगा। मैं बस यही सोचता था कि छिन हुई के मन में ईर्ष्या है और काम करने का उसका ढंग मुझसे कुछ अलग है। काम के दौरान निजी विचारों में अंतर के कारण लोगों में टकराव हो ही जाता है। मुझे लगता था कि वास्तव में वह भी बस कुछ ऐसा कर दिखाना चाहता था जिससे सम्राट उसे विशेष सम्मान की दृष्टि से देखें।

अब देखने पर लगता है कि उस समय छिन हुई के बारे में मेरा आकलन सचमुच गलत था। मैं हमेशा यही समझता रहा कि उसके काम करने का ढंग मुझसे बस थोड़ा अलग है। परिणाम यह हुआ कि मैंने छिन हुई से सावधान रहने पर कोई खास ध्यान नहीं दिया। मैं पूरे मन से केवल सच्ची निष्ठा के साथ देश की सेवा करने की सोचता रहा।

मैं सोचता था कि लोगों के काम करने के ढंग अलग होते हैं; यदि वे एक-दूसरे को थोड़ा सहन करें और एक-दूसरे के अनुसार थोड़ा ढल जाएँ, तो बात बीत जाती है। मेरा ध्यान व्यापक स्थिति पर अधिक रहता था—घर और देश की रक्षा कैसे की जाए? व्यक्तिगत रंजिशों और संघर्षों को मन में रखना बिल्कुल सार्थक नहीं था, न ही छोटी-छोटी बातों पर उससे उलझना ज़रूरी था। मेरा हृदय पूरी तरह सच्चा और निष्ठावान था; मुझे किसी बात की सफ़ाई देने की आवश्यकता नहीं थी। पुरुष को अपने वास्तविक कर्मों से अपनी निष्कलंकता सिद्ध करनी चाहिए।

जहाँ तक उस समय मेरे मारे जाने की बात है, मेरे मन में कोई द्वेष नहीं है! विजय और पराजय सैनिक जीवन की सामान्य बातें हैं। आज मैं जीतता हूँ, तो कल हारने पर मुझे मृत्यु का सामना करना ही पड़ेगा। यह कभी भी हो सकता है। वह क्षण कब आता है, यह महत्वपूर्ण नहीं है। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि मेरा बलिदान सार्थक हो और मेरी मृत्यु देश को लज्जित न करे। उस वर्ष मुझे झूठे आरोप लगाकर मार दिया

गया था, फिर भी मैंने मन से आदेश मानकर मृत्यु स्वीकार की थी। मृत्यु से मुझे बिल्कुल भय नहीं था।

मृत्यु से पहले भी मेरे मन में माँ की वह सीख बनी हुई थी कि पूर्ण निष्ठा से देश की सेवा करनी चाहिए। इस बात का विचार आते ही कितनी आहें उठती थीं! मैं सोचता था कि पुत्र होकर भी मैं अभी माँ के पालन-पोषण का ऋण नहीं चुका पाया, न ही पूर्ण निष्ठा से देश की सेवा करने का अपना दायित्व पूरा कर पाया। देश अब एक और ऐसे योद्धा को खोने वाला था जो सच्चे मन से घर और देश की रक्षा करता था। मेरा अंतिम विचार यह था कि यदि अगला जन्म हुआ, तो मैं पूर्ण निष्ठा से देश की सेवा का दायित्व और अच्छी तरह निभाऊँगा। इसके बाद सम्राट के आदेश से मुझे मृत्युदंड दे दिया गया! मुझे किसी से घृणा नहीं थी—न छिन हुई से, जिसने चुगली और षड्यंत्र के द्वारा मेरी जान ली, न सम्राट से, जिन्होंने विवेकहीन होकर एक निष्ठावान और सज्जन व्यक्ति को मृत्युदंड दिया। मेरे लिए ये बातें अब महत्वपूर्ण नहीं रह गई थीं।

मृत्यु के बाद जब मैं परलोक के न्याय-सभागृह पहुँचा, तो परलोक के अधिपति यमराज ने देखा कि मारे जाने पर भी मेरे मन में न द्वेष था, न बदला लेने की इच्छा, और अंतिम समय तक मेरे हृदय में घर और देश की रक्षा का भाव बना रहा। इसलिए उन्होंने मुझे परलोक का सेनापति नियुक्त किया। अब मैं परलोक में सैन्य मामलों का प्रमुख हूँ। मानव संसार में कोई युद्ध होने वाला हो, तो हम परलोक में तीन महीने पहले ही युद्ध संबंधी व्यवस्था कर देते हैं।

क्योंकि मानव संसार का हर युद्ध वास्तव में मनुष्यों द्वारा अतीत में जीवों की हत्या करके अर्जित किए गए कुछ सामूहिक और निश्चित कर्मों का परिणाम भी होता है। सामान्य परिस्थितियों में निश्चित कर्म बदले नहीं जा सकते। यदि उन्हें वास्तव में बदलना हो, तो उनके रूपांतरण के लिए अत्यंत प्रबल महान सत्कर्म चाहिए। आम तौर पर बुद्ध की शक्ति के साथ अत्यंत प्रबल महान सत्कर्मों की शक्ति जुड़ने पर ही निश्चित कर्म को बदलने का अवसर मिलता है। यह परिवर्तन भी केवल निश्चित कर्म

की हानि पहुँचाने वाली शक्ति को न्यूनतम कर देता है। आज लोगों के मन सदाचारी नहीं हैं, इसलिए निश्चित कर्म को बदलना बहुत कठिन है। इसीलिए 《परलोक के अटल विधान》 का प्रकाशित होना बहुत अच्छा है; यह लोगों के मन को सदाचार की ओर प्रेरित कर सकती है।

मानव संसार में युद्ध होने पर परलोक की सेना को युद्ध के तरह-तरह के विवरणों की व्यवस्था पहले से करनी पड़ती है। उदाहरण के लिए, कौन जीतेगा और कौन हारेगा? कितने लोग घायल होंगे और कितने मरेंगे? हम इन सभी बातों को पिछले जन्मों के कर्मफल के अनुसार व्यवस्थित करते हैं। अर्थात मानव संसार में युद्ध आरंभ भी नहीं हुआ होता कि परलोक में उसके परिणाम पहले ही तय करके जारी कर दिए जाते हैं। मेरी ज़िम्मेदारी सेना की व्यवस्था करना और युद्ध होने पर तरह-तरह के कार्य सँभालना है।

परलोक का युद्ध मानव संसार के युद्ध से अलग होता है। मानव संसार में युद्ध होने पर मनुष्यों के शरीर रक्त-मांस के होते हैं; घायल होने पर वे जीवन भर के लिए विकलांग हो सकते हैं, यहाँ तक कि मर भी सकते हैं। परलोक का युद्ध आध्यात्मिक शक्ति और मनोबल का युद्ध होता है। वह बिल्कुल अलग है।

छिन हुई निष्ठावान और सज्जन लोगों को सताकर मारने, भ्रष्टाचार करने तथा अन्य अपराधों के कारण अभी ताइशान नरक में दंड भोग रहा है। ताइशान नरक की सज़ा पूरी होने के बाद उसे जीभ उखाड़ने वाले नरक, आँखों में तीर मारने वाले नरक और अन्य नरकों में भी दंड भोगना होगा। छिन हुई ने जीवित रहते बहुत गंभीर दुष्कर्म किए थे। वह नरक से निकलकर स्वतंत्र होगा—मेरा विचार है कि वह बहुत दूर के भविष्य की बात है।

फिर भी मैं चाहता हूँ कि वह जल्द ही नरक के दुख से मुक्त हो सके। आखिर जीवित रहते हम दोनों एक ही समय में एक ही सम्राट की सेवा करते थे और एक ही देश की भूमि पर रहते थे। बस हम दोनों के काम और पद अलग थे; मेरी दृष्टि में

मूलतः कोई अंतर नहीं था। हर व्यक्ति अपना-अपना दायित्व ठीक से निभाए, देश और राज्य की रक्षा करे और जनता का जीवन स्थिर बनाए—बस यही पर्याप्त है। व्यक्तिगत जीवन-मरण और सुख-चैन का कोई महत्व नहीं है। खाने के लिए भी तीन समय का भोजन और सोने के लिए भी एक बिस्तर ही चाहिए। बहुत अधिक पाने के पीछे भागने की आवश्यकता नहीं है; व्यापक जनसमुदाय का हित कर सकें, इतना ही पर्याप्त है।

मनुष्य के मन के विचार कितने महत्वपूर्ण हैं! अब मैं और छिन हुई दोनों ही परलोक में हैं, लेकिन हमारी दशाओं में आकाश-पाताल का अंतर है। मैं प्रतिदिन अब भी तरह-तरह की सैन्य व्यवस्थाओं में व्यस्त रहता हूँ। मानव संसार में मेरे साथ रहे कुछ अधीनस्थ भी अपनी आयु पूरी होने के बाद अब परलोक में मेरे साथ काम कर रहे हैं। इसके विपरीत, छिन हुई भी परलोक में ही है, लेकिन उसे नरक के असीम, अपार और लंबे कल्पों तक चलने वाले पीड़ादायक दंड सहने पड़ रहे हैं।

मैं संसार के लोगों को समझाना चाहता हूँ: जो अधिकारी हैं, वे कभी रिश्वत लेकर कानून को न तोड़ें और सार्वजनिक अधिकार का उपयोग निजी लाभ के लिए न करें। यदि वे पूरी निष्ठा से अपना कर्तव्य न निभाएँ, देश को धोखा दें, जनता का धन हड़पें, सामान्य लोगों को तिनकों जैसा तुच्छ समझें और अपने देशवासियों के सुख के लिए काम न करें, तो जीवित रहते राजकीय कानून से बच भी जाएँ, मृत्यु के बाद परलोक के विधान की कठोरता से बचना कठिन होगा! यदि वे पूरी निष्ठा से देश की सेवा करें, जनता से अपने शिशु जैसा प्रेम करें, हर बात में जनता के कल्याण को पहले रखें, देश की शांति और स्थिरता का भारी दायित्व उठाएँ, अपने शासक को धोखा न दें, एकांत में भी छल न करें और सदाचरण को दृढ़ता से अपनाएँ, तो यह जीवन समाप्त होने पर उनकी निष्ठावान आत्मा अवश्य सीधे देवलोक में उठेगी और हज़ारों-लाखों वर्षों तक आनंद भोगेगी!

आपने 《मान जियांग होंग》 गीत के बारे में पूछा था। वह वास्तव में उसी समय अपने हृदय के भावों से प्रेरित होकर मेरी रची हुई कृति है।[86] जहाँ तक इस कथा का संबंध है कि मैं तीन राज्यों के काल के झांग फ़ेई का पुनर्जन्म हूँ, वह केवल एक कथा है, सत्य नहीं। मुझमें भला झांग फ़ेई जैसा पराक्रम कहाँ!

मैं आपको बताता हूँ कि परलोक के विधान पूर्णतः निष्पक्ष और स्पष्ट हैं। उनमें तनिक भी भूल या चूक नहीं होती, जबकि मानव संसार में बहुत-से ऐसे अन्यायपूर्ण, मनगढ़ंत और गलत निर्णय वाले मामले हैं जिनकी सच्चाई अस्पष्ट रहती है। इसके अतिरिक्त, परलोक में मानव संसार जैसी भ्रष्टाचार-निरोधक संस्था नहीं है। परलोक के सभी अधिकारी सार्वजनिक कर्तव्य और कानून का पालन करते हैं; वहाँ कोई भी भ्रष्ट अधिकारी नहीं होता। परलोक आने पर सब समान होते हैं। मानव संसार के सभी अन्यायपूर्ण मामलों की सच्चाई परलोक के दुष्कर्म-दर्पण मंच के सामने एक-एक करके पूरी तरह प्रकट हो जाती है। परलोक के कठोर विधान केवल दुष्कर्म करने वालों को कसकर बाँध सकते हैं; महान सदाचारी लोगों को वे बंधन में नहीं डाल सकते।

शांगगुआन युहुआ! आपको 《परलोक के अटल विधान》 बहुत ध्यान से लिखनी चाहिए, क्योंकि आजकल नरक में गिरने वाले प्राणी सचमुच बहुत, बहुत अधिक हैं! आशा है कि यह पुस्तक जल्द से जल्द छपेगी, ताकि जनता इसे पढ़कर बुराई छोड़ अच्छाई की ओर मुड़े, स्वयं को सुधारे और दूसरों को भी लाभ पहुँचाए। ऐसा होने पर हवाएँ अनुकूल चलेंगी, वर्षा समय पर होगी और देश में युद्ध नहीं होगा।

अच्छा! आज के लिए इतना ही। मेरे पास अभी राजकीय काम हैं। और प्रश्न हों, तो अगली बार फिर आइए!”

मैं, आ यू, हाथ जोड़कर सेनापति यूए फ़ेई के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ!

परलोक के न्यायाधिकारी का आभार! सभी यक्ष अंगरक्षकों का आभार!

श्वेत कमल पर सवार होकर लौटती हूँ।

परिशिष्ट:

यूए होउ की पाषाण प्रतिमा को देखकर — लिउ श्येनलुन, सोंग राजवंश

बीते वर्षों में युद्ध का नगाड़ा बजाते हुए आपने सीमांत पर सेवा की, आप जैसे राजपुरुष के जीवन से देश का उत्थान और पतन जुड़ा था।

चारों समुद्रों के बीच कितने लोग वूमू को याद करते हैं?[87] सौ वर्ष बाद आज उनकी आकृति के दर्शन हुए।

कलम की नोक पर पवन और चाँदनी के तीन हज़ार अक्षर, मुख की वाणी में हिम और पाले जैसे कठोर एक लाख सैनिक।

स्वर्ग भी जानता है कि मनुष्य के हृदय में अधूरा खेद रह गया है, वह अवश्य ही उसे राज्य के पुनरुत्थान का दायित्व सौंपेगा।

यूए वूमू की जीवनी पढ़कर — पान यिन, युआन राजवंश

दस हज़ार ली तक तैरते बादल दृष्टि में अँधेरा भरते हैं, हज़ारों पर्वतों पर ढलता सूर्य गहरे धुँधलके में डूब रहा है।

सत्तारूढ़ दरबार ने स्वयं ही राज्य के पुनरुत्थान का संकल्प ढीला कर दिया, सीमा पार गए महान सेनापति की लगन व्यर्थ हुई।

सेवक जीवन भर उस वैर का प्रतिशोध न ले सका, कुटिल दुष्टों ने संकट रचने की कितनी गहरी चाल चली।

बस एक पेटी में रखी अटूट निष्ठा की जीवनी बची है, आँसू पोंछते हुए बार-बार पढ़ता हूँ, स्वयं को रोक नहीं पाता।

《मान जियांग होंग》 — सोंग सम्राट गाओज़ोंग द्वारा यूए वूमू को दिए गए हस्तलिखित आदेश की स्याही-प्रति पर; वेन झेंगमिंग, मिंग राजवंश[88]

खंडित शिलालेख की धूल पोंछता हूँ, फ़ेई को दिए आदेश के अक्षर, धुँधले-से अब भी पढ़े जा सकते हैं।

हाय, आरंभ में फ़ेई पर कितना भारी भरोसा था, और बाद में उनके प्रति कैसी क्रूरता!

क्या सचमुच कार्य सिद्ध होते ही उन्हें मर जाना चाहिए था? हाय, सब घट जाने के बाद शब्द उस हानि की भरपाई नहीं कर सकते।

सर्वथा निर्दोष पर चला वह मुकदमा, कितना घृणित, और उससे भी अधिक करुण— फ़ेंगबो का कारावास!

क्या मध्यभूमि के सिकुड़ जाने की चिंता न थी? क्या हुई और छिन के अपमान पर दुख न था?

लेकिन यदि हुई और छिन वापस आ जाते, तो स्वयं तुम्हारा स्थान कहाँ रहता!

हज़ार वर्षों तक दक्षिण की ओर पलायन की भूल की चर्चा छोड़ो, उस समय तो स्वयं मध्यभूमि की पुनर्प्राप्ति का भय था।

हँसी आती है—एक तुच्छ हुई अकेला भला क्या कर सकता था? उसने तो तुम्हारी इच्छा ही पूरी की।

यूए वूमू के स्मृति-मंदिर में दर्शन के बाद के भाव — बाझी तोउतुओ, छिंग राजवंश

दक्षिण जाकर एक कोने की सुरक्षा में सिमटा राज्य पहले ही खो चुका था, मंदिर और समाधि के वृक्ष अब भी घने हरे हैं।

असाधारण निष्ठा के बिना किसी पुरुष का नाम अमर होना कठिन है, जिस भूमि पर निष्ठावान आत्मा हो, वहाँ की घास भी सुगंधित होती है।

हवा और बारिश में झील और पर्वत अब भी उस खेद को अनुभव करते हैं, आते-जाते लकड़हारे और चरवाहे भी उदास हैं।

यदि दोनों सम्राट जीवित रहते लौट आए होते, तो ढलते सूर्य के सामने कौन रक्तभरे आँसू बहाता?

सेनापति यूए के शोक में तीन चतुष्पदियाँ — म्याओझेंग

देश की सेवा को समर्पित निष्ठावान हृदय और नौ ची लंबा भाला, पुराने रणक्षेत्र में रक्त से रंगा युद्ध-वस्त्र;

एक सेनापति की सिद्ध विजय, युगों तक बहते आँसू, बारह स्वर्ण-पट्टों ने निष्ठावान और सज्जन वीर को दफ़ना दिया।

पीठ पर चटख लाल रंग में गुदे 'पूर्ण निष्ठा' के अक्षर, झोउ तोंग से सीखी विलो-पत्ती भेदने वाली तीरंदाज़ी;

निष्ठा और मातृ-पितृभक्ति, दोनों निभाकर तुच्छ स्वार्थ त्याग दिया, जो पुरुष इस ऊँचाई तक पहुँचे, वही वीर है।

देश को पुनः प्राप्त करके दोनों सम्राटों का स्वागत करूँ, यह महान संकल्प प्रकट हुआ तो दस हज़ार योद्धा चकित हुए;

सरसराती वर्षा थम गई, आँखें उठाकर दूर देखता हूँ, इस क्षण मेरे मन के भाव कौन जानता है?

7/मेंग पो के सूप का एक प्याला, उपकार और वैर दोनों भुला दे! — यूवांग मंच का प्रत्यक्ष भ्रमण

बुद्ध की शक्ति के अनुग्रह के लिए कृतज्ञ हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ!

अमिताभ बुद्ध! मैं, आ यू, हाथ जोड़कर परलोक के न्यायाधिकारी को प्रणाम करती हूँ!

मैंने परलोक के न्यायाधिकारी से पूछा: “क्या परलोक के सभी प्राणियों को पुनर्जन्म लेने से पहले मेंग पो का सूप पीना पड़ता है?”

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: “मेंग पो का सूप केवल परलोक में मिलता है। देवलोक, पश्चिमी सुखावती लोक या किसी भी अन्य दिशा के बुद्ध-क्षेत्र की शुद्ध भूमि में मेंग पो के सूप जैसी कोई बात नहीं है। जिन सभी प्राणियों की आत्माएँ परलोक लौटती हैं, उन्हें पुनर्जन्म लेने से पहले मेंग पो का सूप पीना पड़ता है। इसका काम उन्हें पिछला जन्म भुलाना है, ताकि वे अपनी कर्मशक्ति के अनुसार नए परिजनों के साथ नया जीवन बिताएँ। यदि मनुष्य मेंग पो का सूप पीकर अतीत की सारी बातें पूरी तरह न भुलाए, तो उसका मूल जन्मजात स्वभाव बुद्धिमान होता है और उसमें तरह-तरह की गहन विश्लेषण-क्षमताएँ होती हैं। पुनर्जन्म लेने पर कर्मशक्ति की बाधा के कारण गर्भ में प्रवेश करते समय विस्मृति हो जाने के बावजूद, कुछ विशेष परिस्थितियों और कारण-प्रत्ययों के प्रभाव से उसे पिछले जीवन के कुछ अंश याद आ सकते हैं। देवी मेंग पो के परलोक में काम करने आने से पहले यहाँ मेंग पो का सूप नहीं था।

प्राचीन काल के मनुष्य स्वभाव से भले थे। आरंभ में मानव संसार में आने वाले मनुष्यों के पूर्वज रूपधातु के आभास्वर देवलोक के देव थे। वे अपनी अलौकिक शक्ति से उड़कर पृथ्वी पर घूमने आए थे। उस समय पृथ्वी के पर्वत सुंदर थे, जल निर्मल था और हवा स्वच्छ थी। आज की तरह हर जगह वायु प्रदूषण और औद्योगिक रासायनिक प्रदूषण नहीं था। और मनुष्य के मन-स्वभाव को सबसे अधिक बिगाड़ने वाला प्रदूषण विभिन्न माध्यमों से आने वाली गलत और बुरी सूचनाओं का है।

उस समय धरती पर कुछ पृथ्वी-सार उगता था,[89] जो अत्यंत ताज़े और चारों ओर फल-सुगंध फैलाने वाले फलों के आकार का था। यह पृथ्वी-सार कुछ हद तक देवलोक के फलों जैसा भी था। देव इन फलों की ओर आकर्षित हो गए। उस समय पृथ्वी पर कोई मनुष्य नहीं था। देव पाँच शीलों का पालन करते थे और चोरी से विरत रहने का शील नहीं तोड़ते थे। चूँकि पृथ्वी-सार किसी व्यक्ति का नहीं था, बल्कि धरती का था, इसलिए देवों ने उसे चखना शुरू किया। उन्हें वह बहुत स्वादिष्ट लगा और सबने खूब खाया।

जब देवों ने पेट भरकर पृथ्वी-सार खा लिया, तो पाया कि पृथ्वी के स्थूल पदार्थ खाने के कारण उनकी जन्मजात आध्यात्मिक ज्योति मंद पड़ गई है। उनके शरीर भारी लगने लगे और वे इच्छानुसार उड़ने की अलौकिक क्षमता पूरी तरह खो बैठे। अंततः वे उड़कर आभास्वर देवलोक लौट नहीं सके। बाद में उनके पास पृथ्वी पर खेती करने और संतान उत्पन्न करने के अलावा कोई उपाय नहीं रहा। वे यहीं बसकर शांति से जीवन और काम करने लगे और मनुष्यों के पूर्वज बने।

पृथ्वी-सार धरती का था। धरती से उत्पन्न पदार्थ खाकर देवों ने धरती के साथ एक अटूट संबंध बाँध लिया। इसलिए अब उन्हें पाँव धरती पर रखकर चलना पड़ा और वे उड़ नहीं सके। यद्यपि देव इच्छानुसार उड़ने की अलौकिक शक्ति खोकर देवलोक नहीं लौट सके, फिर भी उनके पास अलौकिक शक्तियाँ थीं; उन्होंने केवल उड़ने की क्षमता खोई थी।

सभी देव पाँच शीलों और दस कुशल कर्मों का पालन करके देवलोक में पहुँचे थे। उस समय पृथ्वी पर रहने आए देवों ने शील-पालन का अपना संकल्प बनाए रखा। वे कर्मफल में विश्वास करते थे और भले तथा निष्कपट थे। सब आपस में मेल-जोल से रहते थे, चारों ओर शांति थी और दुष्कर्म या शील-उल्लंघन का कोई आचरण नहीं था। लेकिन यह स्थिति अधिक समय तक नहीं रही। देवों की संतानों का पृथ्वी पर रहने का समय जितना बढ़ा, उनकी आध्यात्मिक ज्योति भी धीरे-धीरे उतनी ही अधिक घटती गई। पृथ्वी पर प्रदूषण शुरू हुआ और उसके आरंभिक सुंदर पर्वतों, निर्मल जल और स्वच्छ हवा की दशा भी बिगड़ने लगी। फिर भी उस समय पृथ्वी के मनुष्य आज के हम लोगों से बहुत अच्छे थे। मनुष्यों की पीढ़ियाँ बढ़ती गईं, उनकी जन्मजात आध्यात्मिक ज्योति क्षीण होती गई और उनके पुण्यफल लगातार घटते गए। लोग शीलों का पालन छोड़कर धीरे-धीरे स्वार्थी होने लगे। छोटी विपत्तियाँ और छोटी बीमारियाँ भी एक के बाद एक आने लगीं और दुष्कर्मों के साथ-साथ नरक भी धीरे-धीरे प्रकट होने लगे।

प्राचीन समय में नरक बहुत छोटा था और उसमें गिरने वाले लोग भी बहुत कम थे। किसी को दंड मिलता भी था, तो केवल कुछ वर्षों का। कुछ लोग नरक में कुछ वर्ष दंड भुगतकर मनुष्यलोक में जन्म लेने के बाद अपनी गलतियाँ सुधार लेते थे और नया जीवन शुरू करते थे। बाद में नरक में गिरने वाले जीवित संसार के लोगों की संख्या बढ़ती गई और आज नरक पूरी तरह भर चुका है। अब नरक में गिरने वालों को सामान्यतः सौ वर्ष या उससे अधिक का दंड मिलता है; केवल कुछ वर्षों का दंड पाने वाला अब कोई नहीं है। यह लोगों के अनुचित आचरण और विचारों तथा कर्म और उसके फल की समझ के गंभीर अभाव का परिणाम है।”

परलोक के न्यायाधिकारी ने आगे कहा, “अभी बताया था कि आभास्वर देवलोक के देव पृथ्वी पर उतरे थे। पृथ्वी-सार खाने के कारण उन्होंने अपनी अलौकिक शक्ति खो दी और उड़कर देवलोक नहीं लौट सके। बुद्ध ने ‘शूरंगम सूत्र’

में उपदेश दिया है: 'जैसे मनुष्य तरह-तरह के अनाज खाता है, तो उसके पाँव धरती नहीं छोड़ते।'[90] इससे स्पष्ट है कि हममें से प्रत्येक को हर समय अपने रोज़मर्रा के आचरण और विचारों पर सावधानी से ध्यान देना चाहिए। एक भी विचार में सजगता चूकी, तो हम बाहरी मिथ्या परिस्थितियों के वश में आ जाते हैं। अलौकिक शक्तियों से स्वतंत्रतापूर्वक विचरण करने वाले आभास्वर देवलोक के देवों ने नवगठित पृथ्वी की सुंदरता देखी थी (रूप), इसलिए वे यहाँ घूमने के लिए उड़कर आए। उन्हें पृथ्वी-सार फलों जैसा ताज़ा और रसपूर्ण लगा, और उससे तरह-तरह की प्राकृतिक सुगंध भी निकल रही थी। वे उसकी सुगंध से आकर्षित हुए (गंध), फिर उसे खाने लगे (स्वाद) और ग्रहण करने लगे (स्पर्श)। उस समय देवों के मन में उसे खाने का विचार उठा। उस विचार का उठना ही एक ऐसा मिथ्या विचार था, जो मन की सुंदर प्रकृति में बाधा डालता है (मानसिक विषय)। यही मिथ्या विचार आगे अनेक प्रकार के बाहरी व्यवहारों और कर्मों का रूप लेता है।

यद्यपि देवों ने चोरी न करने के शील का उल्लंघन नहीं किया था, फिर भी धरती के साथ बने इस अटूट संबंध का ऋण चुकाने में कुछ समय लगना था। लेकिन ऋण चुकाने की इस अवधि में तरह-तरह की घटनाएँ लगातार घटती रहती हैं। यदि हर विचार में सम्यक् स्मृति बनाए न रखी जा सके, तो जीवन का स्तर लगातार गिरता जाएगा और अनेक प्रकार के दुःखद नरक-फल देने वाले दुष्कर्मों के बीज भी पड़ते जाएँगे।

मूलतः आभास्वर देवलोक के देव प्रकाश के पुंज थे। वे अलौकिक शक्ति से उड़ सकते थे और इच्छानुसार रूप बदल सकते थे। उनके पास जीवित संसार के मनुष्यों जैसा रक्त-मांस का भारी शरीर नहीं था। यह देवलोक का वह पुण्यफल था, जो उन्होंने पिछले जन्मों में लगन से साधना करके और निर्मल शीलों का पालन करके अर्जित किया था। लेकिन केवल पृथ्वी-सार चखने का एक विचार उठने के कारण

उनके जीवन की आध्यात्मिक ज्योति घट गई। उनके मिथ्या विचार और आसक्तियाँ बढ़ने के साथ उनकी अलौकिक शक्तियाँ भी धीरे-धीरे लुप्त होती गईं।

उस समय देवों की संतानें, अर्थात् आरंभिक मनुष्य, पिछले जन्मों के उपकार और वैर, प्रेम-संबंधों तथा जीवन की दूसरी ऐसी बातों को याद रखते थे। ये स्मृतियाँ मनुष्यलोक के सामान्य जीवन को प्रभावित करके उसमें अव्यवस्था पैदा करती थीं। लेकिन मेंग पो का सूप पीने के बाद वे कर्म के अनुसार जन्म-मरण के प्रवाह में आगे बढ़ते और पिछले जन्म के सभी लोगों तथा घटनाओं को भूल जाते थे। इससे वे अपने मन और स्वभाव को फिर से साध भी सकते थे।

मेंग पो के सूप में मनुष्यलोक के जीवन के पाँचों स्वाद होते हैं—मीठा, खट्टा, कड़वा, तीखा और नमकीन। ये पाँच स्वाद मनुष्यलोक में जन्म लेने के बाद के भाग्य का भी प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसमें मिठास, खटास, कड़वाहट और तीखापन, सब कुछ होता है। मेंग पो के सूप का हर प्याला देखने में एक जैसा लगता है। वास्तव में उसमें डाली गई सामग्रियों की मात्रा अलग-अलग होती है, हालाँकि सामग्री सबमें वही होती है। उदाहरण के लिए, कुछ प्राणियों का भाग्य अच्छा होता है, उनके पुण्यफल बड़े होते हैं, वे प्रतिष्ठित परिवारों में जन्म लेते हैं, धन-संपत्ति से संपन्न होते हैं, लोगों का सम्मान पाते हैं और स्वस्थ रहते हैं। ऐसे लोगों के लिए मेंग पो का सूप अधिक मीठा होता है। जिनके पुण्यफल कम होते हैं, उन्हें यह बहुत कड़वा और खट्टा लगता है। सामान्य पुण्यफल वाले लोगों को पाँचों स्वाद मिले-जुले लगते हैं और पीते समय प्यास बुझने का भी कुछ एहसास होता है। कर्मबल अलग-अलग होने के कारण हर प्राणी को मेंग पो का सूप पीने का अनुभव भी अलग होता है। मेंग पो देवी भी मनुष्यलोक से आई हैं, लेकिन वे नरक में नहीं गिरी थीं; देवराज ने उन्हें परलोक में पद संभालने के लिए भेजा था।

मनुष्यलोक में मेंग पो देवी बौद्ध धर्म की साधिका थीं। उन्होंने जीवन भर पवित्रता बनाए रखी और निर्मल ब्रह्मचर्य का अभ्यास किया। संसार में रहते समय उनका

लौकिक नाम मेंग पो था। वे जन्म से ही दयालु थीं और अपने आस-पास के गरीब तथा पीड़ित लोगों की उत्साहपूर्वक सहायता करती थीं। मेंग पो ने देखा कि मनुष्यलोक के प्राणी प्रेम और लगाव, परिवार के सदस्यों के बीच मतभेदों आदि के कारण बहुत दुःख से जी रहे थे। उस समय विशेष रूप से बहुत-सी स्त्रियाँ अत्यंत दुःखी जीवन जीती थीं। प्राचीन समय में स्त्रियों के लिए यह धारणा थी कि 'स्त्री का प्रतिभाहीन होना ही उसका गुण है।' स्त्रियों की भूमिका केवल वंश आगे बढ़ाने, संतान पैदा करने और पालने, पति की सहायता करने तथा बच्चों को शिक्षा देने तक सीमित थी। इसी कारण बहुत-सी स्त्रियाँ दुःख और विवशता में जीती थीं तथा अकेले दुखी होकर आँसू बहाती थीं। मेंग पो ने इन सबकी पीड़ा को मन में अनुभव किया और अपने से संबंध जुड़ने वाली कुछ दुःखी स्त्रियों की यथाशक्ति सहायता की। इसी से प्रेरित होकर उन्होंने संकल्प लिया कि वे सभी प्राणियों को पीड़ा भूलने में सहायता करेंगी, ताकि सभी अपना अतीत भुलाकर नए सिरे से जीवन जी सकें। उस समय उनके समझाने से सही मार्ग अपनाने वाले प्राणी बहुत बड़ी संख्या में थे। वे जगह-जगह लोगों को जीवहत्या छोड़ने, शाकाहार अपनाने, सूत्रों का पाठ करने और बुद्ध के नाम का स्मरण करने के लिए प्रेरित करती थीं।

उस समय मेंग पो सोचा करती थीं कि भविष्य में ऐसा कोई सूप हो, जो शरीर को तनिक भी हानि न पहुँचाए और जिसे पीकर मनुष्य अपने सारे दुःख भूल सके, तो कितना अच्छा होगा! उनकी आयु पूरी होने पर, जीवनकाल में संकटग्रस्त प्राणियों की सहायता करने और उन्हें धर्ममार्ग दिखाने के पुण्यबल से वे देवलोक पहुँचीं। देवराज ने मेंग पो को देवी का पद दिया। देवलोक में उनका अपना महल था, जहाँ वे तरह-तरह के दिव्य सुख भोगती थीं।

बाद में देवराज ने देखा कि मनुष्यलोक के प्राणियों का मन और स्वभाव भी बिगड़ने लगा था। कुछ लोग पुनर्जन्म लेने के बाद पिछले जन्म के लोगों, घटनाओं और वस्तुओं को याद रखते थे, जिससे मनुष्यलोक के जीवन की नैतिक व्यवस्था में

बाधाएँ पड़ने जैसी घटनाएँ समय-समय पर होती थीं। मेंग पो ने अपने जीवनकाल में प्राणियों को पीड़ा भूलने में सहायता देने का शुभ संकल्प लिया ही था। इसलिए इन परिस्थितियों के अवसर पर उनका शुभ संकल्प भी पूरा करने के लिए विशेष रूप से परलोक में 'यूवांग मंच' बनवाया गया और मेंग पो देवी को उसका प्रबंधन सौंपा गया। यूवांग मंच में विशेष रूप से मेंग पो के सूप का शोध और निर्माण होता है, जिसे शीघ्र ही जन्म लेने वाले प्राणी पीते हैं। वहाँ मेंग पो की आज्ञा का पालन करने के लिए प्रेत-प्रहरी, यक्ष आदि हैं। आ यू, मैं आपको एक विशेष रास्ते से वहाँ घुमाने ले चलूँगा; उससे दूरी बहुत कम पड़ेगी। यूवांग मंच परलोक के दसवें सभागार के पीछे स्थित है।"

मैंने कृतज्ञतापूर्वक कहा, "न्यायाधिकारी महोदय, आपको कष्ट दे रही हूँ!"

यह विशेष रास्ता सचमुच बहुत विशेष है। यहाँ नरक के दुःख से भरी चीख-पुकार की कोई आवाज़ सुनाई नहीं देती। लगता है ध्वनि रोकने की व्यवस्था बहुत अच्छी है। अब एक कमरा दिखाई दे रहा है। भीतर मेज़ें और बैठने के आसन हैं, लेकिन कोई व्यक्ति क्यों नहीं है?

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा, "यह बैठक कक्ष है। अभी सभी बाहर काम में व्यस्त हैं और कई दिनों तक कोई बैठक नहीं है। यदि बैठक होती, तो मैं आपको इस छोटे रास्ते से नहीं ला सकता था। ये सारी चीज़ें हम बैठकों में इस्तेमाल करते हैं। आपको 'परलोक के अटल विधान' लिखने का कार्य सौंपने से पहले हमने यहीं बैठक की थी। आ यू, मुझे भी यहीं परलोक द्वारा जारी आधिकारिक आदेश मिला था कि मैं आपके स्वागत और आपको परलोक का भ्रमण कराने की ज़िम्मेदारी लूँ तथा विशेष अनुमति से आपके सामने स्वर्गीय रहस्य खोलूँ, ताकि आप जीवित संसार में लौटकर परलोक में जो देखा-सुना है, उसे लिखें और लोगों को शुभ कर्म करने तथा सद्गुण संचित करने के लिए प्रेरित करें।"

ओह! तो यह बात है! आगे भी गलियारा था। हम बहुत तेज़ी से उसे पार कर गए।

अब 'यूवांग मंच' लिखे तीन बड़े चीनी अक्षर दिखाई दे रहे हैं। यूवांग मंच का परिसर भी बहुत बड़ा है! यह कुछ-कुछ मनुष्यलोक की जड़ी-बूटियों की शीतल चाय की किसी अत्यंत विशाल दुकान जैसा लगता है। यहाँ तीन अलग-अलग रंगों के बड़े पात्र हैं। न्यायाधिकारी ने बताया कि पारदर्शी पात्र में अधिक मीठा सूप है, अर्थात् यह सबसे बड़े पुण्यफल वालों के लिए है। सफ़ेद पात्र का सूप सामान्य पुण्यफल वाले प्राणियों के लिए और काले पात्र का सूप सबसे कम पुण्यफल वाले प्राणियों के लिए है। मेंग पो का सूप बाँटने वाले तीन प्रकार के प्रेत-प्रहरियों के वस्त्रों के रंग भी इन्हीं के अनुरूप हैं। पारदर्शी पात्र से सूप बाँटने वाले प्रेत-प्रहरी पारदर्शी वस्त्र पहने हैं, सफ़ेद पात्र से बाँटने वाले सफ़ेद वस्त्र पहने हैं और काले पात्र से बाँटने वाले काले वस्त्र पहने हैं।

बहुत-से प्रेत-प्रहरी मेंग पो का सूप प्यालों में डालने में व्यस्त हैं। प्याले गोल हैं और नीचे एक डंडी है, जिस पर प्याले का ऊपरी हिस्सा टिका है। देखने में सबका रंग, आकार और बनावट एक जैसी है। लेकिन और ध्यान से देखने पर पता चलता है कि वे एक जैसे लगते हुए भी थोड़े-से अलग हैं। सभी प्याले पारदर्शी और एक ही आकार के हैं, लेकिन उनकी डंडियों पर उभरे अलंकरण अलग-अलग हैं। एक प्रकार के पारदर्शी प्याले की डंडी चिकनी है और उस पर कोई अलंकरण नहीं है। जब आत्मिक देह वाला प्राणी उसे उठाकर मेंग पो का सूप पीता है, तो हाथ में आरामदायक महसूस होता है। दूसरे प्रकार के पारदर्शी प्याले की डंडी पर थोड़ा-सा उभरा अलंकरण है, जिसे हाथ में लेने पर उसकी बनावट महसूस होती है। अंतिम प्रकार के पारदर्शी प्याले की डंडी पर त्रिकोणाकार उभरा अलंकरण है। जब आत्मिक देह वाला प्राणी उसे उठाकर मेंग पो का सूप पीता है, तो वह हाथ में कुछ चुभता है और असुविधा महसूस होती है।

यूवांग मंच के भीतर बहुत-से छोटे कमरे हैं, जो दाएँ और बाएँ, दो ओर बने हैं। बाईं ओर के कमरे बड़े पुण्यफल वाले प्राणियों के लिए हैं, जो अधिक मीठा मेंग पो का सूप पीते हैं। पहले बाईं ओर के छोटे कमरे देखती हूँ। हर कमरे में एक मेज़ और बैठने के आसन हैं। मेज़ पर अधिक मीठे मेंग पो के सूप का एक प्याला रखा है और दो सेविकाएँ उसे आत्मिक देह वाले प्राणी को पीने के लिए पेश करती हैं। अर्थात् अच्छे पुण्यफल वाले प्राणी कमरे में बैठकर पी सकते हैं। यह कुछ-कुछ मनुष्यलोक के विशिष्ट अतिथि कक्ष जैसा है, जहाँ विशेष सेवा मिलती है। अब दाईं ओर के छोटे कमरे देखती हूँ। हर कमरे में भी एक मेज़ और बैठने के आसन हैं। मेज़ पर पाँचों स्वादों से युक्त मेंग पो के सूप का एक प्याला रखा है, लेकिन उसे आत्मिक देह वाले प्राणी को पेश करने के लिए केवल एक सेविका है। अर्थात् सामान्य पुण्यफल वाले प्राणी भी कमरे में बैठकर पी सकते हैं।

आगे चलने पर मेंग पो का मंडप है। तो मेंग पो देवी मेंग पो मंडप में हैं।

“मैं, आ यू, मेंग पो देवी को हाथ जोड़कर प्रणाम करती हूँ!”

मेंग पो देवी मेरी ओर मुस्कराईं। न्यायाधिकारी ने कहा कि मेंग पो देवी सामान्यतः मेंग पो मंडप में ही रहती हैं। सबसे अधिक घटनाएँ इसी मंडप में होती हैं। यहाँ कभी-कभी ऐसे आत्मिक प्राणी आते हैं, जो मेंग पो का सूप पीने को तैयार नहीं होते। मेंग पो मंडप में सूप पीने आने वाले सभी प्राणियों के पुण्यफल अपेक्षाकृत कम होते हैं, अर्थात् उनके कर्मावरण अधिक भारी होते हैं। इसी के अनुसार यहाँ प्रेत-प्रहरी भी बहुत अधिक हैं और सभी के हाथों में नुकीले काँटे हैं।

मैंने देखा कि बहुत-से आत्मिक प्राणी कतार लगाकर मेंग पो मंडप में आ रहे हैं। सभी बहुत थके हुए और बेहद प्यासे लगते हैं। कुछ के शरीर में तो बिल्कुल शक्ति नहीं बची है। जो चल सकते हैं, वे स्वयं चलते हैं और अपनी बारी आने पर स्वयं प्याला उठाकर पीते हैं। जिनके शरीर में शक्ति नहीं है, उन्हें प्रेत-प्रहरी सहारा देकर मेंग पो मंडप तक लाते हैं और सूप पिलाते हैं।

तभी एक तीखी चीख सुनाई दी। एक स्त्री की आत्मा सूप पीने से मना कर रही थी और दो प्रेत-प्रहरियों ने उसे पीटा था। हाय! उस स्त्री की आत्मा की दशा कितनी दयनीय थी! एक प्रेत-प्रहरी ने उसके पाँव पर काँटे से प्रहार किया, जिससे वह ज़मीन पर गिर गई और उसके पाँव से रक्त बहने लगा। यह देखकर दूसरे प्रेत-प्रहरी ने तुरंत अपना काँटा उसमें घोंपकर उसे उठा लिया और ज़बरदस्ती तीन प्याले सूप पिला दिया। न्यायाधिकारी ने कहा कि इस स्त्री की आत्मा को आगे मनुष्यलोक में पाँव का दर्द और गले की समस्याएँ होंगी। तो मेंग पो का सूप पीने से मना करने वाले आत्मिक प्राणियों को प्रेत-प्रहरियों से मार ही नहीं खानी पड़ती, बल्कि उसके बाद दंडस्वरूप दो अतिरिक्त प्याले कड़वा मेंग पो का सूप भी पीना पड़ता है। इसके परिणामस्वरूप उन्हें आगे और अधिक शारीरिक कष्ट सहने पड़ते हैं। मेंग पो का सूप पीने के बाद सभी आत्मिक प्राणी चेतना धुँधली पड़ने की अवस्था में होते हैं और प्रेत-प्रहरी उन्हें सहारा देकर पुनर्जन्म के लिए ले जाते हैं।

मैंने देखा कि मेंग पो मंडप के सामने एक बड़ी नदी है। आत्मिक प्राणी नदी में गिरते ही मनुष्यलोक में फिर जन्म लेने चले जाते हैं।

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा, “आज का समय पूरा हो गया है। आ यू, अगली बार फिर आइए!”

मैं, आ यू, हाथ जोड़कर न्यायाधिकारी को साष्टांग प्रणाम करती हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर लौटती हूँ!

8/भोजन बरबाद करने का दर्दनाक कर्मफल—पाँच अनाजों की भरपूर फ़सल नरक

बुद्ध की शक्ति के अनुग्रह के लिए कृतज्ञ हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ!

अमिताभ बुद्ध! मैं, आ यू, परलोक के न्यायाधिकारी के सामने हाथ जोड़ती हूँ!

“न्यायाधिकारी महोदय! आज मैं पूछना चाहती हूँ कि भोजन बरबाद करने का क्या कर्मफल होता है?”

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा, “भोजन बरबाद करने से नरक में गिरकर उसका फल भुगतना पड़ता है। भोजन का हर कौर खाते समय प्रत्येक व्यक्ति को मन में कृतज्ञता और लज्जा का भाव रखना चाहिए। भोजन उत्पन्न करने के लिए आकाश और धरती का, परिश्रम के लिए किसान का, पालन-पोषण के लिए माता-पिता का और अपने पिछले जन्मों में संचित भोजन संबंधी पुण्यफल का आभार मानना चाहिए। मनुष्य को जीवित रहने के लिए भोजन, हवा, पानी और सूर्य के प्रकाश का सहारा चाहिए। ये कुछ बाहरी कारण और परिस्थितियाँ हैं। यदि ये संबंधित बाहरी कारण और परिस्थितियाँ न हों, तो मनुष्यलोक में अच्छा भोजन नहीं होगा। इसलिए हमें सबसे पहले आकाश और धरती का आभार मानना चाहिए। प्रकृति का सूर्य-प्रकाश और हवा तथा धरती का पोषण न हो, तो अनाज और भोजन कहाँ से आएँगे? आवश्यक प्राकृतिक परिस्थितियाँ पूरी होने के बाद अनाज उगाने के लिए किसान को खेत जोतने, बीज बोने, सिंचाई करने, फ़सल काटने और पैक करने जैसी संबंधित प्रक्रियाओं में कठिन परिश्रम करना पड़ता है। वसंत में बीज बोए जाते हैं और शरद में फ़सल काटी जाती है; इस तरह वसंत, ग्रीष्म और शरद, तीन ऋतुएँ बीतती हैं। जैसा कहा गया है: दोपहर की धूप में खेत की निराई होती है, पसीना

फ़सल के नीचे की मिट्टी पर टपकता है; कौन जानता है कि थाली के भोजन का हर दाना कठिन परिश्रम से आया है! किसान धूप और वर्षा सहते हुए कितनी मेहनत और सावधानी से धीरे-धीरे भोजन उगाते हैं। हमें उनके परिश्रम के प्रति कृतज्ञ होना ही चाहिए!

हर व्यक्ति पिता के वीर्य और माता के रक्त से मनुष्यलोक में मनुष्य के रूप में जन्म लेता है। बचपन में हर किसी को बस कपड़े पहनने के लिए हाथ बढ़ाना और खाना खाने के लिए मुँह खोलना पड़ता है। इसलिए हमें माता-पिता के पालन-पोषण के उपकार के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए। इसके अलावा, हमें उन पुण्यफलों का भी आदर करना चाहिए, जिन्हें हमने पिछले जन्मों में दान देकर, शीलों का पालन करके और शुभ कर्म करके धीरे-धीरे संचित किया था। जिन लोगों के पुण्यफल पर्याप्त नहीं हैं—जैसे अफ्रीका, इथियोपिया, कांगो, चीन के दूरदराज़, कम आबादी वाले पिछड़े इलाकों और अन्य गरीब देशों में—उन्हें भोजन की गंभीर कमी होती है। बहुत-से वयस्क और बच्चे भूख से मर जाते हैं या भूख के कारण उनके चेहरे पीले और शरीर दुबले हो जाते हैं। उनमें पोषण की भी गंभीर कमी होती है और उन्हें दूसरों की सहायता की प्रतीक्षा करनी पड़ती है। कभी-कभी दूसरों की सहायता पहुँचने से पहले ही वे भूख से मर जाते हैं![91]

मनुष्यलोक में जन्म लेते समय प्रत्येक व्यक्ति कितना खाएगा, कितना पहनेगा, कितना लंबा या ठिगना, मोटा या दुबला होगा, उसकी सामाजिक स्थिति ऊँची होगी या नीची, उस पर कौन-सी विपत्तियाँ आएँगी, उसके पास कितनी संपत्ति होगी और उसकी आयु कब पूरी होगी—यह सब पहले से निश्चित होता है। इसलिए भोजन का हर कौर खाने का अर्थ यह भी है कि हमने इस जीवन में अपने भाग्य में निर्धारित पुण्यफल का एक अंश भोग लिया। शेष जीवन में पुण्यफल भोगने का एक अवसर और कम हो गया। जीवित संसार के साधारण लोग इस निश्चित कर्म को भेद नहीं

सकते। केवल दो प्रकार के लोग इसे प्रभावित कर सकते हैं: अत्यंत पुण्यवान और अत्यंत दुष्ट लोग।

अत्यंत पुण्यवान लोग दो प्रकार के होते हैं। एक प्रकार के पवित्र महापुरुष वे बुद्ध और बोधिसत्त्व हैं, जो करुणावश अपनी प्रतिज्ञा के बल पर मनुष्यलोक के प्राणियों का उद्धार करने फिर आते हैं। बुद्ध और बोधिसत्त्व स्वतंत्रतापूर्वक आ-जा सकते हैं; वे निश्चित कर्म के बंधन में नहीं होते। कभी-कभी ऐसे पवित्र महापुरुष मनुष्यलोक में अपने से संबंध रखने वाले अधिक प्राणियों का उद्धार करने के लिए जानबूझकर तरह-तरह के कष्ट प्रकट करते हैं और अपने जीवन के उदाहरण से धर्म सिखाकर जनसमुदाय का उद्धार करते हैं। वास्तव में वे कष्ट किसी पवित्र महापुरुष के मन को बिल्कुल बाँध नहीं सकते। केवल साधारण लोग ही मनुष्यलोक की पाँच इंद्रिय-कामनाओं और क्लेशों से भरी परिस्थितियों में मोहित होते हैं। दूसरे प्रकार के अत्यंत पुण्यवान लोग साधारण मनुष्य होते हैं, लेकिन उनका हृदय महान मैत्री और करुणा से भरा होता है और वे निरंतर बड़े पुण्यफल तथा गुप्त पुण्य संचित कर रहे होते हैं। ऐसे सज्जन भी भाग्य की बेड़ियाँ तोड़कर सीधे ऊपर उठ सकते हैं। दूसरी ओर अत्यंत दुष्ट लोग होते हैं, जो अपने बहुत भारी दुष्कर्मों के कारण सीधे नीचे नरक में गिरते हैं। इसलिए तरह-तरह का भोजन ग्रहण करते समय मन में लज्जा का भाव होना चाहिए। भोजन केवल हमारे भौतिक शरीर का पोषण करता है, और भौतिक शरीर साधना में हमारी सहायता करने का एक साधन है। हमें भोजन को इतना अधिक महत्त्व नहीं देना चाहिए कि स्वादिष्ट भोजन के दास बनकर उसके वश में पड़ जाएँ। साथ ही भोजन बरबाद भी नहीं करना चाहिए, अर्थात् अनाज नष्ट नहीं करना चाहिए।

पहले परलोक में भूख का एक छोटा नरक था। उसमें गिरकर दंड पाने वाले सभी लोग पहले जीवित संसार में अपेक्षाकृत अच्छे पुण्यफल वाले धनी परिवारों के लोग, धनवानों की पत्नियाँ या व्यापारी होते थे। अच्छे पुण्यफल होने के कारण वे मनमाने ढंग से अनाज और भोजन बरबाद करते थे और आयु पूरी होने पर भूख के

नरक में गिरते थे। जिनके पास धन था, लेकिन वे भिखारियों और गरीबों को दान देने को तैयार नहीं होते थे, वे भी आयु पूरी होने पर दंड पाने के लिए भूख के नरक में गिरते थे। वहाँ दोषी आत्माओं को भरपूर भूख का कष्ट सहना पड़ता था, जिससे वे अनाज और भोजन का मूल्य समझें और उनका लोभ तथा कृपणता भी दूर हो। पहले भूख के नरक में दंड की अवधि बहुत छोटी होती थी—कम से कम 3 वर्ष और अधिक से अधिक 50 वर्ष। लेकिन उसमें गिरने वाले अधिक नहीं थे, और उनमें से अधिकांश अधिक आयु वाले धनवान लोग होते थे।

इस समय परलोक के दक्षिण में लिंगशिंग नरकों का एक क्षेत्र है। उस क्षेत्र में 'पाँच अनाजों की भरपूर फ़सल' नाम का एक बड़ा नरक है। पाँच अनाजों की भरपूर फ़सल नरक में अधिकांश लोग युवा हैं। वहाँ बरबाद किए गए हर प्रकार के भोजन का ढेर लगा है, इतना अधिक कि वह अंतहीन पर्वत-शृंखलाओं जैसा है। पहले भोजन बरबाद करने वालों को आयु पूरी होने पर परलोक के विधान के अनुसार भूख का दंड मिलता था। अब भोजन बरबाद करने वाले प्राणी आयु पूरी होने पर पाँच अनाजों की भरपूर फ़सल नरक का फल भोगेंगे। जीवित संसार में बरबाद किए गए हर प्रकार के भोजन का पूरा लेखा जन्मसहचर देवता रखता है। आयु पूरी होने पर इस नरक में आकर उन्हें अपने जीवनकाल में बरबाद किया गया सारा भोजन एक-एक करके खाकर समाप्त करना पड़ता है। जीवित संसार में बहुत-से युवा लगातार बहुत सारा भोजन खरीदना पसंद करते हैं और जो खा नहीं पाते, उसे फेंक देते हैं। परलोक का विधान दोषी आत्माओं को ऐसा दंड अनुभव कराता है, जिससे वे समझें कि जो खा नहीं सकते, उसे खरीदकर बरबाद नहीं करना चाहिए। जब आपने उसे खरीद लिया, तो वह आपके पुण्यफल का हिस्सा है और उसे पूरा खाना आवश्यक है। आ यू, मेरे साथ आइए। अब मैं आपको वहाँ घुमाने ले चलता हूँ।"

अभी से खटास, भोजन की सड़ांध और उलटी की गंध आ रही है। उलटी और खाँसी की आवाज़ें भी सुनाई दे रही हैं। अब 'पाँच अनाजों की भरपूर फ़सल नरक'

के बड़े-बड़े अक्षर दिखाई दे रहे हैं। यह नरक भी बेहद विशाल है! भीतर सचमुच पाँचों अनाजों की भरपूर फ़सल है। भोजन इतना अधिक है कि एक नज़र में उसका छोर दिखाई ही नहीं देता। वह पर्वतों और घाटियों जैसा फैला हुआ है, बहुत भयावह! चावल, व्यंजन, बिस्कुट आदि की गिनती नहीं है। बड़े-छोटे पैकेटों में तरह-तरह का इतना अधिक भोजन है कि सबका एक-एक करके वर्णन नहीं किया जा सकता। पानी और दूसरे पेय भी हैं, जो बड़े-बड़े पात्रों में भरे हैं।

न्यायाधिकारी ने कहा कि हर दोषी आत्मा का भोजन रखने का अपना अलग क्षेत्र है। हर निजी भोजन-क्षेत्र में उसी आत्मा का जीवनकाल में बरबाद किया गया भोजन है; इसमें तनिक भी गलती नहीं होती। मैंने पाँच अनाजों की भरपूर फ़सल नरक में बहुत-से युवा देखे। न्यायाधिकारी ने कहा कि इस नरक का दंड पाने के अलावा उन्होंने यौन दुराचार जैसे दूसरे अपराध भी किए हैं।

अब उधर जाकर एक युवती की आत्मा से पूछती हूँ! उसके उस विशाल क्षेत्र में रखा भोजन देखकर ही बहुत डर लगता है। न जाने किस वर्ष, किस महीने तक वह इसे खाकर समाप्त कर पाएगी। युवती की आत्मा का चेहरा अब भी कुछ सुंदर और सुघड़ लगता है। वह बड़ी पीड़ा से उलटियाँ कर रही है!

“अमिताभ बुद्ध! आपको कैसा महसूस हो रहा है? क्या आप बता सकती हैं कि यहाँ क्यों आई हैं?”

युवती की आत्मा ने कहा, “बहुत, बहुत कष्ट हो रहा है! हर एक क्षण बेहद पीड़ादायक लगता है! उल्टियाँ करते-करते अब मुझसे और सहा नहीं जा रहा! आप कौन हैं? आपसे विनती है, क्या आप मुझे यहाँ से बचाकर बाहर निकाल सकती हैं?”

“क्या आप मुझे बता सकती हैं कि यहाँ क्यों आई हैं?”

“बताती हूँ! बताती हूँ! जीवित रहते मुझे बहुत सारा भोजन खरीदना पसंद था, खासकर तरह-तरह के स्वादिष्ट पकवान। लेकिन मैं खुद बहुत अधिक नहीं खाती थी, क्योंकि डरती थी कि मोटापे से मेरी काया और रूप बिगड़ जाएँगे। फिर भी मैं रोज़

अपनी पसंद का भोजन खरीदकर घर लाती थी। मेरी आदत थी कि मैं पुराना भोजन कभी नहीं खाती थी, केवल ताज़ा भोजन ही खाती थी। कोई नया उत्पाद दिखाई देता, तो उसे ज़रूर खरीदती थी, और जो खा नहीं पाती, उसे फेंक देती थी। दिन पर दिन यह जमा होता गया और अब नरक में आकर मुझे दंडस्वरूप यह सब खाकर समाप्त करना पड़ रहा है। सचमुच बहुत बुरा हाल है! यहाँ बहुत सारा पानी भी है, जिसे मैंने दाँत साफ़ करते और मुँह धोते समय नल लगातार खुला रखकर बरबाद किया था!" युवती की आत्मा फूट-फूटकर रोने लगी! सचमुच इस खट्टे, बदबूदार, फफूँद लगे और बड़े-बड़े कीड़ों से भरे भोजन को देखकर खाने की सारी इच्छा समाप्त हो गई।

अब पास वाली इस अधिक उम्र की स्त्री की आत्मा को देखती हूँ। उसका भोजन-क्षेत्र पिछली युवती की आत्मा के क्षेत्र से कई गुना बड़ा है और कहीं अधिक भयावह है! उसका भोजन-क्षेत्र बड़ा ही नहीं है, उसमें भोजन भी बहुत अधिक है और उससे बेहद खट्टी, घिनौनी सड़ांध आ रही है। सब कुछ खराब हो चुका है, उस पर बहुत फफूँद लगी है, रंग बदल गया है और वह कीड़ों तथा रोगाणुओं से भरा है। भला इसे खाया कैसे जा सकता है! देखकर ही मन काँप उठता है!

"अमिताभ बुद्ध! क्या आप मुझे बता सकती हैं कि यहाँ कैसे आई?"

"जीवित रहते मैं गृहिणी थी। मुझे घर का काम करना पसंद नहीं था। सब्ज़ियाँ खरीदने जाने का समय बचाने के लिए मैं अक्सर बहुत सारी सब्ज़ियाँ खरीदकर घर में रख देती थी। सब्ज़ियाँ बहुत समय तक नहीं रखी जा सकतीं; अधिक समय बीतने पर खराब हो जाती हैं। मैं अक्सर इतना अधिक खाना बना लेती थी कि पूरा खाया नहीं जा पाता था और फिर उसे फेंक देती थी। बहुत-सी सब्ज़ियाँ भी पड़े-पड़े खराब हो जाती थीं और मैं उन्हें फेंक देती थी। मेरे पति अक्सर मुझे टोकते थे कि पानी बरबाद न करूँ और बर्तन धोते समय नल पूरा खोलकर लगातार बहता न छोड़ूँ। जब भी पति मुझे टोकते, मैं उन्हें अपशब्द कहती और खूब शोर मचाकर झगड़ती, जब

तक कि वे चुप न हो जाते। वे मुझे भोजन बरबाद न करने के लिए कहते थे। मैं उनकी बात सुनती ही नहीं थी, बल्कि जानबूझकर और अधिक खरीद लाती थी और सड़ जाने पर फेंक देती थी। परिणाम यह हुआ कि आयु पूरी होने पर यमराज ने मुझे पाँच अनाजों की भरपूर फ़सल नरक भेजने का दंड दिया, ताकि मैं पहले फेंका हुआ अपना सारा भोजन खाऊँ। अब मुझे बहुत पछतावा है कि मैंने पति की बात नहीं मानी।" तभी एक प्रेत-प्रहरी आकर उसे पकड़कर फिर खाने के लिए ले गया।

मैं, आ यू, न्यायाधिकारी से पूछना चाहती हूँ: "तो यदि भोजन जानबूझकर खराब न किया गया हो, तब भी क्या उसे खाना पड़ेगा?"

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा, "यदि भोजन अनजाने में या जानकारी के अभाव में खराब हो गया हो, तो उसे मत खाइए। यदि खाने से शरीर बीमार पड़ जाए या दूसरी समस्याएँ हो जाएँ, तो लाभ से अधिक हानि होगी। हमें पहले इस अनजानी भूल के लिए पश्चात्ताप भी करना चाहिए और आगे सावधान रहना चाहिए कि फिर ऐसा न हो, ताकि हेइ वूचांग दोबारा हमारा दोष दर्ज न करें और हमें परलोक के विधान का दंड न मिले। उसके बाद उस खराब भोजन के लिए बुद्ध के नाम या मंत्र का जप करके उसे जंगल या घास-झाड़ियों में छोटे जीवों को दान के रूप में रख सकते हैं और उनके साथ शुभ संबंध बना सकते हैं। या उसे समुद्र में डालकर जलीय प्राणियों को दान दे सकते हैं।"[92]

"आज यहीं तक। आ यू, अभी आप लौट जाइए। कोई प्रश्न हो, तो फिर आने का स्वागत है।"

अमिताभ बुद्ध! परलोक के न्यायाधिकारी के प्रति कृतज्ञ हूँ! मैं, आ यू, हाथ जोड़कर परलोक के न्यायाधिकारी को प्रणाम करती हूँ!

श्वेत कमल पर सवार होकर लौटती हूँ।

9/बुद्ध का स्वयं दिया हुआ उपदेश: भोजन और पेय बरबाद करने पर अवश्य नरक में गिरकर कष्ट भोगना पड़ता है!

बुद्ध ने कहा: “नरक की पीड़ा—भाले के घाव की पीड़ा को दस करोड़ गुणा दस करोड़ गुणा दस हज़ार कर दिया जाए, तब भी वह नरक की पीड़ा के बराबर नहीं होती। हाथ में रखा छोटा पत्थर भाले के तीन सौ घावों की पीड़ा के समान है, और पर्वत नरक की पीड़ा के समान। मूर्ख मनुष्य मन से बुरे विचार करता है, वाणी से बुरी बातें कहता है और शरीर से बुरे कर्म करता है; मरने के बाद वह नरक में गिरता है। नरक में पशुरूपी प्रेत होते हैं। वे मनुष्य को खींचकर सामने लाते हैं, एक काँटा उसके ऊपरी मसूड़े में और दूसरा उसके निचले जबड़े में फँसाकर उसका मुँह पूरा खोल देते हैं। फिर पिघला हुआ ताँबा उसके मुँह में उड़ेलते हैं। उसके होंठ, जीभ, आँतें और पेट सब जलकर गल जाते हैं; ताँबा नीचे से निकल जाता है और भीषण पीड़ा सहन नहीं होती। जब वह संसार में जीवित था, तब उसने धन और लाभ चाहा तथा खाने-पीने की वस्तुओं का अनुचित उपयोग किया था; इसीलिए उसमें पिघला ताँबा उड़ेला जाता है। नरक का कष्ट ऐसा होता है। नरक के प्रेत मनुष्य को पकड़ते हैं, काँटों से उसके ऊपरी और निचले जबड़े को खींचकर पूरा खोल देते हैं, और तपता हुआ लोहे का मूसल उसके गले में घुसेड़ते हैं। उसके होंठ, जीभ, आँतें और पेट सब जलकर गल जाते हैं। भीषण पीड़ा सहन नहीं होती, फिर भी उसके पापकर्मों का फल समाप्त न होने के कारण वह मरता नहीं। नरक का कष्ट ऐसा होता है।” (बुद्ध द्वारा उपदिष्ट ‘निरय सूत्र’; पूर्वी जिन काल में पश्चिमी प्रदेशों के श्रमण झू तानवूलान द्वारा अनूदित)

जियाडोंग कहते हैं: अशुद्ध भोजन बनाकर लोगों को खिलाने पर लोग अवश्य क्रुद्ध होते हैं और देवता भी उससे घृणा करते हैं। गंदे भोजन को फेंक देना भी वस्तुओं का अपव्यय करना है। पानी और पेय बरबाद करके नालियों और शौचालयों में बहा देना विशेष रूप से बुरा कर्म अर्जित करना है। छ्योउ नाम की एक वृद्धा बीमारी से मरकर फिर जीवित हो उठी। उसने बताया कि वह एक स्थान पर पहुँची थी, जहाँ दो नावें फेंके गए गंदे भोजन से भरी थीं। एक प्रेत ने उसे कोड़े मारते हुए कहा: 'जो तुमने जीवन भर बरबाद किया, उसे खाए बिना कैसे बच सकती हो?' वृद्धा ने बड़ी कठिनाई से कुछ घूँट निगले; पेट भरा हुआ महसूस होते ही वह चौंककर जीवित हो उठी। यह कहने के बाद वह फिर मर गई। ('गानयिंग पियान की टीका')

तोफ़ू के अवशेष फेंकने पर फटकार[93]

प्रकृति की दी हुई वस्तुओं का अपव्यय करने वाले पर विपत्ति अवश्य आती है। पाँच प्रकार के अन्न को तुच्छ समझने वाले प्रायः बिजली गिरने का शिकार होते हैं। कुत्तों और सूअरों को मनुष्यों वाला भोजन खाते देखकर मेंगज़ी का हृदय व्यथित हुआ था। शराब का तालाब और मांस का वन बनाकर विलास करने के कारण शांग के राजा ने अपना राज्य खो दिया था। प्राचीन लोग तो मदिरा बनाने के बचे अवशेष और भूसी तक निगलते थे; आज तोफ़ू के ये अवशेष उनसे कहीं अधिक स्वादिष्ट हैं। महासत्त्व भी घास और फल खाकर रहते थे; आज तोफ़ू के इन अवशेषों की मिठास की तुलना घास से कैसे की जा सकती है? फिर तुम क्यों अपने अभिमान और विलास को खुली छूट देते हो, जैसे किसी धनवान घर के बिगड़े हुए बेटे; क्यों इतने मोहग्रस्त और विवेकहीन बने रहते हो, जैसे कपड़ों में लिपटे नवजात शिशु? पहले दंड के रूप में चक्की बंद करनी होगी, और फिर कड़ाही तोड़कर सदा के लिए निषेध करना होगा। ('आचार्य युनछी के मरणोपरांत संकलित लेख', खंड तीन)

10/बुद्ध कहते हैं: स्वादिष्ट भोजन के प्रति आसक्ति और पेट भरने से भी अधिक खाना मनुष्य को आसानी से दुर्गतियों में गिरा सकता है!

बुद्ध ने कहा: साधक के लिए ग्यारह हेतु-प्रत्यय हैं जो मार्ग का नाश करते हैं; उन्हें रोकने से मनुष्य दुर्गतियों में गिरने से बचता है।[94] जिन्हें न पहचानना चाहिए, वे समस्त वस्तुएँ हैं। पहला है बड़ा जमावड़ा, अर्थात् लोगों की भीड़। दूसरा है बहुत खाना, अर्थात् तरह-तरह के स्वादिष्ट व्यंजन; इसका अर्थ पेट बहुत अधिक भर लेना भी है। तीसरा है बहुत अधिक गतिविधियाँ, अर्थात् अनेक कर्म। चौथा है बहुत शोरगुल, अर्थात् बहुत बोलना। पाँचवाँ है बहुत सोना। छठा है एकत्र होना, अर्थात् ध्यान के बीच। सातवाँ है आचरण का अभ्यास, अर्थात् बहुत से कामों में लगना। आठवाँ है अपने शरीर से मोह। नौवाँ है हल्कापन, अर्थात् धर्मविरुद्ध बातें। दसवाँ है लोभ, अर्थात् बहुत-सी इच्छाएँ। ग्यारहवाँ है अच्छे स्थान में रहना न चाहना, अर्थात् दुष्ट लोगों के बीच रहना। मार्ग का अभ्यास करने वाले को इन ग्यारह हेतु-प्रत्ययों को छोड़ देना चाहिए; तब वह शीघ्र मार्ग की प्राप्ति करेगा। (बुद्ध द्वारा उपदिष्ट 'आंतरिक शरीर के अवलोकन के पदों और वाक्यों का सूत्र')

11/मनुष्य कठिन परिश्रम से संचित अपना सौभाग्य और आयु धूम्रपान से व्यर्थ गँवा देता है!

बुद्ध की शक्ति के अनुग्रह के लिए कृतज्ञ हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ!

अमिताभ बुद्ध! मैं, आ यू, हाथ जोड़कर परलोक के न्यायाधिकारी को प्रणाम करती हूँ!

परलोक के न्यायाधिकारी, आज मैं आपसे पूछना चाहती हूँ: "धूम्रपान के विषय में। कई शहरों में तंबाकू के विज्ञापन दिखाई देते हैं। कुछ अपेक्षाकृत समृद्ध शहरों में स्थिति कुछ बेहतर है: विज्ञापनों पर लिखा रहता है कि तंबाकू में निकोटीन होता है और धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, या सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान निषिद्ध होता है। इसके विपरीत, कुछ पिछड़े शहरों में रेस्तराँ और होटलों की मेज़ों पर ऐशट्रे रखी होती है, और हर जगह लोग धूम्रपान करते दिखाई देते हैं। आखिर परलोक के विधान के अनुसार धूम्रपान से कोई पाप बनता है और कोई दंड मिलता है या नहीं?"

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: "धूम्रपान से बहुत हानियाँ होती हैं—सौ हानियाँ हैं, लाभ एक भी नहीं। संक्षेप में कहूँ तो यह सीधे अपने स्वास्थ्य को हानि पहुँचाता है, सौभाग्य और आयु घटाता है, धन-संपत्ति नष्ट करता है, लोगों को अप्रिय लगता है, मुँह में दुर्गंध लाता है, शरीर की आभा मंद करता है, प्रायः छिपे रोग उत्पन्न करता है और धर्मनिष्ठ ऊर्जा कम करता है। इसके अतिरिक्त यह सीधे पर्यावरण को प्रदूषित करता है और दूसरों के स्वास्थ्य को हानि पहुँचाता है। यदि धूम्रपान करने वाला बुद्धधर्म का साधक हो, तो धर्मपाल उससे दूर हो जाते हैं और वह शुद्धभूमि में पुनर्जन्म नहीं ले सकता।

परलोक के विधान के अनुसार धूम्रपान के लिए कुछ दंड मिलते हैं। धूम्रपान करने वाले जीवित मनुष्यों का अपना पुण्यफल घटता है। पुण्यफल में यह हानि दो प्रकार की है। पहली है इस जन्म के अपने रक्त-मांस के शरीर के सभी आंतरिक अंगों की विभिन्न क्रियाओं को हानि पहुँचना। उदाहरण के लिए, मनुष्य के अत्यंत महत्त्वपूर्ण अंग—फेफड़े, यकृत, मस्तिष्क, आँखें, नाक, श्वसनियाँ तथा शरीर की बड़ी और छोटी धमनियाँ आदि—धूम्रपान से तेज़ी से क्षीण होते हैं; उससे भी बढ़कर, आंतरिक अंगों के तरह-तरह के दीर्घकालिक रोग हो जाते हैं। धूम्रपान से उत्पन्न ऐसे रोगों में केवल धूम्रपान छोड़ देने पर रोग धीरे-धीरे सुधरने लगता है। और धूम्रपान के कारण पहले जो सौभाग्य और आयु घटी है, उसकी भरपाई भी पश्चात्ताप करके, पुण्य संचित करके, दूसरों को धूम्रपान छोड़ने के लिए समझाकर आदि की जा सकती है।[95]

दूसरी हानि व्यक्ति के जन्मजात आध्यात्मिक प्रकाश को पहुँचती है। इस हानि का प्रभाव अधिक व्यापक होता है। अंततः मनुष्य को अपना जन्मजात प्रकाश निरंतर बढ़ाना आवश्यक है। यदि यह प्रकाश घट जाए, तो किसी भी व्यक्ति का जीवन निश्चित ही अंधकार की दिशा में बढ़ेगा, अर्थात् दुःख की ओर। कोई भी दुःखी होना नहीं चाहता; सभी सत्त्व सुखी रहना चाहते हैं। धूम्रपान करने वाले का अपना शरीर अस्वस्थ होता है और उसकी आयु धूम्रपान न करने वाले से कम होती है। किशोर लड़के-लड़कियों के धूम्रपान करने से संतान पैदा करने में असमर्थता होती है; विशेषकर किशोरियों के धूम्रपान करने से मासिक चक्र अव्यवस्थित हो जाता है। मासिक धर्म आने पर तरह-तरह के पेटदर्द, कमर और पीठ में दर्द, सिरदर्द, मन खराब रहना, शरीर में ठंड लगना, गर्मी लगना और बुखार आदि होते हैं। बहुत-से जीवित मनुष्य इसे सामान्य समझते हैं, जबकि वास्तव में ये सब धूम्रपान के कारण होते हैं। यदि तंबाकू का यह विष छोड़ दिया जाए, तो मासिक धर्म की स्थिति में निश्चित रूप से कुछ सुधार होगा।

निस्संदेह, कुछ मामलों का धूम्रपान से कोई संबंध नहीं होता। स्त्रियों के मासिक धर्म का उनके पूर्वजन्म के कर्मबल से भी संबंध होता है। कुछ स्त्रियों की स्थिति विशेष होती है: वे कभी धूम्रपान नहीं करतीं, फिर भी मासिक धर्म का समय उनके लिए अत्यंत पीड़ादायक होता है। उन्हें इतना तीव्र मासिक दर्द होता है कि चाहे कितना भी उपचार कराएँ और दवाएँ लें, कोई खास प्रभाव नहीं पड़ता। उन्हें हर महीने बस उस पीड़ादायक अवधि के अपने-आप बीतने की प्रतीक्षा करनी पड़ती है; यह दुःख सहकर कर्मावरण का क्षय करना है। एक अन्य प्रकार की स्त्रियाँ वर्षों तक लगातार मासिक धर्म की स्थिति में रहती हैं। वे सदा उससे जुड़ी तरह-तरह की उलझनों और असुविधाओं के बीच जीवन बिताती हैं; रक्त धीरे-धीरे लगातार बहता रहता है, कभी सुधार नहीं होता और डॉक्टर को दिखाने का भी लाभ नहीं होता।

इन दोनों प्रकार की स्त्रियों के वर्तमान जन्म के मासिक धर्म संबंधी रोग पूर्वजन्म में अत्यधिक हत्या और यौन दुराचार के बचे हुए कर्मफल के कारण होते हैं। इन स्त्रियों को पूर्वजन्म के कर्मों के लिए पश्चात्ताप का संकल्प करना चाहिए और अपने मन को बदलकर पुराने कर्मों का क्षय करना चाहिए। पहले शाकाहार अपनाना, बुद्ध का नाम जपना, अच्छे कर्म करना और पुण्य संचित करना आवश्यक है; इसके साथ अपने शरीर के अनुकूल आहार द्वारा पोषण और संतुलन करने पर कुछ समय में धीरे-धीरे स्थिति सुधर सकती है। ऐसे रोगों वाली स्त्रियों को पहले पूर्वजन्म के दुष्कर्मों का क्षय करने का संकल्प करना ही होगा। प्रतिदिन अपने अतीत के दुष्कर्मों के लिए किए गए पश्चात्ताप की शक्ति, प्रतिदिन बुद्ध का नाम जपने से मिलने वाले महान अधिष्ठान की शक्ति, और अच्छे कर्म करके पुण्य संचित करने की शक्ति—इस प्रकार पश्चात्ताप की शक्ति, बुद्ध की शक्ति और पुण्य की शक्ति, ये तीनों एक हो जाती हैं। यदि ऊपर कही बातों के अनुसार प्रतिदिन दृढ़ता से आचरण किया जाए, तो इन तीन शक्तियों से कर्मावरण निश्चित ही धीरे-धीरे मिटेंगे और सामान्य स्थिति लौट आएगी।[96]

जहाँ तक सामान्य स्थिति में लौटने का प्रश्न है, प्रत्येक व्यक्ति को लगने वाला समय कुछ अलग होगा। हर व्यक्ति के अतीत के कर्म अलग हैं, इसलिए कर्मफल प्रकट होने पर उसे सहने की अवधि भी कुछ भिन्न होगी। अंततः कर्मबल को क्षीण करने के लिए कुछ समय आवश्यक है, जिसमें सत्त्व अपने शरीर के तरह-तरह के कष्ट अनुभव करते हैं; तभी वह धीरे-धीरे मिट पाता है।

बहुत-से जीवित मनुष्य अपने पिछले जन्मों के तरह-तरह के शीलभंग नहीं देख सकते। उन्हें केवल इस जन्म में अभी सामने आ रहे प्रतिकूल कर्मफल दिखाई देते हैं, जिससे वे अपने जीवन के लोगों और घटनाओं के प्रति अनेक असंतोष और शिकायतें पाल लेते हैं। अधिकांशतः इसका कारण यही है कि संबंधित व्यक्ति अतीत, वर्तमान और भविष्य के जन्मों में कर्म और फल को पूरी तरह नहीं समझ पाता। इससे उसके भीतर तरह-तरह की गलतफ़हमियाँ और गलत धारणाएँ पैदा होती हैं। लोगों के बीच गलतफ़हमियाँ भी इसी तरह बढ़ती हैं।

जब जीवन में तरह-तरह की प्रतिकूल परिस्थितियाँ आएँ, तो पहले अपने हृदय से पूछो कि दूसरों के साथ सब सामान्य क्यों है और केवल तुम्हें ही ऐसी कठिनाइयाँ क्यों मिल रही हैं। यह अपने कर्मावरण का सामने आना है। पहले अपने कर्मों के लिए पश्चात्ताप करो, पहले अपने दैनिक व्यवहार की विभिन्न कमियाँ सुधारो और हर काम तर्क तथा धर्म के अनुरूप करो। क्षमता पर्याप्त न भी हो, यदि पूरी शक्ति लगाकर अच्छा करने का प्रयास किया जाए, तो कर्म और फल की दृष्टि से वह फिर भी पूर्ण और निर्दोष है। परलोक के विधान में कर्म और फल का नियम सदैव निष्पक्ष और कठोर है।

यदि गर्भवती स्त्री धूम्रपान करे, तो भ्रूण की जन्मजात रोगप्रतिरोधक शक्ति घटती है, उसके मस्तिष्क का सामान्य विकास प्रभावित होता है और उसके विभिन्न आंतरिक अंगों की क्रियाओं पर भी सीधा प्रभाव पड़ता है। धूम्रपान करने वाली गर्भवती स्त्री के बच्चे की रोगप्रतिरोधक शक्ति कम होती है। वह आसानी से बीमार

पड़ता है, उसे ज़ुकाम और बुखार हो जाता है; श्वासनली की स्थिति अच्छी न होने के कारण उसे आसानी से खाँसी होती है। उसका स्वभाव भी अच्छा नहीं होता, पढ़ाई में विचारों को एकाग्र करने की क्षमता कम होती है और उसका मन आसानी से भटक जाता है।[97]

प्रत्येक जीव के लिए माँ के गर्भ में रहने का समय उसकी जन्मजात बनावट तैयार होने की अवधि है, अर्थात् उसके अगले जन्म के भौतिक शरीर की मूल रचना का समय। गर्भ में प्रवेश करने से पहले ही प्रत्येक व्यक्ति के अगले जन्म के पुण्यफल की समृद्धि तय हो चुकी होती है। यद्यपि यह निश्चित कर्म होता है, फिर भी बाद के अच्छे और बुरे व्यवहार तथा आदतों से उसमें परिवर्तन किया जा सकता है; अर्थात् उसे और बढ़ाया या घटाया जा सकता है।

माँ के गर्भधारण के दस महीने अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। यदि माँ गर्भावस्था में धूम्रपान करे, तो उस भ्रूण में जन्मजात कमी होती है। यह कमी कितनी होगी, यह गर्भवती स्त्री के धूम्रपान की आवृत्ति पर निर्भर करता है। यदि गर्भवती स्त्री भ्रूण के संस्कार के लिए अच्छे विचार और आचरण रखे, तो वह बच्चे के आगामी कई दशकों के जीवन के लिए एक अच्छी जन्मजात नींव तैयार करेगी। जिन सत्त्वों को इस लेख को देखने का अवसर मिला है, उनमें अभी भी पुण्यफल है। आशा है कि सभी लोग इसे आगे पहुँचाएँगे और एक-दूसरे को बताएँगे।[98]

यदि गर्भवती स्त्री गर्भधारण के दस महीनों में शुद्ध ब्रह्मचर्य का पालन करे, अर्थात् वैध दांपत्य संभोग भी छोड़ दे, धूम्रपान और मदिरापान न करे, शुद्ध शाकाहार अपनाकर बुद्ध का नाम जपे और मन को शांत रखे, तो इससे भ्रूण के सिर और विभिन्न आंतरिक अंगों के विकास तथा जन्म के बाद उसके स्वभाव को सँवारने में अत्यंत लाभ और सहायता होगी। यद्यपि इस समय मनुष्यलोक के शाकाहारी भोजन में कीटनाशक होते हैं, फिर भी वह मांसाहार के तरह-तरह के दोषों की तुलना में बेहतर है और सत्त्वों के साथ अशुभ संबंध बाँधने से भी बचाता है। शाकाहार के

लाभों पर यहाँ अधिक नहीं कहूँगा; मनुष्यलोक में शाकाहार के लाभ बताने वाली अनेक पुस्तकों से जानकारी ली जा सकती है।

शाकाहारी आहार से पलने वाले भ्रूण को 'गर्भ से ही शाकाहारी' भी कहा जाता है। ऐसे बच्चे की बुद्धि निश्चित ही मांसाहारी आहार से पलने वाले भ्रूण से बेहतर होती है और उसका शरीर अपेक्षाकृत स्वस्थ होता है। साथ ही, उसका अच्छा जन्मजात आध्यात्मिक प्रकाश सुरक्षित रह सकता है; यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण बात है।
99

प्रत्येक व्यक्ति का जन्मजात प्रकाश मनुष्यलोक में जन्म लेने के बाद धीरे-धीरे दूषित होता जाता है। यदि गर्भवती स्त्री के धूम्रपान से भ्रूण में जन्मजात कमी आ जाए, तो जन्म के बाद उस कमी की भरपाई के लिए और अधिक समय तथा तरह-तरह के अनुकूल कारणों और परिस्थितियों की आवश्यकता पड़ेगी।

धूम्रपान करने वाला अपना सौभाग्य और आयु तो घटाता ही है; यदि वह लंबे समय तक अपने आसपास के कुछ ऐसे लोगों को, जो धूम्रपान नहीं करते, सीधे उसके धुएँ को साँस में लेने की स्थिति में रखे, तो उसके पुण्यफल में और अधिक कटौती होगी। क्योंकि वह सीधे दूसरों के शारीरिक स्वास्थ्य को हानि पहुँचाता है, इसलिए वह ऐसे कर्म करता है जो दूसरों के लिए हानिकारक हैं, स्वयं उसके लिए भी लाभकारी नहीं हैं और उसका सौभाग्य घटाते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति के पास शुभ और अशुभ कर्म के काले और श्वेत जन्मसहचर देवता होते हैं। धूम्रपान करने वाला जब भी एक सिगरेट पीता है, काले कर्म का जन्मसहचर देवता तुरंत दर्ज कर लेता है कि उसने अकेले एक सिगरेट पी। जब यह संख्या एक पैकेट तक पहुँचती है, तो पुण्यफल में एक बार कटौती दर्ज की जाती है। सौभाग्य में इस कटौती का फल, उदाहरण के लिए, काम करते समय तरह-तरह की बाधाएँ आना आदि होता है। यदि दो पैकेट या उससे अधिक हो जाएँ, तो बाधाएँ बढ़ जाती हैं। यदि धूम्रपान करते समय आसपास दूसरे लोग भी उपस्थित हों, तो सौभाग्य

की कटौती और बढ़ती है; उदाहरण के लिए, लोगों के साथ संबंध बिगड़ना, अचानक डाँट खानी पड़ना आदि घटनाएँ होती हैं। लंबे समय तक धूम्रपान करने वाले का सौभाग्य ही नहीं, उसकी आयु भी घटती है।

यदि धूम्रपान करने वाले के भाग्य में इस वर्ष वेतन बढ़ना लिखा था, तो वह पुण्यफल मिट जाएगा। या यदि वह व्यापार करता है और सब कुछ अनुकूल होने के कारण कुछ धन कमा सकता था, तो सबसे महत्त्वपूर्ण क्षण में कोई समस्या आ जाएगी और सौदा पूरा नहीं हो सकेगा, आदि। लंबे समय तक धूम्रपान करने वाले का जन्मजात आध्यात्मिक प्रकाश धीरे-धीरे नष्ट हो जाएगा। आयु समाप्त होने पर वह किसी सुगति में जन्म नहीं ले सकेगा, केवल पतन की ओर जाएगा, क्योंकि उसके शरीर का सारा प्रकाश धुएँ से ढक गया होगा।"

मैंने कहा: "परलोक के न्यायाधिकारी! मैं पूछना चाहती हूँ—मेरे दादाजी भी वर्षों तक धूम्रपान करते रहे, फिर भी वे 92 वर्ष जिए! यही बात ढाल बनकर मेरे पिताजी को धूम्रपान छोड़ने के लिए समझाने में बाधा बन गई है!"

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: "आ यू, आपके दादाजी पूर्वजन्म में अच्छे व्यक्ति थे। उन्होंने लंबी आयु, वंश की वृद्धि और पुत्र-पौत्रों से भरे घर का कुछ पुण्यफल संचित किया था। इस जन्म में उन्हें 102 वर्ष की आयु मिलनी चाहिए थी। दुख की बात है कि धूम्रपान के कारण उनकी आयु पहले ही 10 वर्ष घट चुकी थी।

आपके दादाजी मूलतः दीर्घायु व्यक्ति थे; 92 वर्ष उनकी घटी हुई आयु थी। अंत में उनके फेफड़ों की कार्यक्षमता बुरी तरह घट गई, और खाँसी तथा भूख से मरने के कारण उनकी साँस रुक गई और वे इस जीवन से चले गए। आपके दादाजी की समय से पहले मृत्यु का एकमात्र कारण धूम्रपान से आयु घटना नहीं था। एक अन्य कारण आपकी चाची थीं। जब आपके दादाजी 90 वर्ष के थे और आपकी दादी का देहांत हो गया, तो उनकी निकट रहकर देखभाल करने वाला कोई नहीं था। आपकी चाची उनके साथ दुर्व्यवहार करती थीं, प्रायः उन्हें भोजन नहीं देती थीं और कठोर

अपशब्द कहकर गाली भी देती थीं। आपकी चाची ने शुरुआत में उनकी देखभाल करने पर बहुत ज़ोर दिया था, ताकि उनकी सारी संपत्ति हड़प सकें। वे कर्म और फल को नहीं समझती थीं और सोचती थीं कि वे सफल हो गई हैं। इसके विपरीत, आपके दादाजी ने परिवार का मेल बनाए रखने के लिए सब कुछ अकेले सहना चुना और एकाकी मृत्यु आने तक किसी से कुछ नहीं कहा। उनकी मृत्यु का एक अन्य वास्तविक कारण उन्हें भूखा रखा जाना था। इस घटना में उन्होंने अपने कर्मों का क्षय ही नहीं किया, कुछ पुण्यफल भी संचित किया। इसीलिए बाद में, आ यू, आपके बुद्धधर्म का अध्ययन आरंभ करने के कुछ ही समय बाद, बुद्ध के नाम का थोड़ा-सा जप किए जाने से भी आपके दादाजी का उद्धार होकर वे देवलोक जा सके। यह उनके उस सत्कर्म का फल था कि उन्होंने मृत्यु से पहले बिना कोई शिकायत किए सब कुछ सहा और कुछ कर्मबल का क्षय किया। आपकी चाची ने बहुत बड़ा दुष्कर्म बोया।[100]

ऐसे घोर अनादर के कारण छह वर्ष बाद उनका एकमात्र, सबसे प्रिय और आज्ञाकारी बेटा उन्हें छोड़ जाएगा। उनका कर्मफल वहीं समाप्त नहीं होगा। उसके बाद आपकी चाची की बेटी उनकी सारी संपत्ति हड़प लेगी और उसी प्रकार उनका अनादर करेगी। आपकी चाची दुःख भोगते हुए बीमारी से मरेंगी।

कहा गया है: अच्छे और बुरे कर्मों का अंततः फल अवश्य मिलता है; कर्म और फल का निष्पक्ष नियम किसे छोड़ देता है?! मैं, न्यायाधिकारी, संसार के लोगों को समझाता हूँ कि अपने अंतःकरण के विरुद्ध कभी काम न करें। मनुष्य जो कुछ भी करता है, सब परलोक के विभागों के अभिलेखों में दर्ज होता है। बार-बार अन्याय करने पर स्वर्ग का दंड अवश्य मिलेगा; सच्चे मन से सत्कर्म करने पर स्वर्ग अवश्य सौभाग्य देगा। सभी लोग मेरी बात याद रखें।"

मैंने कहा: "परलोक के न्यायाधिकारी की बात सुनकर मुझे सचमुच बहुत आश्चर्य हुआ है; मेरे मन में पीड़ा और उदासी की एक लहर उठी है। उस समय दादाजी के

फेफड़ों की कार्यक्षमता सचमुच बुरी तरह घट गई थी और खाँसते-खाँसते उनकी साँस रुकने से उनका देहांत हुआ था। उनकी संपत्ति के बारे में भी मैंने माँ-पिताजी से सुना था कि चाची ने सब कुछ ले लिया था। माँ-पिताजी को इस बात का कुछ मलाल भी था। जहाँ तक भूख से मरने की बात है, अब मुझे याद आया—तभी तो मैं जब भी दादाजी से मिलने जाती और उनके लिए खाने की चीज़ें खरीदकर लाती, वे हमेशा उन्हें तुरंत खाने लगते और झट से सब खा लेते थे। उस समय चाची केवल यही कहती थीं कि घर के छोटे-बड़ों में सबसे अच्छी चीज़ें खरीदना मुझे ही आता है; वे कहती थीं कि मेरी खरीदी हुई चीज़ें दादाजी को सबसे अधिक पसंद हैं और आखिर मुझे दादाजी ने ही पाला है। तब यह सुनकर मैं बहुत खुश भी हुई थी। मुझमें सचमुच कितनी कम समझ थी! अब यह भी याद आता है कि जब भी मैं दादाजी से मिलने जाती, चाची हमेशा मेरे साथ-साथ रहती थीं। तब मैंने सोचा था कि अगली बार मिलने आऊँगी तो दादाजी की पसंद की और चीज़ें खरीद लाऊँगी। मैं बाहर काम करती थी, इसलिए छह महीने में केवल एक बार अपने गृहस्थान लौट पाती थी। जब अगली बार लौटी, तब तक दादाजी..... मन कितना दुःखी है!!!"

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: "कर्मबल! कोई भी बात कर्म और फल से अलग नहीं है! परलोक के विधान के नियम किसी भी जटिल और परस्पर गुंथे हुए कर्मफल का गलत निर्णय नहीं करेंगे। जैसा कारण, वैसा फल। आपके दादाजी के धूम्रपान का अपना कर्मफल था। उनके लंबे समय तक धूम्रपान करने से आपकी दादी के फेफड़े खराब हुए। आपकी दादी के फेफड़ों की कार्यक्षमता घटने से उन्हें खाँसी होती थी; बलगम उनके गले में अटक गया और बाहर न निकल पाने से साँस का मार्ग रुक गया। अगली साँस न ले पाने के कारण उनका देहांत हो गया। इस घटना के लिए आपके दादाजी को भी कुछ कर्मफल का भार उठाना है। वहीं, आपके दादाजी ने सहनशीलता का अभ्यास किया, तो उसका पुण्य भी उन्हें मिला।

किसी को भी धूम्रपान नहीं करना चाहिए। धूम्रपान हमारी सामान्य विचारशक्ति को बिगाड़ता है; बुद्ध के शिष्य को तो इसे अवश्य छोड़ना चाहिए। धूम्रपान पंचशील के मदिरापान से विरत रहने वाले शील के अंतर्गत आता है। आज उपलब्ध मुख्य धर्मग्रंथों के अनुसार, जब बुद्ध ने गृहस्थ उपासकों के लिए पंचशील निर्धारित किया था, तब उन्होंने सीधे यह नहीं कहा था कि धूम्रपान न करें; उन्होंने केवल मदिरापान न करने का उपदेश दिया था। और मदिरा तो हमारे तंत्रिका तंत्र को सुन्न करती है, मनुष्य की सामान्य विचारशक्ति और साधना को नष्ट करती है, सत्त्वों से दुष्कर्म करवाती है और अंततः उन्हें नरक में ले जाती है। रोग के उपचार के लिए बाहरी उपयोग, या प्राणघातक गंभीर बीमारी में जब कोई अन्य विकल्प न हो और औषधि में मदिरा मिलाकर लेना आवश्यक हो—इन अपवादों को छोड़कर मदिरा की एक बूँद भी ग्रहण नहीं करनी चाहिए। स्वयं को और दूसरों को धोखा देकर यह कभी न समझो कि मदिरा पीकर नशे में न आने पर कोई पाप नहीं होता।

इसलिए मदिरापान न करने वाले पाँचवें शील के पालन का वास्तविक उद्देश्य यह है: खाने-पीने अथवा सेवन की वे सभी वस्तुएँ छोड़नी होंगी जो हमें सुन्न करके हमारी सामान्य विचारशक्ति को बिगाड़ती हैं। केवल मदिरा ही नहीं—आज समाज और तकनीक लगातार बदल रहे हैं। भविष्य में मनुष्यलोक में मदिरा या तंबाकू जैसी तरह-तरह की नई वस्तुएँ भी बनेंगी। सेवन की कोई भी वस्तु यदि सुन्न करने वाला प्रभाव रखती है और सामान्य विचारशक्ति को बिगाड़ती है, तो उसे पूरी तरह छोड़ना होगा। आशा है कि सभी लोग इस बात का ठीक से पालन करेंगे। अन्यथा परलोक के विधान का उल्लंघन करके अपना सौभाग्य और आयु घटाने पर कष्ट तो स्वयं ही भोगना होगा!

अच्छा! आ यू, आज तंबाकू के विषय पर फिलहाल इतनी ही चर्चा करते हैं। अब आप लौट जाइए! अगली बार फिर आइए!”

मैंने कहा: “मैं, आ यू, दोनों हाथ जोड़कर परलोक के न्यायाधिकारी का आभार व्यक्त करती हूँ। आज आपने मुझे कर्म और फल से जुड़ी ऐसी बहुत-सी पारिवारिक घटनाएँ बताईं, जिन्हें घर में कोई नहीं जानता था। मुझे सचमुच बहुत लाभ हुआ है!”

श्वेत कमल पर सवार होकर लौटती हूँ।

12/डोंगयुए सम्राट की पदोन्नति और दक्षिण जम्बूद्वीप की विपत्तियाँ

बुद्ध की शक्ति के अनुग्रह के लिए कृतज्ञ हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ!

अमिताभ बुद्ध! मैं, आ यू, हाथ जोड़कर परलोक के न्यायाधिकारी को प्रणाम करती हूँ!

“परलोक के न्यायाधिकारी! आज मैं चाहती हूँ कि आप मुझे उन डोंगयुए सम्राट से मिलने ले चलें, जिनके बारे में किंवदंतियाँ प्रचलित हैं।”

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: “वर्तमान डोंगयुए सम्राट, परलोकाधिपति यमराज के अधीन एक यमराज हैं। सोंग राजवंश से पहले डोंगयुए सम्राट को फ़ेंगदू सम्राट भी कहा जाता था और वे परलोक के सर्वोच्च शासक थे। उनका पद आज के परलोकाधिपति यमराज के पद के समान था। लेकिन आज डोंगयुए सम्राट, परलोकाधिपति यमराज के अधीन बारह न्यायसभाओं के यमराजों में से एक हैं; पदों में कुछ फेरबदल हुआ है। नरकों का निरंतर विस्तार होता रहा है, और सोंग राजवंश के बाद नए निर्माण की गति पहले से भी बढ़ गई। मनुष्यलोक के वर्ष 1995 से नरकों का विस्तार और भी तेज़ होने लगा। अब वे लगभग पूरी क्षमता तक भर चुके हैं, क्योंकि मनुष्यलोक में अपराध करने वाले लोग सचमुच बहुत, बहुत अधिक हैं मैं जानता हूँ कि कुछ श्रद्धालु ‘परलोक के अटल विधान’ पढ़ने के बाद सोचते हैं कि परलोक में नए नरकों का निर्माण और पदों का परिवर्तन कैसे हो सकता है। ज़रा सोचिए, मनुष्यलोक में सरकारी संस्थाओं और उनके कर्मचारियों की संख्या भी तो बढ़ती और घटती है। वास्तव में जीवितों और मृतकों के दोनों लोकों में सिद्धांत समान हैं; यहाँ तक कि देवलोक भी इससे भिन्न नहीं है। आ यू, मेरे साथ आइए!”[101]

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: “सोंग राजवंश के बाद के 350वें वर्ष के दौरान, मनुष्यलोक में अन्याय के ऐसे छोटे-बड़े मामलों की संख्या लगातार बढ़ने लगी जिन्हें बिना किसी नतीजे के छोड़ दिया गया था। ऐसे अन्यायग्रस्त लोगों की आत्माएँ परलोक लौटने पर अपनी शिकायत लेकर डोंगयुए सम्राट के पास ही आती थीं। सम्राट की न्यायसभा में बहुत-सी पीड़ित आत्माएँ एकत्र होने लगीं और वे अत्यंत व्यस्त हो गए। इसके बाद परलोक में परलोकाधिपति यमराज का एक विशाल और विस्तृत भवन बनाया गया। तभी से फ़ेंगदू सम्राट का नाम भी बदलकर परलोकाधिपति यमराज हो गया। इस नए भवन में परलोकाधिपति यमराज के निवास और कार्यालय को एक ही परिसर में मिला दिया गया, जिससे परलोक का प्रशासन चलाना उनके लिए अधिक सुविधाजनक हो गया। आ यू, पिछली बार आपने परलोक की जिस सर्वोच्च न्यायसभा का दर्शन किया था, वह उसी समय बनाई गई थी। फ़ेंगदू सम्राट भी रहने और काम करने के लिए परलोकाधिपति यमराज के भवन में चले गए।

आज के डोंगयुए सम्राट पहली न्यायसभा के राजा छिनगुआंग के पद से पदोन्नत होकर आए हैं। पहली न्यायसभा के राजा छिनगुआंग मनुष्यलोक में एक न्यायप्रिय और दयालु शासक थे; आयु समाप्त होने पर उन्हें पहली न्यायसभा का यमराज नियुक्त किया गया था। डोंगयुए सम्राट के काम लगभग परलोकाधिपति यमराज के कामों जैसे ही हैं। अंतर केवल इतना है कि कुछ आत्माएँ नरक लौटने के बाद सर्वोच्च यमराज तक ही अपनी शिकायत पहुँचाना चाहती हैं। ऐसी लगभग सभी आत्माओं को परलोकाधिपति यमराज के भवन की न्यायसभा में भेजा जाता है, जहाँ परलोकाधिपति यमराज स्वयं उनका न्याय करते हैं। वास्तव में यह मनुष्यलोक से आई लोगों की आदत है। जो भी परलोक आता है, उसके लिए वहाँ का प्रत्येक यमराज निष्पक्ष और कठोर है। सभी यमराज परलोक के विधान और कर्मफल की व्यवस्था के अनुसार विभिन्न मामलों का निपटारा करते हैं। किसी रिश्तेदार या मित्र के प्रति तनिक भी पक्षपात नहीं होता। वे सभी देखते हैं कि पापी आत्मा ने कौन-सा

पाप किया है और उसी के अनुसार उसे किस नरक में भेजना है; अन्याय की जो शिकायत हो, उसके अनुरूप परलोक की वैध प्राण-वसूली आदेश-पट्टिका भी जारी की जाती है।”

इस गोल मेहराब वाले पुल को पार करने पर पीछे जो सरकारी भवन है, वही डोंगयुए सम्राट का भवन है। यहाँ किसी उच्च अधिकारी के भवन का माहौल स्पष्ट रूप से महसूस होता है। पुल पर ही यक्ष लगातार इधर-उधर गश्त लगा रहे हैं; परलोक के न्यायाधिकारी को देखकर वे सब प्रणाम करते हैं। न्यायाधिकारी साथ हों तो स्वयं इधर-उधर रास्ते के संकेत खोजने नहीं पड़ते; बहुत आसानी से और जल्दी पहुँच जाते हैं। वास्तव में नरक में हम बहुत तेज़ चलते हैं, मनुष्यलोक की तरह धरती पर एक-एक पाँव टिकाकर धीरे-धीरे नहीं। कभी-कभी न्यायाधिकारी तेज़ चलने लगते हैं तो मुझे भी अपनी चाल बढ़ानी पड़ती है। हम मन की शक्ति से चलते हैं और हमारे पाँव धरती को नहीं छूते। नरक सचमुच बहुत विशाल है! इस रास्ते पर भी मैं पहले कभी नहीं आई, लेकिन मैं नरक के रास्ते याद रखना ही नहीं चाहती। मेरी कामना है कि नरक के सभी प्राणी शीघ्र सद्धर्म सुनकर साधना करें और सब जल्द ही ऊपर उठकर नरक के दुःखों से मुक्त हों। अब डोंगयुए सम्राट का भवन दिखाई दे रहा है। लाल रंग के दो पल्लों वाले बड़े द्वार पर यक्ष बड़ी तलवारें लिए सीधे खड़े हैं। यक्ष ने मुस्कराकर न्यायाधिकारी को प्रणाम किया, फिर द्वार खोल दिया और हमें अपने आप भीतर जाने दिया।

भीतर पहुँचने पर एक और प्रेत-प्रहरी ने भी मुस्कराकर न्यायाधिकारी का स्वागत किया। वह हमें एक छोटे बगीचे के गलियारे से होते हुए न्यायसभा तक ले गया। देखकर लगता है कि न्यायाधिकारी सम्राट के भवन के सभी यक्षों से अच्छी तरह परिचित हैं। यह न्यायसभा स्पष्ट रूप से परलोकाधिपति यमराज की सर्वोच्च न्यायसभा से बहुत छोटी है। यहाँ और भी पुराने ज़माने का आभास होता है। भवन में पुराने ढंग का लोहे का बड़ा लाल द्वार है; भीतर का सारा फर्नीचर और सजावट प्राचीन शैली के हैं। दीवारों पर टँगे चित्रों में भी पुराने समय के लोग दिखाई देते हैं।

दोनों ओर की दीवारों के नीचे कुछ प्राचीन हथियार रखे हुए हैं। द्वार के ठीक सामने एक पट्टिका पर चार चीनी अक्षरों में 'डोंगयुए सम्राट' लिखा है। एक यमराज बैठे हैं; संभवतः वही डोंगयुए सम्राट हैं। डोंगयुए सम्राट ने यमराज का वस्त्र पहना है, उनका चेहरा धूसर है, सिर पर मुकुट है और आँखों से काली आभा निकल रही है। आह! देखने में ये भी अत्यंत गंभीर और कुछ उग्र रूप वाले एक और यमराज हैं। यमराज की काम करने की मेज़ पर भी चार चीनी अक्षरों में 'डोंगयुए सम्राट' लिखा है।

"मैं, आपकी साधारण प्रजा शांगगुआन युहुआ, डोंगयुए सम्राट के समक्ष साष्टांग प्रणाम करती हूँ!"

डोंगयुए सम्राट ने कहा: "शांगगुआन युहुआ, औपचारिक प्रणाम रहने दीजिए! आपका स्वागत है! जो भी प्रश्न हों, निःसंकोच सीधे पूछ सकती हैं!"

आ यू: "जी, सम्राट यमराज! मैं, आपकी साधारण प्रजा, यमराज से कुछ प्रश्न पूछना चाहती हूँ।

पहला, मैंने सुना है कि नरक अपनी पूरी क्षमता तक भर चुका है। यदि मनुष्यलोक में यौन दुराचार इसी तरह बढ़ता रहा, और नरक में इतनी भीड़ हो गई कि यौन दुराचार करने वालों के लिए कोई नया नरक उपलब्ध ही न हो, तो क्या इसका अर्थ है कि आयु समाप्त होने के बाद भी उन्हें कुछ समय के लिए नरक की यातना से छूट मिल सकती है, और नरक में जगह होने पर ही उन्हें दंड दिया जाएगा? या अभी नरक में रहने वाले प्राणियों को समय से पहले छोड़ दिया जाएगा, ताकि नई पापी आत्माओं के दंड के लिए जगह बन सके?

दूसरा, जिन लोगों ने पहले ही यौन दुराचार के बहुत-से पाप किए हैं, परलोक के विधान के अनुसार उनका पुण्यफल और उनकी आयु, दोनों घटते हैं। ऐसा कौन-सा उपाय है जिससे यौन दुराचार कर चुके प्राणी आयु समाप्त होने पर नरक में गिराने वाले पाप से पूरी तरह मुक्त हो सकें?

तीसरा, ऐसा कौन-सा उपाय है जिससे यौन दुराचार के आचरण को पूरी तरह समाप्त किया जा सके?"

डोंगयुए सम्राट ने कहा: "आह! मनुष्यलोक से उठती यौन दुराचार की एक प्रबल ऊर्जा सीधे बादलों के ऊपर देवराज के विशाल सभागृह तक पहुँच गई है। यौन दुराचार ने प्रकृति की शुद्ध ऊर्जा के संतुलन में गंभीर बाधा डाल दी है। यदि मनुष्यलोक प्रकृति की इस शुद्ध ऊर्जा का संतुलन इसी तरह खोता रहा, तो तरह-तरह की प्राकृतिक विपदाएँ आएँगी। उदाहरण के लिए, मौसम अस्थिर हो जाएगा और क्षण-भर में अनेक परिवर्तन हो सकते हैं: कभी अचानक धूप, कभी अचानक वर्षा; एक ही दिन में तापमान के उतार-चढ़ाव का अंतर बहुत बड़ा हो सकता है, जिससे उसी दिन वसंत, ग्रीष्म, शरद और शीत—चारों ऋतुओं का अनुभव होने लगे। मनुष्यलोक की सुनामियाँ, बाढ़ें, अग्निकांड, भूकंप और तरह-तरह की बड़ी महामारियाँ इसी की चेतावनी हैं।

आ यू! ज़रा सोचिए, दक्षिण जम्बूद्वीप की पृथ्वी पर इतनी दुःखद घटनाएँ क्यों होती हैं? निश्चित ही मनुष्यों के आचरण से उत्पन्न सामूहिक कर्म के कुछ कारण हैं। इसीलिए मेरी आशा है कि 'परलोक के अटल विधान' मनुष्यलोक के भ्रमित हृदयों को शीघ्र जागृत करे, लोगों के मन को बचाने और समाज के आचरण को सुधारने का काम करे, तथा अनेक प्राणियों को अपनी मर्यादा में रहकर पाँच मानवीय संबंधों की नैतिकता का पालन करने के लिए प्रेरित करे। इससे यौन दुराचार की ऊर्जा मनुष्यलोक में जो विविध विपदाएँ लाती है, उनकी दिशा पलट सकेगी, भीड़ से भरे नरकों को भी राहत मिलेगी और मनुष्यलोक में थोड़े-थोड़े अंतराल पर बार-बार बड़ी विपदाएँ नहीं आएँगी। यदि मनुष्यलोक में यौन दुराचार का वर्तमान प्रसार इसी तरह चलता रहा, तो निकट भविष्य में बड़ी-बड़ी विपदाएँ पूरे संसार को अपनी चपेट में लेती हुई एक के बाद एक आएँगी। यौन दुराचार या अन्य अनेक अपराध करने वाले सभी प्राणी भी परलोक के अटल और अचूक विधान के आकाशीय जाल से निश्चित

ही नहीं बच सकेंगे। बड़ी विपदाओं में उस अटल, किसी को न छूटने देने वाले विधान का आकाशीय जाल उन सबको समेट लेगा, और वे नरक की अपार और असीम यातनाएँ भोगने के लिए गिरेंगे।[102]

यद्यपि परलोक का यह नरक पूरी तरह भर चुका है, परलोक का प्रशासन अन्य स्थान खोजकर नए नरक बनवाएगा। यदि यह नरक पूरी तरह नष्ट भी हो जाए, तब भी यहाँ के प्राणियों के पापकर्म समाप्त न हुए हों तो हम उन पापी आत्माओं को एक स्थान से दूसरे स्थान भेजते हुए अन्य नरकों में दंड भोगने भेजेंगे। जब उनके सारे पापकर्म पूरी तरह मिट जाएँगे, तभी वे नरक छोड़ सकेंगी। नरक के प्राणियों के वहाँ से निकलने के केवल दो कारण हो सकते हैं। पहला, उनके अपने नरक के पापकर्म का दंडकाल पूरा हो जाए, अर्थात नरक में भोगे जाने वाले अशुभ कर्मों का फल समाप्त हो जाए। तभी वे नरक के शेष कर्मफल के अनुसार क्रमशः उसके अनुरूप किसी जन्म में जा सकते हैं।

परलोक में बोधिसत्त्व क्षितिगर्भ के करुणापूर्ण उपदेशों की धर्मसभा भी है। यदि किसी भी बड़े नरक में कोई आत्मा सच्चे मन से पश्चात्ताप का एक भी विचार जगाए, तो यक्ष उसे तुरंत बोधिसत्त्व क्षितिगर्भ के करुणापूर्ण उपदेश सुनने ले जा सकते हैं। इस तरह उसे बुद्ध का आशीर्वाद मिलता है, उसके भीतर शुभ प्रवृत्तियाँ जागती हैं और वह ऊपर उठकर किसी शुभ गति में जन्म पा सकती है। सबसे भयावह बात यह है कि प्राणी अपने पिछले गलत आचरण के लिए पश्चात्ताप का संकल्प ही न करें, लगातार मोह में फँसे रहें, पतन और दुःख में डूबे रहें, यहाँ तक कि अपने तरह-तरह के पापकर्म और भी गहरे करते जाएँ।

अंतरतम से, सच्चे मन से उठने वाला पश्चात्ताप का एक विचार ही अपार और असीम पापकर्मों को गला देने के लिए पर्याप्त है। परलोक का अटल विधान सच्चे मन से अपनी भूल सुधारने वाले किसी भी चेतन प्राणी को निर्दयता से बाँधकर नहीं रखता। नरक से निकलने वाले अधिकतर प्राणी अपेक्षाकृत निम्न, छोटे और सरल

सोच वाले पशु-जन्मों में जाते हैं। मनुष्यलोक में जन्म मिले भी तो उनका पुण्यफल अल्प होता है, पाँचों इंद्रियाँ पूर्ण नहीं होतीं, इत्यादि। दूसरा कारण है सौभाग्य से मनुष्यलोक के परिजनों द्वारा किए गए प्रबल उद्धार-कर्मों से सहायता पाना; इससे भी नरक से बाहर निकला जा सकता है। परिजनों के उद्धार-कर्मों से उपयुक्त फल मिलना अपेक्षाकृत कठिन है, क्योंकि उसके लिए दूसरों की शक्ति से जुड़े कारणों और परिस्थितियों पर निर्भर रहना पड़ता है। परलोक में ऐसे अनेक अभिलेख हैं जिनमें मनुष्यलोक के परिजनों के उद्धार-कर्मों से पापी आत्माएँ सफलतापूर्वक शुभ गतियों में ऊपर उठ गईं; कुछ तो देवलोक या पश्चिम की शुद्धभूमि तक पहुँच गईं। लेकिन यह भी संयोग से नहीं हुआ। नरक में गिरने से पहले अपने पिछले जन्मों में उन पापी आत्माओं ने उसके अनुरूप कुछ पुण्यफल संचित किया था। वे अचानक ही उद्धार नहीं पा गईं; इसके पीछे अवश्य ही शुभ कारण और परिस्थितियाँ रही होंगी। इसलिए सभी प्राणियों को, जब तक उनकी पाँचों ज्ञानेंद्रियाँ सही-सलामत हैं और शरीर स्वस्थ है, अधिकाधिक शुभ कर्म करने, सार्वजनिक नियमों और कानून का पालन करने, शील निभाने तथा पुण्य और सद्गुण संचित करने चाहिए। अपने लिए अधिक पुण्यफल एकत्र करना चाहिए। स्वस्थ शरीर का उपयोग कभी भी ऐसे तरह-तरह के शीलभंगकारी कामों में न करें जो नरक में गिराएँ। एक बार नरक में गिर गए तो अपार और असीम दुःख होगा, और बाहर आने का कोई दिन नहीं होगा।
103

जिन प्राणियों ने यौन दुराचार किया है या पहले ही नरक में गिराने वाले अशुभ कर्म कर लिए हैं, उनके लिए कारण है तो फल भी है। नरक के अशुभ कर्म किए हैं तो भविष्य में नरक का फल अवश्य भोगना पड़ेगा। इस फल को न भोगना हो तो उसके प्रकट होने से पहले ही उन सभी सहायक परिस्थितियों को समाप्त करना होगा जो उसे साकार करती हैं। यदि इसी जीवन में यौन दुराचार के कारण नरक में गिरने से पूरी तरह बचना चाहते हैं, तो केवल एक उपाय है: यौन दुराचार के हर आचरण को पूरी तरह दूर करना। सबसे पहले अपने मन के विचारों पर कठोर

निगरानी और संयम रखना अनिवार्य है। मन में उठने वाले यौन दुराचार के सूक्ष्म से सूक्ष्म विचार को भी छूट नहीं दे सकते, एक विचार को भी नहीं। अत्यंत सूक्ष्म विचार भी उठे तो तुरंत पश्चात्ताप करना होगा और पूरी दृढ़ता से यह संकल्प लेना होगा कि आगे फिर ऐसा विचार नहीं उठने देंगे। साथ ही, लगातार एक-दूसरे को समझाते हुए मनुष्यलोक के लोगों को यौन दुराचार न करने के लिए प्रेरित करना होगा। यह संकल्प बहुत महत्त्वपूर्ण है।

जिन प्राणियों को यह लेख देखने का संयोग मिला है और जो सचमुच यौन दुराचार को पूरी तरह छोड़ने का संकल्प करना चाहते हैं, लेकिन बार-बार असफल होते हैं, वे हर चंद्रमास की पहली और पंद्रहवीं तिथि को आकाश की ओर मुख करके प्रतिज्ञा कर सकते हैं कि अब से जन्म-जन्मांतर तक यौन दुराचार नहीं करेंगे। साथ ही, 'परलोक के अटल विधान' इस सदुपदेश की पुस्तक के बारे में एक से दूसरे को बताएँ और उसके मुद्रण में सहायता दें। रोज़मर्रा में भी यौन दुराचार से संबंधित हर कथन और आचरण को कठोरता से रोकें। शाकाहार अपनाएँ और कामेच्छा बढ़ाने वाले कुछ खाद्य पदार्थ न खाएँ। उदाहरण के लिए, पकाकर खाया गया हरा प्याज़ और लहसुन कामेच्छा बढ़ाते हैं। कामेच्छा बढ़ाने वाला प्रभाव रखने वाली औषधीय सामग्रियों का भी यथासंभव कम उपयोग करें, जैसे बाजी आदि।[104]

पशुओं की कामेच्छा मनुष्यों से अधिक होती है, इसलिए पशुओं से संबंधित खाद्य पदार्थ न खाएँ। वे मन को असंयमित करने के अलावा प्राणों का ऋण भी चढ़ाते हैं। मदिरा भी मन को असंयमित करती है, इसलिए उसका सेवन भी न करें। कामोत्तेजना जगाने वाले अश्लील प्रकाशनों की किसी भी सामग्री को न आँखों से देखें, न कानों से सुनें। प्रतिदिन निरंतर परिश्रमपूर्वक बुद्धधर्म की साधना करें, सद्धर्म के प्रसार और संरक्षण का संकल्प लें और अतीत में किए गए यौन दुराचार के पापकर्मों का सच्चे मन से पश्चात्ताप करें। यौन दुराचार के आचरण को पूरी तरह दूर करने का सच्चा संकल्प जगाना बहुत महत्त्वपूर्ण है। यदि वास्तव में 'चित्त की दूषित

वृत्ति मिटे, पाप मिटें और दोनों शून्य हो जाएँ' की अवस्था प्राप्त हो जाए, तो नरक में गिराने वाले अशुभ कर्मों की चिंता नहीं रहेगी।[105]

'नमो बोधिसत्त्व अवलोकितेश्वर' इस पवित्र नाम का जप करने से भी यौन दुराचार का आचरण धीरे-धीरे दूर किया जा सकता है। प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक बोधिसत्त्व के पवित्र नाम का जप करें तो उनकी अदृश्य करुणापूर्ण कृपा अवश्य प्राप्त कर सकते हैं और नरक में गिराने वाले यौन दुराचार के पापकर्म कम कर सकते हैं। यदि कोई प्राणी प्रतिज्ञा करने के बाद उसका कठोरता से पालन करे, तो आयु समाप्त होने पर नरक में गिराने वाले अशुभ कर्मों से उसे मुक्ति मिलेगी और वह शुभ गति में जन्म पा सकेगा। नरक की कितनी यातना वास्तव में कम होगी, इसका अंतिम निर्णय उस चेतन प्राणी के संकल्प और पश्चात्ताप की शक्ति को देखकर किया जाएगा।"

"शांगगुआन युहुआ! क्या आपके और भी कोई प्रश्न हैं?"

"अभी तो नहीं। आपके उत्तरों के लिए बहुत आभार, सम्राट! मैं, आपकी साधारण प्रजा, साष्टांग प्रणाम करके विदा लेती हूँ!"

मैंने डोंगयुए सम्राट, परलोक के न्यायाधिकारी और सभी अधिकारियों को साष्टांग प्रणाम किया!

श्वेत कमल पर सवार होकर लौटती हूँ।

13 / पुण्य और सद्गुण से युक्त धर्मनिष्ठ देवता—भूमि-देव तुदी गोंग

बुद्ध की शक्ति के अनुग्रह के लिए कृतज्ञ हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ!

अमिताभ बुद्ध! मैं, आ यू, परलोक के न्यायाधिकारी को साष्टांग प्रणाम करती हूँ!

आज परलोक के न्यायाधिकारी से पूछना चाहती हूँ: भूमि-देव के मंदिरों में जिन भूमि-देव तुदी गोंग की लोग पूजा करते हैं, वे आकाशीय देवता हैं या पृथ्वी के देवता? क्या उन्हें स्वर्ग से भेजा गया है, या वे केवल उन स्थानों पर आकर वास करने वाली आत्माएँ अथवा प्रेत आदि हैं? उनके कार्य और अधिकार क्षेत्र क्या हैं? प्रत्येक घर के भीतर के भूमि-देव तुदी गोंग और द्वार पर के भूमि-देव तुदी गोंग में क्या अंतर है?

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा, “भूमि-देव के मंदिरों के भूमि-देव तुदी गोंग पुण्य और सद्गुण वाले देवता हैं। वे पुण्य और सद्गुण से युक्त धर्मनिष्ठ देवताओं की श्रेणी में आते हैं। वे जीवित मनुष्यों की पूजा में अर्पित धूप ग्रहण कर सकते हैं और उनकी नियुक्ति स्वर्ग की ओर से होती है। इस प्रकार के देवताओं में पुण्य और सद्गुण की मात्रा कम या अधिक होती है। जिन भूमि-देव तुदी गोंग में पुण्य और सद्गुण अधिक होते हैं, उनके प्रबंधन का क्षेत्र भी बड़ा होता है। उदाहरण के लिए, ग्रामीण इलाकों में कुछ भूमि-देव तुदी गोंग पूरे गाँव का प्रबंधन करते हैं, जबकि नगरों में क्षेत्र बाँटकर कई भूमि-देव तुदी गोंग को प्रबंधन सौंपा जाता है।

इन बड़े अधिकार क्षेत्र वाले भूमि-देव तुदी गोंग के लिए जीवित मनुष्य भूमि-देव का एक छोटा मंदिर बनाते हैं। क्षेत्रीय भूमि-देव तुदी गोंग का कार्य अपने क्षेत्र के प्राणियों के पुण्य और सद्गुण तथा उनके आने-जाने की सुरक्षा का प्रबंध करना है।

किसी का भी जन्म या मृत्यु होने पर परलोक से भूमि-देव तुदी गोंग को सूचना भेजी जाती है। किसी का स्थानांतरण होकर भूमि-देव तुदी गोंग के अधिकार क्षेत्र से बाहर चले जाने पर भी उन्हें उसका अभिलेख मिलता है।

भूमि-देव तुदी गोंग का कार्य चेतन प्राणियों के निवास-क्षेत्र में शांति और सुरक्षा बनाए रखना है। यदि कोई दुष्ट आत्मा, देव-प्रेत आदि भूमि-देव तुदी गोंग के अधिकार क्षेत्र में प्रवेश करना चाहे, तो वे स्थिति को उचित ढंग से सँभालते हैं और जीवित मनुष्यों की सुरक्षा की अपनी जिम्मेदारी निभाते हैं। सभी भूमि-देव तुदी गोंग अपने मानव जीवन में दूसरों की सहायता करना पसंद करने वाले और न्यायभाव रखने वाले लोग थे। आयु पूरी होने पर उन्हें भूमि-देव तुदी गोंग नियुक्त किया गया, ताकि वे मानव जगत की धूप-पूजा ग्रहण करें। ये अधिक पुण्य और सद्गुण वाले भूमि-देव तुदी गोंग हैं, जो जनता की वंदना और अर्पण ग्रहण करने के पात्र हैं।

प्रत्येक घर के भीतर और द्वार पर के भूमि-देव तुदी गोंग अपेक्षाकृत कम पुण्य और सद्गुण वाले धर्मनिष्ठ प्रेतों की श्रेणी में आते हैं। वास्तव में, घर के भीतर और द्वार पर रहने वाले इन अस्तित्वों को भूमि-देव तुदी गोंग इसलिए कहा जाता है कि जीवित मनुष्य स्वयं भूमि-देव तुदी गोंग की एक नामपट्टिका स्थापित करके पूजा करते हैं और उन्हें भूमि-देव तुदी गोंग तथा द्वार के भूमि-देव तुदी गोंग पुकारते हैं। असल में वे प्रेत हैं, जो उस घर में हमेशा से रहते आए हैं और जिनकी आयु मनुष्यों से लंबी होती है। यदि मनुष्य घर में आकर न रहें, तो प्रेतों को कोई अर्पण नहीं मिलता। जब जीवित मनुष्य अर्पण करते हैं, तो प्रेत भी उस उपकार का प्रतिदान करते हैं और स्वाभाविक रूप से उनके आने-जाने की सुरक्षा करते हैं।

आजकल जीवित मनुष्य अक्सर मकानों की खरीद-बिक्री करते हैं, लेकिन प्रेत लोगों के साथ नहीं जाते। बदलता केवल मकान का मानव स्वामी है। ये प्रेत स्वर्ग से भेजे गए भूमि-देव तुदी गोंग नहीं हैं। स्वर्ग से भेजे जाने वालों में क्षेत्रीय भूमि-देव तुदी गोंग, खरीदारी केंद्रों के भूमि-देव तुदी गोंग और भवनों के भूमि-देव तुदी गोंग

शामिल हैं। यहाँ भवन से तात्पर्य उन ऊँची बहुमंज़िली इमारतों से है जिनमें आजकल जीवित मनुष्य रहते हैं। इन भवनों के द्वार पर परलोक द्वारा भेजा गया एक भूमि-देव तुदी गोंग होता है। ऐसे भवनों के भूमि-देव तुदी गोंग क्षेत्रीय भूमि-देव तुदी गोंग के अधीन होते हैं। खरीदारी केंद्रों और दुकानों के द्वार पर रहने वाले भूमि-देव तुदी गोंग परलोक द्वारा भेजे जाते हैं, क्योंकि खरीदारी केंद्रों और दुकानों में लोगों की संख्या अधिक होती है और वहाँ धूप-पूजा ग्रहण करने के लिए अपेक्षाकृत अधिक पुण्य और सद्गुण वाले भूमि-देव तुदी गोंग की आवश्यकता होती है। ठीक है, आ यू, आज के लिए यहीं तक। अब वापस चलें।"

अमिताभ बुद्ध! मैं, आ यू, परलोक के न्यायाधिकारी को साष्टांग प्रणाम करती हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर लौटती हूँ।

घर जाने से पहले पास के क्षेत्रीय भूमि-देव तुदी गोंग का अभिवादन करने गई।

मैंने कहा, "अमिताभ बुद्ध! तुदी गोंग दादाजी, नमस्कार!"

तुदी गोंग दादाजी ने कहा, "आ यू! इतनी देर हो गई है, जल्दी घर लौट जाइए। अपनी सुरक्षा का ध्यान रखिए!"

मैंने कहा, "तुदी गोंग दादाजी, आभार! आप रोज़ यहाँ बैठे रहते हैं, क्या आपको ऊब नहीं होती?"

तुदी गोंग दादाजी ने कहा, "अब तो मैं पहले से बहुत अधिक व्यस्त रहता हूँ!"

मैंने कहा, "कुछ समय पहले यहाँ से गुज़री थी, तब आप यहाँ बैठे दिखाई नहीं दिए थे?"

तुदी गोंग दादाजी ने कहा, "मैं जिस पुराने समय की बात कर रहा हूँ, आ यू, वह आपके जन्म से पहले का समय है, 150 वर्ष पहले का। तब इतनी व्यस्तता नहीं थी जितनी अब है। आज के लोगों के भावनात्मक संबंध जटिल हैं और उनसे जुड़ी समस्याएँ बहुत हैं। बीमारी, मृत्यु, जन्म—इनसे जुड़ी तरह-तरह की समस्याएँ भी पहले से काफ़ी बढ़ गई हैं।"

मैंने कहा, “तुदी गोंग दादाजी! लोग बीमार पड़ने पर इलाज करवाने जाते हैं, मृत्यु के बाद उनका दाह संस्कार होता है और बच्चे के जन्म के लिए वे अस्पताल जाते हैं। इन बातों के लिए तो आपको कष्ट उठाने की ज़रूरत नहीं पड़ती; फिर इनसे आपकी व्यस्तता कैसे बढ़ जाती है?”

तुदी गोंग दादाजी ने कहा, “आ यू, आप नहीं जानतीं। जीवित जगत के प्राणियों के आने-जाने की सुरक्षा मेरी जिम्मेदारी है। किसी प्राणी के साथ कोई घटना घटने वाली हो, तो मुझे उसका पहले ही पता चल जाता है। कुछ घटनाओं में पुण्यफल की घट-बढ़ भी शामिल होती है। ऐसी घटनाओं के घटने से पहले ही मुझे उनका प्रबंध करना पड़ता है। इन घटनाओं का प्रबंध करने के लिए समय और संबंधित व्यक्तियों की व्यवस्था करनी होती है। हर व्यक्ति के शरीर का अपना प्रकाश होता है और हर किसी के अपने वैर और संबंधों से जुड़े कर्म-ऋणदाता होते हैं। सड़क पर चलते प्राणियों को देखिए और ध्यान दीजिए कि क्या उनमें से हर एक अलग है।”

ठीक है! मैंने देखा कि वैर और संबंधों से जुड़े कर्म-ऋणदाता बड़ी संख्या में प्रत्येक जीव के आसपास मौजूद थे और कतार-दर-कतार उसका पीछा कर रहे थे। उनमें से कुछ तो बहुत क्रोधित भी थे! कुछ लगातार किसी जीवित मनुष्य के सिर पर मार रहे थे, जिससे उस व्यक्ति के सिर में लगातार दर्द हो रहा था। उनमें से बहुत-से जीवित लोगों के शरीरों से चिपके हुए थे। कुछ मुट्ठियाँ कस रहे थे और हथेलियाँ मल रहे थे, किसी को पीटने या चुटकी काटने की तैयारी में थे।[106]

तभी मुझे हल्की-सी श्वेत आभा वाला एक पुरुष दिखाई दिया। उसमें सच्चरित्रता कुछ अधिक थी। जब वह अँधेरी, बिना बत्ती वाली एक छोटी गली में पहुँचा, तो प्रेतों ने उसे गुज़रने का रास्ता दे दिया। उसके चले जाने के बाद वे फिर गली में लौट आए। यह देखकर लगा कि सचमुच कुछ अंतर तो होता है।

तुदी गोंग दादाजी ने कहा: “हाल में यहाँ एक अविवाहित पुरुष ने यौन दुराचार और धोखाधड़ी की है। उसने एक स्त्री की भावनाओं से खिलवाड़ किया और उससे

धन भी ठगा, साथ ही उसे कई बार गर्भपात कराने के लिए उकसाया। वह स्त्री भी कोई सदाचारी, धर्मपरायण व्यक्ति नहीं है। उसके मन में हत्या का विचार उठ चुका है; वह उस पुरुष को मारने के साथ स्वयं भी मर जाने का इरादा रखती है। पर इस पुरुष का पुण्यफल अभी समाप्त नहीं हुआ है और अभी उसकी मृत्यु का समय नहीं आया है। पिछले जन्म में वह एक साधक था, पर शीलों का निष्कलंक पालन नहीं करता था और उसने यौन दुराचार किया था। इस जन्म में उसने फिर यौन दुराचार किया है। अब मैं उसकी सहायता करने और उसे सचेत करने के लिए कुछ उपाय अपना रहा हूँ। पिछले कुछ दिनों में उसने स्वयं भी महसूस किया है कि उसके कुछ काम ठीक से नहीं हो रहे हैं। उदाहरण के लिए, कुछ दिन पहले जब वह एटीएम से पैसे निकाल रहा था, तो पैसे निकले ही नहीं। बाद में वह पैसे निकालने में सफल तो हो गया, पर काम सहजता से नहीं हुआ। काम की सारी प्रक्रियाएँ सही होने पर भी कुछ ऐसी समस्याएँ सामने आ जाती हैं जिनका मनुष्य कोई स्पष्टीकरण नहीं दे सकते। इस बार मेरी सहायता से वह धीरे-धीरे आत्मचिंतन कर सकेगा।[107]

यह तो केवल एक जीव की बात है। प्रतिदिन तरह-तरह के अनेक जीव होते हैं और घटनाएँ भी बहुत होती हैं, इसलिए स्वाभाविक ही मैं बहुत व्यस्त रहता हूँ। आपने अभी देखा कि कुछ जीवों के लिए प्रेत भी रास्ता छोड़ देते हैं। वास्तव में मैं भी ऐसे जीवों की सहायता करता हूँ। यदि उनमें से कोई सच में गिरने वाला हो, तो मैं उसे सहारा देता हूँ या जहाँ तक संभव हो, उसे गिरने से बचाने में सहायता करता हूँ। लेकिन जीवित मनुष्य मेरी उपस्थिति महसूस नहीं कर पाते। वे बस यही सोचते हैं कि अच्छा हुआ जो वे नहीं गिरे, बस गिरते-गिरते बचे—सचमुच कितना सौभाग्य है! वास्तव में, उनका यह ज़रा-सा बच जाना उन्हीं के पुण्यफल से होता है।”

मैंने कहा: “तुदी गोंग दादाजी, आप कितनी मेहनत करते हैं! तो आप सदा ओझल रहकर चुपचाप हमारी सहायता करते रहे हैं! मुझे यह आज ही पता चला। मैं सचमुच आपकी बहुत आभारी हूँ! विदा, तुदी गोंग दादाजी!”

मैं हाथ जोड़कर प्रणाम करती हूँ!

14/एक झूठ के परिणाम छोटे भी हो सकते हैं और बड़े भी — ‘बर्फ़ीली ठंड में जीभ उखाड़ने और शरीर को चूर-चूर करने वाले नरक’ का भ्रमण

बुद्ध की शक्ति के अनुग्रह के लिए कृतज्ञ हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ!

“अमिताभ बुद्ध! मैं, आ यू, हाथ जोड़कर परलोक के न्यायाधिकारी को साष्टांग प्रणाम करती हूँ! कृपया बताइए, न्यायाधिकारी महोदय, यदि कोई जीवित मनुष्य मिथ्यावचन कहे, तो उसे नरक में किस प्रकार का कर्मफल भोगना होगा? बचपन में दादी से सुना था कि मिथ्यावचन कहने वालों को नरक में जाकर प्रेतों से मार खानी पड़ती है, वगैरह। आज मैं आपसे निवेदन करना चाहती हूँ कि मुझे वहाँ भ्रमण के लिए ले चलें।”

परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा: “मिथ्यावचन के विषय में बहुत कुछ कहा जा सकता है। आज मैं इसका संक्षेप में कुछ विवेचन करूँगा। वास्तव में मिथ्यावचन का प्रभाव बहुत व्यापक होता है। एक मिथ्यावचन किसी एक व्यक्ति के जीवन को, यहाँ तक कि अनगिनत लोगों के जीवन को भी हानि पहुँचा सकता है। मिथ्यावचन लोभ, द्वेष और मोह का साथी है। यदि जीवित मनुष्य मिथ्यावचन का दोष करते हैं, तो उससे उन्हें नरक का कर्मफल भोगना पड़ता है।

मिथ्यावचन के संबंध में सबसे महत्त्वपूर्ण यह देखना है कि उसे कहने वाले जीवित मनुष्य के मन में उसी क्षण क्या विचार और अभिप्राय उत्पन्न हुए—वे लोभ, द्वेष और मोह, इन तीन विषों में से किसकी ओर अधिक झुके हुए थे। कुछ

मिथ्यावचनों में तीन विषों में से केवल एक ही होता है। उदाहरण के लिए, उनमें केवल लोभ होता है और कोई अन्य तत्त्व नहीं; कुछ में केवल द्वेष होता है, कुछ में केवल मोह, और कुछ में दो या तीनों तत्त्व होते हैं।

समग्र रूप से मिथ्यावचन दो प्रकार के होते हैं: वास्तविक मिथ्यावचन और नाममात्र का मिथ्यावचन। वास्तविक मिथ्यावचन के कारण नरक के अलग-अलग स्तरों के कर्मफल भोगने पड़ते हैं। निश्चय ही, नरक के कर्मफल की गंभीरता इस बात से तय होती है कि उस मिथ्यावचन से दूसरों को कितनी हानि हुई। नाममात्र के मिथ्यावचन के लिए नरक का कर्मफल नहीं भोगना पड़ता; कुछ नाममात्र के मिथ्यावचनों से तो पुण्य भी प्राप्त होता है।

नाममात्र का मिथ्यावचन क्या है? वह मिथ्यावचन जो जीवों के उद्धार के लिए कहा जाए, जिसमें अपने लाभ की तनिक भी स्वार्थपूर्ण भावना न हो और जिसका उद्देश्य पूरी तरह जीवों का उद्धार ही हो, नाममात्र का मिथ्यावचन कहलाता है। इसके निकट आने वाला एक और प्रकार है, जिसका जीवित संसार के बहुत-से लोग अक्सर प्रयोग करते हैं। उदाहरण के लिए, आ यू, यदि कोई आपसे पूछे कि आपने भोजन किया है या नहीं, और आप झूठ बोलकर कह दें कि भोजन कर चुकी हैं—केवल इसलिए कि आप सामने वाले को भोजन पकाने का कष्ट नहीं देना चाहतीं और आपको उसके उपकार की ऋणी हो जाने की चिंता है—तो इसे सुविधा के लिए बोला गया असत्य कहा जाता है। सुविधा के लिए बोले गए इस असत्य में अपने हित का एक विचार विद्यमान है। किसी भी मिथ्यावचन में यदि अपने हित का विचार हो, तो वह नाममात्र का मिथ्यावचन नहीं कहलाता। यदि किसी ने सुविधा के लिए ऐसा असत्य कहा हो, तो वह जीवन समाप्त होने से पहले सच्चे मन से पश्चात्ताप करके स्वयं को उससे शुद्ध कर सकता है। पश्चात्ताप अवश्य करना चाहिए, क्योंकि सुविधा के लिए बोला गया असत्य वास्तविक मिथ्यावचन की पूर्वभूमिका है। यदि हम बार-बार सुविधा के लिए असत्य बोलें, तो यह हमारी जन्मजात आध्यात्मिक चेतना को

दूषित करेगा और धीरे-धीरे वास्तविक मिथ्यावचन बोलना हमारी आदत बन जाएगा।
108

सुविधा के लिए बोले गए असत्य पर पश्चात्ताप करने के लिए बुद्ध के सामने निवेदन किया जा सकता है कि कब, कहाँ और किस काम के लिए आपने सुविधा के लिए असत्य कहा था, और अब आप सच्चे मन से उस असत्य पर पश्चात्ताप करते हैं। यदि बातें याद न हों, तो सच्चे मन से अपने पिछले दोषों को पूरी तरह सुधारने और उन्हें फिर कभी न दोहराने का संकल्प किया जा सकता है। याद रखिए, भले ही परलोक के विधान छल-कपट और दुष्कर्म को दया दिखाए बिना दंडित करते हों, स्वर्ग सदा उन चेतन जीवों पर करुणा करता है जो सच्चे मन से अपनी भूलों पर पश्चात्ताप करते हैं। सच्चे मन से अपनी भूल सुधारने वाले चेतन जीवों के लिए वह अवश्य एक सीढ़ी छोड़ देता है, जिससे वे धीरे-धीरे प्रकाश की ओर बढ़ सकें और अपने उस जन्मजात प्रकाश को पुनः पा सकें जो उनके मनुष्यलोक में पहली बार आने पर था। फिर बुद्ध की शक्ति के आशीर्वाद के लिए प्रार्थना करें और उसका आश्रय लें, ताकि कर्मजनित बाधाएँ दूर हो जाएँ। अब से सदा बुद्ध के नाम का स्मरण करके शुद्धभूमि में जन्म पाने का संकल्प लें। यदि घर में बुद्ध की प्रतिमा न हो, तो आकाश की ओर मुख करके अपना निवेदन कर सकते हैं। मन का पश्चात्ताप सच्चा होना चाहिए; बुद्ध और बोधिसत्त्व सर्वत्र उपस्थित हैं। हर व्यक्ति के पास काले वूचांग तथा श्वेत वूचांग, ये दोनों पहले से ही मौजूद हैं और लोगों के प्रतिदिन के अच्छे-बुरे कर्मों का लेखा रख रहे हैं।

कारण का आधार यदि सच्चा नहीं है, तो उसका फल भी उलझनों से भरा होता है। सुविधा के लिए असत्य बोलने से भी मिथ्यावचन का कर्मफल भोगना पड़ता है। इसलिए सुविधा के लिए बोले गए असत्य पर अवश्य पश्चात्ताप करके उसे शुद्ध करना चाहिए। सच्चे पश्चात्ताप की मनोशक्ति और बुद्ध के नाम का स्मरण करने से प्राप्त बुद्ध की शक्ति के सहारे उस असत्य कारण का पूर्णतः शोधन करना होगा, अन्यथा उसका फल निश्चय ही उलझनों भरा होगा। सुविधा के लिए असत्य कहते समय

जिस मनोभाव से बोलेंगे, उसी बोलने की मंशा के अनुरूप कर्मफल भोगेंगे। मिथ्यावचन के दोष के लिए बहुत-से नरक हैं। मैं आपको मिथ्यावचन का दंड देने वाला एक अपेक्षाकृत नया नरक दिखाने ले चलता हूँ। आ यू, मेरे साथ आइए!"

न्यायाधिकारी, आपको कष्ट दे रही हूँ! मैं उनके पीछे चल पड़ी और हम बहुत शीघ्र नरक के एक क्षेत्र में पहुँच गए।

न्यायाधिकारी ने परिचय दिया, "यह हमारे परलोक का उत्तरी भाग है। इस क्षेत्र के सभी नरक झूठ बोलने से संबंधित हैं।"

अरे! फिर एक अत्यंत विशाल क्षेत्र! मेरी क्षमता से इसका अंत दिखाई नहीं देता, और यह तो बाद में बनाया गया विस्तार है। सचमुच अकल्पनीय!

न्यायाधिकारी बोले, "आ यू, आज पहले इनमें से झूठ बोलने के एक नरक को देखिए। बाकी देखने के लिए बाद में उपयुक्त समय तय करेंगे।"

न्यायाधिकारी का आभार! यहाँ तापमान बहुत कम है, कितनी ठंड है! अभ्यस्त होना कठिन लग रहा है। मनुष्यलोक के उत्तर और दक्षिण में सर्दियों के तापमान में बड़ा अंतर होता है, फिर भी मैं उसके अनुकूल हो सकती हूँ; लेकिन इस नरक का तापमान वास्तव में बहुत कम है। बहुत ठंड है! मुझे तुरंत बुद्ध-नाम का स्मरण करके अपने मनोबल को सँभालना होगा, ताकि इस अत्यंत बर्फ़ीले वातावरण के अनुकूल हो सकूँ।

न्यायाधिकारी बोले, "यहाँ तापमान शून्य से 150 डिग्री नीचे है। मनुष्यलोक के समय के अनुसार वर्ष 2000 में झूठ बोलने वाले नरकों का यह नया क्षेत्र बनना शुरू हुआ। अभी हम इस क्षेत्र के सबसे कठोर दंड वाले 'बर्फ़ीली ठंड में जीभ उखाड़ने और शरीर को चूर-चूर करने वाले नरक' में हैं। यहाँ अत्यंत ठंड और अत्यंत पीड़ा है। परलोक के दक्षिण में दस सभागृहों वाले पुराने क्षेत्र में झूठ बोलने का एक पुराना नरक है, जिसकी दंड-पीड़ा इससे एक स्तर कम है। आह! आज संसार की नैतिक दशा गिर चुकी है और मनुष्य निर्दयी हो गए हैं। यहाँ बहुतों ने जीवित रहते झूठ

बोलकर लोगों को आत्मसंयम और अंतःसाधना का पवित्र जीवन छोड़ने पर लगाया। उनके झूठ पर विश्वास करके वे लोग इधर-उधर भटकते रहे और पाँच इंद्रिय-विषयों में डूबकर बेसुध जीवन बिताने लगे। दूसरों के प्रज्ञामय जीवन का नाश करने के कारण, आयु समाप्त होने पर वे इस बर्फ़ीली ठंड में जीभ उखाड़ने और शरीर को चूर-चूर करने वाले नरक में आ गिरे। आ यू, आज पहले यही नरक देखिए!"

मेरे बताए बिना भी सब जानते हैं कि नरक की विशेषता है—चीखें, पीड़ा की पुकारें और भयभीत चीत्कार कभी नहीं रुकते। लेकिन यहाँ की पीड़ा को देखकर ऐसा लगता है मानो ठंड ने समय और स्थान तक की गति धीमी कर दी हो; सब कुछ बहुत धीरे होता प्रतीत होता है।

"बर्फ़ीली ठंड में जीभ उखाड़ने और शरीर को चूर-चूर करने वाला नरक"—प्राचीन काँस्य के रंग वाले ये बड़े अक्षर आँखों के सामने आए। इस नरक का प्रवेशद्वार बहुत आधुनिक दिखता था। द्वार के यक्षों ने हमें देखकर न्यायाधिकारी को प्रणाम किया और हमारे भीतर जाने के लिए द्वार खोल दिया।

यह नरक अत्यंत विशाल था। मैंने भीतर असंख्य लोगों को पीड़ादायक दंड भोगते देखा। बाईं ओर कुछ अपराधी आत्माएँ लगभग एक जैसी कर्मफल-यातना भोग रही थीं। भीतर बहुत-से कंप्यूटर यातना-यंत्र थे। प्रत्येक कंप्यूटर स्वचालित था और भीतर से यातना के कुछ उपकरण छोड़कर अपराधी आत्माओं का पीछा करता था। उनका निशाना बिल्कुल सौ प्रतिशत सही होता था; कोई आत्मा बच नहीं पाती थी। दीवारों और छत में भी यांत्रिक व्यवस्थाएँ थीं, जिनसे यातना के उपकरण उड़कर निकलते थे। यह आधुनिक नरक था। यक्ष छिपने की कोशिश करने वाली आत्माओं पर क्रुद्ध होने के साथ-साथ उन्हें दंडित करने के लिए इतने सारे कंप्यूटर चलाने में भी व्यस्त थे। यहाँ की आत्माओं की पीड़ा सचमुच असीम थी: उन्हें अत्यंत खूंखार यक्षों के साथ निर्दय कंप्यूटर यातना-यंत्रों का भी सामना करना पड़ता था। इस नरक में आत्माएँ और कंप्यूटर यातना-यंत्र बहुत थे, यक्ष कम। पहले दीवार के पास की

इन दो आत्माओं को देखें—एक पुरुष और एक स्त्री, दोनों एक ही कर्मफल भोग रहे हैं।

वह स्त्री आत्मा ठंड से थोड़ा-थोड़ा काँपने लगी थी। बड़ी कठिनाई से और अत्यंत धीमी गति से वह ज़मीन से उठी और अंततः सामान्य मनुष्य जैसी हो गई। तभी एक खूंखार यक्ष ने उसकी पीठ में भाला घोंप दिया। स्त्री आत्मा दर्द से चिल्लाई और यक्ष उसे भाले पर उठाकर पास के एक डेस्कटॉप कंप्यूटर के पास ले गया। कंप्यूटर की स्क्रीन से एक क्षण में दो साँप उड़े—एक काला, एक लाल। दोनों उसकी ओर झपटे और मुँह पर टूट पड़े। लाल साँप ने मुँह काटकर फाड़ दिया, काले ने उसकी जीभ काटकर बाहर खींची, तोड़कर ज़मीन पर फेंक दी। इसके बाद, आश्चर्यजनक रूप से, फिर एकदम सही निशाने से उड़कर उसके खून और मांस से लथपथ मुँह में लौटना संभव था।[109]

कंप्यूटर से और भी बहुत-सी नुकीली वस्तुएँ उड़कर आत्मा के शरीर पर गिरीं। वे बहुत तेज़ चाकुओं जैसी दिखती थीं—ऐसी वस्तुएँ मैंने मनुष्यलोक में नहीं देखी थीं—और कीलों जैसी भी लगती थीं। उन उपकरणों के शरीर में धँसते ही स्त्री आत्मा असह्य पीड़ा से गिरकर बेहोश हो गई। बेहोश होने के बाद बहुत-से कीड़े उसका शरीर खाने आए। उसका रक्त चारों ओर छिटका; ज़मीन पर बहा रक्त भी अंततः कीड़ों ने पूरी तरह चूस लिया। कर्मबल के कारण आत्मा फिर होश में आ जाती थी और इस प्रकार बार-बार यही यातना भोगती थी।

पुरुष आत्मा भी यही कर्मफल भोग रही थी। कुछ आत्माओं के मुँह पर यक्ष दोनों ओर से कीलों वाले लोहे के डंडे मार रहे थे। कुछ ही प्रहारों में मुँह फटकर खून बहने लगा। फिर उन्हें घसीटकर दूसरे प्रकार की कंप्यूटर-मेज़ पर ले जाते थे। वहाँ काले कनखजूरों जैसे डरावने कीड़े आत्मा के मुँह का सारा रक्त चूस लेते थे और साथ ही उसकी जीभ को धीरे-धीरे खा जाते थे। इसके बाद उड़ती सुइयाँ निकलकर उसका मुँह सिल देती थीं। कुछ आत्माओं को यक्ष मुँह और सिर में हुक फँसाकर

कंप्यूटर-मेज़ तक घसीटते थे और उनका रक्त लगातार बहुत अधिक बहता रहता था।

अब मेरे सामने हुक में फँसी एक स्त्री आत्मा दर्द से चीख रही थी। यह कंप्यूटर दीवार से लटका था। उससे भयावह और अत्यंत कर्कश आवाज़ें निकल रही थीं और भीतर से छोटी-छोटी, आग की तरह लाल, नुकीली वस्तुएँ उड़कर निकलती थीं। जैसे ही वे उसके मुँह को छूतीं, "छिस्—छिस्—छिस्" की आवाज़ के साथ उसका मुँह तुरंत गल जाता। आह! कितना भयावह, कितनी बड़ी पीड़ा! अत्यंत दयनीय!

इस समय न्यायाधिकारी ने दंड देने वाले एक यक्ष को बुलाकर समझाने को कहा कि यहाँ की आत्माओं ने कौन-से अपराध किए थे, जिनके कारण वे बर्फ़ीली ठंड में जीभ उखाड़ने और शरीर को चूर-चूर करने वाले नरक में दंड भोग रही थीं।

यक्ष ने अपना खूंखार भाव सँभालकर मुझसे कहा, "आ यू, अभी आपने जिस स्त्री आत्मा को देखा, उसने जीवित रहते ईर्ष्या से झूठ बोलकर पवित्र शील का पालन करने वाले एक साधक की निंदा की थी। उसने जानबूझकर उस साधक के सद्धर्म-प्रचार को बिगाड़ा। उसके झूठ पर बहुतों ने विश्वास किया और बुद्धधर्म सीखने, भलाई करने तथा शील पालन की मूल आस्था खो दी। इन्हीं झूठों के कारण आयु समाप्त होने पर वह इस नरक में दंड भोगने आ गिरी। परलोक के अधिपति यमराज अत्यंत क्रुद्ध हुए और उसे एक कल्प के लिए यहाँ डाल दिया। यहाँ की अवधि पूरी होने पर भी उसे दूसरे नरकों में कर्मफल भोगना जारी रखना होगा।

जहाँ तक उस पुरुष आत्मा की बात है, वह जीवित रहते चिकित्सा-विज्ञापन का व्यवसाय करता था। झूठ बोलकर उसने कम समय में बहुत-सी बेईमानी की कमाई की। मनुष्यलोक के बहुत-से लोगों ने उसके झूठे विज्ञापनों पर विश्वास किया और उनके आंतरिक अंगों की तरह-तरह की कार्यक्षमताएँ बिगड़ गईं। हल्के मामलों में जीवन भर अंगों की कार्यक्षमता कम रहने की पुरानी बीमारी लगी; गंभीर मामलों में थोड़े समय में शरीर की कार्यक्षमता तेज़ी से घट गई, यहाँ तक कि मृत्यु भी हो गई।

लेकिन लोगों ने कभी सोचा ही नहीं कि उसके चिकित्सा-विज्ञापनों ने उन्हें गुमराह किया था। परलोक के न्यायालय ने उस पुरुष आत्मा का पुण्य-सौभाग्य और आयु घटा दी। यातायात दुर्घटना होने पर वह समय से पहले नरक में दंड भोगने आ गया।

इस नरक में आए सभी लोगों ने जीवित रहते झूठ बोले थे: सद्धर्म का प्रचार करने वालों की झूठी निंदा की; दुर्भावना से झूठ बोलकर दूसरों के जीवन और संपत्ति को हानि पहुँचाई; झूठ से लोगों को तरह-तरह के शीलभंग के लिए उकसाया; लोगों के तन-मन को नुकसान पहुँचाने वाली वस्तुएँ झूठ बोलकर बेचीं; झूठ से दूसरों की संपत्ति या शील का छलपूर्वक हरण किया—इसी प्रकार के अकुशल कर्म। यहाँ झूठ बोलने वाली आत्माओं के मामले इतने अधिक हैं कि सब गिनाना संभव नहीं। अभी बताए गए केवल वे अपराध हैं जिनके कारण इस समय अपेक्षाकृत अधिक लोग यहाँ आते हैं।"

न्यायाधिकारी ने आगे कहा, "संक्षेप में, जीवित रहते जानबूझकर बोला गया कोई भी झूठ यदि लोगों के तन, मन, जीवन या स्वास्थ्य को हानि पहुँचाता है, तो उसके अनुरूप दंड नरक में भोगना पड़ता है। जिन्हें यह लेख पढ़ने का अवसर मिले, आशा है वे सच्चे मन से पिछली गलतियाँ सुधारने का निश्चय करेंगे, और आगे एक-दूसरे को बुद्ध-नाम स्मरण की प्रेरणा देंगे—बुद्धबल के अधिष्ठान पर निर्भर होकर पहले किए झूठों के काले कर्मबल को दूर करेंगे। सदा शरीर, मन और विचारों की शुद्धता बनाए रखें और लोगों को सिखाएँ कि कभी झूठ न बोलें। हर बार झूठ बोलने से हमारा जन्मजात प्रकाश कुछ मंद पड़ता है। मनुष्य का जन्मजात प्रकाश मंद होने पर प्रतिकूल घटनाएँ आसानी से होने लगती हैं, तरह-तरह के रोग आते हैं, यहाँ तक कि अनेक विपत्तियाँ एक के बाद एक आती हैं।[110]

अच्छा, आ यू, आज फिलहाल इतना ही देखिए! थोड़ी देर में मुझे सभा में जाना है। कल अवसर अनुकूल हो तो फिर आइए!" "अमिताभ बुद्ध! न्यायाधिकारी का

आभार! मैं अभी घर लौटकर लेख लिखूँगी। यह लेख पूरा करके फिर आपको कष्ट देने आऊँगी।”

श्वेत कमल पर सवार होकर घर लौटती हूँ!

15/अशोभन वाणी का भयंकर दंड—काँटेदार साँप द्वारा जीभ लपेटकर तोड़ दिए जाने वाला काँच-कंप्यूटर नरक

बुद्ध की शक्ति के अनुग्रह के लिए कृतज्ञ हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ!

“अमिताभ बुद्ध! मैं हाथ जोड़कर न्यायाधिकारी को साष्टांग प्रणाम करती हूँ!”

“न्यायाधिकारी! आज मैंने एक वेबसाइट पर स्वास्थ्यकर भोजन का विषय देखा। इस आहार-विशेषज्ञ के पास भोजन और स्वास्थ्य के विषय में काफी सिद्धांत और अनेक प्रकार के वैज्ञानिक आँकड़े थे; स्वास्थ्यकर आहार का उसे गहरा ज्ञान था। उसने उपमाओं से समझाने वाला एक लेख लिखा कि भोजन को सुखद और स्वास्थ्यकर व्यंजन कैसे बनाया जाए। उसका वर्णन संक्षिप्त, सजीव और बहुत सोच-समझकर किया गया था। लोगों को स्वास्थ्यकर आहार पर ध्यान देना सिखाना तो बहुत अच्छा विषय है, लेकिन उसने पूरी प्रक्रिया की उपमा एक स्वास्थ्यकर संभोग-प्रक्रिया से दी। भाषा खुली और अश्लील थी, जिससे तरह-तरह की भ्रामक कल्पनाएँ उठें और सम्यक स्मृति खो जाए। यह लेख पढ़कर मुझे लेखक के लिए बड़ा खेद हुआ। स्वास्थ्यकर आहार के इतने सिद्धांतों का अध्ययन करने में उसने इतना समय लगाया और फिर वेबसाइट पर ऐसा लेख लिख दिया!”

मैं न्यायाधिकारी से पूछना चाहती हूँ, “मनुष्य यदि ऐसी भाषा इस्तेमाल करके दूसरों में अनुचित विचार और कर्म उत्पन्न करे, तो क्या उसे नरक में दंड भोगना पड़ता है? ऐसा नरक हो तो मैं उसे भी देखना चाहती हूँ।”

न्यायाधिकारी बोले, “मनुष्य यदि अतिरंजित और खोखले शब्दों से दूसरों में अनुचित विचार और कर्म उठाए, ऐसी भाषा बोले जिससे आत्मिक स्वभाव का मलिन होना बढ़े; या मीठी-मीठी असत्य बातें करे और मुस्कान के पीछे छुरी छिपाए; या लोगों को खुश करने के लिए अवास्तविक, देखने में सही पर वास्तव में गलत बातें, निरर्थक तर्क-वितर्क, उपहास जैसी चित्त को बिखेरने वाली निष्फल बातें करे; या दैनिक जीवन में अश्लील चुटकुले सुनाकर मन को भरमाए, कामना भड़काए और लोगों में कामासक्ति उत्पन्न करे; या कामना बढ़ाने वाले गीत, प्रेमकथाएँ, फ़िल्में, टेलीविज़न कार्यक्रम, नृत्य-गीत, संगीत, चित्र आदि रचे जिनकी विषयवस्तु और शब्द अशोभन हों तथा युवाओं में लोभ, द्वेष, मोह, हत्या, चोरी, यौन दुराचार और झूठ बढ़ाएँ, और उनकी सम्यक स्मृति नष्ट करें—ये सभी अशोभन वाणी के अपराध में आते हैं।

अशोभन वाणी का अपराध करने वाले मनुष्य आयु पूरी होने पर काँच-कंप्यूटर नरक में दंड भोगेंगे। काँच-कंप्यूटर नरक झूठ बोलने वाले नरकों के क्षेत्र में स्थित एक नरक है। अशोभन वाणी लोभ, द्वेष, मोह और अहंकार की साथी है; वह अनजाने में लोगों के आत्मिक स्वभाव को दूषित करती है। समय सीमित है, इसलिए अब हम उसे देखने चलें।”

अच्छा! हम तेज़ी से नरक के मध्य भाग को पार कर गए। जब दूर झूठ बोलने वाले नरकों के क्षेत्र के दो बड़े साँप धुँधले दिखे—अरे, वे तो कठोर वाणी के नरक के दो बड़े साँप थे!—हम धीरे-धीरे ज़मीन की ओर उतरने लगे। उतरते समय एक अत्यंत आधुनिक इमारत वाला, चमक लौटाता काँच का नरक साफ़ दिखा। वह बहुत नए चलन का लगता था, लेकिन दृश्य का सारा आनंद बिगाड़ने वाली थी काँच की कान चीरती आवाज़ और पीड़ा की कराहें। सचमुच बहुत शोर था!

इस नरक के प्रवेशद्वार की सजावट देखने में भव्य और सुंदर लगती थी। अक्षरों के रंग और उनके मेल भय पैदा नहीं करते थे। यदि वह कर्कश, पीड़ाभरी आवाज़

और स्वयं नरक की अंधेरी यिन-ऊर्जा न होती, तो द्वार पर खड़े होकर कुछ ऐसा लगता कि हम नरक में हैं ही नहीं। हम यक्षों के साथ भीतर देखने गए।

भीतर पारदर्शी काँच के बहुत-से छोटे-छोटे कमरे थे। हर अपराधी आत्मा अपने काँच के कमरे में यातना भोग रही थी। दंड मिलने की गति कुछ अलग थी: बाईं ओर के कंप्यूटर अधिकतर लाल रंग के थे और वहाँ आत्माएँ अधिक तेज़ी से दंड भोगती थीं; दाईं ओर सभी कंप्यूटर काले थे और गति धीमी थी।

पहले बाईं ओर की आत्माओं को देखें! एक स्त्री आत्मा पारदर्शी काँच के कमरे में अभी-अभी सामान्य, स्वस्थ मानवीय रूप में लौटी और खड़ी हुई थी। अग्नि जैसे लाल स्फटिक-कंप्यूटर से निकलते धुँधले हरे प्रकाश और "टिंग—टिंग—चूँ—चूँ—रिन—रिन" जैसी आवाज़ों ने उसे आकर्षित किया। पास पहुँचते ही स्फटिक-कंप्यूटर की स्क्रीन से नुकीले मुँह और पूरे शरीर पर काँटे वाला छोटा लाल साँप तुरंत उड़कर निकला और उसकी जीभ पकड़कर काटने लगा। आत्मा घबराकर चीखी! जीभ पकड़ने के बाद छोटे लाल साँप ने अपने काँटेदार शरीर से उसे लपेट लिया, जब तक जीभ टूटकर ज़मीन पर नहीं गिर गई। आत्मा का मुँह रक्त से भर गया। तभी पूरा स्फटिक-कंप्यूटर अचानक चकनाचूर हो गया, काँच के फटने और टूटने जैसी आवाज़ हुई, और उसके टूटे हुए सारे हिस्से आत्मा के शरीर से टकराए। आत्मा भयभीत होकर बचने लगी, पर काँच का कमरा इतना छोटा था कि बचने की कोई जगह ही नहीं थी। वह केवल पीड़ा और विवशता में बार-बार यही दंड सह सकती थी। दाईं ओर के काले कंप्यूटरों से मैंने धूसर-काला प्रकाश निकलते देखा; उनमें से काले कनखजूरे उड़कर निकलते थे। बाकी दंड एक जैसा था, बस उसकी गति थोड़ी धीमी थी।

न्यायाधिकारी ने यक्ष से उस स्त्री आत्मा को मेरे सामने लाने को कहा, ताकि मैं उससे पूछ सकूँ। उसने रोते हुए बताया कि जीवित रहते उसे दफ़्तर में और मित्रों के सामने आदतन ऐसे अश्लील चुटकुले सुनाना पसंद था जो ऊपर से सही लगें पर

वास्तव में गलत हों; वह जानबूझकर लोगों को अपनी सुंदर काया की प्रशंसा करने के लिए उकसाती थी।

उसने कहा, “मेरे घर की चारों दीवारों पर दर्पण थे। किसी भी कोण से मैं अपना शरीर देख सकती थी। मुझे घर में अक्सर बिल्कुल निर्वस्त्र घूमने की आदत भी थी। कभी-कभी कुछ महिला मित्रों को घर पर मिलने बुलाती थी, ताकि वे मेरे नग्न शरीर को देखें और सराहें। सामान्यतः मुझे चीज़ों को बढ़ा-चढ़ाकर सजाना भी पसंद था। जो बात वास्तव में बहुत डरावनी नहीं थी, मेरी ज़बान से निकलकर भयावह बन जाती। सामने वाले को भय से भरा देखकर मैं कहती, मैं तो तुम्हारे साथ मज़ाक कर रही थी; तुम इतने डरपोक हो, इसमें तो मज़ा ही नहीं।

मुझे अपनी चतुराई से आसपास के लोगों को छेड़कर मनोरंजन करना पसंद था। आयु पूरी होने पर बैलमुख और अश्वमुख मुझे घसीटकर नरक लाए। यमराज बहुत क्रुद्ध हुए। उन्होंने कहा कि दफ़्तर में मेरे अश्लील चुटकुलों और व्यवहार से अभी विद्यालय छोड़कर काम पर आए कुछ युवाओं के मन डगमगाए और फिर उन्होंने गंभीर यौन दुराचार किया। उन्होंने कहा कि मैंने जीवित रहते अशोभन वाणी का अपराध किया था और मुझे 500 वर्ष के लिए इस अशोभन वाणी के नरक—काँच-कंप्यूटर नरक—में दंड दिया। हूँ-हूँ-हूँ! तब मैं तो केवल सबको हँसाना चाहती थी; सोचा भी नहीं था कि परिणाम इतने गंभीर होंगे और मुझे नरक में दंड भोगना पड़ेगा। आप पुस्तक लिख रही हैं; कृपया संसार के लोगों से कहिए, अश्लील चुटकुले कभी न सुनाएँ, बढ़ा-चढ़ाकर बातें न करें, और दूसरों को छेड़कर मनोरंजन बिल्कुल न करें। हूँ-हूँ-हूँ! आगे मैं ऐसा करने का साहस कभी नहीं करूँगी। इन न्यायाधिकारी से विनती है, मुझे बचाइए, बाहर निकालिए। मुझे यहाँ से जाना है।”

न्यायाधिकारी बोले, “जीवित रहते जैसा अकुशल कर्म किया, नरक में उसी के अनुरूप कर्मफल आता है। अपने तरह-तरह के विचारों और आचरण की अच्छी तरह समीक्षा करो। समय सीमित है, आज यहीं समाप्त करते हैं।”

मैंने न्यायाधिकारी से पूछा, “नरक के दाईं ओर के कंप्यूटर आत्माओं को कुछ धीमी गति से दंड क्यों देते हैं?”

न्यायाधिकारी ने समझाया, “अशोभन वाणी के अपराधियों की कुछ बातें प्राणियों को जल्दी हानि पहुँचाती हैं, जबकि कुछ धीरे-धीरे उनके जन्मजात अच्छे मनःस्वभाव को डगमगाती हैं। कोई बात या वस्तु कर्मफल से बाहर नहीं है। इसलिए हमें रोज़ अपने वचन और व्यवहार पर ध्यान देना चाहिए; विशेषतः अकेले होने पर अपने मनःस्वभाव के शील का और अधिक ध्यान रखना चाहिए। परलोक के विधान का उल्लंघन कभी नहीं करना चाहिए। आज परलोक में बड़ी सभा है। आ यू, किसी और दिन फिर आइए।”

अमिताभ बुद्ध! मैं हाथ जोड़कर न्यायाधिकारी के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ!

श्वेत कमल पर सवार होकर घर लौटती हूँ!

16/उड़ती कीलों से जीभ काटना—फूट डालने वाली वाणी के नरक के दंड का प्रथम दर्शन

बुद्ध की शक्ति के अनुग्रह के लिए कृतज्ञ हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ!

“अमिताभ बुद्ध! मैं, आ यू, हाथ जोड़कर परलोक के न्यायाधिकारी को प्रणाम करती हूँ!

न्यायाधिकारी! आज मैं पूछना चाहती हूँ: मनुष्य यदि फूट डालने वाली वाणी का अपराध करे, तो क्या नरक में दंड भोगना पड़ता है?”

न्यायाधिकारी बोले, “मनुष्य का फूट डालने वाली वाणी का अपराध गंभीर हो तो नरक में दंड भोगना पड़ता है। फूट डालने वाली वाणी का अर्थ है कि कोई व्यक्ति दो या अधिक लोगों को किसी घटना के परस्पर विपरीत संस्करण अलग-अलग सुनाए, दुर्भावना से उनके संबंध तोड़े और भावनाओं को नुकसान पहुँचाए, जिससे वे झगड़ें या दुर्भावनापूर्ण संघर्ष करें।

परलोक के विधान में कर्मफल का नियम सबसे पहले मनोभाव देखता है, अर्थात कर्म में उतारने से पहले के विचार। इन्हीं विचारों से सारे शब्द और शारीरिक कर्म प्रेरित होते हैं। जब मनुष्य सोचता है कि दुर्भावना से फूट कैसे डाली जाए, तभी नरक के लिए प्रारंभिक कारण-प्रत्यय बो दिए जाते हैं। फूट डालने वाली वाणी लोभ, द्वेष और मोह के तीन विषों तथा झूठ की साथी है।

फूट डालने वाली वाणी के अपराध में भी गंभीर और हल्के स्तर का भेद है। गंभीर अपराध वह है जिसमें मनुष्य के तन-मन से जुड़े विभिन्न हितों को हानि पहुँच चुकी हो; ऐसे व्यक्ति को निश्चित रूप से नरक में कर्मफल भोगना होगा। हल्के अपराध में ऐसा भी होता है कि केवल दोनों पक्षों के हित के लिए, अपने किसी

व्यक्तिगत लाभ के बिना, दूसरों की सहायता की भावना से, दोनों के स्वभाव और मिज़ाज के अनुसार अलग-अलग संस्करण कहा जाए। सबके बीच मेल कराने की भावना से ऐसी दोहरी वाणी की भूमिका निभाना हल्का अपराध है। हल्का अपराध करने वाले जीवित रहते पश्चात्ताप करके उसे शुद्ध कर सकते हैं और उन्हें नरक में दंड भोगना नहीं पड़ेगा। पश्चात्ताप का विवरण वही है जो पिछले लेख में सुविधा के लिए बोले गए असत्य के पश्चात्ताप के बारे में समझाया गया है। केवल 'सुविधा के लिए बोला गया असत्य' के स्थान पर 'फूट डालने वाली वाणी' कर दें; शेष पश्चात्ताप समान है।

आज बहुत-से मनुष्य फूट डालने वाली वाणी के अपराधी हैं; बच्चे भी माता-पिता के पीछे चलकर फूट डालने वाली बातें और झूठ बोलते हैं। समाज का वातावरण बिगड़ने का यह एक महत्त्वपूर्ण कारण है। भाषा सामूहिक जीवन में संवाद का महत्त्वपूर्ण साधन है। उपदेश से बढ़कर स्वयं उदाहरण देना है। माता-पिता को वचन और कर्म में एकरूपता का अच्छा उदाहरण बनना चाहिए; तब बच्चे भी धीरे-धीरे उनका अनुसरण करते हुए अच्छे बनेंगे।

मनुष्य का मूल स्वभाव अच्छा है। आचरण का अच्छा उदाहरण हममें से प्रत्येक को स्वयं से शुरू करना चाहिए। सब सार्वजनिक कर्तव्य और कानून का पालन करें और परलोक के विधान के कर्मफल-नियम का उल्लंघन न करें, तो मानवजाति का उद्धार निश्चित है और विपत्तियाँ अवश्य कुछ समय के लिए टलेंगी। स्वर्ग में जीवन-रक्षण का सद्गुण है; वह सच्चे पश्चात्ताप वाले प्राणियों के धीरे-धीरे सुधरने के लिए प्रकाश की ओर एक सीढ़ी अवश्य छोड़ता है। चिंता बस यह है कि आपमें पश्चात्ताप का भाव ही न उठे।

आ यू! अब आपको उस नरक में ले चलूँ जहाँ जीवित रहते फूट डालने वाली वाणी के अपराधी जाते हैं।" समय सीमित था, इसलिए हम बहुत तेज़ी से झूठ बोलने वाले नरकों के क्षेत्र के सुदूर उत्तर पहुँचे और नक्शे वाले एक दिशासूचक के सामने उतरे। 'दाएँ-बाएँ दौड़ने का नरक' बाईं ओर था और 'काली सुइयों से जीभ

बेधकर मुँह बंद करने का नरक' दाईं ओर। किस ओर जाएँ? बुद्धबल के अधिष्ठान से प्राप्त अंतर्दृष्टि से देखूँ कि दोनों में क्या अंतर है। बाईं ओर का नरक बड़ा था और वहाँ दुख भोगने वाले सत्त्व अधिक थे, पर दाईं ओर का नरक अधिक दयनीय था। बाईं ओर ही चलें!

संयोग से न्यायाधिकारी भी चाहते थे कि मैं दाएँ-बाएँ दौड़ने का नरक देखूँ। हम शीघ्र वहाँ पहुँच गए और उन्होंने द्वार के यक्ष को मेरे कार्य का परिचय दिया। द्वार खुला—अरे! फिर एक अत्यंत विशाल नरक। पहले सामने देखें! जितना मेरी दृष्टि में था, वह बाएँ और दाएँ दो भागों में बँटा था। बाईं ओर बहुत-सी आत्माएँ पीड़ा और विवशता में दाएँ-बाएँ दौड़ रही थीं। सबके मुँह से खून बह रहा था। वे जैसे भी दौड़ें, कंप्यूटर द्वारा जीभ छीनने वाले पीछा-तंत्र से बच नहीं पाती थीं।

नरक में लोहे के हथौड़े, लंबी तलवारें और भाले लिए बहुत-से खूंखार यक्ष आत्माओं को व्यवस्थित रख रहे थे और उन्हें यातना देने वाले कंप्यूटरों की सीमा से बाहर नहीं जाने देते थे। हर आत्मा की जीभ का कंप्यूटर से छूटे उपकरण सटीक पीछा करते थे। हर कंप्यूटर एक निश्चित क्षेत्र की आत्माओं को अपने-आप दंडित करता था। किसी आत्मा के उसकी सीमा में आते ही कंप्यूटर पाँच कीलनुमा ब्लेड छोड़ता, जो उसकी जीभ काटते थे; पहले कीलों से जीभ बाहर खींची जाती थी।

इस पीड़ित स्त्री आत्मा को देखें, जो अभी-अभी यहाँ आई है! उसका चेहरा भयभीत था, पैर चलने में असमर्थ थे। एक खूंखार यक्ष ने भाला घोंपकर उसे यातना-क्षेत्र में धकेल दिया। ओह! उसकी पीठ में बहुत दर्द था और रक्त बह रहा था। कंप्यूटर ने तुरंत "बीप, बीप" की दो आवाज़ें निकालीं, आत्मा का नाम कहा, फिर उसी क्षण उसके मुँह की ओर निशाना करके कीलनुमा ब्लेड छोड़े। यह देखते ही स्त्री आत्मा पीठ के दर्द को दबाते हुए चीखकर दाएँ-बाएँ भागने लगी।

मुझे लगा कि कंप्यूटर पूछ रहा था, क्या आत्मा का नाम xxx है? स्त्री आत्मा जवाब देने वाली थी। मुँह खोलते ही कीलें भीतर उड़कर गईं और उसकी जीभ बाहर

खींचने लगीं। दर्द से उसने हाथ से कीलें हटाने की कोशिश की। विचित्र बात थी कि कीलें अचानक मुलायम हो गईं और उसके हाथ को चोट नहीं लगी। उसने हाथ छोड़ दिया और दाएँ-बाएँ भागने लगी। पर बाईं ओर भागे या दाईं ओर, हर कदम पर पाँचों कीलें उसकी जीभ को और लंबा खींचतीं, और खिंचा हुआ भाग कीलों के पिछले सिरों पर लगे ब्लेडों से कटकर ज़मीन पर गिर जाता। इस पीड़ा से वह पूरी शक्ति लगाकर कंप्यूटर की सीमा से निकलना चाहती थी। अंततः सिर उठाकर वह बाईं ओर भागी।

आह! दोनों ओर के खूंखार यक्ष उसे किसी हाल में छोड़ने वाले नहीं थे। बाईं ओर गरजते लोहे के हथौड़े वाले यक्ष ने क्रोध में उसके सिर पर हथौड़ा मारा और एक ही चोट से वह बेहोश हो गई। यक्ष उसे बेहोश रहने नहीं देता था। उसने लोहे की कील से उसका मुँह बेरहमी से एक बार खींचा और फिर थप्पड़ मारा; रक्त फिर बहा। स्त्री आत्मा चक्करातीं हुई होश में आई, उठी और दाईं ओर भागी। वहाँ धुँधले हरे रंग का बर्फ़ीला यक्ष भी था। उसने तुरंत ठंडी गैस और मारने वाले बर्फ़ के टुकड़े छोड़े। स्त्री आत्मा के पैर उसी क्षण उसके नियंत्रण से बाहर हो गए और वह डरकर पीछे हटती हुई कंप्यूटर के पास फिर दंड भोगने लौट आई। यह देखकर सिर चकरा गया—कहीं भाग न सकने का दुख!

मैंने यक्ष की ओर देखकर पूछा, “लोहे के हथौड़े वाले यक्ष, क्या आप कुछ दया कर सकते हैं? इस स्त्री आत्मा की पिछली चोटें भी नहीं भरीं कि आपने फिर मार दिया। वह इतनी दयनीय है कि थोड़ी देर विश्राम का भी अवसर नहीं मिलता।”

लोहे के हथौड़े वाले यक्ष ने कहा, “इस अपराधी आत्मा को जीवित रहते फूट डालना विशेष रूप से पसंद था। जो भी घटना उसे पता चलती, वह उसे रंग देकर और बढ़ा-चढ़ाकर ऐसा बना देती जिससे दोनों पक्षों को नुकसान हो। उसके आपसी संबंध अत्यंत खराब थे। जहाँ भी जाती, लोगों से बैर बाँधती और अप्रिय बनती। सबसे गंभीर बात यह थी कि उसने अपनी सास को हानि पहुँचाई।

उसका पति, श्री ए, उससे विवाह से पहले अपनी माँ के प्रति बहुत कर्तव्यनिष्ठ था। श्री ए के तीन वर्ष का हो जाने के बाद उसकी माँ विधवा हो गई थी और उसने अकेले उसे पाला। माँ-बेटा सदा एक-दूसरे के सहारे रहते थे और उनका जीवन अच्छा था। विवाह करके घर आने के बाद अपराधी आत्मा अपनी सास से ईर्ष्या करने लगी। वह लगातार फूट डालती रही और दुर्भावना से माँ-बेटे के संबंध बिगाड़ती रही। उसने जानबूझकर सास पर किसी पुरुष से अवैध संबंध का आरोप भी लगाया। काम में व्यस्त रहने के कारण श्री ए ने पत्नी की निजी बातों पर विश्वास कर लिया। इससे माँ-बेटे का संबंध टूट गया और अंततः बेटे से प्रेम करने वाली बूढ़ी माँ दुख में घुलकर मर गई।

सास की आत्मा ने परलोक पहुँचकर इस अपराधी आत्मा के विरुद्ध फूट डालने और झूठा कलंक लगाने की शिकायत की। चूँकि इस स्त्री ने मनुष्यलोक में फूट डालने वाली वाणी का अपराध किया था, इसलिए अब उसे इस दाएँ-बाएँ दौड़ने वाले नरक में आकर यातना और हमारी मार सहनी पड़ रही है। नरक में दंड भोगने का यह उसका पहला पड़ाव है। यहाँ की अवधि पूरी होने पर उसे दूसरे नरकों में भी दंड भोगना होगा।"

तभी अत्यंत धुँधले हरे रंग का दिखता एक खूंखार यक्ष हमारी दिशा में देखने लगा।

न्यायाधिकारी बोले, "लोहे के हथौड़े वाले यक्ष, आप पहले अपना काम कीजिए। आत्मा खींचने वाले प्रेतराज के पास तत्काल निपटाए जाने वाले काम हैं।"

लोहे के हथौड़े वाले यक्ष ने न्यायाधिकारी को प्रणाम करके कहा, "न्यायाधिकारी, कृपया आप दर्शन जारी रखें। मैं पहले विदा लेता हूँ।"

न्यायाधिकारी बोले, "आ यू! आज हमें मनुष्यलोक की कई विपत्तियों और दुर्घटनाओं से संबंधित मामले शीघ्र निपटाने हैं, इसलिए सब बहुत व्यस्त हैं। किसी और दिन फिर दर्शन करने आइए!"

“अमिताभ बुद्ध! मैं न्यायाधिकारी के सामने हाथ जोड़ती हूँ! आपको बहुत परिश्रम करना पड़ता है! आप पहले अपना काम कीजिए। आभार!”

श्वेत कमल पर सवार होकर घर लौटती हूँ!

17/कठोर वाणी का कर्मफल—अत्यंत पीड़ादायक विषैले साँपों और आँतों में कील ठोकने का नरक

बुद्ध की शक्ति के अनुग्रह के लिए कृतज्ञ हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ!

“अमिताभ बुद्ध! मैं, आ यू, परलोक के न्यायाधिकारी के सामने हाथ जोड़ती हूँ!”

“न्यायाधिकारी, कृपया बताइए: मनुष्य यदि बोलते समय सारी हदें पार करे, आत्मसम्मान को चोट पहुँचाने वाली बातें कहे और क्रोध में अपमान करे; माता-पिता बच्चों को मारें-डाँटें, पति-पत्नी झगड़ें, किसी को शब्दों में न बख्शें और दुष्ट भाषा में गालियाँ तथा शाप दें—तो क्या ऐसे व्यवहार के कारण नरक में दंड भोगना पड़ता है?”

न्यायाधिकारी ने उत्तर दिया, “व्यक्ति यदि प्रायः बुरे शब्द बोले, मन में क्रोध रखे, किसी को न बख्शे और विषैली भाषा से लोगों को चोट या अपमान पहुँचाए, तो यह सब कठोर वाणी है। जैसे किसी को पशु कहना, मरने को कहना, वंश नष्ट होने का शाप देना, ऐसा मरने को कहना कि दफ़न होने की जगह न मिले, यहाँ तक कि उसके हृदय में सबसे महत्त्वपूर्ण बातों पर शाप देना। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति पुत्र चाहता हो लेकिन इस जन्म में उसकी पत्नी अब संतान पैदा करने में असमर्थ हो और उसकी केवल पाँच बेटियाँ हों। कठोर वाणी वाला जानबूझकर कहे कि तेरा वंश समाप्त हो जाएगा, धन और मकान हैं पर रहने वाला कोई नहीं, भूत रहेंगे—ऐसी दुष्ट भाषा से उसे चोट पहुँचाए। हल्के परिणाम में उसका मन खराब होगा, गंभीर परिणाम में परिवार में कलह होगी, यहाँ तक कि वह विवाहेतर संबंध बनाकर पुत्र पाने के लिए किसी तीसरे व्यक्ति को ढूँढ़ेगा। यदि परिवारों में मेल न रहे तो समाज

में अशांति पैदा होती है। आज बहुत-से लोगों की कठोर वाणी से अन्य लोग कहीं मुँह दिखाने योग्य नहीं रहते, अपने जीवन पर लज्जा महसूस करते हैं, यहाँ तक कि कुछ आत्महत्या भी करते हैं। मनुष्य के शरीर, मन और आत्मिक पक्ष को चोट पहुँचाने वाली हर रूखी, बुरी बात कठोर वाणी का अपराध है, विशेषतः तरह-तरह की अत्यंत दुष्ट भाषा।

कठोर वाणी का अपराध नरक के दंड तक ले जाता है। यह बुरी आदत का दुष्चक्र है। कठोर वाणी लोभ, क्रोध और मोह की साथी है। इसके सभी अपराधियों में क्रोध समान रूप से होता है, बस दुर्भावना और कर्मबल की गहराई अलग होती है। साधना से फल प्राप्त किसी संत के प्रति एक कठोर वचन भी मनुष्य को नरक में असीम, अनंत प्रकार की पीड़ाएँ भोगने के लिए गिरा सकता है। नरक का कर्मफल समाप्त होने पर भी वह पशुयोनि में भटककर पशुओं के विविध दुख भोगता है और फिर मनुष्य होने पर भी हीन स्थिति में रहता है, जब तक कठोर वाणी के शेष फल पूरी तरह समाप्त न हों। कर्मफल के पकने की इस लंबी अवधि में अत्यधिक दुख के कारण नए कर्मबल भी आसानी से पैदा होते हैं, जिससे पीड़ा का अंत और भी नहीं दिखता। जब तक सच्चे कल्याणमित्र का मार्गदर्शन न मिले, अपने गलत आचरण सुधारने, भलाई करने और सद्गुण संचित करने का संकल्प न उठे, तब तक दुख-सागर से पार होने के शुभ कारण-प्रत्यय नहीं बनते। अन्यथा सचमुच दुख-सागर असीम है और अनगिनत कल्पों तक पतन चलता है!

नरक में दंड भोगने वाले बहुत-से लोग जीवित रहते पति-पत्नी, मित्र, सहकर्मी, माता-पिता या भाई-बहन के संबंधों में एक-दूसरे से कठोर वाणी बोलते थे। पति-पत्नी के बीच यह सबसे अधिक होता है और सबसे आसानी से होता है; स्त्रियों का अनुपात कुछ अधिक है। इसलिए मैं सभी स्त्रियों को सावधान करता हूँ कि अपने वाणी-कर्म को अच्छी तरह सँभालें। बहुत-सी स्त्रियों के अपने काले कर्म भारी होते हैं और पुराने काले कर्मों के खिंचाव से जीवन में तन-मन की विविध कठिनाइयाँ

आती हैं। कुछ हर महीने मासिक धर्म की अस्वस्थता के समय आसपास के लोगों को तरह-तरह की कठोर वाणी से चोट पहुँचाती ही हैं।[111]

मनुष्य की आदत है कि वह बातें ऐसे दृष्टिकोण से देखे जिसमें उसका अपना लाभ हो। थोड़ी-सी प्रतिकूलता आते ही वह आसपास के लोगों, वस्तुओं, आकाश-पृथ्वी और वातावरण के सहयोग न करने की शिकायत करने लगता है; गलती कभी अपनी नहीं होती। इसलिए वह खराब मनःस्थिति को क्षण-क्षण ऊपर-नीचे होने देता है और तरह-तरह की कठोर वाणी से लोगों को चोट पहुँचाता है।

कठोर वाणी रोकने के लिए पहले मन को शांत और स्थिर रखना होगा। मन को शांत और स्थिर रखने के लिए पहले आत्मनिरीक्षण करें और हर समय सोचें कि कहीं अपने कर्म या शब्दों में गलती तो नहीं हुई। इस समय मनुष्यलोक के बिगड़े और अशांत सामाजिक वातावरण में मन की शांति और स्थिरता बनाए रखना सचमुच कठिन है। बाहर आकर्षण और बाधाएँ बहुत हैं, लेकिन कठिन होने पर भी हमें उन्हें पार करना होगा। यदि पार न करके तरह-तरह की कठोर वाणी के अपराध किए और आयु पूरी होने पर नरक में गिरे, तो दुख स्वयं को ही भोगना पड़ेगा, किसी और को नहीं।

करुणामय बुद्ध ने संसार में रहते हुए ही धर्म के अंतिम काल में प्राणियों के दुख-सागर से निकलने की बाधाएँ देख ली थीं। लोगों के लिए सम्यक स्मृति उठाकर मार्ग की साधना करना बहुत कठिन होगा, इसलिए उन्होंने विशेष रूप से बुद्ध-नाम स्मरण की विधि छोड़ी, ताकि उनका उद्धार सरल हो। बस सहज बुद्ध-नाम स्मरण करें, प्रतिदिन लगातार नाम स्मरण और शाकाहार करें, बुद्धबल के अधिष्ठान के सहारे धीरे-धीरे परिवर्तन होने दें। इससे हमारा तन-मन क्रमशः शुद्ध हो, प्रतिदिन के विचार शांत रहें और सामान्य नकारात्मक, भ्रमपूर्ण विचार उठते ही बुद्ध-नाम स्मरण के शुभ विचारों में बदल जाएँ। इस शुभ विचार से अच्छी आदत बनाएँ, फिर उससे पुरानी

बुरी आदतें बदलें। तब हमारा भाग्य भी धीरे-धीरे बदलने लगेगा, भविष्य प्रकाश की ओर बढ़ेगा और हमारे जन्मजात आत्मिक प्रकाश की पुनः प्राप्ति होगी।

कठोर वाणी वाले की देह-आभा कम से कम लाल हो जाती है। गंभीर स्थिति में लाल से गहरी लाल बनती है। जो पश्चात्ताप न करके लगातार कठोर वाणी बोलता रहे, उसकी आभा धीरे-धीरे गहरी लाल से काली हो जाती है। काला रंग अत्यंत गंभीर स्थिति है और तरह-तरह की प्रतिकूल घटनाएँ आकर्षित करता है। लाल देह-आभा वाले के संबंध पहले ही खराब होते हैं, मन उदास रहता है और उसे जल्दी क्रोध आता है। गहरी लाल देह-आभा वाले प्राणी प्रेतयोनि के जीवों को सबसे आसानी से अपनी ओर खींचते हैं। प्रेतयोनि के जीवों में द्वेष प्रबल होता है और वे आसानी से क्रोधित होते हैं। मनुष्य को क्रोध आते ही क्रोधप्रिय प्रेत उसकी पुकार का उत्तर मानो सुनकर दौड़ते हुए आ जाते हैं। साथ ही आसपास के आत्मिक जगत के कुछ वैर और संबंधों से जुड़े कर्म-ऋणदाता—हर व्यक्ति के पास कुछ होते हैं, केवल संख्या कम या अधिक होती है—क्रुद्ध मनुष्य के पास आग में घी डालते हैं। आप क्रोधित हुए कि वह क्रोधप्रिय प्रेत बगल में रहकर आपको और क्रोधित होने, और अधिक अनुचित, तीखे तथा कटु शब्द कहने को उकसाता है। इससे मनुष्य अनजाने में अविद्या के क्रोध में बुरी तरह भड़क उठता है और कठोर वाणी का कर्मबल नियंत्रण से बाहर हो जाता है।"

"न्यायाधिकारी का आभार! आपने बहुत अच्छी तरह समझाया। अब आखिर समझ में आया कि बुद्धधर्म सीखने से पहले परिवार के साथ मेरे संबंध मेलपूर्ण क्यों नहीं थे। मुझे बिना समझ आने वाले कारण के डाँटा और नियंत्रित किया जाता था। हर बार घर का वह सदस्य अचानक बहुत उग्र हो जाता था, जिससे मुझे बहुत भय लगता था। यह भय बुद्धधर्म सीखने के बाद ही धीरे-धीरे कम हुआ।"

न्यायाधिकारी बोले, "हाँ! आ यू, आपकी स्थिति का एक भाग ऐसा ही है। दूसरा कारण यह है कि आपके परिवार की वह महिला मार-लोक से जन्म लेकर आई है।

इस जीवन में उसका एक ही लक्ष्य है—आपकी साधना में बाधा देना और सद्धर्म की रक्षा का काम न करने देना। आपको निश्चित रूप से द्वेष का उत्तर सद्गुण से देना चाहिए, परिश्रमपूर्वक साधना करनी चाहिए और पवित्र शील का पालन करके धीरे-धीरे उसे प्रभावित करना चाहिए। उसका व्यवहार अत्यधिक उग्र हो तो आप उचित रूप से दूर हट सकती हैं। उसके ऐसे उग्र व्यवहार ने अदृश्य रूप से आपके भीतर सामान्य लोगों से अलग एक दृढ़ स्वभाव भी बनाया है। आपकी साधना के दृढ़ मन को लगातार कसौटी पर रखने के लिए उसका आभार भी मानें—कि कठिनाइयों में आप जन्म-मरण से मुक्ति पाने वाला दृढ़ बोधिचित्त बनाए रख पाती हैं या नहीं।"[112]

"समझ गई। न्यायाधिकारी के उपदेश का आभार! मैं आपके सिखाए समाधान को अवश्य याद रखूँगी: द्वेष का उत्तर सद्गुण से देना, परिश्रमपूर्वक साधना और शील पालन करना, और धीरे-धीरे परिवार को प्रभावित करना। मैं इसे व्यवहार में अवश्य उतारूँगी।"

"प्रयास जारी रखिए, आ यू! अब मैं आपको कठोर वाणी का नरक दिखाने ले चलता हूँ। 'बर्फ़ीली ठंड में जीभ उखाड़ने और शरीर को चूर-चूर करने वाले नरक' के आसपास झूठ बोलने के कुछ और नरक हैं। वहाँ तापमान थोड़ा ऊँचा है और इतनी ठंड नहीं, लेकिन पीड़ा उतनी ही भीषण है। आज आपको झूठ बोलने वाले नरकों के क्षेत्र के दूसरे भाग में ले चलूँगा; वहाँ तापमान ठंडा नहीं है।"

हम तेज़ी से पहुँच गए। उतरने वाले थे कि न्यायाधिकारी ने सामने इशारा करके कहा, वही है। मैंने नीचे देखा—ओह! दो भयावह बड़े सिर वाले साँप कुंडली मारे थे। उनके सिर इतने बड़े और डरावने थे! अच्छा था कि वे हिलते नहीं थे। मैंने इतने बड़े सिर वाले साँप कभी नहीं देखे थे। एक गहरे लाल और दूसरा काले रंग का था; दोनों के विशाल मुँह खुले थे। दरअसल उस भयावह लाल साँप का मुँह ही इस नरक का मुख्य द्वार था। द्वार के पास बहुत-से कुछ छोटे डरावने साँप भी थे। वैसे वे छोटे नहीं

थे; बस पहले वाले दो इतने बड़े थे कि द्वार के साँप उनके सामने बहुत छोटे लगते थे। लाल, काले और हरे साँप थे। यह नरक साँपों की आकृति में बनाया गया था।

द्वार पर लिखा था, "विषैले साँपों और आँतों में कील ठोकने का नरक।" ओह! विष के बाद कीलें भी ठोकी जाती हैं। यक्ष ने न्यायाधिकारी को प्रणाम किया, द्वार खोला और हमें भीतर ले गया। प्रवेश से पहले ही अत्यंत डरावनी आवाज़ें सुनाई देती थीं—"सिस्-सिस्, आह-आह, कड़क"—जैसे कुछ काटकर तोड़ा जा रहा हो, साथ में लंबी, दुखभरी हवा की आवाज़। यहाँ की भयावह ध्वनियाँ बहुत और अव्यवस्थित थीं; सब मिलकर अत्यंत कर्कश हो गई थीं और कानों को कष्ट दे रही थीं। हम बड़े सिर वाले भयावह साँप के विशाल मुँह में गए। एक यक्ष ने मुझे अधिक भीतर न जाने और किनारे खड़े होकर देखने को कहा, क्योंकि भीतर बहुत-से यांत्रिक फंदे थे। इस नरक में भी बहुत कंप्यूटर थे। खूंखार यक्ष उन्हें तेज़ी से चलाकर अपराधी आत्माओं को दंड दे रहे थे। स्पष्ट था कि यहाँ कर्मियों की कमी थी। वे बहुत तेज़ और कुशलता से कंप्यूटर चला रहे थे। कंप्यूटरों की सहायता न होती तो वे निश्चित रूप से और व्यस्त होते। सचमुच, जैसा न्यायाधिकारी ने कहा था, कठोर वाणी के इस नरक में स्त्री अपराधी आत्माएँ अधिक थीं। यहाँ आने पर सिर और मन पर विशेष दबाव महसूस हुआ: सिरदर्द था और भीतर एक अवर्णनीय बेचैनी थी। फिर भी दर्शन जारी रखूँ! पीड़ित आत्माओं को देखकर अपना यह कष्ट तो उल्लेख योग्य भी नहीं लगता था।

यहाँ बहुत-सी आत्माओं के मुँह और जीभ को कंप्यूटरों से उड़कर निकलते गहरे लाल रंग के विषैले साँप काट रहे थे। हर कंप्यूटर से अत्यंत डरावनी, असह्य आवाज़ें आती थीं। जैसे ही विषैले साँप आत्माओं के मुँह और जीभ काटते, उनका पूरा शरीर विष से काला-बैंगनी हो जाता और वे दर्द से गिर जातीं। कुछ चिल्लातीं, कुछ बिना आवाज़ किए बेहोश गिर पड़तीं। तब साँप उनके कानों के पास तरह-तरह की डरावनी ध्वनियाँ करके उन्हें जगा देते। होश आते ही ज़मीन से नुकीले, आग की तरह लाल,

तपते हुक उड़कर निकलते और दोनों कान पकड़ लेते। “सिस्-सिस्-सिस्” की आवाज़ के साथ कान तुरंत गल जाते। उसी समय साँप उनकी जीभ और आँतें बाहर खींचकर ज़मीन पर फेंकते। फिर कंप्यूटर से धुआँ छोड़ता उबलता पानी निकलकर जीभ और आँतों को पकाता, जब तक वे बहुत छोटी न हो जातीं। कुछ कंप्यूटर कठोर बर्फ़ के टुकड़े छोड़ते, जो जीभ और आँतों को कुचलकर चूर करते और रक्त चारों ओर उछलता।

उबलते पानी से जीभ और आँतें पक जाने तथा कठोर बर्फ़ से कुचल जाने के बाद कंप्यूटर से दोनों सिरों पर नुकीली छोटी लोहे की कीलें उड़कर निकलतीं और घनी कतारों में जीभ और आँतों में धँस जातीं। तब विषैले साँप जीभ और आँतों को मुँह में पकड़कर सब वापस अपराधी आत्माओं के मुँह में ठूँस देते। वे पीड़ा से चीखतीं, ज़मीन पर लोटतीं और कराहतीं। इस प्रकार आत्माएँ बिना विश्राम लगातार यही यातना चक्र भोगती रहती थीं।

कठोर वाणी के इस नरक में दंड की गति अत्यंत तेज़ थी; देखकर आँखें चकरा जाती थीं। शब्दों में समझाने की क्षमता बहुत सीमित है। फिर भी मैं जितना संभव हो बता रही हूँ, ताकि सब जानें। वास्तविक दर्शन में और भी बहुत-से दंड थे, लेकिन समय सीमित होने से उनका एक-एक करके वर्णन नहीं कर सकती।

तभी एक स्त्री आत्मा अचानक मेरी ओर घुटनों के बल बैठकर ज़ोर-ज़ोर से सिर झुकाने लगी। यक्ष उसे छोड़ने वाला नहीं था; उसने बेरहमी से लात मारकर उसे कंप्यूटर के पास लौटा दिया। आह! नरक सचमुच अमानवीय है! वह स्त्री आत्मा कितनी दयनीय थी! तब न्यायाधिकारी ने यक्ष से कहा कि उसे मेरे पास लाए, ताकि मैं उससे पूछकर लेख लिख सकूँ। यक्ष उसे उठाकर ले आया।

स्त्री आत्मा मेरे सामने घुटनों के बल बैठकर बोली, “श्याओ युज़ि, मुझे बचाओ! श्याओ युज़ि, मुझे बचाओ! श्याओ युज़ि, मुझे बचाओ! आप निश्चित रूप से श्याओ युज़ि हैं!” श्याओ युज़ि मेरा बचपन का नाम था, जिससे दादी के घर रहते समय सब

मुझे बुलाते थे। उस शहर को छोड़े मुझे बीस वर्ष से अधिक हो चुके थे। सामने यह महिला कौन थी? निश्चित रूप से बचपन की कोई पड़ोसिन होगी।

मैं उस समय स्तब्ध होकर बोली, “क्षमा कीजिए! हम पहले अवश्य मिले होंगे। क्या आप मेरी दादी की मित्र हैं? बहुत लंबे समय से किसी बड़े ने मुझे इस नाम से नहीं पुकारा। कृपया बताइए, आप यहाँ कैसे आईं?”

दादी के देहांत के साथ यह बचपन का नाम मानो पूरी तरह चला गया था। सोचा न था कि आज नरक में किसी को फिर इसी नाम से पुकारते सुनूँगी। पुराने जीवन के दृश्य उभर आए, जैसे समय पीछे लौट गया हो। एक क्षण में दुख हृदय पर उमड़ आया।

स्त्री आत्मा ने कहा, “श्याओ युज़ि! आपका मुझे न याद रखना स्वाभाविक है। आपकी दादी से मेरा अधिक मेलजोल नहीं था। हम अधिक दूर नहीं रहते थे, पर मेरा घर सबके आने-जाने के रास्ते में था। बचपन में आपको उछलते-कूदते चलना बहुत पसंद था। आप गुज़रतीं तो कदमों की आवाज़ सुनते ही मैं पहचान जाती। अक्सर आप मेरे घर के सामने से जातीं, मैं बैठक में काम करती होती और आपका पार्श्व-चेहरा देखती। तब मेरी दोनों बेटियाँ पूछती थीं: श्याओ युज़ि रोज़ खेल सकती है, जबकि हमें रोज़ बिना रुके इतना घर का काम क्यों करना पड़ता है? मैं बेटियों को कठोर वाणी में डाँटती, ‘तुम जन्म से ही नीच और बदनसीब हो, गरीब घर में पैदा हुई और छोटे मकान में रहती हो; सब की सब अल्पायु अभागिनें! तुमने कुछ अच्छा भी नहीं किया, लड़कियाँ पैदा हुईं। लड़के होतीं तो रोज़ खेलने भेजती। अभी जाकर काम क्यों नहीं करतीं? इसमें ईर्ष्या करने जैसा क्या है? श्याओ युज़ि के घर में बस थोड़ा अधिक घटिया पैसा है। मकान बड़ा होने से क्या, उसमें रहने वाले नहीं। रोज़ खेलती है तो कौन-सा बड़ा काम है? वह भी तुम्हारी तरह कमआयु वाली है, लड़का तो नहीं बन जाएगी।’”

"आपकी दादी हमारे इलाके में अपनी ईमानदारी के लिए प्रसिद्ध थीं और लोगों की सहायता खुशी से करती थीं। उनके पास जो भी चीज़ होती, दूसरों को उपयोग के लिए अवश्य दे देतीं; लौटाएँ न लौटाएँ, कोई बात नहीं। पर बहुओं के एक-एक करके घर आने के बाद उन्हें उनकी नज़र बचाकर चीज़ें देनी पड़ती थीं, नहीं तो बहुएँ डाँटतीं। उन्होंने बहुओं की तरह-तरह की प्रताड़ना सहन की। तब मैं हमेशा सोचती थी कि आपकी दादी इतनी सीधी थीं, इसलिए घर की कई बहुएँ उन्हें लंबे समय तक दबाती रहीं। मुझे और उग्र होना चाहिए, ताकि कोई मुझे न दबा सके। आपकी दादी कहती थीं कि आपके जन्म से वे बहुत अधिक प्रसन्न हुई। वे अक्सर लोगों को आपके दृढ़ और विशेष रूप से लड़कों जैसे स्वभाव के बारे में बताती थीं। अभी आपका पार्श्व-चेहरा देखकर अचानक मुझे लगा कि आप ही श्याओ युज़ि हैं। क्या आपको बीस वर्ष पहले अपने गृहनगर की वह घटना याद है जिसमें एक बहू ने अपनी सास की उँगली दाँतों से काटकर अलग कर दी थी?"

आ यू: "आह! याद आया, तो आप वही आंटी हैं! वह घटना बहुत प्रसिद्ध थी। मैंने सुना था, लेकिन पता नहीं था कि कौन थी। तब मैं छोटी थी, बड़ों की बातें नहीं समझती थी। दादी से सुना था कि आपके और सास के बीच मेल नहीं था। लगता है आपकी सास पोता गोद में लेना चाहती थीं, पर आपके लगातार दो बेटियाँ हुईं। यह भी सुना था कि आप दोनों अक्सर झगड़ती थीं। लेकिन आंटी, आपकी उम्र तो अधिक नहीं थी; आप इतनी जल्दी नरक कैसे आ गईं?"

स्त्री आत्मा दुख से रोकर बोली, "जीवित रहते मेरा मिज़ाज बहुत खराब था। मैं रोज़ कठोर शब्दों से लोगों को गालियाँ देती थी; किसी को भी डाँट देती थी। थोड़ी-सी बात मनमुताबिक न होती तो मैं ऊँची आवाज़ में तीखे, कटु शब्दों से क्रोधपूर्वक अपमान करती। मौसम खराब होने से मेरे काम में बाधा आती तो आकाश को भी कोसती, 'मर जा, घटिया आसमान! यह मनहूस बारिश करता है, परेशान करके मार डाला!' सास और बेटियों को तो रोज़ डाँटती थी। जब आप गृहनगर में थीं, मेरे विवाह

को अधिक समय नहीं हुआ था। सास तब जवान ही थीं, फिर भी मैंने उनकी उँगली दाँतों से काटकर अलग कर दी थी। बाद में मैं और संतान पैदा नहीं कर सकी, तो मनःस्थिति और मिज़ाज और खराब हो गए। सास मेरे सामने टिक ही नहीं सकती थीं। मैं रोज़ उन्हें 'बुढ़िया जो मरती ही नहीं' कहती। बाहर जाना चाहतीं तो कहती, 'बूढ़ी वेश्या, बूढ़ी चुड़ैल, पुरुष खोजने जा रही है! बाहर मर गई तो मैं लाश नहीं उठाऊँगी।' वे हमेशा गुस्से में कुछ जवाब देकर ही जातीं। हर बार वे मुझसे हारतीं; जीत मेरी ही होती। कभी मैं उन्हें मारकर सिर फोड़ देती और खून बहता। विवाह करके आते ही उँगली दाँतों से काटकर अलग करना उन्हें शुरू में ही दबाने के लिए था।

घर पर यकृतशोथ से मेरी मृत्यु हुई। बैलमुख और अश्वमुख मुझे घसीटकर नरक लाए। यमराज अत्यंत क्रुद्ध हुए। उन्होंने कहा कि मैंने जीवित रहते कठोर वाणी से लोगों को चोट पहुँचाई, सास को मारा-पीटा और गालियाँ दीं, आकाश-पृथ्वी को कोसा। यह सास के प्रति कर्तव्यहीनता, अन्याय, सत्यनिष्ठा की कमी, निर्लज्जता, अशिष्टता और अनादर का अपराध था। उन्होंने मुझे 400 वर्ष के लिए विषैले साँपों और आँतों में कील ठोकने के नरक में दंड दिया। लगता है मुझे यहाँ बहुत-बहुत लंबा समय हो गया है। यहाँ की पीड़ा सचमुच अतुलनीय है! जीते जी मैं सोचती थी कि ज़ोर से बोलकर और उग्र होकर आसपास के लोगों को दबा सकती हूँ। अब आखिर समझ गई कि मैं गलत थी। 'हूँ-हूँ-हूँ', सचमुच बहुत पीड़ा है!

श्याओ युज़ि! आप नरक कैसे आईं? आपसे विनती है, मुझे बचाकर बाहर ले चलिए!"

तभी यक्ष ने खूंखार स्वर में ऊँचे से कहा, "अब बकवास नहीं! तुरंत वापस जाकर दंड भोगो। आ यू नरक देखने आई हैं और संसार के लोगों के उद्धार के लिए पुस्तक लिखने में व्यस्त हैं। तुम्हारी बकवास सुनने का समय नहीं है। अभी निकलती क्यों नहीं?" यक्ष का काँटा तुरंत उस पर पड़ा।

मेरे मन में तीखी पीड़ा उठी। न्यायाधिकारी ने मेरा दुखभरा चेहरा देखकर यक्ष को रोक दिया और कहा कि आत्मा को थोड़ी देर और बोलने दें, देखें वह और क्या कहना चाहती है।

स्त्री आत्मा काँपते हुए, बहुत पीड़ा में रोकर बोली, “श्याओ युज़ि! क्या आप मुझे अपने साथ पुस्तक लिखने ले जा सकती हैं? हमारे गृहनगर में सब जानते हैं कि बचपन से दादी के संस्कार और शिक्षा से आपका स्वभाव दूसरों की सहायता करने वाला था। श्याओ युज़ि, मुझे विश्वास है कि आप मुझे अवश्य बचाएँगी; आप मुझे मरती देखकर नहीं छोड़ेंगी। हमारा मेलजोल भले कम रहा हो, हम पड़ोसी तो रहे हैं। मुझे साथ ले चलिए, हम पुस्तक लिखकर लोगों को कठोर वाणी न बोलने की शिक्षा दें। मैं आपके लिए अवश्य गवाही दूँगी कि कैसे तरह-तरह की कठोर वाणी के अपराध करके नरक में दुख भोगने आई। लोगों को कठोर वाणी से रोकने में आपकी सहायता करूँगी। विनती है, मुझे बाहर निकालिए!”

“आंटी, अमिताभ बुद्ध! आपको नरक में गिरा देखकर बहुत दुख हो रहा है। मैं भी चाहती हूँ कि जल्द-से-जल्द आपको बाहर निकाल सकूँ, लेकिन मेरे पास आपको बाहर ले जाने की शक्ति नहीं है। मैं बुद्ध के अधिष्ठान-बल पर निर्भर होकर नरक के दर्शन और ‘परलोक के अटल विधान’ पुस्तक के लेखन के लिए आई हूँ। पुस्तक कौन लिखेगा, यह बुद्ध ने तय किया है; मुझे निजी रूप से किसी को नियुक्त करने का अधिकार नहीं। मैं पंचशील का पालन करने वाली, बुद्ध-नाम स्मरण करने वाली और शुद्ध शाकाहार अपनाने वाली बौद्ध शिष्या हूँ। आंटी, आप भी बुद्ध-नाम स्मरण और पश्चात्ताप का संकल्प कीजिए! पुस्तक-लेखन का पुण्य मैं अवश्य आपको समर्पित करूँगी, ताकि आप शीघ्र दुख से मुक्त होकर सुख पाएँ, शुद्धभूमि में ऊपर उठें और कमल से जन्म लें। मैं इन माननीय न्यायाधिकारी से आपकी ओर से प्रार्थना करने का प्रयास करूँगी; आशा है कुछ सहायता हो सके!”

तब स्त्री आत्मा बोली, “न्यायाधिकारी से विनती है! न्यायाधिकारी से विनती है! मैं आपके चरणों में सिर झुकाती हूँ। मैं मरने योग्य हूँ! मरने योग्य हूँ! जीते जी कोई अच्छा काम नहीं किया। अब बहुत इच्छा है कि श्याओ युज़ि की तरह लोगों के लिए कुछ अच्छा करूँ। आपसे विनती है, मुझे सचमुच अपनी गलती समझ आ गई है!”

न्यायाधिकारी बोले, “जीवित रहते तुमने कठोर वाणी से लोगों को चोट पहुँचाई और सास को मारा, डाँटा तथा अपमानित किया। यह परलोक के नियमों के अनुसार सास के प्रति गंभीर कर्तव्यहीनता है। परलोक के विधान छलियों और दुष्टों को दंडित करते हैं। नरक में गिराने वाला अकुशल कर्म कर लिया तो नरक का विधान तुम्हें दृढ़ता से बाँधकर रखेगा; सारे अकुशल कर्म घिसकर समाप्त होने पर ही बाहर निकल सकती हो। परलोक के कानून यहाँ के किसी कर्मचारी को जानने या व्यक्तिगत संबंध के कारण दंड कम नहीं करते। पिता-पुत्र जैसे निकटतम संबंध में भी कोई पारिवारिक पक्षपात नहीं है। परलोक के नियमों का उल्लंघन करने वाले हर व्यक्ति को दंड मिलना ही है। जिसे हानि पहुँचाई वह तुम्हें क्षमा कर दे, तुम्हारी सास कोई जिम्मेदारी न ठहराए और तुम्हारी कर्तव्यहीनता क्षमा कर दे, तब भी निष्पक्ष और न्यायपूर्ण परलोक-विधान तुम्हें नहीं छोड़ेंगे। उनके कर्मफल-नियम मनुष्य की आयु और पुण्यफल समाप्त होने तक प्रतीक्षा करते हैं, फिर बैलमुख और अश्वमुख निर्दयता से उसे नरक में दंड भोगने लाते हैं। अभी तुममें कुछ समय के लिए पश्चात्ताप उठा है, यह मैं भी जानता हूँ। आज तुमने बहुत सहयोग किया है, इसलिए मैं यक्ष से तुम्हारा एक बार सहयोग और पश्चात्ताप करना दर्ज करने को कहूँगा, जिसे परलोक में एक बार धर्म सुनने के बराबर माना जाएगा। जीवित रहते तुमने सास के प्रति कर्तव्य नहीं निभाया, इसलिए अब तुम्हारे वंशज उचित सिद्धांत और विधि से भलाई तथा सद्गुण का संचय करके तुम्हें समर्पित नहीं कर रहे। तुम्हारे और आ यू के बीच किसी पिछले जन्म में दूर का पारिवारिक रिश्ता था; वही कारण-प्रत्यय पकने से आज थोड़ी देर मिलने का अवसर मिला है। आशा है इस अनित्य शुभ संयोग को सँभालोगी।

परलोक सच्चे पश्चात्ताप करने वालों को धर्म सुनकर मुक्त होने का अवसर भी देता है। लेकिन पहली शर्त है कि तुम्हारे अपने पश्चात्ताप के विचार एक निश्चित उजाले तक पहुँचें। यक्ष वह प्रकाश देखकर स्वाभाविक रूप से तुम्हें क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व का उपदेश सुनने ले जाएँगे। धर्म सुनने का यह श्रेष्ठ अवसर भी सबके लिए समान है। कुछ समय तक सच्चा पश्चात्ताप करोगी तो स्वाभाविक रूप से यक्ष आएँगे, दंड अस्थायी रूप से रोकेंगे और धर्म सुनने ले जाएँगे। हर बार सुनने का यक्ष अभिलेख रखते हैं। प्रत्येक बार क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व की करुणामय धर्मध्वनि तुम्हारे आत्मिक स्वभाव को धोकर भलाई की ओर बदलती और अधिष्ठित करती है। अभी तुम्हारे पश्चात्ताप का प्रकाश पर्याप्त नहीं है। पहले लौटकर अपने कर्मबल को अच्छी तरह क्षीण करो।"

यक्ष ने फिर खूंखार स्वर में स्त्री आत्मा से कहा, "आज तुम्हारा भाग्य अच्छा था! न्यायाधिकारी मिले और इतना समझाया। जल्दी लौटकर दंड भोगो!" और फिर एक लात मारी। अरे! यक्ष, ओ यक्ष! हमेशा इतने उग्र, इतने रूखे! यहाँ हर यक्ष खूंखार है! आह! नरक में दुख भोगने कभी मत गिरना; हर ओर केवल दयनीय दशा है!

तब न्यायाधिकारी ने आगे कहा, "जिन मनुष्यों ने कठोर वाणी के अपराध किए हैं और अब यह लेख देखकर नरक के दुख से बचना चाहते हैं, वे जीवित रहते इस वाणी-कर्म का पश्चात्ताप कर सकते हैं। अवश्य ही इसकी गंभीरता देखनी होगी—क्या किसी के जीवन को हानि पहुँची आदि। गंभीर हो तो भी पश्चात्ताप से बहुत सुधार होगा। सामान्य कठोर वाणी के कर्मों को आयु समाप्त होने से पहले पश्चात्ताप द्वारा पूरी तरह शुद्ध किया जा सकता है। विधि वही है जो कल झूठ के अपराध के लिए बताई थी। बस 'झूठ बोलने का अपराध' के स्थान पर 'कठोर वाणी का अपराध' कर दें। जैसे: मेरा नाम अमुक है। मैंने अमुक समय और स्थान पर अमुक मामले में कठोर वाणी का प्रयोग किया था। इस तरह झूठ की जगह कठोर वाणी कह देना पर्याप्त है।

याद रखिए! पश्चात्ताप सच्चे मन से होना चाहिए! यह बहुत महत्त्वपूर्ण है। सच्चे मन का एक विचार तीनों कालों तक पहुँचता है; वह असंख्य अकुशल कर्म क्षीण करने के लिए पर्याप्त है और सीधे आकाश-पृथ्वी तथा परलोक के विधान के नियमों तक पहुँचता है! 'परलोक के अटल विधान' में बताई इस सच्चे पश्चात्ताप की विधि को पुनः प्रकाशित करके दूसरों को बताएँ; इससे पिछले अकुशल कर्म अवश्य मिटेंगे। परलोक में हर मनुष्य के विविध शुभ-अशुभ कर्मों का विस्तृत अभिलेख है। भलाई को छोटा समझकर न छोड़ें। बड़े पुण्यफल वास्तव में छोटी भलाई, छोटे अच्छे कर्म और सूक्ष्म तथा कठोर शील पालन से आते हैं। याद रखिए: ऐसा नहीं कि लेख पढ़कर पश्चात्ताप कर लेने के बाद सोचें, यह विधि तो है ही, अब मनमानी कर सकते हैं, फिर बुरा करेंगे, फिर पश्चात्ताप करेंगे। बार-बार जानते-बूझते अपराध करने वाले का अपराध एक स्तर बढ़ जाता है!

आ यू! कठोर वाणी के नरक का दर्शन आज यहीं तक रखें। समय निकालकर फिर आइए! मुझे भी पहले राजकीय काम में लगना है।"

"मैं न्यायाधिकारी को प्रणाम करती हूँ! आज उस आंटी की सहायता करने के लिए आपका बहुत आभार।"

न्यायाधिकारी बोले, "औपचारिकता की आवश्यकता नहीं। हमारी दृष्टि में हर अपराधी आत्मा समान है। हम परलोक के अधिकारी चाहते हैं कि सभी आत्माएँ जल्द नरक से निकलें। आपकी पुस्तक में सहायता करना मेरा दायित्व भी है। उद्देश्य भी यही है कि और अधिक मनुष्य आयु पूरी होने पर नरक में दुख भोगने न गिरें। वास्तव में इससे हमारा काम भी कम होगा, इसलिए आ यू, मुझे तो आपका आभार मानना चाहिए! अच्छा होगा कि आप अधिक बार आएँ और जल्द पुस्तक प्रकाशित करें, नरक के तरह-तरह के दुख मनुष्यलोक के सामने रखें और लोगों को शील, बुद्ध-नाम स्मरण तथा भलाई की ओर प्रेरित करें। बुद्ध की कृपा और जेड सम्राट तथा सभी यमराजों के इस अवसर पर स्वर्गीय रहस्य पूरी तरह खोल देने के अनुग्रह

को व्यर्थ न जाने दें। मनुष्यलोक के प्राणियों का उद्धार करने के लिए ही परलोक के न्यायालय और नरकों के विभिन्न दंडों की सच्चाई प्रकट की जा रही है। आज मनुष्यलोक के प्राणी बुरे कर्म करते हैं, कर्मफल नहीं मानते, मनमानी करते हैं, यौन दुराचार और जीवहत्या, चोरी और झूठ करते हैं; दशा लगभग नियंत्रण से बाहर हो गई है। यह स्वर्ग का गंभीर उल्लंघन है और आकाश-पृथ्वी की शुद्ध ऊर्जा का संतुलन बिगाड़ता है। 'परलोक के अटल विधान' पुस्तक इसलिए आई है कि उन कुछ लोगों को दुख-सागर से बचाया जा सके जिन्होंने बुरे कर्म तो किए हैं, लेकिन जिनकी अंतरात्मा पूरी तरह नहीं मरी है।"

"अच्छा! आप जल्दी लौटकर लेख लिखिए; मैं पहले अपने काम में लगूँगा!"

"अमिताभ बुद्ध! करुणामय न्यायाधिकारी ने इतनी व्यस्तता में सहायता की—इसके लिए आभार। मैं हाथ जोड़कर धन्यवाद देती हूँ!"

श्वेत कमल पर सवार होकर घर लौटती हूँ!

18/कभी काँटे से मछली न पकड़ें—अकेली आत्मा द्वारा तलवारों के समुद्र में अकेले काँटा डालने का नरक[113]

नमो अमिताभ बुद्ध! न्यायाधिकारी को साष्टांग प्रणाम!

आ यू: “आज न्यायाधिकारी से पूछना चाहती हूँ कि काँटे से मछली पकड़ने के शौकीन प्राणियों को कौन-सा कर्मफल मिलता है? मैंने मनुष्यलोक में कुछ शौकीनों को मछली पकड़ना मनोरंजन मानते देखा है। वे जानते भी हैं कि शहर के समुद्री पानी में प्रदूषण और भारी धातुओं का खतरा है। वे मछली किनारे खींचकर उससे मनोरंजन करते हैं। कुछ उसके शल्कों का भाग खुरच देते हैं, यहाँ तक कि आँखें निकालते हैं, पंख या आंतरिक अंग काटते हैं आदि, फिर उसे समुद्र में फेंक देते हैं। क्या ऐसे काम नरक में गिराते हैं? ऐसा नरक हो तो मैं उसे भी देखना चाहती हूँ।”

न्यायाधिकारी: “काँटे से मछली पकड़ना जीवहत्या का कर्म है। मनोरंजन के लिए हो या खाने के लिए, दोनों हत्या के काले कर्म में आते हैं और नरक का दंड देते हैं। अंतर यह है: मनोरंजन के लिए पकड़ी मछली के अंग न घायल किए गए हों और वह वापस समुद्र में तैरकर सामान्य जीवन जी सके, तो कर्मफल कुछ छोटा होता है। लेकिन इससे भी मछली के मन, अर्थात उसकी चेतना, को चोट पहुँचती है, उसे घबराहट और भय होता है और पकड़ी गई मछली से अशुभ संबंध बनता है।”

“यदि केवल मनोरंजन का इरादा हो, मारने का कोई भाव न हो, तो भी हर बार मछली पकड़ने पर एक महीने का पुण्यफल घटता है; इसमें एक महीने का आहार और तरह-तरह के उपभोग के पुण्यफल शामिल हैं। जैसे मछली पकड़ने वाले का अगले महीने वेतन बढ़ने वाला हो, लेकिन इस काले कर्मबल से वृद्धि न हो; वरिष्ठ

अधिकारी अनुचित डाँट दे, सहकर्मी विरोध करें, लोग पसंद न करें और मछली को चोट पहुँचाने के कर्मबल के लौटने से शरीर में अचानक तरह-तरह की पीड़ाएँ अपने-आप होने लगें। व्यापारी हो और अगले महीने बड़ा ग्राहक समझौता करने वाला हो —मान लें दस लाख कमाने वाला था—तो वह लाभ कट जाएगा। पिछले जन्म का पुण्यफल बड़ा हो तो भी अनेक बाधाओं के बीच कठिनाई से तीन लाख कमा पाएगा।"

"मनोरंजन या खिलवाड़ से पकड़ी मछली घायल या विकलांग हो जाए, तो एक महीने का पुण्यफल घटने के साथ शरीर को तरह-तरह के रोग-दर्द सहने होंगे। विस्तृत रूप में, मछली ने जैसी पीड़ा भोगी, वैसा ही कर्मबल मछली पकड़ने वाले के शरीर पर लौटेगा। उसे सिरदर्द, चक्कर, मुँह की विविध बीमारियाँ, मानसिक असंतुलन जैसे लक्षण आदि होंगे। जन्मजात कटे होंठ का कारण पिछले जन्म में मछली पकड़ने का कर्मफल है। शरीर के अन्य दर्द भी घायल मछली की पीड़ा के समान होंगे। खाने के लिए मछली पकड़ी जाए तो हर बार कम-से-कम सात दिन की आयु और तीन महीने का पुण्यफल घटता है। बहुत मछलियाँ पकड़ी हों या गर्भवती मछली पकड़ी हो, तो परलोक के विधान जन्मसहचर देवताओं के विस्तृत अभिलेख के अनुसार दंड बढ़ाते हैं।"[114]

"जो अक्सर मछली पकड़ता है, उसकी देह-आभा लाल से धीरे-धीरे धूसर होने लगती है। देह-आभा मंद होने पर कामों में अनेक बाधाएँ आती हैं, नींद अशांत रहती है, संदेह बढ़ता है और क्रोध आसानी से आता है।"

"हर व्यक्ति के जन्म के समय देह-आभा गोल होती है; रंग की गहराई व्यक्ति-व्यक्ति में अलग होती है। यह आभा उसके पुण्यफल और शुभ-अशुभ कर्मबल का प्रतिनिधित्व करती है। आभा पूर्ण तथा उज्ज्वल हो, बड़े क्षेत्र को ढके और अधिक दूर तक फैले, तो उस व्यक्ति के शुभ कर्म, पुण्यफल और सदाचार बड़े हैं। महान प्रज्ञा वाले बुद्धों और महान बोधिसत्त्वों की देह-आभा सबसे पूर्ण होती है।"

“पहले बताया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति के जन्म से ही उसके पास दो जन्मसहचर देवता रात-दिन साथ रहते हैं। वह कहीं भी जाए, शौचालय में, नहाने या सोने भी जाए, वे आयु के अंत तक साथ रहते हैं। दोनों देवताओं में से एक का रूप पुरुष का और दूसरे का स्त्री का होता है। पुरुष-रूप वाले जन्मसहचर देवता मनुष्य की बाईं ओर रहते हैं, उनकी आभा हल्की सफ़ेद होती है और वे प्रतिदिन के अच्छे विचार तथा अच्छे कर्म दर्ज करते हैं। स्त्री-रूप वाले जन्मसहचर देवता की आभा हल्की काली होती है; वे दाईं ओर रहकर प्रतिदिन के बुरे विचार और बुरे कर्म दर्ज करते हैं।”

“मनुष्य बहुत अधिक काले कर्म करे तो स्त्री-रूप वाले जन्मसहचर देवता क्रुद्ध होकर सूचना और चेतावनी देते हैं। बहुत कम लोग कुछ क्षीण संदेश ग्रहण कर पाते हैं अधिकांश को कुछ महसूस नहीं होता। दोनों जन्मसहचर देवता हर महीने मनुष्य के शुभ-अशुभ कर्मों का अभिलेख परलोक को सौंपते हैं।”

“अत्यंत दुष्ट व्यक्ति मनुष्यलोक को हानि पहुँचाए तो उसकी आयु शेष होने पर भी परलोक तत्काल व्यवस्था करके उसके ऊपर विपत्ति लाता है, जिससे उसकी आत्मा शीघ्र नरक में दंड भोगने लौट आए। मनुष्य के अपने निश्चित कर्मों के अतिरिक्त इस जीवन के वचन और कर्म नए कर्मबल भी बनाते हैं। पुण्यफल और कर्मबल प्रतिदिन हमारे अच्छे-बुरे आचरण से बढ़ते-घटते हैं।”

आ यू: “न्यायाधिकारी ने इतनी स्पष्टता से समझाया, बहुत आभार। पूछना चाहती हूँ: केवल मनोरंजन के लिए मछली पकड़ने पर भी इतना पुण्यफल घटता है, तो जिसका पुण्यफल पहले ही कम है और जो अक्सर मछली पकड़ता है, उसकी दशा बहुत खराब नहीं होगी?”

न्यायाधिकारी: “हाँ! एक मछली भी एक जीवन है। मछली पकड़ने वाला बहुत कम समय में उसका जीवन समाप्त कर देता है। शीलभंग और जीवहत्या का यह कर्मबल जल्दी उसी पर लौटता है और उसे सहना पड़ता है। कुछ कहते हैं: मेरा कोई

धर्म नहीं, किसी शील का पालन नहीं करना, मैं बहुत स्वतंत्र हूँ; किसी मनुष्य की हत्या या आगज़नी तो नहीं कर रहा, बस खाली समय में मछली पकड़ता हूँ। यह सोच गलत है। परलोक के विधान हर चेतन प्राणी को दृढ़ता से बाँधते हैं। धार्मिक आस्था हो या न हो, बुरा कर्म करने वाला अंततः इन विधानों से दंडित होगा ही। शीलधारी प्राणी शील तोड़े तो अपराध एक स्तर बढ़ता है; जानते-बूझते करने पर दंड अवश्य बढ़ेगा। नरक के विभिन्न दंडों से बचने का केवल एक मार्ग है—पंचशील और दस कुशल कर्मों का पालन। पंचशील से मनुष्य-जन्म सुरक्षित रह सकता है और दस कुशल कर्म करने वाला अपना पुण्यफल सुरक्षित रख सकता है और पतन से बच सकता है। लेकिन दैनिक वचन और कर्म में मनुष्य आसानी से दस अकुशल कर्म कर बैठता है। पुण्यफल को घटने से बचाने का सबसे प्रभावी उपाय शील और बुद्ध-नाम स्मरण है। निरंतर और दृढ़ता से बुद्ध-नाम स्मरण करने पर कर्म समाप्त होंगे, आसक्ति रिक्त होगी और जन्मजात प्रकाश पुनः प्राप्त होगा।”

“हर व्यक्ति के पास बहुत-से वैर और संबंधों से जुड़े कर्म-ऋणदाता प्रतिशोध के अवसर की प्रतीक्षा करते हैं। परलोक-विधान के विरुद्ध कोई कर्म करना उन्हें बदला लेने का अधिक अवसर देना है। धर्मरक्षक सद्देव भी कर्मफल के नियम में हस्तक्षेप नहीं करते और शीलभंग को बिल्कुल नहीं बढ़ावा देते। परलोक-विधान लागू करने वाले धर्मरक्षक सद्देव करुणा से सभी चेतन प्राणियों को निष्पक्ष पुरस्कार और दंड देते हैं।”

“जन्म के समय हर व्यक्ति पिछले जन्मों के विविध शुभ-अशुभ कर्मबल साथ लाता है। लगातार पंचशील और दस कुशल कर्मों का पालन करे तथा शील न तोड़े, तो आसपास कितने ही वैर और संबंधों से जुड़े कर्म-ऋणदाता हों, वे केवल पीछा कर सकते हैं; बदला लेने का अवसर नहीं मिलता। फिर कुछ लोग झूठ, यौन दुराचार, मद्य और भोग-विलास जैसे शीलभंग करते हुए भी धन-संपत्ति और प्रतिष्ठा क्यों

भोगते रहते हैं? क्योंकि पिछले जन्मों में उनके बड़े शुभ कर्म थे और पुण्यफल अभी समाप्त नहीं हुआ।"

"शुभ कर्म प्रबल हों तो व्यक्ति उनके तरह-तरह के पुण्यफल पाता है, काम सुचारु होते हैं और वह प्रसन्न रहता है। लगातार शीलभंग करे और भलाई करके पुण्य न जोड़े, तो निरंतर उपभोग से शुभ कर्मों के पुण्यफल समाप्त हो जाते हैं; मिठास खत्म होती है और कड़वाहट आती है। मछली पकड़ने वाले के अन्य शुभ कर्म या अच्छे आचरण न हों, तो इस जन्म की लगातार जीवहत्या से उसके काले कर्म बढ़ेंगे। पिछले जन्मों के अकुशल कर्म भी जुड़ेंगे और आसपास के मानवेतर वैर और संबंधों से जुड़े कर्म-ऋणदाता शरीर पर अधिकार करके बड़े पैमाने पर बाधा डाल सकेंगे, तरह-तरह की अप्रत्याशित विपत्तियाँ लाएँगे, यहाँ तक कि उसका जीवन छीन लेंगे।"

"अब समय सीमित होने से फिलहाल इतना ही कहूँगा। आ यू, मेरे साथ आइए!"

आ यू: "जी, न्यायाधिकारी!"

न्यायाधिकारी: "यह नरक मनुष्यलोक के समय के अनुसार 1995 में विस्तार के रूप में बनाया गया था। इसमें अधिकतर अपराधी आत्माएँ पूर्वी देशों की हैं।"

हम तेज़ी से एक बड़े क्षेत्र में उतरे, जो मनुष्यलोक के विशाल औद्योगिक क्षेत्रों जैसा लगा। दिशासूचक ध्यान से देखना आवश्यक था, नहीं तो भटक सकते थे। बहुत-से द्वार थे, पर द्वारों पर यक्ष नहीं थे। हर द्वार पर नरक का नाम लिखा था और एक के भीतर एक बने सभी द्वार कसकर बंद और तालाबंद थे। तो यह नरक की एक और नई दुनिया थी! सिर चकरा गया। मनुष्यलोक में चीज़ें पहले ही पल-पल कितनी बदलती हैं; अब नरकों में भी इतने नए विस्तार हो गए, तो दर्शन आखिर कब पूरे होंगे?!

न्यायाधिकारी बोले, “आज केवल सातवीं इमारत का सातवाँ कक्ष देखेंगे—अकेली आत्मा द्वारा तलवारों के समुद्र में अकेले काँटा डालने का नरक। परलोक में कर्मियों की कमी है, इसलिए यहाँ कहीं द्वारपाल नहीं है। हम सीधे घंटी बजाएँगे!”

आ यू: “अच्छा, न्यायाधिकारी!”

ढूँढ़ें! यह पहली इमारत है, दूसरी, तीसरी, चौथी, पाँचवीं, छठी, सातवीं। एक, दो, तीन, चार, पाँच, छह, सातवाँ कक्ष—दिख गया! आधुनिक पारंपरिक चीनी अक्षर गहरा हरा प्रकाश छोड़ रहे थे: अकेली आत्मा द्वारा तलवारों के समुद्र में अकेले काँटा डालने का नरक। मैंने आगे बढ़कर घंटी दबाई।

यक्ष ने द्वार खोलकर न्यायाधिकारी को प्रणाम किया और हम भीतर गए। यह नरक एक समुद्र था, जिसमें बड़ी-छोटी बहुत-सी धारदार और खूंखार तलवार-मछलियाँ थीं। यहाँ बाएँ और दाएँ दो भाग थे: बाईं ओर आत्माएँ अकेले दंड भोगती थीं, दाईं ओर तीन-पाँच के समूह में साथ दंड भोगती थीं। इसकी विशेषता थी कि यक्ष केवल चार थे, दोनों ओर दो-दो। सचमुच कर्मियों की कमी थी; इन चारों को बहुत परिश्रम करना पड़ता था!

यह नरक भी छोटा नहीं था। यह मनुष्यलोक के समुद्र जैसा नहीं था, जहाँ किनारे की एक चट्टान पर एक-दो व्यक्ति ही समा पाते हैं। मनुष्यलोक का सामान्य समुद्रतट 500 से अधिक लोगों से भीड़भरा कहलाने लगता है। इस नरक के समुद्र में लोहे की तलवार-मछलियाँ मनुष्य खाती थीं। सबसे बड़ी लगभग दस मीटर लंबी थी और मुँह खोलकर एक साथ बारह अपराधी आत्माएँ खा सकती थी। छोटी मछलियाँ एक-एक कौर करके खाती थीं।

यहाँ एक ही चट्टान पर आश्चर्यजनक रूप से बहुत-सी आत्माएँ समा जाती थीं। मेरे पास की अत्यंत छोटी चट्टान पर ही 45 आत्माएँ थीं; दूसरी चट्टानों पर और अधिक थीं। बाईं ओर आत्माएँ किनारे की चट्टानों पर अकेले खड़ी या बैठी थीं और जन्म-मरण की भारी पीड़ा का चक्र लगातार भोग रही थीं। पास की इस पुरुष-आत्मा

को देखें। उसे अभी संवेदना लौटी थी और होश आने लगा था। वह आत्मा उठकर चट्टान पर बैठ गई। मछली पकड़ने के अकुशल कर्मफल के खिंचाव से वह मानो पिछली पीड़ा पूरी तरह भूल गया था।

मैंने देखा कि उसके मन में समुद्र में तैरती तरह-तरह की मछलियों के रूप उभर रहे थे। वह सोच रहा था कि इन विशेष समुद्री मछलियों को अवश्य पकड़ लेगा, फिर तुरंत नाव पर भूनकर खाते हुए दृश्य देखेगा। उसकी आँखें प्रसन्नता से तलवार-मछलियों को देख रही थीं और पास एक लंबी बिजली से चलने वाली मछली पकड़ने की छड़ी थी। उसके हाथ के छड़ी को छूते ही छड़ी अपने-आप उठी और उसने तेज़, सटीक गति से उसका सिर फँसा लिया। ध्यान से देखने पर ऐसा लगा कि छड़ी का तेज़ अर्धवक्र लोहे का काँटा मुँह के रास्ते घुसकर सिर में अटका था। उस क्षण आत्मा के मन में घना अंधकार छा गया। दर्द से वह आवाज़ भी नहीं निकाल पा रहा था। मुँह से रक्त बहने लगा और हाथ-पैर बेतरतीब छटपटाने लगे। जितना छटपटाता, काँटा उतना भीतर धँसता।

छड़ी ने उसे तेज़ी से समुद्र की एक छोटी लोहे की तलवार-मछली के मुँह में फेंका।[115] यह छोटी मछली दो मीटर लंबी थी। समुद्र में फेंके जाते ही आत्मा ठीक उसके मुँह के पास एक नुकीले लोहे के स्तंभ पर गिरी। वह भय से भरकर उसमें बिंध गई और पूरे शरीर से रक्त फूट पड़ा। लोहे की तलवार-मछली ने भयावह क्रुद्ध गर्जना की और उसका सिर काटकर फाड़ दिया। पहले नाक और आँखें खाईं; दूसरे कौर में सिर का निचला हिस्सा गले तक खा लिया। आत्मा के हाथ-पैर दर्द से सिकुड़कर काँप रहे थे। मछली ने अपने नुकीले मुँह से पेट चीरा और फिर धीरे-धीरे आंतरिक अंग खा गई, जब तक पूरी आत्मा न खा ली। उसके बाद उसने टूटी-बिखरी, रक्त से सनी आत्मा के सारे अवशेष उसी चट्टान पर उगल दिए। चट्टान पर लौटने पर इस नरक में कर्म-वायु का एक झोंका आया, जो आत्मा को फिर स्वस्थ और सचेत कर देता था। इस कर्मबल की हवा के लगते ही वह आत्मा अपने-आप पुनः

पूर्ण होकर जाग उठती और फिर वही यातना भोगती। आह! यह अतुलनीय भीषण पीड़ा है!

न्यायाधिकारी ने यक्ष से इस आत्मा को मेरे पास बातचीत के लिए लाने को कहा। वह अभी बेहोश था और उठाकर लाए जाने पर भी अचेत-सा था। मेरे चेहरे पर उलझन आ गई—बेहोश से कैसे पूछूँ? यक्ष ने तुरंत समझाया कि अब उसे परलोक का आत्मा लौटाने वाला अदरक का सूप दिया जाएगा। शरीर का ताप कुछ बढ़ जाए और बोलने जितना होश लौट आए, तो बातचीत की जा सकती है। उसके बाद फिर कर्म-वायु देकर दंड जारी रहेगा।[116]

यक्ष ने ठंडा पानी डालकर आत्मा को जगाया। आत्मा लौटाने वाला अदरक का सूप पीकर वह सामान्य होने लगा, फिर भी बहुत थका और पीड़ित दिख रहा था। यक्ष ने उसे सच्चाई से बताने को कहा कि वह इस नरक में दुख भोगने क्यों गिरा था।

अपराधी आत्मा: “जीवित रहते मैं पूर्व के एक शहर में सूखे समुद्री खाद्य पदार्थों का थोक कारोबार करता था और बहुत पैसा कमाया। लेकिन घनिष्ठ मित्र बहुत कम थे। लगता था कि आसपास कोई मेरे प्रति सच्चा नहीं है; मैं अकेलेपन वाला व्यक्ति था। कारोबार में खाने-पीने वाले साथी बहुत थे, पर सब झूठे मित्र, एक-दूसरे का उपयोग करने वाले। रोज़ मुस्कुराकर मिलना पड़ता था, जिसका कोई अर्थ नहीं लगता था। बहुत पहले से यह थोक कारोबार छोड़ना चाहता था, लेकिन व्यवसाय सदा अच्छा चलता रहा, इसलिए केवल पैसा कमाने के लिए करता रहा। बचपन से मुझे मछली पकड़ना विशेष रूप से पसंद था। यहाँ गिरने का सबसे बड़ा कारण यह था: मुझे लगा कि इतनी कम उम्र में आर्थिक रूप से संपन्न हूँ, तो क्यों न अपनी पसंद का कारोबार करूँ? नुकसान भी हुआ तो अधिक फर्क नहीं पड़ेगा। इसलिए दुनिया भर में विशेष पेशेवर मछली पकड़ने के उपकरण खोजने लगा। साथ ही अच्छे अन्वेषण और पर्वतारोहण के सामान, कपड़े, औज़ार आदि खोजे और एक दुकान

खोली, जो मुख्यतः मछली पकड़ने के औज़ार और कुछ अन्वेषण तथा पर्वतारोहण के उत्पाद बेचती थी।"

"दुकान इस भाव से खोली थी कि एक बार कोशिश करूँगा, नुकसान हुआ तो जाने दूँगा। कौन जानता था कि मछली पकड़ने की इस दुकान का कारोबार इतना अच्छा चलेगा! इससे आत्मविश्वास बहुत बढ़ा और समान रुचि वाले कुछ मछली पकड़ने के मित्र भी बने। फिर मैंने कंपनी की बिक्री बढ़ाने के लिए मछली पकड़ने के कौशल का प्रचार करने की सोची।"

"प्रचार के बाद थोड़े समय में कंपनी का कारोबार और ऊँचे स्तर पर पहुँच गया। मुझे लगा कि मैं निवेश करना जानता हूँ, इसलिए कंपनियों, व्यक्तियों और समूहों में अधिक ज़ोर से प्रचार किया। मछली पकड़ने और नदी में नौकाविहार वाले आनंदमय जन्मदिन समारोह, पूर्ण पैकेज जैसी गतिविधियाँ आयोजित कीं। रुचि रखने वाले समान विचार के लोगों की मछली पकड़ने वाले रेस्तराँ और उपकरणों की दुकानें आदि खोलने में भी सहायता की। फिर सोचा कि पूरी ऊर्जा लगाकर अपनी मछली पकड़ने की कंपनी के आगे के विकास का सुंदर खाका बनाऊँ।"

"संपत्ति लगातार बढ़ी तो मैं रहने का स्तर भी बढ़ाकर धनवान लोगों के क्षेत्रों में जाने लगा। हम तीनों परिवारजन कई हज़ार 'ची' (尺) माप वाले एक बड़े विला[117] में रहने चले गए; घर में कई सेवक थे। पर अच्छे दिन स्थायी नहीं रहे। वहाँ रहने आए तीन महीने भी नहीं हुए थे कि मेरा बेटा बहुत संवेदनशील और डरपोक हो गया। दिन भर भय में कहता कि कोई उसे मारेगा, जबकि घर में कोई ऐसा नहीं था। पत्नी को कमरदर्द और अवसाद था; वह रोज़ बहुत क्रोध करती, मुझ पर विवाहेतर संबंध का संदेह करती आदि। घर के नौकर लगातार बदलते रहते थे।"

"पत्नी और बेटे ने मनोचिकित्सक से इलाज कराया, दवाएँ लीं और इंजेक्शन लगवाए, लेकिन स्थिति सुधरने के बजाय और गंभीर हुई। बाद में घर में थोड़ी-सी अचानक आवाज़ होते ही बेटा डरकर छिप जाता। पहले मासूम और चंचल बेटा तेज़

रोशनी से भयभीत होता और अँधेरे स्थान पसंद करता। घर में सीधी धूप न आए, इसलिए सारे परदे बंद रखने पड़ते थे। पत्नी के साथ संबंध खराब थे और घर पर डाँट पड़ती थी, जिससे मेरा मन खराब रहता। मन बहलाने के लिए रोज़ मित्रों के साथ शराब पीने और कराओके गाने जाने लगा। वहाँ एक युवती से विवाहेतर संबंध भी बना। वह दो बार गर्भवती हुई और मैंने उसे गर्भपात कराने के लिए उकसाया।”[118]

“मैं मद्य और भोग-विलास का जीवन बिताने लगा, कभी घर भी नहीं लौटता था, हालांकि बेटे का खयाल मन में रहता था। एक बार शराब के नशे में बुखार के साथ बेहोश हो गया और एंबुलेंस मुझे अस्पताल ले गई। वहाँ जाँच में अंतिम अवस्था का यकृत कैंसर निकला। तीन महीने की तरह-तरह की पीड़ाएँ सहने के बाद विवशता और दुख में संसार छोड़ दिया। हूँ—हूँ—हूँ... मैं ठीक से समझ भी नहीं पाया था कि क्या हुआ, तभी अचेत-सी अवस्था में बैलमुख और अश्वमुख लोहे की ज़ंजीरों से मुझे घसीटकर नरक ले आए।”

परलोक के अधिपति यमराज ने मेज़ पर हाथ पटककर क्रोध में कहा, “XXX, क्या अपना अपराध जानते हो? भरपूर पुण्यफल लेकर मनुष्यलोक में जन्मे, पर उसका उचित उपयोग करके भलाई और पुण्य का संवर्धन नहीं किया। उलटे उसका दुरुपयोग करके जीवहत्या और प्राणहानि के उद्योग में लगे, दूसरों को भी उसमें लगाया, लोगों की सोच को गंभीर रूप से बिगाड़ा और उनकी करुणा का नाश किया।”

“इस जीवन का तुम्हारा सबसे भारी अकुशल कर्म मछली पकड़कर जीवहत्या करना है। पहले इसे अकेली आत्मा द्वारा तलवारों के समुद्र में अकेले काँटा डालने के नरक में 10000 वर्ष का दंड भुगतने ले जाओ। मनुष्यलोक में तुम्हारे कारण खुली सारी मछली पकड़ने की दुकानें बंद हो जाएँ, तभी तुम मेरे सामने फिर आ सकते हो। उसके बाद दूसरे अपराधों का निर्णय होगा।”

आत्मा भय से ज़ोर-ज़ोर से सहायता माँगते हुए घुटनों के बल बैठकर अधिपति यमराज से पूछने लगी, “मेरी दुकान तो केवल आठ वर्ष चली। मुझे नरक में 10000 वर्ष का दंड कैसे मिल सकता है? और सभी दुकानों के बंद होने की प्रतीक्षा क्यों? दूसरी दुकानों से मेरा क्या संबंध है? मैं उनका हिस्सेदार भी नहीं हूँ।”

अधिपति यमराज ने क्रोध में आगे कहा, “मनुष्यलोक की जिन दुकानों ने तुम्हारे विज्ञापन और प्रचार से प्रेरित होकर काम शुरू किया, परलोक के कर्मफल के इस खाते में उनका पचास प्रतिशत कर्मबल तुम वहन करोगे और पचास प्रतिशत दुकान का मालिक। मालिक दूसरी शाखा खोले तो तुम तीस प्रतिशत और वह सत्तर प्रतिशत वहन करेगा। तुम्हारे विज्ञापन का प्रभाव न होता तो हत्या-कर्म वाली ये दुकानें न खुलतीं। जो दुकानें तुम्हारे विज्ञापन से आकर्षित होकर नहीं खुलीं, परलोक उनका हिसाब मनमाने ढंग से तुम्हारे नाम नहीं लिखेगा।”

“परलोक के महत्त्वपूर्ण कर्मचारियों का आधार शील पालन है। शीलधारी के शरीर में प्रकाश होता है; शील-सद्गुण जितना शुद्ध, पद उतना ऊँचा। मूलतः अब तुम मनुष्यलोक में अत्यंत धनी और प्रतिष्ठित, स्वस्थ तथा फलते-फूलते परिवार वाले व्यक्ति होने चाहिए थे। किसी पिछले जन्म में तुम बड़े परोपकारी थे; दान से बड़ा पुण्यफल संचित किया और इस जीवन में उसके शुभ फल के पकने का अवसर आया। इसलिए इस जन्म में किसी भी उद्योग में लगते, वह समृद्ध होता; लोगों से अच्छे संबंध भी जुटते और संपत्ति अभी की दुगुनी होती। लेकिन जन्म लेने के बाद लगातार मछली पकड़ते रहे। पढ़ाई पूरी करके भी समुद्री खाद्य पदार्थों का थोक कारोबार करने लगे। उससे कमाया सारा पैसा पुण्यफल की हानि करके आया था।”

“समुद्री खाद्य पदार्थों के थोक कारोबार ने इस जीवन का आधा पुण्यफल शीघ्र नष्ट कर दिया। परलोक ने कई बार स्वप्न-संकेत दिए: तुमने सपनों में देखा कि समुद्री जीव तुम्हें खा रहे हैं और तुम्हारी जान लेने के लिए तुम्हारा पीछा कर रहे हैं। वे सपने चेतावनी थे कि अब रुक जाओ, उचित उद्योग अपनाओ और जीवहत्या के

अकुशल कर्मों में पुण्यफल न गँवाओ। लेकिन तुममें कोई जागरूकता, आत्मनिरीक्षण या पश्चात्ताप नहीं उठा। अहंकार और लोभ का विष बढ़ाते रहे, भलाई और सद्गुण भी नहीं जोड़े। उलटे जीवहत्या वाली मछली पकड़ने की दुकानों का प्रचार और विस्तार करते रहे तथा अप्रत्यक्ष रूप से मनुष्यलोक के मछली पकड़ने वाले रेस्तराँ उद्योग को बढ़ाया। परलोक के कर्मफल का यह ऋण तुम्हें नरक में धीरे-धीरे दुख सहकर चुकाना है।"

"मनुष्यलोक में कोई उचित व्यवसाय करते और बड़ा अपराध न करते, तो विशेष भलाई, मार्ग-साधना या पुण्यसंचय न करने पर भी अपने पुण्यफल से अभी सुखी जीवन जी रहे होते। इस तरह नरक में असीम, अनंत दुख भोगने न गिरते।"

परलोक के अधिपति यमराज: "एकाकी आत्माओं के यक्ष!"

एकाकी आत्माओं के यक्ष: "उपस्थित!"

परलोक के अधिपति यमराज: "इसे तुरंत अकेली आत्मा द्वारा तलवारों के समुद्र में अकेले काँटा डालने के नरक में दंड भोगने ले जाओ, ताकि कर्म-ऋण चुकाए!"

अपराधी आत्मा: "हूँ—हूँ—हूँ... अब सचमुच पछताता हूँ कि पहले मेरा लोभ कितना अधिक था। संपत्ति लगातार बढ़ाना चाहता था, लेकिन तरीका गलत था। महोदया, मैंने जो कहा है, उसे पूरा अवश्य लिखिए। आशा है मेरे मित्र पढ़कर तुरंत सुधार करेंगे और मछली पकड़ना तथा उन दुकानों को चलाना छोड़ देंगे।"

"महोदया, इसे मेरी विनती समझिए! अभी कही बातें लिख दीजिए। मेरे मित्र पढ़ेंगे तो अवश्य जान जाएँगे कि मैं नरक में दुख भोग रहा हूँ। तब वे मेरे पारिवारिक मामलों और कुछ विचारों को जानते थे, इसलिए आपके लिखे को सच मानेंगे और पढ़ने के बाद अवश्य बदलेंगे। यदि वे शीघ्र सुधार करके मछली पकड़ने और जीवहत्या के अकुशल कर्म छोड़ दें, तो मेरा नरक में दुख भोगने का समय भी कम हो सकता है! हूँ—हूँ—हूँ... कोई नहीं चाहता कि भविष्य में नरक की असीम पीड़ा भोगे। हूँ

—हूँ—हूँ... मैं सचमुच यहाँ से निकलना चाहता हूँ। दस हज़ार वर्ष कितने लंबे होते हैं हूँ—हूँ—हूँ..."

आ यू: "आपने जिस शहर का उल्लेख किया, मैं उसे जानती हूँ। वहाँ जीवहत्या के कर्म बहुत भारी हैं। तो आप इतना भारी काला कर्मबल ढो रहे थे। 'परलोक के अटल विधान' अच्छी तरह लिखना मेरा कार्य है; आपने अभी जो कहा, उसे पूरा और अखंड अवश्य लिखूँगी। आपको बुद्ध-नाम स्मरण करना चाहिए। बुद्धबल करुणा से आपको अधिष्ठान देगा। मैं भी पुस्तक लिखने का पुण्य आपको समर्पित करूँगी, ताकि आप शीघ्र दुख छोड़कर सुख पाएँ।"

अपराधी आत्मा: "हूँ—हूँ—हूँ... अभी जैसे हम बात कर रहे हैं, शरीर में दर्द तो है, फिर भी उसे सहकर बुद्ध-नाम स्मरण कर सकता हूँ। लेकिन थोड़ी देर में यातना फिर शुरू होगी; पीड़ा बहुत बढ़ेगी और उसमें कोई विराम नहीं होगा, चक्कर तथा चेतना का भ्रम रहेगा। तब नाम बिल्कुल नहीं निकलता। हूँ—हूँ—हूँ... कामना है कि संसार का कोई व्यक्ति कभी मछली न पकड़े, नरक में दुख भोगने न गिरे। किसी की दशा मेरी जैसी न हो—मरने के बाद भी अंत न दिखाई देने वाला नरक-दंड! हूँ—हूँ—हूँ..."

न्यायाधिकारी: "अच्छा! समय सीमित है। आज तुमने बहुत सहयोग करके आ यू को पुस्तक के लिए जानकारी दी और शुभ कामना भी की कि संसार के सभी लोग मछली पकड़ना छोड़ें और नरक में दुख न भोगें। इसे ध्यान में रखकर मैं तुम्हारा एक शुभ कर्म दर्ज करता हूँ। तुम्हें एक बार क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व का उपदेश सुनने की अनुमति है, ताकि कुछ समय पीड़ा थमे।"

एकाकी आत्माओं के यक्ष: "जी, न्यायाधिकारी! अभी इसे ले जाता हूँ।"

आ यू: "न्यायाधिकारी, यह सज्जन तुरंत क्षितिगर्भ बोधिसत्त्व का उपदेश सुनने क्यों जा सकते हैं? पहले जिन आत्माओं से पूछा था, वे इनसे अधिक पीड़ा और भय में थीं। उनका एक शुभ कर्म आपने क्यों नहीं दर्ज किया?"

न्यायाधिकारी: “आ यू! नरक वास्तव में मनुष्य के शीलभंग से उत्पन्न एक प्रकार के काले कर्म से बनता है। व्यक्ति को उसके अपने कर्म खींचकर नरक लाते हैं। पिछले किसी जन्म में इसने बुद्ध-नाम स्मरण की विधि का अभ्यास किया था, हालांकि परिश्रमपूर्वक नहीं। उस जीवन में इसने तरह-तरह का दान दिया, लेकिन सिद्धांत और विधि के अनुसार पुण्य-समर्पण नहीं किया। फिर भी उन शुभ कर्मों के फल पककर इस जीवन की संपन्नता और प्रतिष्ठा बने। दुर्भाग्य कि उसने पुण्यफल को सँभाला नहीं, समय से पहले नष्ट कर दिया और नरक में गिरा।

आप दोनों के बीच भी एक संबंध है। अभी आपने उससे पूछा तो उसके भीतर मुक्ति की आकांक्षा जागी और भावना से शुभ कामना निकली। उसके अपने शुभ विचार ने उसके लिए एक शुभ कर्म दर्ज कराया; यह मेरा विशेष पक्षपात नहीं है। जो तीनों काल के सभी बुद्धों को जानना चाहता है, उसे धर्मधातु के स्वभाव का अवलोकन करना चाहिए: सब कुछ केवल चित्त से निर्मित है।”

न्यायाधिकारी: “अच्छा, आ यू! आज देर हो गई है; मनुष्यलोक में फिर पूरी रात बीत गई। पहले लौट जाइए। शीघ्र फिर आइए!”

आ यू: “मैं हाथ जोड़कर न्यायाधिकारी को प्रणाम करती हूँ। आपका आभार! मैं यथाशीघ्र फिर आऊँगी!”

19/आ यू नगर-रक्षक देव से भेंट करती है

बुद्ध की शक्ति के अनुग्रह के लिए कृतज्ञ हूँ! श्वेत कमल पर सवार होकर प्रस्थान करती हूँ!

नमो अमिताभ बुद्ध! मैं हाथ जोड़कर न्यायाधिकारी को प्रणाम करती हूँ!

आ यू: "न्यायाधिकारी! आज पूछना चाहती हूँ: मनुष्यलोक में मैंने नगर-रक्षक देव के मंदिर और असंख्य छोटे भूमि-देव मंदिर देखे हैं। इन दोनों में वास्तव में क्या अंतर है? नगर-रक्षक देव हैं तो कृपया मुझे उनसे भेंट कराने ले चलिए।"

न्यायाधिकारी: "नगर-रक्षक देव और भूमि-देव के दायित्व अलग ढंग से एक ही उद्देश्य पूरा करते हैं: मुख्यतः मनुष्यों की सुरक्षा करना, ताकि आना-जाना शांतिपूर्ण रहे। 'भूमि-देव दादाजी' का संबोधन विशेषतः पिछले 1000 वर्षों में मनुष्यों को प्रिय रहा है और अब तक चला आ रहा है। पहले मनुष्यलोक के भूमि-देव के दायित्व संक्षेप में बताए थे। वर्तमान मनुष्यलोक में परिस्थितियाँ बदलने के अनुसार परलोक ने भी मनुष्यों की व्यवस्था और रक्षा के लिए भूमि-देवों की संख्या बढ़ाई है।

परलोक में नगर-रक्षक देव का एक कार्यालय-प्रासाद है। उसका सर्वोच्च पद नगर-रक्षक देव का है। उनके अधीन परलोक के कुछ कर्मचारी भूमि-देव हैं; सभी भूमि-देव उनके आदेश में सहायता करते हैं। नगर-रक्षक देव दक्षिण जम्बूद्वीप के सभी लोगों के पुनर्जन्म से संबंधित विविध विवरण सँभालते हैं। उनके प्रासाद में गुप्त पुण्य का भवन है, जहाँ विशेष रूप से लोगों के बड़े शुभ कर्म दर्ज होते हैं। यह मनुष्यों के पुनर्जन्म संबंधी अभिलेखों का एक अन्य प्रादेशिक मुख्यालय भी है।[119]

आ यू जानना चाहें कि पिछले जन्म में कहाँ रहती थीं, कौन-सी पहचान थी, पुरुष थीं या स्त्री, बड़े शुभ कर्म किए थे या नहीं—तो यदि जन्म-जन्मांतर दक्षिण जम्बूद्वीप में जन्मी रही हैं, नगर-रक्षक देव आपके निरंतर पुनर्जन्मों की विविध पहचानें

और कर्मबल साफ़ बता सकते हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि दक्षिण जम्बूद्वीप में जन्म न लिया हो तो उन्हें कुछ पता नहीं; बस दूसरी भूमि में जन्म लेना उनके अधिकार और अभिलेख-क्षेत्र के बाहर है।

परलोक के नगर-रक्षक देव को उस समय स्वर्ग से भेजा गया था जब परलोक पहली बार बना। थोड़ी देर में आ यू स्वयं उनसे प्रश्न करके मन की शंकाएँ दूर कर सकती हैं। अब उनके प्रासाद का दर्शन कराने ले चलता हूँ; वह परलोक के सबसे पूर्वी भाग में है।"

आ यू: "न्यायाधिकारी का आभार! मार्ग दिखाने का कष्ट कीजिए।"

कितनी प्रसन्नता! थोड़ी देर में कथाओं के प्राचीन नगर-रक्षक देव से मिल सकूँगी। सोचूँ, भेंट पर क्या पूछूँ? लज्जा है कि मैं तो कम साधना वाली साधारण व्यक्ति हूँ, न सद्गुण न आचरण, पूछने योग्य भी विशेष कुछ नहीं। क्यों न परलोक के सर्वोच्च शासक, अधिपति यमराज के बारे में पूछूँ? वे नरक में यमराज क्यों बने? उन्हें देखते ही सभी डरते हैं। थोड़ी देर में यह संदेह दूर हो जाएगा। हम पहुँचने वाले थे! सामने प्राचीन विशाल भवन धीरे-धीरे दिखाई देने लगा और हम धीरे-धीरे समतल भूमि पर उतरे।

भूरे रंग का प्राचीन सुंदर नगर-रक्षक प्रासाद सामने था। द्वारपाल यक्ष नहीं, प्राचीन वेश में शस्त्र धारण किए दो योद्धा थे। न्यायाधिकारी को देखकर दोनों ने मुस्कुराकर आदर से स्वागत किया।

वे झुककर कह रहे थे, "बायाँ द्वार-देव न्यायाधिकारी को प्रणाम करता है! दायाँ द्वार-देव न्यायाधिकारी को प्रणाम करता है!"

बाएँ द्वार-देव ने कहा, "नगर-रक्षक स्वामी ने हमें बताया था कि न्यायाधिकारी अपने साथ परलोक की आदेश-पट्टिका धारण किए मनुष्यलोक की शांगगुआन युहुआ, 'परलोक के अटल विधान' की लेखिका, को उनसे भेंट कराने लाएँगे। लगता

है आपके पास खड़ी यही शांगगुआन युहुआ हैं!" दोनों द्वार-देवों ने एक साथ मेरे शरीर पर लटकी आदेश-पट्टिका देखी।

न्यायाधिकारी बोले, "औपचारिकता छोड़िए! ये ही 'परलोक के अटल विधान' की लेखिका, उपासिका शांगगुआन युहुआ, आ यू हैं। बाएँ द्वार-देव, कृपया नगर-रक्षक स्वामी से भेंट के लिए मार्ग दिखाइए।"

दोनों द्वार-देव अधिक उग्र नहीं दिखते थे; वे प्राचीन लंबे-चौड़े योद्धाओं जैसे हृष्ट-पुष्ट थे। नगर-रक्षक प्रासाद बहुत बड़ा था, फिर एक परलोक-अधिकारी के स्तर का आवास। आसपास भूमि-देव जैसे वेश वाले कई कर्मचारी चल रहे थे। न्यायाधिकारी को देखते ही वे मुस्कुराकर प्रणाम करते थे।

मैंने सामने बाएँ और दाएँ दो बड़े तोरण देखे। बाईं ओर लिखा था, "गुप्त सद्गुण से दीर्घकालिक पुण्यफल"; दाईं ओर, "प्रकट सद्गुण से क्षणिक पुण्यफल।" सामने के भवन के मध्य तीन बड़े चीनी अक्षरों में "पुण्य-सद्गुण प्रासाद" लिखा था।

बाएँ द्वार-देव ने कहा, "न्यायाधिकारी और उपासिका आ यू, कृपया भीतर आएँ। माननीय नगर-रक्षक देव मुख्य सभागृह में कार्य कर रहे हैं।"

नगर-रक्षक देव करुणामय प्राचीन वृद्ध जैसे थे और भारी प्राचीन वस्त्र पहने थे। हमें देखकर उनके चेहरे पर मुस्कान आई।

"साधारण स्त्री शांगगुआन युहुआ नगर-रक्षक देव को प्रणाम करती है! आज भेंट करके पूछना चाहती हूँ: परलोक के सर्वोच्च सेनापति, अधिपति यमराज, किन कारण-प्रत्ययों से परलोक के सर्वोच्च पद पर पहुँचे?

बचपन से मैं जानती थी कि न्यायपूर्ण ढंग से काम करने वाले एक यमराज हैं। इस जीवन में उनका नाम सबसे पहले दादी से सुना था। याद आता है कि बचपन में अक्सर दादी को बहुओं के हाथों दबते, मार और डाँट सहते देखती थी। वे हर बार सहकर बात समाप्त कर देतीं और पिता या चाचाओं से कभी शिकायत नहीं करतीं। उन्हें दृढ़ विश्वास था कि परलोक में एक उग्र यमराज हैं। वे मुझे अक्सर सिखाती थीं

कि लोगों से व्यवहार में सहनशीलता आधार हो। उनकी एक बात बार-बार मन में आती है: 'पगली लड़की, याद रखना, नुकसान होने या झूठे आरोप और गलतफ़हमी की चिंता मत करो। हम जो करते हैं, स्वर्ग देखता है। सभी को मरना है; परलोक के यमराज स्वाभाविक रूप से सबका निष्पक्ष निर्णय करेंगे। हमारा आचरण किसी को धोखा न दे तो नुकसान या अन्यायपूर्ण आरोप की चिंता क्यों? परिवार के साथ रहने में किसी को तो तरह-तरह का दबाव सहकर शांत करना पड़ता है। तुम्हारी चाचियों के कर्म और शब्द हद से आगे हैं, लेकिन मैं बड़ी हूँ; अकेले सहकर परिवार का मेल बचा सकूँ, इतना पर्याप्त है। पर पगली, तुम उनकी मारने-डाँटने की बुरी आदत कभी न सीखना, नहीं तो बड़ी होकर ससुराल जाओगी तो लोग नापसंद करेंगे और तिरस्कार करेंगे। स्त्री को सहना आना चाहिए। हम कभी किसी को चोट न पहुँचाएँ। दूसरे हमें धोखा दें तो दें, हम किसी को धोखा न दें। दूसरों की इन छोटी बातों का हिसाब न रखो, मन में न बसाओ, भूल जाओ। स्वर्ग और यमराज जानेंगे।'

मैं बचपन से दादी से सुनती रही हूँ कि यमराज कितने न्यायपूर्ण हैं और सब जानते हैं। मैं पूछना चाहती हूँ: परलोक के सर्वोच्च शासक, अधिपति यमराज, नरक में यमराज क्यों बने?"

नगर-रक्षक देव: "आ यू का परलोक में साक्षात्कार के लिए स्वागत है। हमारे परलोक के सभी स्तर 'परलोक के अटल विधान' के प्रकाशन का पूरा समर्थन करते हैं। कोई बात या वस्तु कारण-प्रत्यय और कर्मफल से बाहर नहीं है। किसी पिछले जन्म में आप और आपकी दादी माँ-बेटी थीं। उस जन्म में दादी ने आपके बुद्ध-वंदन का उपहास किया था। अच्छा यह था कि केवल उपहास किया, कोई दूसरी बाधा नहीं डाली। आपके बुद्ध-वंदन का उपहास करने का कर्मबल पकने से इस जन्म में उनकी पीठ झुक गई और उन्हें घरवालों की प्रताड़ना, मार तथा डाँट सहनी पड़ी। अच्छी बात यह रही कि इस जन्म के पारिवारिक जीवन के प्रतिकूल संबंधों और दबावों के सामने उन्होंने द्वेष उठाकर काले कर्म नहीं बढ़ाए। प्रतिकूलता को स्वीकार

करने से पुराने कर्म परिस्थितियों के साथ मिटते गए और आगे देवलोक में ऊपर जन्म लेने का पुण्यफल भी संचित हुआ।[120]

हर चेतन प्राणी स्वयं अपना भविष्य का जीवन बना रहा है। कोई भी तीन प्रकार के कर्मों से बाहर नहीं: शुभ कर्म, अशुभ कर्म और अव्याकृत कर्म। जैसे तीन व्यक्ति एक ही प्रकार के काले कपड़े साथ खरीदें। पहला गरीब पड़ोसी को देने के लिए खरीदे: काला कपड़ा मैल कम दिखाता है, बार-बार धोना नहीं पड़ता, सुविधाजनक है। वह शुभ कर्म कर रहा है और आगे शुभ फल पाएगा। दूसरा सोचे कि काले कपड़े रात में चोरी के लिए सुविधाजनक होंगे; वह अशुभ कर्म कर रहा है और आगे अशुभ फल पाएगा। तीसरे को कोई काम नहीं, खरीदे या न खरीदे एक-सा है; दुकानदार ने कहा तो खरीद लिया। वह अव्याकृत कर्म कर रहा है और आगे उसी का फल पाएगा। शुभ कर्म भारी हों तो मनुष्य या देव का फल मिलता है; अशुभ कर्म भारी हों तो नरक, भूखे प्रेतों की योनि या पशुयोनि में पतन होता है; अव्याकृत कर्म भारी हों तो अधिकतर मनुष्य या प्रेतयोनि मिलती है—तीन लोकों से बाहर नहीं निकला जाता। तीन लोकों से निकलकर जन्म-मरण से मुक्त और सदा की महान मुक्ति प्राप्त करनी हो तो शील और बुद्ध-नाम स्मरण, गुप्त सद्गुण के विविध शुभ अभ्यास, महान बोधिचित्त और शुभ प्रण अनिवार्य हैं: ऊपर अनुत्तर बुद्धमार्ग की खोज, नीचे सभी पीड़ित प्राणियों का उद्धार। केवल शुद्ध शुभ प्रण हों, कोई स्वार्थ या मिश्रित विचार नहीं। शुभ प्रण में स्वार्थ या मिश्रित विचार का थोड़ा-सा अंश भी हो, तो आगे उसका फल स्वयं भोगना पड़ेगा।

अधिपति यमराज परलोक के सर्वोच्च शासक क्यों बने? किसी पिछले मानव-जन्म में वे अत्यंत धर्मनिष्ठ महान सेनापति थे और विशाल सेनाओं का नेतृत्व करते थे। एक बड़े युद्ध में शत्रु के कपटी और धूर्त षड्यंत्र से वे हार गए। उस समय अत्यंत दुखी होकर उन्होंने आकाश की ओर शपथ ली: 'आज विवश होकर भारी पराजय मिली है। भविष्य में अवसर मिलेगा तो प्रतिशोध अवश्य लूँगा। सभी कानून-तोड़ने

वाले, कपटी और धूर्त अपराधियों को कठोर दंड दूँगा; उन्हें सच्चे मन से सुधार कर फिर अच्छा मनुष्य बनाऊँगा।'

उनके साथ के योद्धाओं ने भी सहमति में यही प्रण किया कि सभी कानून-तोड़ने वाले, कपटी और धूर्त अपराधियों को कठोर दंड देंगे। अत्यधिक दुख में यह शपथ लेते समय सेनापति स्वयं पर खीझ रहे थे कि पर्याप्त सावधानी न बरतने से उनके सैनिकों की भारी पराजय हुई। स्वयं पर रोष भी द्वेष-क्लेश का एक रूप है। यह शुभ प्रण के भीतर प्रतिशोध के अशुभ प्रण का मिश्रण था। इसी शपथ के कारण वे परलोक के अधिपति यमराज बने।

अब परलोक के अधिपति यमराज को प्रतिदिन सुबह, दोपहर और शाम, हर बार पंद्रह मिनट, गले में गर्म रेत भरने की पीड़ा सहनी पड़ती है। रोज़ दंड का समय आते ही उन्हें दंड देने वाले दो यक्ष मिलकर पकड़ लेते हैं। एक सिर पकड़ता है, दूसरा गर्म लोहे की रेत निकालकर लगातार उनके गले में भरता है। इससे वे अचेत होकर गिर जाते हैं, फिर कर्म-वायु से जगाए जाते हैं। होश आते ही दोनों यक्ष फिर पकड़कर गर्म लोहे की रेत भरते हैं। इस प्रकार पंद्रह मिनट दंड का चक्र चलता है। पंद्रह मिनट बीतने पर अधिपति यमराज अपने-आप सचेत हो जाते हैं और सब सामान्य हो जाता है।

अधिपति यमराज का गर्म लोहे की रेत गले में भरने का दुख पिछले समय में प्रतिशोध का प्रण करने का फल है। मनुष्यलोक में प्रतिदिन लोग छोटे-बड़े अशुभ प्रण करते हैं। कोई अशुभ प्रण करता है तो उसकी देह-आभा तुरंत मंद हो जाती है और उस प्रण का नकारात्मक चुंबकीय क्षेत्र उसे जन्म-जन्मांतर कसकर बाँधे रखता है।[121]

जन्मजात देह-आभा को क्षति पहुँच जाए तो जीवन में बाधाएँ बढ़ती हैं और कठिनाई बहुत अधिक होती है, जब तक समय रहते सच्चे पश्चात्ताप से शुद्धि न की जाए और फिर कभी ऐसा न किया जाए। अशुभ प्रण का फल पकने से पहले यदि

व्यक्ति के शुभ कर्म अशुभ कर्मों से हल्के हों और उसे सदा ऐसा कल्याणमित्र न मिले जो पश्चात्ताप का मार्ग दिखाए, तो उसका जीवन उस प्रण के नकारात्मक चुंबकीय क्षेत्र में बँधा रहेगा। अशुभ फल पकने पर असीम पीड़ा होगी।

आशा है आ यू यह लेख शीघ्र लिखकर सबको बताएँगी कि किसी भी समय अशुभ प्रण न करें। पहले किए हों तो शीघ्र पश्चात्ताप करें। शुभ प्रण असीम किए जा सकते हैं; उन्हें कर्म में उतारें और पूरा करने का भरसक प्रयास करें।

अभी मनुष्यलोक में शीलभंग करने वाले बहुत हैं और शीलधारी बहुत कम। समग्र विशाल चुंबकीय क्षेत्र अच्छा नहीं है; लोगों के विचार आसानी से गलत दिशा में झुकने का यह भी एक बड़ा कारण है।

किसी चेतन प्राणी के काले कर्म इतने भारी हों कि अभी शील पालन के विभिन्न कारण-प्रत्यय पूरे न हों, तो चिंता या निराशा न करें। कर्म भारी न हों तो सहा लोक में जन्म ही न हो। पहले पुराने काले कर्मों का पश्चात्ताप करने का संकल्प करें, फिर प्रण करें कि जन्म-जन्मांतर शील पालन का दृढ़ मन मिले। साथ में बुद्ध-नाम स्मरण, शाकाहार और विविध शुभ कर्म करें। इससे भविष्य के जीवन का स्तर निश्चित रूप से धीरे-धीरे ऊँचा होगा। यही विधि अकुशल कर्मों को वास्तव में पूर्णतः दूर कर सकती है, सदा के लिए दुख से छुड़ा सकती है और भविष्य को क्रमशः प्रकाश की ओर ले जा सकती है।

जिन चेतन प्राणियों को यह लेख देखने का अवसर मिलता है, उन्होंने पहले कुछ पुण्यफल संचित किया है। जो इसे पुनः प्रकाशित करके दूसरों को बताए, परलोक उसके दो शुभ कर्म दर्ज करेगा। जो केवल स्वयं सुधरे, उसका भी एक शुभ कर्म दर्ज होगा।

अच्छा! आज रात मैंने अशुभ प्रणों से संबंधित सिद्धांत स्पष्ट कर दिए। समय देर का है और मनुष्यलोक में शीघ्र भोर होगी। आ यू, जल्दी लौटकर यह लेख लिखिए। आगे आवश्यकता हो तो कभी भी आइए।”

आ यू: “अच्छा! नगर-रक्षक देव को साष्टांग प्रणाम! नगर-रक्षक देव का आभार! न्यायाधिकारी को साष्टांग प्रणाम! न्यायाधिकारी का आभार! मैं अब लौटती हूँ। नमो अमिताभ बुद्ध!”

श्वेत कमल पर सवार होकर घर लौटती हूँ!

यौन दुराचार के लिए परलोक के दंड-विधान

सदा से अकुशल पापों में यौन दुराचार सबसे बड़ा है। मनुष्यलोक में इसका अपराध अत्यंत गंभीर है, परलोक का दंड और कठोर। दंड बहुत प्रकार के हैं; यहाँ मुख्य बिंदु संक्षेप में दिए हैं। इस अध्याय को देखने वाले सभी को संयम और सावधानी रखनी चाहिए।[122]

निकट पारिवारिक संबंधों में यौन दुराचार करने वाला सदा नरक में बंद रहता है। किसी की जान ली हो तो बिजली गिरने से मृत्यु होती है। शव के साथ दुराचार करने वाले का अपराध भी यही है। मनुष्यलोक में दंड भोग चुके सभी को बिजली गिरने की विपत्ति से छूट है। निष्ठा और माता-पिता के प्रति कर्तव्य के कर्म हों तो चार भाग घटाए जा सकते हैं। पंद्रह सौ बड़े शुभ कर्म भी चार भाग घटाते हैं।[123]

विधवा से बलात्कार करने वाले का इसी जीवन में वंश समाप्त होता है। नरक में पाँच सौ कल्प दुख भोगता है, फिर कीट-चींटी बनकर पाँच सौ कल्प, फिर पशु-पक्षी बनकर पाँच सौ कल्प। फिर मनुष्य-जन्म में वेश्या का शरीर मिलता है। मनुष्यलोक में दंड मिला हो तो सौ कल्प की छूट। इससे किसी की जान गई हो तो अपराध पाँच स्तर बढ़ता है। निष्ठा और माता-पिता के प्रति कर्तव्य के कर्म आधा दंड घटा सकते हैं; पाँच सौ बड़े शुभ कर्म भी आधा घटाते हैं।[124]

विधवा को छल-प्रलोभन देकर यौन संबंध बनाने वाला दो जन्मों तक वंशहीन रहता है। ऊपर के प्रत्येक चरण में चार सौ कल्प—नरक में दुख, फिर कीट-चींटी और पशु-पक्षी के रूप में, प्रत्येक में चार सौ कल्प। फिर मनुष्य-जन्म में विकलांग शरीर मिलता है। मनुष्यलोक में दंड मिला हो तो अस्सी कल्प की छूट। इससे किसी की जान गई हो तो अपराध चार स्तर बढ़ता है। निष्ठा और माता-पिता के प्रति कर्तव्य के कर्म सात भाग घटा सकते हैं; पाँच सौ मध्यम शुभ कर्म भी सात भाग घटाते हैं।[125][126]

विधवा को रिझाकर यौन संबंध बनाने वाला तीन जन्मों तक वंशहीन रहता है। ऊपर के प्रत्येक चरण में तीन सौ कल्प—नरक में दुख, फिर कीट-चींटी और पशु-पक्षी के रूप में, प्रत्येक में तीन सौ कल्प। फिर मनुष्य-जन्म में गरीबी और हीन दशा मिलती है। मनुष्यलोक में दंड मिला हो तो साठ कल्प की छूट। इससे किसी की जान गई हो तो अपराध तीन स्तर बढ़ता है। निष्ठा और माता-पिता के प्रति कर्तव्य के कर्म नौ भाग घटा सकते हैं; पाँच सौ छोटे शुभ कर्म भी नौ भाग घटाते हैं।[127]

कुँवारी से बलात्कार करने वाले के पुत्र-पुत्रियाँ दुराचारी होते हैं। ऊपर के प्रत्येक चरण में चार सौ कल्प—नरक में दुख, फिर कीट-चींटी और पशु-पक्षी के रूप में, प्रत्येक में चार सौ कल्प। फिर मनुष्य-जन्म में दास-सेवक बनता है। मनुष्यलोक में दंड मिला हो तो सौ कल्प की छूट। इससे किसी की जान गई हो तो अपराध चार स्तर बढ़ता है। निष्ठा और माता-पिता के प्रति कर्तव्य के कर्म आधा दंड घटा सकते हैं; चार सौ बड़े शुभ कर्म भी आधा घटाते हैं।[128]

कुँवारी को छल-प्रलोभन देकर यौन संबंध बनाने वाला दो जन्मों तक वंशहीन रहता है। ऊपर के प्रत्येक चरण में ढाई सौ कल्प—नरक में दुख, फिर कीट-चींटी और पशु-पक्षी के रूप में, प्रत्येक में ढाई सौ कल्प। फिर मनुष्य-जन्म में रोगी शरीर मिलता है। मनुष्यलोक में दंड मिला हो तो सत्तर कल्प की छूट। इससे किसी की जान गई हो तो अपराध तीन स्तर बढ़ता है। निष्ठा और माता-पिता के प्रति कर्तव्य के कर्म सात भाग घटा सकते हैं; चार सौ मध्यम शुभ कर्म भी सात भाग घटाते हैं।[129]

कुँवारी को रिझाकर यौन संबंध बनाने वाले का ऋण पत्नी और बेटियों से चुकता होता है। ऊपर के प्रत्येक चरण में सौ कल्प—नरक में दुख, फिर कीट-चींटी और पशु-पक्षी के रूप में, प्रत्येक में सौ कल्प। फिर मनुष्य-जन्म में मध्यम गरीबी मिलती है। मनुष्यलोक में दंड मिला हो तो चालीस कल्प की छूट। इससे किसी की जान गई

हो तो अपराध दो स्तर बढ़ता है। निष्ठा और माता-पिता के प्रति कर्तव्य के कर्म नौ भाग घटा सकते हैं; चार सौ छोटे शुभ कर्म भी नौ भाग घटाते हैं।[130]

विवाहित स्त्री से बलात्कार करने वाले का ऋण पत्नी और बेटियों से चुकता होता है। ऊपर के प्रत्येक चरण में साढ़े तीन सौ कल्प—नरक में दुख, फिर कीट-चींटी और पशु-पक्षी के रूप में, प्रत्येक में साढ़े तीन सौ कल्प। फिर मनुष्य रूप में जन्म लेने पर स्थानीय दफ़्तर का अधीनस्थ कारिंदा बनता है। मनुष्यलोक में दंड मिला हो तो सौ कल्प की छूट। इससे किसी की जान गई हो तो अपराध तीन स्तर बढ़ता है। निष्ठा और माता-पिता के प्रति कर्तव्य के कर्म आधा दंड घटा सकते हैं; तीन सौ बड़े शुभ कर्म भी आधा घटाते हैं।[131]

विवाहित स्त्री को छल-प्रलोभन देकर यौन संबंध बनाने वाले की आयु दो जी घटती है—एक जी बारह वर्ष है। ऊपर के प्रत्येक चरण में सौ वर्ष, अर्थात नरक में दुख, फिर कीट-चींटी और पशु-पक्षी के रूप में, प्रत्येक में सौ कल्प। फिर मनुष्य-जन्म में अकेलापन मिलता है। मनुष्यलोक में दंड मिला हो तो तीस कल्प की छूट। इससे किसी की जान गई हो तो अपराध दो स्तर बढ़ता है। निष्ठा और माता-पिता के प्रति कर्तव्य के कर्म सात भाग घटा सकते हैं; तीन सौ मध्यम शुभ कर्म भी सात भाग घटाते हैं।[132][133]

विवाहित स्त्री को रिझाकर यौन संबंध बनाने वाले की आयु एक जी घटती है। ऊपर के प्रत्येक चरण में सत्तर कल्प—नरक में दुख, फिर कीट-चींटी और पशु-पक्षी के रूप में, प्रत्येक में सत्तर कल्प। फिर मनुष्य-जन्म में मध्यम गरीबी मिलती है। मनुष्यलोक में दंड मिला हो तो बीस कल्प की छूट। इससे किसी की जान गई हो तो अपराध एक स्तर बढ़ता है। निष्ठा और माता-पिता के प्रति कर्तव्य के कर्म नौ भाग घटा सकते हैं; तीन सौ छोटे शुभ कर्म भी नौ भाग घटाते हैं।[134]

ऊपर की तीन श्रेणियाँ—विधवा, कुँवारी और विवाहित स्त्री—भिन्न कुलनाम वाले लोगों के लिए हैं। रिश्तेदार हों तो दंड दुगुना है। पारंपरिक शोक-वस्त्र की श्रेणी

में आने वाले निकट संबंधियों में यह अपराध गंभीरता में निकट पारिवारिक यौन दुराचार से ठीक नीचे है; शोकावधि में हो तो अपराध तीन स्तर बढ़ता है। नौकरानी या दासी, किसी के साथ भी यौन दुराचार का निर्णय ऊपर के अनुसार होगा। कृत्य पूरा न हुआ हो तो आयु आधा जी घटती है। इससे किसी की जान गई हो तो पूर्ण कृत्य के समान माना जाएगा।

एक वेश्या के साथ संबंध बनाने पर आयु आधा वर्ष घटती है; गंभीर रोग लगे तो एक वर्ष। सुधार और पश्चात्ताप हो तो आयु-ह्रास माफ़ है। उस संबंध से एक पुत्र या पुत्री हो तो संबंध बनाने वाला व्यक्ति एक जन्म के लिए पशु बनता है; वह सुधार और पश्चात्ताप करे तो पशु-जन्म से छूट है।[135]

इस अनुच्छेद में पुरुषों से संबंधित वर्णित आचरण की श्रेणी पर स्त्रियों से संबंधित वही दंड-श्रेणियाँ लागू हैं; मूल के कोष्ठकीय कथन में ऐसे लोगों को ‘समलैंगिक व्यक्ति’ कहा गया है। संबंधित पुरुष की आयु सोलह वर्ष या उससे अधिक हो तो कुँवारी वाली श्रेणी के नियम, और सोलह वर्ष या उससे कम हो तो विवाहित स्त्री वाली श्रेणी के नियम लागू हैं। छोटे बालक को अपने साथ रखने वाली अंतिम स्थिति पर मूल में वेश्यागमन नाम से दी गई श्रेणी के नियम लागू हैं।[136]

अश्लील पुस्तक बनाने वाले की आयु दो जी घटती है। पुस्तक पढ़ने से यौन दुराचार की हानि हो तो अपराध लेखक पर पड़ता है। पुस्तक नष्ट न हो तो उसे कभी ऊर्ध्वगति नहीं मिलती। अश्लील नाटक और कामुक दृश्य फ़िल्माने वाले का अपराध भी यही है।

एक यौन दुराचार की बात प्रचारित करने पर आयु आधा जी घटती है। इससे किसी की मृत्यु हो तो एक जी। स्त्रियों के अंतःपुर की निजी बातों की चर्चा करने वाले का अपराध भी यही है। सुधार और पश्चात्ताप करे तो सभी अपराधों का स्तर घटता है।

न्यायाधिकारी लू का यौन दुराचार-विधान का पूरक अध्याय— न्यायाधिकारी का नाम झिदाओ था; वे सोंग काल के व्यक्ति थे

यौन दुराचार के मामले में औषधि से गर्भपात करके एक जीवन नष्ट हो, तो दंड दुगुना है।[137]

इस अनुच्छेद में वर्णित कुँवारी से संबंधित मामलों में, आयु बारह वर्ष या उससे अधिक होने पर, मूल में छल-प्रलोभन अथवा रिझाने की श्रेणी में रखे मामले भी बलात्कार की दंड-श्रेणी में माने जाएँगे। यदि इस कारण किसी की मृत्यु हो तो दंड दुगुना होगा।[138]

जिसका पहले से पुत्र हो और फिर भी उपपत्नी रखे, उसकी आयु प्रति स्त्री दो वर्ष घटती है। पद-प्रतिष्ठा वाले की पद-प्रतिष्ठा के आठ भाग घटेंगे, आयु नहीं।[139][140]

विधवा का पुनर्विवाह का इरादा न हो और कोई छल से उसे लुभाए, तो आयु तीन वर्ष घटती है। पुनर्विवाह की इच्छा हो तो आयु-ह्रास नहीं।

विधवा से विवाह करते समय उसका एक पुत्र या पुत्री पिछले पति के घर छोड़ दिया जाए, तो आयु दो वर्ष घटती है। यदि इस कारण उस संतान की मृत्यु हो जाए तो आयु एक जी घटती है।

मित्रों की भेंट में अश्लील बातें तीन बार करने पर आयु एक महीना घटती है। उनसे कोई यौन दुराचार करे तो आयु तीन वर्ष घटती है। पद-प्रतिष्ठा वाले को उसके रुकने या देर से मिलने का दंड है।[141]

रास्ते में सुंदर व्यक्ति को देखकर आने और जाने तक घूरना तीन बार हो, तो आयु आधा महीना घटती है। सेवा-भाव का ढोंग करके भीतर दुर्भावना रखे तो एक बार में आयु एक सुआन घटती है। मूल टिप्पणी: एक सुआन तीन महीने है।

अश्लील नाटक सुनना पसंद करने पर हर बार आयु तीन महीने घटती है। पद-प्रतिष्ठा वाले का पद रुकता या विलंबित होता है। अश्लील नाटक प्रस्तुत करने की

माँग करे तो हर बार आयु एक सुआन घटती है। किसी को हानि हो तो एक जन्म पशु होता है।[142]

अश्लील पुस्तकें देखना पसंद करने पर तीन बार में आयु आधा महीना घटती है। उससे रोग उत्पन्न हो तो आयु तीन वर्ष घटती है।

दूसरे को यौन दुराचार के लिए उकसाने वाले पर उसके अपराध से दो स्तर कम दंड है। पिता या बड़े भाई द्वारा पुत्रों और छोटे भाइयों को, तथा स्वामी द्वारा नौकरों को ऐसा करने की छूट देने पर भी यही नियम है।

न्यायाधिकारी लू कहते हैं: इन परलोक-दंडों के अनुसार किसी भी यौन अपराध में थोड़ी भी छूट कठिन है, पर निकट पारिवारिक यौन दुराचार सबसे भारी है। संबंध या दर्जे में कनिष्ठ द्वारा वरिष्ठ पर अत्याचार हो, या उम्र में बड़ा व्यक्ति छोटे को दबाए, मृत्यु के बाद सभी अवीचि नरक में जाते हैं। आज सामाजिक रीति अत्यंत बिगड़ गई है। ऐसे अपराध अक्सर अधिकारी-परिवारों और पढ़े-लिखे लोगों में होते हैं। लंबे समय तक एक-दूसरे से प्रभावित होकर इसे सामान्य आदत मान लेते हैं, भ्रम में लज्जा नहीं जानते और नहीं जानते कि अंत क्या होगा। विवश होकर देव-अमरों ने जेड सम्राट को निवेदन किया कि परलोक के दंड मनुष्यलोक में खुले रूप से बताए जाएँ, छिपाए न जाएँ। यह देखकर पश्चात्ताप और सुधार करने वालों का अपराध घटेगा। निष्ठा और माता-पिता के प्रति कर्तव्य निभाने वालों का अपराध घटेगा। पुण्य-सद्गुण संचित करने वालों का अपराध घटेगा। लेख देखकर भी न सुधरे और उलटे निंदा करे, तो अशुभ फल या बिजली गिरने का प्रकोप निश्चित है। जो विश्वासपूर्वक पालन करके व्यापक प्रचार करे: सौ लोगों तक पहुँचाए तो आयु एक जी बढ़े; दो सौ तक तो पुत्रहीन को पुत्र मिले; तीन सौ तक तो आयु दो जी बढ़े; चार सौ तक तो वंश समृद्ध हो; पाँच सौ तक तो पद-प्रतिष्ठा निरंतर रहे; एक हज़ार तक तो नाम लाल दैवी अभिलेख में चढ़े; पूरे संसार में फैलाए तो मृत्यु के बाद अमर बने। दस धनाढ्यों को बताना दो सौ लोगों को बताने के बराबर; एक अधिकारी को बताना सौ लोगों

के बराबर है। ये सभी बातें फ़ुयोउ सम्राट द्वारा जेड सम्राट के सामने निवेदित होकर स्वीकृत और लागू हुई हैं।[143]

सादर टिप्पणी: नरक में ‘कल्प भुगतना’ यहाँ प्रत्येक कल्प में एक नरक का दंड एक बार भोगना है। परलोक की यातना मनुष्यलोक जैसी नहीं। एक बार दंड दिए जाने पर उसका शरीर मर चुका होता है; फिर उसे अनिवार्य रूप से मानवीय रूप में लौटाकर पहले की तरह दंड दिया जाता है और मारा जाता है। निर्धारित कल्प पूरे होने पर यह अपराध समाप्त होता है। दूसरे अपराध हों तो उनके अनुसार और नरक-दंड मिलता है। ‘दोंगमिंग जी’ में यौन पापों के अपराधियों का विस्तृत वर्णन देखा गया है: जीवित रहते सुधारकर भलाई अपनाएँ तो मृत्यु के बाद अपराध अपने-आप घटते या मिटते हैं; मृत्यु तक न सुधरें तो एक सभागृह से अन्य सभागृहों में भेजे जाते हैं और हृदय-दंड नरक, ताँबे के मानव का नरक, वृक्क-काटने का नरक, चूहों का कुतरना, तेल-कड़ाही, रथ से चीरने जैसे बड़े-छोटे नरकों के दंड क्रमशः भोगते हैं। निकट पारिवारिक दुराचार हो तो उसके विशेष नरकों में भी जाते हैं, या सदा नरक में बंद रहकर दंड भोगते हैं। यौन पापों में पारिवारिक दुराचार विशेष रूप से भारी है। ऊपर के प्रत्येक नरक में निश्चित कल्प पूरे होने के बाद ही अगले जन्म-कल्प में जा सकते हैं। यहाँ जन्म-कल्प का अर्थ एक बार जन्म लेना है। ‘जिनके जियाओ’ और ‘लुनके जियाओ’ में भी भलाई के पुरस्कार और बुराई के दंड के नियम विस्तार से हैं। इन परलोक-विधानों में दंड में कमी, दंड-मुक्ति, स्तर-वृद्धि और प्रतिपूर्ति के अलग-अलग प्रावधान दिखाते हैं कि शुभ-अशुभ का भेद रत्तीभर भी नहीं चूकता। इन दोनों संहिताओं और ‘दोंगमिंग जी’ को साथ देखें तो कर्मफल का विश्वास और प्रमाण अधिक स्पष्ट होते हैं।[144]

सादर टिप्पणी: ‘जिनके जियाओ’ छिंग वंश के श्यानफ़ेंग के छठे वर्ष में हुनान के लिलिंग ज़िले के लेइगू पुल स्थित चेंगजिनलिन में वेनचांग सम्राट के अवतरण से प्राप्त हुआ। यह संहिता मूलतः सर्वोच्च सम्राट ने निर्धारित करके जेड-पेटिका में गुप्त

रखी थी। वेन सम्राट ने दिव्य आदेश की प्रार्थना करके इसे मनुष्यलोक में जारी कराया, ताकि स्वर्गीय विधान स्पष्ट हों। इसे यांग-विधान भी कहा जाता है: यह लोगों के बुरे कर्मों को दंड देता और विपत्तियों द्वारा उनके मन को अनुशासित करता है। छिंग ग्वांग्श्यू के तीसरे वर्ष में वेन और वू दोनों सम्राटों ने जेड सम्राट की अनुमति प्राप्त करके 'लुनके' संहिता जारी की, परलोक-विधान प्रकट किए, लोगों के अपराध जाँचे और नरकों से उनकी आत्माओं को दंडित किया। विभिन्न अमरों ने भी इसका कथन और संकलन किया। 'जिनके' में जो बातें पूर्ण न थीं, यह पुस्तक उनका आशय आगे पहुँचाती है; दैवी लेखन द्वारा मसौदा तैयार करके सब मनुष्यों को दिखाया गया।[145]

गुआन पवित्र सम्राट के यौन दुराचार से विरत रहने के सूत्र की व्याख्या[146]

स्वलिखित भूमिका

समाज की धारा दिन-प्रतिदिन विकृत होती जा रही है और विशेष रूप से कामुकता का चलन बढ़ा है। खुले सामाजिक मेलजोल के कारण परिवारों के पुरुष अक्सर परस्त्रियों के पीछे फिरते हैं और स्वयं को रसिक मानते हैं; स्त्रियाँ विवाहेतर संबंध बनाकर स्वयं को उच्च समझती हैं। विदेशी चलन से प्रभावित युवक-युवतियों का मन अश्लील पुस्तक-पत्रिकाएँ पढ़कर डगमगा जाता है और प्रेम-मिलन वाली फ़िल्में-नाटक देखकर उनका चित्त बहक जाता है। भावनाएँ रोकना कठिन होता है, मर्यादाभंग की खबरें आती रहती हैं, और मिलन असंभव होने पर बार-बार त्रासदी होती है। कितना दुर्भाग्य! पवित्र मानवीय संबंध पशु-कामना बन गए हैं। बहुत-से दुष्ट स्त्रियों को अपमानित करते और निर्दोषों से बलात्कार करते हैं; उनका अपराध अक्षम्य है। नरक में कामुक प्रेत सबसे अधिक हैं। अपराधी प्रबल आत्मचिंतन करके लौटें क्यों नहीं!

फिर व्यस्त बाज़ारों और सड़कों पर देखें: तरह-तरह के अश्लील व्यवसाय खड़े हैं, कुछ खुले और कुछ गुप्त। सरकार सख्ती से रोकती है, पर व्यवसायी अधिक चालाक हैं; लाभ-लोभ से अंधे होकर कानून तोड़ने का जोखिम लेते हैं। कामुक लोग भी भीड़ लगाकर जाते हैं, लौटना भूलते हैं और पैसा तथा शरीर नष्ट करने की परवाह नहीं करते। दुर्भाग्यशाली रोग-संक्रमण का दुष्प्रभाव पाते हैं, संतानों पर असर पड़ता है और बहुत-से परिवारों में दाम्पत्य कलह तथा टूटन आती है। लगातार समाचार, एक के बाद एक कलंक, सार्वजनिक नैतिकता के विरुद्ध असंख्य मामले; यहाँ तक कि हत्या, या विकृत प्रेम के कारण प्राणहानि भी। इससे कुछ अनुमान होता है कि

कामवासना मनुष्य को बाढ़ और हिंसक पशुओं से भी अधिक हानि पहुँचाती है। पुरानी उक्ति है, 'सभी बुराइयों में यौन दुराचार पहला है; मृत्यु के मार्ग पर मत चलो।' इसे न मानना कैसे उचित हो!

सम्राट कहते हैं।

सम्राट कहते हैं।

यौन दुराचार सभी बुराइयों में प्रथम है।

वेश्यागमन यौन दुराचार है; दूसरे परिवार की स्त्रियों से अवैध संबंध भी। 'सभी बुराइयाँ' विविध बुरे काम हैं। 'प्रथम' का अर्थ सबसे पहला है। संसार में बुरे काम अनेक हों, पर दूसरों की पत्नी-बेटियों से दुराचार और उनका मान-शील नष्ट करना सबसे बड़ा बुरा कर्म है।

माता-पिता के प्रति कर्तव्य सभी सदाचरणों में सबसे पहले है।

माता-पिता की अच्छी सेवा को श्याओ, अर्थात माता-पिता के प्रति कर्तव्य, कहते हैं। यह अनुकूल और आज्ञाकारी सद्गुण है: उनकी सेवा करना, उनका सम्मानपूर्वक अनुसरण करना और हर बात में उनकी प्रसन्नता पाना। 'सभी सदाचरण' विविध शुभ कर्म हैं। 'पहले' अर्थात पहले यही करना चाहिए। संसार में जन्म लेकर पहले माता-पिता के परिश्रम का ऋण चुकाने के लिए माता-पिता के प्रति कर्तव्य निभाएँ; बाकी शुभ कर्म उसके बाद रखे जा सकते हैं। कन्फ्यूशियस के 'श्याओ जिंग' में कहा है कि पाँच दंडों के अंतर्गत तीन हज़ार अपराध हैं, पर माता-पिता के प्रति कर्तव्यहीनता से बड़ा कोई नहीं। इससे दिखता है कि माता-पिता के प्रति कर्तव्य का पुण्य बहुत बड़ा और उसके अभाव का अपराध बहुत बड़ा है। 'लुन्यु' के पहले अध्याय 'श्युए एर' में माता-पिता के प्रति कर्तव्य और भ्रातृसम्मान को मनुष्य का मूल कहा गया है। अमरों और बुद्धों के उपदेश का पहला नियम भी इन्हें दृढ़ करके मानवीय संबंधों का सम्मान करना है। ये प्रमाण हैं कि हजारों ग्रंथों में माता-पिता के प्रति कर्तव्य और भ्रातृसम्मान पहले हैं।

दूसरे से यौन दुराचार करने वाला उसकी तीन पीढ़ियों का वध करता है।

पत्नी या बेटी का किसी से दुराचार का शिकार होना मनुष्यलोक का सबसे बड़ा कलंक कहा गया है। 'तीन पीढ़ियाँ' तीन पीढ़ियों के लोग हैं। अपराधी ऊपर उस स्त्री के पूर्वजों को परलोक में लज्जित करता है; बीच में उसके पिता, बड़े भाइयों और पति को मुँह दिखाने योग्य नहीं छोड़ता; नीचे उसके पुत्र-पुत्रियों की उन्नति के रास्ते बंद करता है। किसी का मान-शील बिगाड़कर उसके पूर्वजों, संतानों और कुल को एक साथ अपमानित करने का यह अपराध अत्यंत दुष्ट है, वास्तव में हत्या से भी गंभीर कहा गया है।[147]

एक बार भेद खुला तो कलंक हर ओर फैलता है।

'भेद खुलना' अर्थात अवैध संबंध की जाँच होकर पता चलना। 'कलंक' खराब प्रतिष्ठा है। 'हर ओर फैलना' यह है कि अख़बार में छपे तो गाँवों और स्थानों में लोग चर्चा करें, ज़िलों और नगरों में भी चर्चा हो।

पिता बेटी नहीं मानता, पति पत्नी नहीं मानता, पुत्र माँ नहीं मानता।

स्त्री यौन दुराचार करे तो पिता, पति और पुत्र पहले ही शर्म और अपमान से मुँह दिखाने योग्य नहीं रहते। उन्हें बात छिपाने की चिंता होती है; फिर कौन सामने आकर बेटी, पत्नी या माँ होने को स्वीकार करेगा?

यहाँ तक कि गर्दन पर तलवार आती है और स्त्री-पुरुष दोनों मरते हैं।

दूसरे की पत्नी या बेटी के साथ दुराचार का पता चलने पर अक्सर हत्या का मामला बनता है। कभी अवैध संबंध वाले स्त्री-पुरुष दोनों इसी कारण प्राण खो देते हैं।

शव खुला पड़ा रहता है, हड्डियाँ दिखती हैं; अपमान कुल-संबंधियों तक पहुँचता है।

हत्या हो और जीवन चला जाए तो सरकारी अधिकारियों को निरीक्षण के लिए बुलाना ही पड़ता है; फिर शव और हड्डियाँ खुली न हों, यह कैसे संभव? लोग पूछते

हैं कि किस कुल का व्यक्ति दुराचार में मारा गया। उसके कुल और संबंधी भी मुँह दिखाने योग्य नहीं रहते।

पूछते हैं, किस घर की स्त्री है, जिसमें कोई शिक्षा नहीं? किस कुल का पुरुष है, जो घोड़े-बैल जैसा हो गया?

'शिक्षा नहीं' अर्थात पारिवारिक शिक्षा नहीं। 'घोड़े-बैल जैसा' अर्थात पशु के समान, मर्यादा, न्याय और लज्जा न जानना। लोग पूछें कि किस घर की स्त्री, किस कुल का पुरुष है, तो पूरा परिवार और कुल शर्म से भरता है।

कभी पेओनी भेंट करके और ऑर्किड चुनकर दोनों की निकटता और गहरी होती है।

कभी पेओनी फूल तोड़ना, कभी ऑर्किड चुनना और प्रेमी को गुप्त रूप से देना —काम इतना छिपाकर करना कि कोई न जाने।

यहाँ तक कि अपने पति को विष दिया जाता है और मृत्युदंड का अपराध ठहरता है।[148]

व्यभिचारिणी अपने अवैध साथी के साथ लंबे समय रहना चाहे तो अवश्य चुपके से विष खरीदकर अपने पति को मार डालती है। अपराध का प्रमाण उजागर होते ही अधिकारी नियम के अनुसार कड़ी कार्रवाई करके मृत्युदंड देते हैं, ताकि व्यभिचार के अपराध को दंडित किया जाए।

अंतिम मृत्युदंड ठहरता है; हुन आत्मा बिखरती और पो मिटते हैं।

हत्या के बदले प्राणदंड मिलता है और यौन अपराध अक्षम्य कहा गया है। न्यायाधीश सुनवाई करके मृत्युदंड तय करता है। निर्णय और घोषणा होते ही सभी की चेतना भय से बिखर जाती है और ऊर्ध्वगति कठिन हो जाती है।

पिता-पुत्र विलाप करते हैं, माँ-बेटी दुख सँभालती हैं; असंख्य लोग हँसते और धिक्कारते हैं। अब पश्चात्ताप से क्या होगा?

माता-पिता दंडस्थल पर आकर अपनी संतान को कठोर दंड से मरते देखते हैं और केवल दुख में रो सकते हैं। हजारों-लाखों लोग हँसते या गालियाँ देते हैं और कहते हैं कि पति की हत्या की साज़िश करने वाले व्यभिचारियों का यही होना चाहिए। पश्चात्ताप हो भी तो देर हो चुकी है।

फिर भी कामुक व्यक्ति निश्चिंत रहकर लज्जा नहीं जानता।

'त्यान' का अर्थ शांत या निश्चिंत, 'छी' का अर्थ लज्जा। आशय है कि कामुक व्यक्ति उलटे अपने को सुरक्षित और ठीक मानता है, शर्म नहीं जानता।

नैतिक शिक्षा का अनुयायी होकर भी मान्य आचरण और सामाजिक रीति बिगाड़ने को तैयार होता है।

पढ़ा-लिखा और सिद्धांत समझने वाला नैतिक शिक्षा का व्यक्ति है। 'स्थायी सद्गुण' हैं करुणा, न्याय, मर्यादा, प्रज्ञा और विश्वसनीयता के पाँच गुण। 'रीति' सामाजिक व्यवहार है। आशय है कि पढ़े-लिखे भी जानते-बूझते कानून तोड़ते हैं, दूसरे घर की स्त्रियों से दुराचार करते हैं और सामाजिक मर्यादा बिगाड़ने को तैयार रहते हैं।

कभी बड़ा भाई छोटे भाई की पत्नी पर बलपूर्वक अधिकार करता है, तो छोटा भाई बड़े भाई की पत्नी से अवैध संबंध बनाता है।

छोटे भाई की पत्नी को अनुज-वधू और बड़े भाई की पत्नी को भाभी कहते हैं। बलपूर्वक लेना 'अधिकार करना', गुप्त अवैध संबंध 'दुराचार' है। बड़ा भाई छोटे की पत्नी को बलपूर्वक ले या छोटा बड़े की पत्नी से गुप्त संबंध बनाए, तो ऐसे भाई नैतिक शिक्षा के अपराधी हैं।

कभी चाचा भतीजे की पत्नी के लिए लोभ करता है, कभी भतीजा चाची से अनुचित मिलन करता है।[149]

निकट पारिवारिक दुराचार या मर्यादा-विरुद्ध मिलन, दोनों अनुचित संयोग हैं। चाचा भतीजे की पत्नी का सौंदर्य देखकर अशुभ विचार से दुराचार करे, या भतीजा

चाची का सौंदर्य देखकर संबंध बनाने की युक्ति करे—ये सभी वस्त्र पहने पशु कहे गए हैं।[150]

दोनों आनंद में केवल सामने के सुख को देखते हैं।

'ह्वान' प्रसन्नता, 'यू' आनंद और 'क्वाइहुओ' आराम है। स्त्री-पुरुष अवैध संबंध से खुश होते हैं, लेकिन केवल वर्तमान आराम देखते हैं और बाद की बर्बादी का ध्यान नहीं करते।

आधा जीवन दुर्दशा में; मृत्यु के बाद के पतन का क्या ज्ञान?

'आधा जीवन' आधा जीवनकाल है। 'दुर्दशा' कामों का अनुकूल न होना। 'छिंग' विनाश, 'तुइ' पतन। कामुक व्यक्ति का जीवन और प्रतिष्ठा अक्सर दोनों बर्बाद हो जाते हैं। जीवित रहते आधा जीवन असफल रहता है और मृत्यु के बाद संतानों में भी अवश्य परिवार का विनाश और प्राणहानि होती है।

या तो पूर्वजों के लिए धूप जलाने वाली वंशरेखा टूटती है, या संतति भिखारी बनती है।

संतान बुज़ुर्गों के धूपदान का आधार है। संतान समाप्त होने का अर्थ धूप की परंपरा टूटना है। अन्न माँगकर खाने वाला भिखारी है। कामुक व्यक्ति के वंशज हों भी तो वे अवश्य भिखारी हो जाते हैं।

या पत्नी-बेटियाँ ऋण चुकाती हैं, या संतान भाग्यहीन होती है।

'चुकाना' ऋण लौटाना है। आशय है कि कामुक व्यक्ति की पत्नी-बेटियाँ अवश्य उसके यौन दुराचार का खाता चुकाती हैं और स्वेच्छा से दूसरों के दुराचार को स्वीकार करती हैं। 'भाग्यहीन' अर्थात समय और भाग्य गिरना, हर बात बिगड़ना तथा चेतना और साहस खोना।

सुनसान कब्र का भटकता प्रेत—कौन कागज़ी मुद्रा जलाएगा?

मनुष्य मरकर प्रेत कहलाता है; मिट्टी का ढेर कब्र है। कामुक व्यक्ति परदेश में मरकर उजाड़ पहाड़ में दफ़न हो, अकेली कब्र का प्रेत बने, तो कौन उसके लिए कागज़ी मुद्रा जलाएगा और कागज़ चढ़ाएगा?

उच्छृंखल भोगी—कौन भोजन अर्पित करेगा?

आशय है कि उच्छृंखल, भटकते, कामुक युवक प्रायः वंशहीन हो जाते हैं। जन्मदिवस या त्योहार पर कौन उन्हें भोजन चढ़ाएगा?

यह कहते और सोचते हुए दुख कैसे न हो?

'यान' कहना, 'न्येन' सोचना है। सम्राट यहाँ तक कहते और सोचते हुए लोगों के लिए बहुत दुखी होते हैं।

और मेहनतकश किसान परिवारों के लोग भी चंचल, श्रम-विमुख हो जाते हैं।

'किसान परिवार' खेती करने वाले घर हैं। 'त्याओदा' हल्केपन और श्रम-कष्ट न सह सकने का अर्थ देता है। पढ़े-लिखे युवकों के अलावा ग्रामीण परिवारों की संतानें भी उच्छृंखल आदत पालकर मेहनत करने को तैयार नहीं रहतीं।

माता-पिता की सेवा और बड़ों का सम्मान नहीं सोचते; उलटे दीवारों में सुराख करते और दीवारें लाँघते हैं।

'नहीं सोचते' अर्थात विचार नहीं करते। 'निकटजन' माता-पिता हैं, 'बड़े' वरिष्ठ। 'छेद' सुराख है। दीवार में बड़े-छोटे छेद करके पड़ोस की स्त्रियों को चोरी से देखना 'छेद करना' है। 'यू' पार करना है; कुछ दीवार लाँघकर दूसरों की स्त्रियों से दुराचार करते हैं। आशय है कि उच्छृंखल युवक माता-पिता के प्रति कर्तव्य और भ्रातृसम्मान की बात न करके छल, चोरी और यौन दुराचार करते हैं।

दक्षिण के खेत और पूर्व की भूमि सूख जाते हैं।

'दक्षिण के खेत' दक्षिण की खेती, 'पूर्व का बाहरी क्षेत्र' पूर्व की भूमि है। 'बदलना' परिवर्तन, 'सूखना' पौधों का न बढ़कर मर जाना है। हर ओर कोई घास

निकालने या खाद देने वाला नहीं, इसलिए पहले हरे-भरे पौधे भी बाद में सूखकर मरते हैं।[151]

छिन की अट्टालिकाओं और छू के भवनों में वसंत-शरद का होश नहीं रहता।

'छिन की अट्टालिका' छिन राज्य का भवन, 'छू का गृह' छू राज्य का निवास है; दोनों वेश्याओं के रहने के स्थानों का संकेत हैं। किसान परिवारों के युवक वेश्यालयों की गलियों में डूबकर देर तक लौटना भूल जाते हैं और वसंत-शरद का ज्ञान नहीं रहता।

पैतृक संपत्ति बेचकर भोग-विलास का ऋण चुकाते हैं; माता-पिता का पूरा भरण-पोषण बंद हो जाता है।

'बंद होना' समाप्त होना है। 'भरण-पोषण' माता-पिता के भोजन का अन्न है। 'ऋण' उधार का खाता है। 'भोग-विलास का ऋण' वेश्याओं के साथ रहने में खर्च के लिए उधार लिया धन है। ऋण अधिक हो जाए तो सारी पैतृक संपत्ति बेचनी पड़ती है और माता-पिता के भोजन का अन्न भी बंद हो जाता है।

विवाह में पत्नी को मिले कपड़े-गहने गिरवी रखकर सुबह-शाम नशे और भरपेट भोजन में डूबते हैं; बच्चों के चूल्हे लंबे समय से खाली हैं।

'गिरवी रखना' धन के लिए वस्तु बंधक रखना है। 'विवाह में पत्नी को मिले कपड़े-गहने' उसके साथ विवाह में आए वस्त्र और आभूषण हैं। वेश्या के घर दिन-रात शराब और भोजन में डूबकर ये सारे कपड़े-गहने पहले ही गिरवी रख दिए जाते हैं। घर में चूल्हा जलना बंद होता है, पकाने को चावल नहीं और बच्चे भी ठंड तथा भूख सहते हैं।

सिरहाने का धन समाप्त; पापजनित रोग शरीर से लगे हैं।

'सिरहाना' तकिए के पास है। 'धन समाप्त' पैसा पूरा खर्च होना है। 'पापजनित रोग' वेश्यालय में लगा उपदंश, सूजाक, या अति कामभोग से रक्तवमन और क्षय

जैसे रोग हैं जो शरीर के साथ रहते हैं। इन्हें अपने किए का पाप कहा गया है, इसलिए यह नाम है।[152][153]

सड़क पर गिरा पड़ा है; रिश्तेदार और मित्र नाक ढकते हैं।

वेश्यागमन से विषैले घाव और अन्य पापजनित रोग लगें तो वेश्याएँ संपर्क रोककर उसे बाहर कर देती हैं। चल भी नहीं सकता, इसलिए सड़क पर गिरा रहता है। दुर्गंध असह्य होती है और वहाँ से गुज़रते सभी संबंधी-मित्र नाक ढकते हैं।

जीवन कुछ क्षण शेष है; पुराने परिचितों का हृदय दुखता है।

'जीवन' मनुष्य के प्राण, 'बढ़ना' टिके रहना है। 'कुछ क्षण' पारंपरिक चीनी समय-खंड 'शिचन' के आधे से भी कम समय है। 'पुराने परिचित' वर्षों के रिश्तेदार-मित्र और 'हृदय दुखना' शोक है। कामुक व्यक्ति थोड़ी देर जीवित रह भी जाए, पुराने परिचित उसे देखकर दुखी होते हैं।[154]

दूर बीते वर्षों को याद करके पीछे देखना कैसे सहें?

'दूर' बहुत पहले, 'याद' अतीत का स्मरण, 'वे वर्ष' पुराने दिन हैं। 'कैसे सहें' सह न पाना, 'पीछे देखना' मुड़ना है। वर्तमान से उस समय को याद करें जब अशुभ फल नहीं आया था और कितना सुख था, तो सचमुच मुड़कर देखना भी सहन नहीं होता।

ऐसे अंत पर आह भरना आवश्यक नहीं।

'ऐसा' इस प्रकार, 'अंत' पतन, 'आवश्यक नहीं' जरूरत नहीं। आशय है कि कामुक व्यक्ति अशुभ फल से इस तरह गिरे तो उसका यही उचित परिणाम है; उसके लिए आह भरकर दया करना आवश्यक नहीं कहा गया है।

अन्य लोग, जैसे अच्छे कारीगर और कुशल शिल्पी, अपने नियम निभाएँ।

'कारीगर' और 'शिल्पी' हुनर वाले लोग हैं, जैसे विभिन्न उद्योगों के तकनीकी कर्मचारी। 'अच्छा' उत्कृष्ट, 'कुशल' निपुण, 'नियम' पद्धति और विधान है। तकनीक

सीखे व्यक्ति को गुरु की दी हुई पद्धति का पालन करना चाहिए और कामुकता में कभी नहीं पड़ना चाहिए।

कभी गुरु की सीख न मानकर गुप्त सराय-मिलन तय करते हैं; मित्र की बात न सुनकर चाँदनी के आनंद की सोचते हैं।

'गुरु की सीख' हुनर सिखाने वाले गुरु की कामुकता से बचने की शिक्षा है। 'न मानना' पालन न करना। 'गुप्त सहमति' दूसरे घर की स्त्री को सराय या यात्री-गृह में गुप्त रूप से बुलाना है, ताकि वहाँ अवैध यौन संबंध बनाकर रात बिताई जा सके। मित्र कामुक न होने की सलाह दे तो भी नहीं सुनता, बल्कि चाँदनी में दूसरी स्त्रियों को रिझाने जाता है।

सुंदर युवती हो या कोमल स्त्री, लोहे के जाल से बचना कठिन; चाहे फूल-चाँद सा रूप हो, फिर भी धातु का काँटा डालते हैं।

'सुंदर युवती' रूपवती लड़की, 'कोमल स्त्री' नाजुक महिला है। 'फूल सा मुख' सुंदर चेहरा, 'चाँद सा रूप' चाँद जैसा उजला चेहरा। लोहे के तार का जाल पशु-पक्षी को फँसाकर निकलने नहीं देता। ताँबे-लोहे का काँटा मछली-कछुए को नहीं छूटने देता। आशय है कि शीलवती स्त्रियों को रसिक पुरुष कभी चालों के जाल से, कभी धन से लुभाते हैं। वे अक्सर फंदे में पड़कर अपमानित होती हैं और मान-शील खोती हैं। यह सोचकर दाँत पीसने जितना रोष होता है।

युवा स्त्री लज्जित होकर फाँसी चाहती है; अपमानित सुंदरी नदी में कूदने को तैयार होती है।

युवा विवाहित महिला 'युवा स्त्री', लाल श्रृंगार किए युवती 'सुंदरी' कहलाती है। अपमानित होकर मान-शील खोने पर लोगों का सामना नहीं कर पाती। उपहास और गालियों से बचने के लिए वह अक्सर फाँसी लगाकर या पानी में डूबकर जान दे देती है।[155]

आक्रोश मिटता नहीं; प्रेत-द्वार पर रोती शिकायत ले जाती है। अन्यायग्रस्त आत्मा छँटती नहीं; परलोक में याचिका देती है।

'रोती शिकायत' रोकर बताना, 'याचिका' लिखित शिकायत देना है। 'प्रेत-द्वार' परलोक की चौकी, 'परलोक-न्यायालय' यमराज का कार्यालय है। स्त्री अपमान और लज्जा में मरकर संतुष्ट नहीं होती। उसके भीतर का अन्याय पहले रोष-ऊर्जा, फिर उग्र ऊर्जा बनता है। वह प्रतिशोधी प्रेत बनकर व्यभिचारी को जीवित पकड़कर अपना रोष मिटाना चाहती है। प्रेत-द्वार पर विलाप और परलोक में याचिका देकर यमराज से प्रतिशोध की अनुमति न माँगे, तो यह उग्रता कैसे मिटे और अन्याय कैसे स्पष्ट हो? ऐसी प्रतिशोधी आत्मा कभी व्यभिचारी को फाँसी या आत्महत्या तक पहुँचाती, कभी प्रहार करके सातों मुख-छिद्रों से रक्त बहाकर मारती है। ऐसे मामले विभिन्न युगों की परीक्षा-स्थलों की विचित्र घटनाओं के अभिलेखों में बहुत मिलते हैं।

पाँचवें सभागृह में कठोर यम-विधान है; कानून में विलंब की गुंजाइश नहीं।

'पाँचवाँ सभागृह' परलोक का पाँचवाँ कार्यालय है। 'कठोर यम-विधान' यमराज के अत्यंत सख्त कानून को कहता है। यौन दुराचारी मृत्यु के बाद परलोक पहुँचे तो यमराज उसे सभी बुराइयों में प्रथम अपराध के अनुसार धिक्कारते हैं। कोई पक्षपात नहीं; एक क्षण की नरमी या देर कैसे हो?

ताँबे के हथौड़े और लोहे के काटने वाले यंत्र—रक्त-मांस बिखरता है; तलवार-वृक्ष और छुरी-पर्वत—देह और चेतना छिन्न होती हैं।

ताँबे के हथौड़े से शरीर कुचला और लोहे के काटने वाले यंत्र से शरीर काटा जाए तो रक्त-मांस कैसे न बिखरे? तलवार-वृक्षों पर फेंकें या छुरी-पर्वत पर डालें, तो देह नरक में बिखरेगी और चेतना दुख-सागर में गिरेगी। कामुक व्यक्ति का ऐसा अंत क्या दयनीय नहीं!

एक विचार की भूल जीवन भर नहीं छुड़ाई जाती।

‘भूल’ गलती, ‘छुड़ाना’ वस्तु देकर वापस पाना, ‘जीवन भर’ पूरा जीवन। पहले एक गलत विचार से यौन अपराध किया, फिर जीवन भर भी पुराने पाप का मोल चुकाकर नरक के अशुभ फल से नहीं बच सका।

वह व्यक्ति यह दशा कैसे सहे?

‘वह व्यक्ति’ इसी मनुष्य को कहता है। ऐसे कामुक व्यक्ति की इस समय भावनाएँ कैसे सँभलें, उसका पश्चात्ताप कैसे परिणाम बदल दे?

खेद है उन पर जो दूर-दूर व्यापार करते और धन मिट्टी सा उड़ाते हैं।

‘व्यापार’ कारोबार है। सबसे घृणित बताए गए वे लोग हैं जो नदियों और झीलों के प्रदेशों में व्यापार करते हुए व्यभिचार तथा वेश्यागमन में सोना-चाँदी मिट्टी की तरह खर्च करते हैं।

वेश्या को साथ लेकर प्रणय करते हैं; रात लंबी या छोटी, इसकी परवाह कहाँ?

‘वेश्या’ देह-व्यापार करने वाली स्त्री है। उसे बाँह में लेकर शराब और हँसी से कामभाव भड़काते हैं और दिन-रात लौटते नहीं। रात कितनी लंबी है, यह सोचने का अवकाश कहाँ?

प्रेम-विलास में तृप्त होकर चाँद ढलना और कौओं की पुकार भूल जाते हैं।

‘आसक्ति’ लोभ से न छोड़ना है। ‘हवा के फूल’ हिलते आकर्षक फूलों की छवि है, जो कामलोभ उठाती है। चाँद ढलना और कौए बोलना भोर के संकेत हैं। केवल प्रेम-नींद और विलास, वेश्याओं के प्रति आसक्ति को सुख जानकर भोर होने को भूलते हैं और अलग नहीं होना चाहते।

घर-पड़ोस से लंबे बिछोह में मछली-पत्र कम भेजते हैं; दूरदेश में बसे रहने से जंगली हंस-संदेश भी कठिनाई से पहुँचता है।

‘मछली-पत्र’ प्राचीन काल में मछली के पेट में पत्र पहुँचाने की कथा है। ‘जंगली हंस-संदेश’ हान काल के सू वू की घर का पत्र जंगली हंस के पैर में बाँधकर भेजने

की घटना है। आशय है कि दूर परदेश में व्यापार करते व्यक्ति वेश्याओं में डूबकर समय की परवाह नहीं करते और घर पत्र भी नहीं भेजते।

जन्मजात सार-जल नष्ट हो तो दवा निष्फल; रोग के बाद पछताएँ तो देव-प्रार्थना निष्फल।

जन्मजात वृक्क-जल और जीवन-सार कामुकता से समाप्त हो जाए तो रूप सूख जाता है, रोग असाध्य होता और दवा असर नहीं करती। तभी पछताकर देवों से प्रार्थना करके मनौतियाँ मानना भी व्यर्थ कहा गया है।[156]

दूर क्षितिज की ओर रोते हो; कौन देखने आएगा?

'क्षितिज' मानो आकाश के छोर जितनी दूरी है। 'देखने आना' हाल पूछने आना है। रोग लगने पर आकाश के छोर की ओर रोओ भी, तो कौन तुम्हें देखने आएगा?

मरकर परदेश का प्रेत, अंततः विदेशी भूमि की आत्मा बनता है।

परदेश में मृत्यु होने से उसकी आत्मा और प्रेत वहीं लंबे समय टिकते हैं, लौटते नहीं। 'प्रदेश' भी भूमि है।

हज़ार ली दूर पर्वत-नदियाँ—सूखी हड्डियों पर कौन दया करे? जंगली घास का ढेर—मित्र-संबंधी न मिलें।

हड्डियों का ढाँचा हज़ार ली दूर दफ़न हो तो कौन दया करके उसे घर लौटाए? कब्र पर केवल घास का ढेर है। कोई मित्र-संबंधी देखने नहीं आता; किसे ढूँढ़ें जो दया करके कागज़ी मुद्रा जलाए, कागज़ चढ़ाए और घोड़े-बैल को कब्र रौंदने से रोके? 'खोजना' ढूँढ़ना है।

कर्मफल स्पष्ट है; रत्तीभर नहीं चूकता।

'स्पष्ट' प्रत्यक्ष है। आशय है कि कर्मफल बिल्कुल प्रकट होता है और उसमें तनिक भी गलती नहीं होती।

मैं बार-बार गंभीर चेतावनी देकर चारों वर्गों से आशा करता हूँ।

‘मैं’ सम्राट हैं। ‘बार-बार कहना’ आग्रहपूर्वक समझाना, ‘चेतावनी’ अवगत कराना। चार वर्ग विद्वान, किसान, कारीगर और व्यापारी हैं। उन्हें गलती सुधारकर भलाई अपनाने और कामुक न होने को कहा गया है।

यदि सचमुच मनःस्वभाव का पोषण कर यौन दुराचार न करो।

‘सचमुच’ दृढ़ निश्चय है। ‘पोषण’ पानी के सींचने जैसा है। करुणा, न्याय और नैतिकता से मनःस्वभाव सँभालें और कामना से भ्रमित न हों, तो स्वाभाविक रूप से यौन दुराचार की प्रमुख बुराई नहीं करेंगे।

तो काव्य और मर्यादा परिवार में चलें, भंडार भरें; यश और लाभ मिलें, दीर्घायु और गहरा सौभाग्य हो।

काव्य, ग्रंथ, मर्यादा और संगीत को पारिवारिक नियम बनाकर संतानों को लगन से पढ़ना और खेती करना सिखाएँ। एक ओर भरे भंडार और संदूक समृद्धि लाएँगे, दूसरी ओर सफलता और प्रतिष्ठा से पुण्यफल तथा दीर्घायु मिलेंगे। ‘शौकाओ’ लंबी आयु, ‘वेइछी’ गहरा सौभाग्य है।

द्वार की ऊपरी चौखट दमके; सचमुच धन-प्रतिष्ठा का घर हो।

‘द्वार की ऊपरी चौखट’ दरवाज़े की ऊपर वाली आड़ी लकड़ी है। ‘दमकना’ सुनहरे अक्षरों की पट्टिका से चमकना है, जो धन और प्रतिष्ठा का दृश्य बनता है।

पड़ोस गौरवान्वित हो; राज्य के स्तंभ होने योग्य बनो।

‘पड़ोस’ कुल-संबंधियों और पड़ोसियों की गलियाँ हैं। ‘स्तंभ’ बड़ा अधिकारी है, राज्य के सहारे जैसा। क्षेत्र में ऐसा व्यक्ति हो तो हर घर को गौरव मिलता है। ‘योग्य’ अर्थात उस पद के अनुरूप होना।

आँगन में शुभ वनस्पति उगे; ऑर्किड और ओस्मैंथस सुगंध फैलाएँ।

‘आँगन के सामने’ सीढ़ियों के सामने है। ‘शुभ घास’ सुगंधित वनस्पति है। आँगन ऑर्किड और ओस्मैंथस के सुगंधित फूलों से भरता है; कहा गया है कि ऐसी दशा केवल धन-प्रतिष्ठा वाले घर में होती है।

द्वार के बाहर शुभ धूम उठे; छुन और श्युआन दोनों फलें।

‘शुभ धूम’ मंगलकारी ऊर्जा है। फलता छुन वृक्ष पिता के जीवित होने, समृद्ध श्युआन फूल माँ के होने का रूपक है। माता-पिता दोनों जीवित हों तो द्वार के बाहर अक्सर शुभ ऊर्जा घिरती है।

कारण खोजो तो इसका आधा संयम का फल है।

‘खोजना’ जाँचना है। कारण जाँचें तो अधिकतर ऐसे लोग यौन दुराचार नहीं करते; उसका स्रोत स्वाभाविक रूप से समझा जा सकता है।

लेकिन प्राचीन काल से कामुक लोगों की कमी भी नहीं।

‘कमी नहीं’ अर्थात कम नहीं। प्राचीन काल से कामासक्त लोग बहुत रहे हैं।

श्या के जिए अधर्मी थे, मेइशी को लाड़ देकर राज्य खोया; शांग के झोउ निर्दयी थे, दाजी के प्रेम में राजसत्ता नष्ट की।

श्या जिए श्या वंश के राजा जिए थे और मेइशी उनकी रानी थीं। शांग झोउ शांग वंश के राजा झोउ थे और दाजी उनकी रानी थीं। ‘नदियाँ-पहाड़’ और ‘भूमि-अन्न की वेदियाँ’ राज्य के अन्य नाम हैं। आशय है कि दोनों ने स्त्री-सौंदर्य की आसक्ति से अपना राज्य खोया।

छी के झुआंग गोंग तांग जियांग के कारण मारे गए—अवर्णनीय दुख; छेन के लिंग गोंग श्या कुल की स्त्री के कारण नष्ट हुए—पूछने योग्य भी नहीं कलंक।

झुआंग गोंग छी राज्य के शासक थे; तांग जियांग छी के मंत्री तांग गोंग की पत्नी थीं। उनसे संबंध के कारण झुआंग गोंग की हत्या हुई। लिंग गोंग छेन के शासक थे और श्या कुल की वह स्त्री छेन राज्य के मंत्री श्या झेंगशू की माँ थीं। उनसे संबंध के कारण लिंग गोंग मारे गए। उनकी दशा दयनीय और नाम कलंकित था; पूछना भी असह्य है।

अन्य उदाहरण ‘नया मंच’, ‘दीवार का काँटा’, पू नदी और शहतूतों के बीच हैं; उनकी कविताएँ पढ़कर कौन पशु जैसा नहीं कहता?

‘बेइ फ़ेंग’ की ‘नया मंच’ कविता वेइ श्युआन गोंग द्वारा पिता होकर पुत्र की वधू ले लेने की निंदा करती है। ‘योंग फ़ेंग’ की ‘दीवार का काँटा’ राजकुमार तोउ के राजमाता से अवैध संबंध की निंदा करती है। वेइ की पू नदी पर ‘शहतूतों के बीच’ नाम का स्थान भी था, जहाँ व्यभिचारी रीति थी, मर्यादा और न्याय नहीं; पशुओं से भिन्न नहीं। इसलिए इन कविताओं के पाठक ऐसा आचरण पशुओं के समान बताते हैं।[157]

अतीत को याद करें—यहाँ तक पहुँच गया।

‘अतीत’ ऊपर के जिए, झोउ, छी और छेन की घटनाएँ हैं। उनकी कामुकता पशु-समान आचरण तक पहुँची, यह सब स्मरण किया जा सकता है।

और हान राजवंश की सेवा करते समय मेरे हृदय का हर भाव खुलकर प्रकट किया जा सकता था।

सम्राट कहते हैं: मैं हान का मंत्री होकर पूरे मन से उसका समर्थन करता था। मेरे मन का हर अंश संसार के सामने स्पष्ट किया जा सकता है।

मोमबत्ती लेकर भोर की प्रतीक्षा की; छाओ मान की ओर मेरा झुकाव न था।

‘भोर’ सुबह है। सम्राट कहते हैं: पहले राज-भाभी को साथ सुरक्षित ले जाते समय छाओ की सेना ने रोक लिया। छाओ छाओ शासक-मंत्री में फूट डालना चाहता था। उसने मुझे और भाभी को एक ही कक्ष में बंद किया, ताकि हम पारिवारिक मर्यादा का उल्लंघन करने वाला यौन संबंध बनाकर ह्वांगशू से विश्वासघात करें। मैंने सोना स्वीकार नहीं किया; मोमबत्ती लेकर बैठा ‘वसंत-शरद इतिहास’ पढ़ता रहा और भोर की प्रतीक्षा की। मेरा मन छाओ मान की ओर नहीं था, इसलिए उसकी चाल में नहीं फँसा।[158]

सेनापति काटे, दर्रे पार किए; भाई खोजते हुए भाभी की रक्षा की।

इसके बाद छाओ का शिविर छोड़ा, पाँच दर्रे पार किए और छह सेनापतियों को मारा। राज-भाभी की रक्षा करते हुए अपने बड़े भाई, ह्वांगशू, को खोजा। यही मेरे पूरे मन से हान के प्रति समर्पण की दशा थी।[159]

लिउ श्याहुइ गोद में स्त्री बैठने पर भी विचलित न हुए—कितनी निर्मल ऊँचाई! लू झोंगल्यान ने द्वार बंद रखकर न लिया—कितना दृढ़ भाव!

लिउ श्याहुइ विभिन्न राज्यों के काल के संत थे। एक स्त्री शरण लेने आई और उनकी गोद में बैठी, पर मन अनुचित रूप से नहीं हिला; उनकी शुद्धता अतुलनीय थी। लू झोंगल्यान युद्धरत राज्यों के काल के ज्ञानी थे। रात की वर्षा में घर टपकने से एक स्त्री उनके घर आश्रय माँगने आई, लेकिन उन्होंने द्वार बंद रखा और नहीं ठहराया; उनका दृढ़ भाव अतुलनीय कहा गया है।

मेरी कामना है कि प्रतिभाशाली युवा दान्त्येन की रक्षा करें।

'प्रतिभाशाली' वीर और योग्य व्यक्ति हैं। ऐसे युवा अक्सर कामुकता से आयु घटाते हैं, इसलिए सम्राट चाहते हैं कि वे दान्त्येन बचाकर सार और चेतना पोषित करें। दान्त्येन वह स्थान है जहाँ सार और चेतना संचित होते हैं, नाभि से लगभग एक छुन नीचे।[160]

कामना से आहत न हो तो अस्सी-नब्बे तक आयु; स्त्री-श्रृंगार से भ्रमित न हो तो सद्गुण संतानों तक पहुँचे।

'कामना' सौंदर्य की स्वार्थी इच्छा है। प्राचीन लोग कहते थे कि जीवन को नुकसान देने वाली बातें अनेक हैं, पर कामुकता अवश्य शरीर को चोट देती है। उससे आहत न हों तो अस्सी, नब्बे या सौ वर्ष की उच्च आयु की आशा है। यहाँ अस्सी को माओ, नब्बे को दिए कहा गया है; दोनों दीर्घायु हैं। 'स्त्री-श्रृंगार' से रेशमी स्कर्ट पहनी और सुनहरे केश-पिन लगाए सुंदरी का संकेत है। 'भ्रमित' पुरुष का कामना के गड्ढे में पड़कर प्रमुख अपराध करना और वंश का न फलना है। सौंदर्य से भ्रमित न हों तो गुप्त पुण्य बहुत बड़ा होता है और संतानों तक पहुँचकर उन्हें समृद्ध बनाता है।[161]

घर में विधवा का विलाप न सुनें, आयु आकाश-पृथ्वी सी लंबी हो; बाहर विधुर का दुख न देखें, बाल सारस जैसे और चेहरा बालक जैसा हो।

कामना से आहत न हों तो स्त्री-पुरुष दोनों दीर्घकालिक उच्च आयु पाएँगे। घर में प्रवेश पर शोकाकुल विधवा नहीं होगी और पुरुष बाहर निकले तो दयनीय विधुर नहीं दिखेगा। दीर्घायु के सफ़ेद बाल श्वेत सारस जैसे हैं, इसलिए 'सारस के बाल'। चेहरा फिर भी बालक जैसा लाल और स्वस्थ, इसलिए 'बालक का मुख'।

एक घर में पूर्ण समरसता; बुढ़ापा आने का पता नहीं।

'एक घर' एक परिवार है। स्त्री-पुरुष सब रोग-दर्द से मुक्त, सौभाग्य और दीर्घायु वाले हों तो केवल मेल से शुभता आती महसूस होती है। बुज़ुर्ग सुखी रहते हैं और बुढ़ापा निकट होने का भान नहीं होता।

शिष्य को गुरु से अधिक कौन जाने? पुत्र को पिता से अधिक कौन जाने?

'दी' यहाँ छात्र है, 'शी' शिक्षक। छात्र का स्वभाव केवल शिक्षक ही जानता है और पुत्र की रुचियाँ केवल पिता ही स्पष्ट रूप से जानता है।

मैं देखता हूँ कि गुरु पढ़ाई के अतिरिक्त शरीर की रक्षा का ज्ञान बिल्कुल नहीं सिखाते।

'शरीर-रक्षा का ज्ञान' दान्त्येन की रक्षा और स्त्री-सौंदर्य से न बहकने का ज्ञान है। शिक्षक पढ़ना सिखाते हैं, लेकिन यौन संयम से शरीर बचाना नहीं; यह बहुत खेदजनक है।

कभी शिष्य की चतुराई के कारण उसकी उच्छृंखलता और अधीरता चलने देते हैं।

'उच्छृंखल और अधीर' अभिमानी, हल्के युवा हैं, जिनमें सतहीपन बाकी है। उन्हें गंभीर समझाइश देकर स्थिर बनाना चाहिए, पर चतुराई के कारण नरमी करके शिक्षा नहीं देते और बिना अनुशासन उनका हल्कापन चलने देते हैं।

कभी घर के स्वामी के लाड़ से उसे तितली-मधुमक्खी सा उन्मत्त भटकने देते हैं।

'घर का स्वामी' घर का मुखिया है। 'लाड़' दोष ढकना है। फूल चुनती उन्मत्त तितली-मधुमक्खी का रूपक युवकों के वेश्यागृहों की गलियों में भटकने के लिए है। मुखिया के लाड़ से उनकी मनमानी और कामुकता चलती है; गंभीर शिक्षा और रोक नहीं होती।

कामभाव पहली बार खुलता है; जन्मजात विवेक धीरे-धीरे खोता है।

'भाव का छिद्र' वह स्थान है जहाँ कामना उठती है। 'पहली बार खुलना' किसी के उकसाने से कामुक विचार शुरू होना है। विचार उठे तो दूसरों के मान-शील की परवाह छोड़कर उनकी पत्नी-बेटियों से दुराचार करता है और स्वर्गीय सिद्धांत तथा अंतरात्मा खो देता है।

मूलतः जेड-सभागृह योग्य व्यक्ति था; अब विकृत पथ का युवक बना।

'जेड-सभागृह' हानलिन अकादमी का कार्यालय है। 'विकृत पथ' यौन दुराचार और गलत आचरण है। प्रतिभाशाली युवक मूलतः हानलिन अधिकारी योग्य था, पर अचानक कामुकता से भविष्य बिगाड़कर जीवन भर भोगी आवारा बन गया।

कितनी भी उज्ज्वल असाधारण प्रतिभा हो, पद-प्रतिष्ठा अवश्य अटकेगी।

'उज्ज्वल' खुला और विशिष्ट, 'असाधारण प्रतिभा' अनोखा ज्ञान-कौशल है। 'अटकना' कामों में उलटफेर और योजनाओं का असफल होना है। युवक प्रतिभाशाली हो, पर यौन दुराचार करते ही व्यवसाय और पद-प्रतिष्ठा अनुकूल नहीं रहते।

अयोग्य गुरु का दोष लोगों को कम हानि नहीं पहुँचाता।

'अयोग्य' साधारण, संकीर्ण है। ऐसे गुरु शरीर-रक्षा की शिक्षा नहीं देते, शिष्यों की कामुकता चलने देते हैं और पद-प्रतिष्ठा बिगड़ती है। यह सब गुरु का दोष है; इसकी हानि छोटी कैसे हो?

मैं पिता भी देखता हूँ, जो अंधे लाड़ में अनुशासन देर से करते हैं।

'अंधा लाड़' अत्यधिक नरमी है। 'देर' उपेक्षा और विलंब, 'अनुशासन' समझाना, मारना और डाँटना है। सम्राट कहते हैं कि पिता अक्सर विवेक न समझकर संतानों पर नरमी करते हैं। गलती पर रोक-टोक होनी चाहिए, पर उलटे देर करके नहीं करते। यह अंधा लाड़ नहीं तो क्या है?[162]

थोड़ी अधकचरी समझ हो तो हर मिलने वाले से श्रेष्ठ संतान कहते हैं; मामूली हुनर हो तो हर ओर प्रशंसा की होड़।

'अधकचरी समझ' थोड़ा जानना, 'मामूली हुनर' उथली कला, 'थोड़ी विशेषता' छोटा गुण है। 'श्रेष्ठ संतान' अच्छे बच्चे हैं। थोड़ा अच्छा गुण देखते ही बाहर हर मिलने वाले से प्रशंसा करके अपने अच्छे वंशज दिखाते हैं।

घर सँभालने योग्य पात्र नहीं, फिर भी मेज़ का अनमोल रत्न मानते हैं।

'पात्र' उपयोग की वस्तु, 'मेज़ का रत्न' मोती या सुंदर जेड है। पुत्र घर बचाए रखने योग्य नहीं, फिर भी उसे अनमोल खजाना मानकर लाड़ और छूट देते हैं।

फिर संयम की सीमा लाँघता, मर्यादा और संबंधों के नियम तोड़ता है।

'जाँच' संतानों का व्यवहार देखना, 'रक्षा-सीमा' गलतियाँ रोकना है। 'मर्यादा' स्त्री-पुरुष और भीतर-बाहर के व्यवहार का भेद है। 'स्थान' नैतिक संबंधों की निर्धारित भूमिका है। 'छोड़ना, लाँघना, पार करना, तोड़ना' सभी नियम और मर्यादा न मानना हैं।

पूरा स्वभाव उच्छृंखल बनता है; भिक्षुणियों और विधवाओं के साथ मनमाने ढंग से सोकर सुख भोगता है।

'भिक्षुणी' गृहत्यागी बौद्ध स्त्री, 'विधवा' पति-विहीन महिला है। युवक की आदतें हल्केपन और कटुता से भर जाती हैं; वह भिक्षुणियों और विधवाओं को मनमाने ढंग से लुभाकर साथ सोने का सुख चाहता है।

मुँह भर मूर्ख बातें रचता है; वेश्याओं की गलियों में मनमाना आनंद ढूँढ़ता है।

जानबूझकर पागलपन और मूर्खता का अभिनय करता, उलटी-सीधी बातें बोलता है। वेश्याओं की किसी भी गली में अपने मन की पसंद के अनुसार भटकता है।

कहता है, पिता मुझे सीधापन सिखाते हैं, पर स्वयं सीधे नहीं चले।

'आचार्य' यहाँ पिता हैं। 'सीधा' सही मार्ग, 'सीधे न चलना' सही मार्ग न अपनाना है। पिता सही राह सिखाएँ तो उलटे कहता है कि पिता भी सही नहीं चले और उनकी शिक्षा नहीं सुनता।

क्रोध निगलकर चुप रहना—अंत कैसे होगा?

'अंत' यहाँ कठिन स्थिति से निकलने का रास्ता है। पिता सदा लाड़ और दोषों की रक्षा करके संतान का स्वभाव बिगाड़ता है। अब सही राह सिखाए तो पुत्र बुरे शब्दों से विरोध करता है; पिता केवल क्रोध दबाकर चुप रह सकता है। ऐसी स्थिति से वह कैसे निकले!

मैं प्रसिद्ध पर्वत और विशाल नदियाँ सोचता हूँ; कहाँ उच्च विवेक वाले लोग नहीं?

'प्रसिद्ध पर्वत' नामी पहाड़, 'विशाल नदी' बहुत बड़ी नदी है। सम्राट कहते हैं कि इन स्थानों में सभी ओर उच्च समझ वाले लोग हैं।

पर यौन दुराचार छोड़ने की बात आए तो कम ही ऐसे लोग हैं जो इसे कठिन न मानें। क्यों?

'कम' थोड़े हैं। यौन संयम की बात पर अधिकांश लोग कठिनाई मानते हैं; जो कठिन न मानें वे बहुत कम हैं। आखिर कारण क्या है?

अधिकतर इच्छा का घोड़ा बाँधना कठिन, सांसारिक संबंधों से लंबे समय बँधा; चित्त का बंदर बंद नहीं, सांसारिक सौंदर्य में जकड़ा।

'इच्छा का घोड़ा, चित्त का बंदर' बिखरे और भटकते विचारों का रूपक है: घोड़ा दौड़ता है, बाँध नहीं सकते; बंदर कूदता है, रोक नहीं सकते। अधिकांश लंबे समय

से सांसारिक अकुशल संबंधों और आकर्षक सौंदर्य में बँधे हैं, इसलिए लौटना कठिन लगता है।

लाभ-हानि नहीं पहचानते; भ्रम पकड़कर जागते नहीं।

कामुक व्यक्ति का कर्मफल अभी न आया हो तो वह लाभ-हानि का भेद न जानकर मनमानी करता है। गलत राह में प्रवेश के बाद कोई रोकने को कहे तो अपनी राय पकड़े रहता है और पश्चात्ताप से जागता नहीं।

कौन जानता था कि पुष्प जैसे उजले चेहरे ने असंख्य वीर फँसाए? सुंदर लाल श्रृंगार ने कितने प्रतिभावान घायल किए!

'पुष्प जैसा उजला चेहरा' स्त्री का फ़ुरोंग फूल जैसा सुंदर, गोरा मुख है। 'सुंदर लाल श्रृंगार' लाल प्रसाधन से और आकर्षक बनना है। 'वीर और प्रतिभावान' बड़े योग्य लोग हैं। उनका भविष्य सौंदर्य में फँसकर बिगड़ा; संसार में ऐसे कितने हैं, कौन गिने?

विरत हो, विरत हो! विपत्ति कहाँ जाकर रुकेगी?

'विरत हो, विरत हो' का स्वर है—अवश्य छोड़ना चाहिए। न छोड़कर अपराध करे तो आने वाली विपत्तियाँ कब थमेंगी? 'हू' कहाँ या कैसे, 'दी' रुकना है।

संसार में अनेक लोग हैं; उनकी श्रेणियाँ समान नहीं।

संसार के लोग बहुत हैं; उनके स्तर और प्रकार एक जैसे नहीं हो सकते।

कुछ बचपन में पिता खोकर अनाथ हुए और सिर मुंडाकर भिक्षु बने।

'हु' सहारा है। बचपन में पिता न होना अनाथ होना, अर्थात सहारे का अभाव है। तब विवश होकर सिर मुंडाकर मंदिर में भिक्षु बनते हैं और देवों की रक्षा का सहारा लेते हैं।

कुछ प्रसिद्ध पर्वतों में मार्ग सीखकर धूल-संसार और लौकिकता छोड़ते हैं।

कुछ संसार की मोह-माया समझकर लौकिक लोगों के साथ रहना नहीं चाहते। इसलिए उनके पास प्रसिद्ध पर्वत खोजने और दीर्घजीवन के लिए अमरत्व का मार्ग सीखने के सिवा कोई राह नहीं रहती।

उचित है कि मन लोहा-पत्थर सा हो, ध्यान-द्वार कसकर बंद रहें।

भिक्षु या दाओवादी साधु बनें तो मन लोहा-पत्थर की तरह दृढ़ होना चाहिए। ध्यान-भवन के द्वार कसकर बंद रखें और स्त्रियों से आना-जाना न करें।

कौन अपेक्षा करता था कि शराब और मांस लेकर पिछले व्रत चुपके तोड़ेंगे?

भिक्षु और दाओवादी साधु व्रत-शील को महत्त्व देते हैं; उन्हें शराब और मांस नहीं लेना चाहिए। अचानक व्रत कैसे तोड़ दिया? यह अप्रत्याशित और वास्तव में समझ से बाहर है।

लुआन और फ़ेंग को उलट-पलटकर आज अपने मन का सुख चाहते हैं।

लुआन और फ़ेंग दोनों पक्षी मनमाने साथी नहीं बदलते; यह स्त्रियों के अव्यवस्थित साथी न बनाने का रूपक है। अब भिक्षु या दाओवादी साधु कामुक होकर भले घर की स्त्रियों को लुभाएँ, पति की हत्या की योजना करें या भाग जाएँ, वैध जोड़ियाँ तोड़कर अनुचित मिलन करें, तो यह लुआन-फ़ेंग को उलटने जैसा है। उनका मन केवल थोड़ी देर का सुख चाहता है।

कमल-सरोवर अपवित्र होता है; स्वर्गीय देव क्रुद्ध होते हैं।

'कमल-सरोवर' मंदिर का कमलों वाला ताल है, पवित्र स्थान। भिक्षु-दाओवादी साधु यहाँ यौन दुराचार करें तो शुद्ध पवित्र भूमि अवश्य दूषित होती है। स्वर्गीय देव क्रुद्ध कैसे न हों?

पाप-सागर में डाल दिए जाते हैं, लंबे पतन में डूबते हैं।

'पाप-सागर' दुख-सागर है। 'सदा' दीर्घकाल, 'गिरना' पतन, 'डूबना' जलमग्न होना। भिक्षु-दाओवादी साधु कमल-सरोवर दूषित करें तो देव उन्हें नरक के दुख-सागर में डालेंगे; लंबे समय डूबे रहेंगे और ऊर्ध्वगति नहीं पाएँगे।

नरक-द्वार पर भिक्षु और दाओवादी साधु बहुत हैं—क्या यह झूठ है? क्या यह विश्वास योग्य नहीं?

'नरक' परलोक की जेल है। पुरानी उक्ति है कि नरक-द्वार पर दंड भोगने वालों में भिक्षु-दाओवादी साधु बहुत हैं। यह कथन मिथ्या नहीं और घटना अधिक विश्वास योग्य लगती है।

हाल के समय में विदेशी हवा और नया चलन मध्यभूमि में घुसे हैं।

'हाल' पिछले कुछ वर्ष। 'विदेशी हवा' पश्चिम की हल्की, उच्छृंखल रीति, 'नया चलन' फैशनेबल वस्तुएँ, नई लहर जैसा है। 'घुसना' आक्रमण, 'मध्यभूमि' चीन की भूमि। आशय है कि हाल में पश्चिम की हल्की और उच्छृंखल बुरी रीति चीन आई और हमें बड़ी हानि पहुँची।

स्त्री-पुरुष रूप बदलते हैं, वस्त्र विचित्र हैं, सत्यनिष्ठा और लज्जा छोड़ दी गई।

'रूप बदलना' रूप अलग होना, 'विचित्र' बेमेल अजीब पोशाक है। स्त्री-पुरुष अपने निष्ठावान और शीलवान मूल रूप को बदलकर अजीब कपड़े पहनते हैं, मनुष्य जैसे नहीं लगते और मान-लज्जा की परवाह नहीं करते।

कुछ अंग-प्रदर्शन से ध्यान खींचते, अव्यवस्थित प्रेम से पाप बोते और विवाह से पहले कौमार्य खोते हैं।

'ध्यान खींचना' गंभीरता छोड़कर बाज़ार में इठलाना है। 'अव्यवस्थित प्रेम' अनुचित प्रेम है: स्त्री-पुरुष बेतरतीब संबंध बनाकर खेल-आनंद को आदत करते और अव्यवस्था तक पहुँचते हैं। 'पाप बोना' पापजनित संतान का कारण बनाना, जैसे विवाह से पहले गर्भ या अनुचित पीढ़ी-संबंध में मर्यादाभंग से गर्भधारण। ये अशुभ संबंध अक्सर असीम दुर्भाग्य लाते हैं। 'कौमार्य खोना' स्त्री-पुरुष का कौमार्य समाप्त होना है। खुले वस्त्रों से शरीर दिखाना, संबंधों की मर्यादा न रखना, मनमाने प्रेम-संबंध करना और विवाह से पहले मर्यादा-विरुद्ध संबंध से निर्मल, शीलवान शरीर खोना इसका आशय है।

कभी विविध उद्योग चलाकर हजारों विचित्र चालें चलते हैं।

'विविध उद्योग' सभी व्यवसाय। 'चलना' बदलना, 'हजारों विचित्र' अनेक अजीब प्रकार, 'चालें' आँखें चकाचौंध करने की युक्तियाँ हैं। आज बहुत लोग सही तरीके से कमाने के बजाय तरह-तरह की चालें चलते हैं—बकरी का सिर टाँगकर कुत्ते का मांस बेचना जैसा छल। बाहर उजला साइनबोर्ड, भीतर छिपा रूपांतरित अश्लील कारोबार; अत्यंत नीच।

बाहर मोहक मुस्कान और लहराती अदाएँ, भीतर दुराचार सिखाने का भँवर; कितने आकांक्षी गिरे, कितने छात्र लौटना भूले।

'वसंत की चमक' मोहक मुस्कान, 'मोहिनी लहर' लुभावनी नज़र, 'दुराचार सिखाना' यौन दुराचार के लिए उकसाना है। छद्म अश्लील व्यवसायों की दुकानें बाहर रंगीन सजावट और सुंदरियों की भीड़ से लुभाती हैं, मानो लोगों को विशाल लहरों और भँवर में फँसाना चाहती हों। भीतर दुराचार का भँवर छिपा है और हानि गहरी है। पता नहीं कितने संकल्पवान और उज्ज्वल भविष्य वाले लोग वहाँ गिरे। युवा छात्र भी विलास-स्थलों में भटकते हैं, पढ़ाई भूलते, यौन अपराध करते और माता-पिता के प्रति कर्तव्य से भी बहुत गिरते हैं।

अनगिनत व्यापार संभव हैं; यौन व्यापार का पाप भारी है। अवीचि के कठोर दंड और संतानों के अशुभ फल तथा बदनामी नहीं रुकते।

'अनगिनत व्यापार' विविध व्यवसाय, 'यौन उद्योग' वेश्यावृत्ति का कारोबार, 'अबी' अवीचि नरक है। कोई भी व्यवसाय करें, पर यह बिल्कुल नहीं, अन्यथा पाप भारी होगा। मृत्यु के बाद अवीचि में बंद होकर कठोर दंड भोगना होगा और संतानों को अशुभ फल मिलेगा। कोई पूछे कि पूर्वज क्या करते थे और उत्तर हो वेश्यालय चलाते थे, तो बदनामी आकाश छुएगी और दस हज़ार वर्ष लज्जा छोड़ेगी।

यह मत कहो कि उन्मुक्त भटकने, मोह में सुध-बुध खोने और सुख तलाशने में आनंद है।

‘भटकना’ स्वच्छंद उच्छृंखलता, ‘मोह में सुध-बुध खोना’ आत्मा का भ्रमित होना, ‘सुख ढूँढ़ना’ उत्तेजना और आनंद तलाशना है। स्त्री-सौंदर्य से बहककर मर्यादा छोड़ना, हर ओर उत्तेजना तलाशना और स्वयं प्रसन्न होना उचित मत कहो।

धन से लेनदेन हो, फिर भी आत्मिक स्वभाव मलिन होता है; कोई देखने-सुनने वाला न हो, अँधेरे कक्ष में अंतःकरण दोष महसूस करता है।

‘लेनदेन’ खरीद-बिक्री, ‘आत्मिक स्वभाव’ आत्मा का मूल स्वभाव, ‘मलिन’ अशुद्ध, ‘अँधेरा कक्ष’ गुप्त स्थान है। आनंद और सौंदर्य की खोज धन का सौदा हो, फिर भी अपना आत्मिक प्रकाश धूल-मैल से ढक जाता है। कोई बाहरी न देखे, तो भी भीतर बेचैनी और मुँह न दिखा सकने का भाव होता है।

अनुचित विचार उठते ही बुरे भाव बढ़ते हैं; व्यक्ति और परिवार निर्मलता खोते, मन के खेत में विषैले अंकुर जड़ पकड़ते हैं।

‘अनुचित विचार’ गलत सोच, ‘बढ़ना’ फैलना, ‘व्यक्ति-परिवार’ स्वयं और घर है। ‘मन का खेत’ चित्त-भूमि, आत्मिक पर्वत; ‘विषैला अंकुर’ विष वाले कर्म-वृक्ष का पाप-अंकुर है। कामुक विचारों के साथ बुरे विचार आते हैं। विवेक खोकर पारिवारिक मर्यादाभंग और अनैतिक कर्म कर बैठता है। व्यक्ति तथा परिवार की निर्मल प्रतिष्ठा अदृश्य रूप से खोती है और अशुद्ध विषैले बुरे वृक्ष की जड़ बोई जाती है, जो आगे की पीढ़ियों को मिलती है।

जन्म-जन्मांतर के पाप-कर्म अब उलझते हैं; कितनी ही विपत्तियाँ गुजरें, पुनर्जन्म का चक्र रुकता नहीं।

‘असंख्य जन्म’ जन्म-जन्मांतर, ‘उलझना’ शरीर से न छूटना, ‘कितनी ही विपत्तियाँ गुजरें’ का अर्थ अनेक विपदाओं से गुज़रना है। जन्म-जन्मांतर पाप-कर्म साथ नहीं छोड़ते; कितनी ही विपत्तियाँ गुजरें, पुनर्जन्म पर पुनर्जन्म कर्मफल भोगता है। कितना भयावह!

सौभाग्य कि भ्रम की राह में दूर नहीं गए; आज सही, कल गलत समझा।

अच्छा है कि गलत राह में अधिक दूर चलने से पहले मन समझ गया कि कल का मार्ग सही नहीं था। आज दूसरा, सही मार्ग अपनाना ही उचित है।

संत-ज्ञानी बनने की आकांक्षा हो तो सुधार में कृपणता न करो।

'कृपणता' कंजूसी और आलस्य है। संत-ज्ञानी पहले गलती सुधारना सिखाते हैं। सुधार में आलस्य या संकोच न करना ही उनके जैसा बनने की आकांक्षा है।

तब आकाश भर अपराध भी एक पश्चात्ताप से मिटते हैं।

'आकाश भर' पूरा आकाश। आशय है कि अपराध आकाश जितने बड़े हों, फिर भी पश्चात्ताप करके नया जीवन अपनाने को तैयार हो तो अपराध का अभिलेख मिट सकता है।

कठिनाई से डरकर अस्थायी आराम चुनो तो हर दिन गहराई बढ़े; स्वाद जानकर भी न छोड़ो, इस वर्ष का सुधार अगले पर टालो।

सुधार कठिन मानकर आराम में दिन गुज़ारें तो अपराध प्रतिदिन गहरा होगा। जान चुके कि कामभोग में विशेष सार नहीं, फिर भी नहीं छोड़ते। कोई इसी वर्ष जल्दी सुधारने को कहे तो कहते हैं कि अगले वर्ष करेंगे।

बार-बार ठोकर खाकर भी नहीं लौटते, देह की चाह खत्म नहीं; ताबूत सदा ढक दे, मृत्यु पर ही रुकते हैं।

कामुक व्यक्ति तरह-तरह की बाधाएँ पाकर भी मन नहीं बदलता, शरीर अभी भी कामासक्त रहता है। मृत्यु आकर ताबूत सदा बंद करे, तभी रुकता है। 'सदा ढकना' ताबूत में हमेशा ढक जाना, फिर जीवित न होना है।

बदनाम नाम सदा फैलता, हजार वर्षों की चर्चा बनता है।

'बदनाम नाम' खराब प्रतिष्ठा है। 'चर्चा का विषय' बात करने का आधार। बदनामी बहते जल की तरह दूर-दूर निरंतर फैलती है। 'हजार वर्षों' से यहाँ एक हजार साल का अर्थ है।

बुरे निशान छिपाना कठिन है; चारों ओर रुचिकर कथा बनकर फैलते हैं।

‘बुरे निशान’ यौन दुराचार के तथ्य, ‘छिपना कठिन’ ढकना मुश्किल होना। पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण के लोग इन बुरे तथ्यों को मज़ेदार समाचार मानकर लगातार चर्चा करते हैं।

पुत्र सद्गुणी न हो तो वंशहीन होना अधिक सुखद।

पुत्र पिता जैसे सद्गुण न रखे, केवल कामुकता जानकर पूर्वजों के सद्गुण नष्ट करे और सदा चिंता तथा क्रोध दे, तो ऐसी संतान न होना उलटे अधिक सुखद कहा गया है।

पर नदी का मार्ग बदलना आसान, जमा स्वभाव बदलना कठिन।

‘मूल स्वभाव’ बनी हुई आदत, ‘बदलना कठिन’ रूपांतरण कठिन है। नदियाँ कभी मार्ग बदलती हैं, पर जम चुका बुरा स्वभाव कठिनाई से बदलता है।

शराब मनुष्य को मतवाला नहीं करती, वह स्वयं मतवाला होता है; सौंदर्य उसे नहीं बहकाता, वह स्वयं बहकता है।

घड़े की शराब स्वयं किसी को नशे में नहीं करती; व्यक्ति पीने के लोभ से नशे में होता है—यह स्वयं करना नहीं तो क्या? दूसरे घर की सुंदर स्त्री उसे बाँधने नहीं आई थी; अपनी कामुकता से उसे लुभाकर बहकता है—यह स्वयं भ्रमित होना नहीं तो क्या?

मैं रूप धारण करके धर्म बताता हूँ, आशा है पुराना बदलकर नया बनाओ।

सम्राट कहते हैं: अब प्रकट रूप से उपदेश देना केवल इसलिए है कि तुम लोग कामुकता की पुरानी दशा बदलो, सद्गुण नए करो और नए मनुष्य बनो।

पवित्र शिक्षा का पालन करो तो मैं सुनिश्चित करूँगा कि तुम जीज़ि की संहिता के पाँचों सौभाग्य पाओ।

सम्राट कहते हैं: इस सूत्र से दूसरों को संयम सिखाओ या स्वयं पालन करो, तो मैं सुनिश्चित करूँगा कि तुम्हें जीज़ि के पाँचों सौभाग्य प्राप्त हों। ‘जी की श्रेणियाँ’

जीज़ि द्वारा बताए 'होंगफ़ान' के नौ विभाग हैं। पाँच सौभाग्य हैं: दीर्घायु, संपन्नता, स्वास्थ्य-शांति, सद्गुण से प्रेम और जीवन का स्वाभाविक पूर्ण अंत।

यदि इससे न हटो और न दूर भटको, तो मैं तुम्हारे लिए तीन प्रचुरताओं का आशीर्वाद सुनिश्चित करूँगा।

'हटना' अलग होना और 'दूर भटकना' दूर तक चले जाना है। सूत्र पालन से हर क्षण न भटको या इसे न छोड़कर सुबह-शाम पढ़ो, तो मैं तीन प्रचुरताओं का आशीर्वाद दूँगा: अधिक पुण्यफल, अधिक आयु और अधिक पुत्र। यह हुआ के सीमा-रक्षक द्वारा याओ को दिया आशीर्वाद है।

सुंदर जेड सा निष्कलंक हो तो त्येनताई से तुम्हें लेने आना निश्चित है।

'सुंदर जेड' अच्छा रत्न, 'निष्कलंक' दोष या दरार न होना। त्येनताई अमरों का निवास है। संसार के स्त्री-पुरुष यौन दुराचार न करें तो निष्कलंक जेड हैं। पुण्य-सद्गुण पूर्ण होने पर अमर और बुद्ध उनका स्वागत करके साथ परम आनंदलोक में ले जाएँगे।

निर्मल रहकर स्वयं भलाई चाहो तो परलोक से स्वागत निश्चित है।

'निर्मल' जल जैसा साफ़, 'भलाई चाहना' अच्छे को अपनाने और बुरे को हटाने का मन है। ऐसा व्यक्ति मृत्यु के बाद परलोक पहुँचे तो प्रत्येक सभागृह के यमराज आसन छोड़कर स्वागत करेंगे।

जल, आग, तलवार और युद्ध से पूरा परिवार बचे; कीट, टिड्डी और महामारी गुप्त रूप से मिटें।

'गुप्त मिटना' अदृश्य रूप से समाप्त होना है। सूत्र पालन करने वाला जल, आग, तलवार और युद्ध की विपत्तियों से बचेगा; कीट, टिड्डी और महामारी भी साथ मिटेंगी।

163

मुड़कर कामुक उन्मत्तों को देखो।

'मुड़कर देखना' पीछे नज़र डालना है। 'उन्मत्त' कामुक और उद्दंड युवक है।

नेत्रहीन और बधिर होना निश्चित ही पिछले जन्म के भारी पाप से है।

‘पाप’ अपराध, ‘पिछला जन्म’ पहले का जीवन। आँख से न देख सकना नेत्रहीनता, कान से न सुन सकना बधिरता है। पाठ कहता है कि पिछले जन्म के अत्यधिक अपराधों के कारण इस जन्म में ऐसा फल मिलता है।[164]

लंगड़े पैर और कटे हाथ अवश्य पिछले जन्म के गहरे कर्म-ऋण हैं।

कहा गया है कि पिछले जन्म के अन्याय और पाप भारी होने से इस जन्म में विकलांगता होती है।

ठंडे मंदिर में उदासी, न कपड़ा न भोजन; टूटी भट्ठी में दयनीयता, भूख और सर्दी।

इतना ही नहीं, ठिकाना नहीं और दिन का भोजन कठिन है। ठंडे मंदिर में आश्रय और टूटी भट्ठी में विश्राम लेकर असीम कष्ट भोगता है। क्या इसे पिछले जन्म की कामुकता का फल न कहें?

चरम गरीबी और जीवन-दुर्दशा में पश्चात्ताप कहाँ से हो?

‘चरम गरीबी’ अंतिम दरिद्रता, ‘दुर्दशा’ जीवन न चल पाना। ‘पश्चात्ताप’ पाप और गलती पर खेद है। यहाँ पहुँचा व्यक्ति पुराने जन्म का फल या पूर्वजों के छोड़े पाप भोगता है। पछताना चाहे भी तो नहीं कर पाता; शुरुआत कहाँ से करे?

तुम चीन में जन्मे-पले हो, अनीति वाले बाहरी लोगों जैसे नहीं।

‘तुम सब’ तुम्हीं, ‘जैसे नहीं’ समान नहीं। ‘चीन’ मूल पाठ में ‘मध्यभूमि’ कहलाता है। ‘मान-यी’ यहाँ उन स्थानों के लिए है जहाँ नैतिक संबंध और सदाचार न जाने जाते हों। आशय है कि चीन में जन्मे और पले हो तो उन असभ्य स्थानों के लोगों की तरह मर्यादा और न्याय से अनजान मत बनो।

इन्हें दर्पण बनाकर सादगी और सत्य की ओर क्यों न लौटो?

‘दर्पण’ आईना, ‘सादगी’ निर्मल सरलता, ‘सत्य’ सही मार्ग है। ऐसे लोगों को आईना बनाकर स्वयं को देखो और सरलता तथा सही मार्ग में लौटो।

ये औषधि-समान वचन मानक डोरी जैसे अपनाने चाहिए।

‘औषधि-पाषाण’ रोग का उपचार करने वाली वस्तु, ‘मानक डोरी’ कारीगर का सीध और समतल जाँचने का साधन है। इस संयम-सूत्र का हर वचन अच्छा है, कामुक मन के रोग का उपचार कर सकता है और सीध बताने वाली डोरी जैसा है।

हर अक्षर मोती है; ऊँची सूनी अटारी में कैसे छोड़ दें?

‘मोती’ मोती और अकीक जैसी बहुमूल्य चीज़ें हैं। ‘रखना’ संग्रह, ‘ऊँची अटारी’ बड़ा खाली भवन जहाँ लोग न जाएँ। सूत्र का हर अक्षर रत्न की तरह बहुमूल्य और तन-मन के लिए हितकारी है। इसे अनुपयोगी मानकर खाली भवन में रख देना और न पढ़ना न मनन करना कैसे उचित?

मैं अल्पज्ञ होकर भी वेदी पर उतर उपदेश देता हूँ, ताकि भ्रमित लोग जागें।

‘छोड़ना’ उपदेश दे जाना है। सम्राट कहते हैं: प्रतिभा-ज्ञान कम होने पर भी आज दैवी लेखन की वेदी पर यह सूत्र देकर लोगों को सिखाता हूँ। उद्देश्य है कि अच्छे वचनों से स्त्री-सौंदर्य में भ्रमित लोग जागें और जल्दी लौटें।

कोई साथ रखकर हृदय में याद करे तो मैं पुण्यफल और आयु बढ़ाऊँगा।

साथ धारण करना ‘पेइफ़ू’, मन में दृढ़ स्मरण ‘झीशिन’ है। सूत्र साथ रखे, सावधानी से मन में याद रखे और हर क्षण न छोड़े, तो मैं उसकी रक्षा कर पुण्य-प्रज्ञा बढ़ाऊँगा और आयु लंबी करूँगा।

कोई बोलकर समझाए और उँगली से दिखाए तो मैं अपराध काटकर दोष मिटाऊँगा।

कोई सूत्र बोलकर दूसरों को सुनाए और उँगली से दिखाकर पढ़ाए, तो उसने पहले यौन अपराध, दोष और कर्म-ऋण किए हों भी, मैं अभिलेख से सब काटकर मिटा सकता हूँ और उसके नया बनने का मार्ग खोल सकता हूँ।

मेरे कथन को निराधार न मानो तो लिंगश्याओ में मैं आभारी हूँ।

‘निराधार बात’ प्रमाणहीन कथन है। लिंगश्याओ सम्राट के निवास-प्रासाद का नाम है। वे कहते हैं: मेरे संयम-सूत्र को निराधार न समझो तो लिंगश्याओ रत्न-प्रासाद में मैं भी तुम्हारा आभार मानूँगा।

यदि मेरे कथन को अनुचित मत न मानो, तो स्वर्ण-प्रासाद में मैं तुम्हारे दोषों की भरपाई करूँगा।

‘अनुचित मत’ गलत विचार, ‘स्वर्ण-प्रासाद’ सर्वोच्च सम्राट का निवास, ‘भरपाई’ भूल की पूर्ति है। मेरा सूत्र गलत न मानो तो, यद्यपि सर्वोच्च सम्राट लोगों के बुरे मन से बार-बार विपत्तियाँ भेजते हैं, मैं स्वर्ण-प्रासाद में तुम्हारे दोष सँभालकर विपत्तियाँ घटाऊँगा या उनसे मुक्ति दिलाऊँगा।

अर्थ पूर्ण सूक्ष्म या स्पष्ट न हो तो प्रतिभाशाली लोगों से सुधार की आशा है।

संयम-सूत्र के विचार कहीं पर्याप्त सूक्ष्म या स्पष्ट न हों, तो ज्ञानी-प्रतिभावान लोग मेरे लिए जाँचकर सुधारें, ताकि वह अधिकतम अच्छा और पूर्ण हो।

शब्द पूरी तरह शुद्ध-सुगठित न हों तो प्रसिद्ध विद्वानों से समीक्षा की प्रार्थना है।

‘शब्द-विन्यास’ सूत्र की वाक्य और शब्द-रचना है। कहीं पूरी तरह परिपक्व और सुंदर न हो तो दूर-पास के प्रसिद्ध साहित्यकार-विद्वान समीक्षा करें और सुधार भी करें, ताकि पूर्णता आए।

ओ संसार के लोगो! सुबह-शाम धूप जलाकर मेरा ताओयुआन ग्रंथ पढ़ते, प्रातः-संध्या साष्टांग प्रणाम करके मेरे हृदय-रक्त के उपदेश पढ़ते हो।

‘सुबह’ और ‘प्रातः’ दिन के आरंभ के, ‘शाम’ और ‘संध्या’ दिन के अंत के शब्द हैं। सम्राट कहते हैं कि लोग सुगंधित धूप जलाते हैं या आदर से प्रणाम करते हैं, उनका ताओयुआन ग्रंथ और हृदय से दिया उपदेश पढ़ते हैं। उनका भलाई की ओर मन वास्तव में सराहनीय है।

तुम मुझे देव मानकर आदर देते हो; मैं तुम्हें शिशु समान कैसे न मानूँ?

नवजात बच्चा हर समय रक्षा चाहता है। संसार के लोग मुझे देव की तरह प्रणाम करते हैं, तो मैं उन्हें शिशु की तरह सुरक्षा न दूँ, यह साहस कैसे करूँ?

दुख-सागर से निकलना चाहते हो तो दुष्ट मोह काटना होगा।

यौन पाप का फल अत्यंत दयनीय है, इसलिए दुख-सागर कहा गया। 'निकलना' बच निकलना है। 'दुष्ट मोह' शराब-सौंदर्य में मन का ऐसा फँसना है जैसे राक्षस लिपटे हों। दुख-सागर से बचना है तो भ्रमपूर्ण विचार और दुष्ट मोह काटो, उन्हें फिर न बाँधने दो।

पुराने दोष ढकना चाहते हो तो कर्मावरण मिटाना होगा।

'पुराने दोष' पिछले जन्म और पिछले दिनों की गलतियाँ हैं। 'ढकना' आच्छादित करना। 'कर्मावरण' भारी पाप का परदा है जो शुभ मन ढकता है। 'मिटाना' समाप्त करना। पुराने दोष ढकना चाहते हो तो जल्दी यौन दुराचार छोड़ो, अधिक शुभ कर्म जोड़ो और पुराने पापों का आवरण हटाओ।

मेरी सलाह न सुनो तो मैं भी क्या करूँ?

मैं अच्छे वचनों से बार-बार समझाता हूँ, पर तुम सुनते नहीं, तो मैं तुम्हारा क्या कर सकता हूँ?

छुरी-पर्वत पर लुढ़को, तेल-कड़ाही में पकते रहो; रक्त-नदी में बैठो, पिघला लोहा निगलो।

अशुभ फल आने पर यमराज प्रेत-सैनिकों को तुम्हें छुरी-पर्वत पर फेंकने का आदेश देते हैं, जहाँ लुढ़कते रहो। तेल-कड़ाही में डालकर पकाया जाता है। कभी रक्त-नदी में डुबोकर ठंड और दुर्गंध सहाते हैं, कभी मुँह में पिघला लोहा भरते हैं, जिससे यकृत, आँत, पेट और फेफड़े उबलते तेल जैसे तपते हैं। ये सभी दुख तुम्हें सहने दिए जाते हैं।

तब मेरा संयम-सूत्र पढ़ने की सोचोगे; डर है कि अग्निगर्त से निकल नहीं पाओगे। तब मेरे संयम-उपदेश पढ़ने की सोचोगे; डर है कि स्वर्ग तक पहुँच नहीं पाओगे।

'अग्निगर्त' छुरी-पर्वत और तेल-कड़ाही की यातना का रूपक है। उससे न निकल पाना अर्थात अब सूत्र पढ़ना चाहकर भी परिणाम न पलट सकना। 'स्वर्गीय प्रांगण' से आशय है कि निर्दोष व्यक्ति मृत्यु के बाद परम आनंदलोक में जाता है, मानो स्वर्ग पहुँचा हो। वहाँ न पहुँच पाना अर्थात अब उपदेश पढ़ना चाहकर भी उच्च लोक तक न पहुँच पाना।

मैं लिंगश्याओ में डरता हूँ कि तुम मुझसे रोष रखोगे; तुम नरक में भयंकर दंड भोगते हो।

सम्राट कहते हैं: तुम नरक में अनेक भयंकर दंड भोगोगे और मुझे लिंगश्याओ में यह डर रहेगा कि पहले चेतावनी न देने का दोष मुझ पर रखोगे।

छूटना चाहो तो छूट न पाओ, जाना चाहो तो जा न पाओ; सुधार देर का, पश्चात्ताप निष्फल।

नरक में दंड भोगते समय भागना चाहो तो नहीं भाग सकते, चलना चाहो तो नहीं निकल सकते। ऐसी दशा में सुधार या पश्चात्ताप करना चाहो तो बहुत देर हो चुकी है।

सब प्रकार के दुख भोगकर पशु बनने भेजे जाते हो; रोएँ और सींग लेकर पक्षी-पशुओं के साथ रहते हो।

नरक के सभी दंड-दुख सहने के बाद बाहर भेजकर पशु बनाते हैं। कभी रोएँ, कभी सींग होते हैं और उड़ने वाले पक्षियों और भूमि पर चलने वाले पशुओं के साथ रहना पड़ता है।

फिर भी छुरी से मृत्यु, कड़ाही में तलना और आग में जलना; कब हिसाब पूरा हो, तभी मनुष्य-जन्म मिले।

‘फिर भी’ पहले जैसा है। पशु-पक्षी बनकर भी छुरी से मरते, कड़ाही में तले या आग में जलाए जाते हैं। अपराध का हिसाब पूरा होने पर ही मनुष्य बन सकते हैं।

मनुष्य-जन्म एक बार खोया तो असंख्य कल्पों तक कठिनाई; क्यों न साधना-पुण्य से बादलों के ऊपर जाओ?

गलती जानकर न सुधारें और मनुष्य-जन्म खो दें तो अनगिनत कल्पों के कष्ट हैं, तुरंत मनुष्य नहीं बन सकते। इससे अच्छा भलाई और सद्गुण संचित करना है, जिससे स्वर्ग और बादलों के ऊपर जा सकते हैं।

आगे की गाड़ी टूटे तो पीछे वाली सावधान हो—यही दीर्घजीवन और चिरयौवन की औषधि है।

‘आगे की गाड़ी’ पहले चलने वाला वाहन, ‘टूटना’ गिरकर टूटना, ‘पीछे की गाड़ी’ बाद में आने वाला वाहन और ‘सावधान’ सतर्कता है। यदि पहले के कामुक लोगों से सीखें, जिनमें से कोई भी अपने जीवन और घर की बर्बादी से नहीं बचा, तो यह पीछे की गाड़ी के आगे वाली से सावधान होने जैसा है। इससे पुण्यफल और आयु बढ़ते हैं, मानो दीर्घजीवन और चिरयौवन की दिव्य औषधि ली हो।

पहले दैवी लेखनी से प्रकट उपदेशों में संदेह और विश्वास मिले थे।

‘पहले’ अतीत है। लोग दैवी लेखन का सभागृह बनाकर गतिशील लेखनी से देवादेश लेते और लोगों को दिखाते थे, पर संसार के लोग आधे संदेह, आधे विश्वास में थे; विश्वास करने वाले कम और न करने वाले अधिक थे।

इसलिए विपत्तियाँ बार-बार आईं, युद्ध ने व्याकुल किया; आकाश-पृथ्वी उलट गए, दसियों लाख लोगों को अनर्थ मिला।

‘विपत्तियाँ’ जल, आग, महामारी आदि हैं। ‘बार-बार आना’ अक्सर होना है। युद्ध भी संसार को अशांत करके व्यवस्था उलट देता है और लाखों-करोड़ों लोग साथ कष्ट पाते हैं। कितना दयनीय! ‘झाओ’ यहाँ दस लाख, ‘यी’ पीछे छोड़ना है—लोगों के लिए अनर्थ छोड़ना।

दीप-मोमबत्तियाँ दमकती हैं, हर ओर वेदी और शिक्षा; नगर-पड़ोस उत्साह से समूहों में पश्चात्ताप और ग्रंथ-वंदन करते हैं।

‘दमकना’ दीपों का प्रकाश, ‘वेदी खोलना’ दैवी लेखन की वेदी बनाना, ‘शिक्षा प्रकट करना’ सुधार के सिद्धांत समझाना है। विपत्तियाँ बार-बार आने से शहर-गाँव के सभी लोग उत्साह से धन देकर वेदियाँ और अनुष्ठान करते हैं, ताकि विपत्ति पलटे।

यह खोई भेड़ के बाद बाड़ सुधारना और स्वर्ग की इच्छा बदलना ही है।

वेदी पर शिक्षा देने का उद्देश्य स्वर्गीय निर्णय पलटना है। यह भेड़ खो जाने के बाद बाड़ की मरम्मत करके अपना मानवीय प्रयत्न पूरा करने जैसा है।

मैं कठिन समझाइश से पीछे न हटकर धर्म कहता और लोगों को पार लगाता हूँ।

सम्राट कहते हैं: मैं परिश्रम से नहीं बचता; ग्रंथ और मर्यादा के नियम बोलकर केवल लोगों को मन बदलकर भलाई अपनाने की ओर ले जाना चाहता हूँ।

इसे मात्र औपचारिक लेख समझो तो विपत्तियाँ तुरंत साथ आती दिखेंगी।

‘औपचारिक’ केवल संख्या पूरी करने वाला, महत्त्वहीन है। सूत्र को महत्वहीन लेख समझकर दूसरों का विश्वास रोकें तो आपदाएँ तत्काल साथ आएँगी, तभी उस मनमानी को चेतावनी मिलेगी।

इसे निरर्थक भ्रम कहो तो बिजली तुरंत शरीर चीरती दिखेगी।

‘निरर्थक’ आधारहीन है। सूत्र को निराधार बताकर लोगों में संदेह और अविश्वास फैलाए तो कड़कती बिजली और उसकी आग तुरंत शरीर को कई भागों में तोड़ देती हैं, जिससे बुराई प्रकट होती है।[165]

मातृसमान करुणा पर आठ अमर हाथ जोड़ें; हृदय के पूरे समर्पण पर पाँच वृद्ध सिर उठाएँ।

सम्राट का यह संयम-सूत्र संसार को समझाने की सच्ची लगन से बना है, जैसे वृद्ध माँ अपने बच्चों से प्रेम करती है। आठ गुफाओं के अमर इसे देखें तो हाथ जोड़कर

प्रशंसा करेंगे। नदी में विहार करने वाले पाँच वृद्ध भी सिर उठाकर इसके धर्म की भलाई और सुंदरता सराहेंगे।

सरल और अल्प होने से न हिचककर सब लोगों को दिखाता हूँ।

'जनसमुदाय' काले बाल वाले लोग हैं। सम्राट कहते हैं: सरल और अल्प इस सूत्र को सबके सामने रखने में संकोच नहीं, क्योंकि सचमुच चाहता हूँ कि तुम लोग लौटकर यौन दुराचार न करो।

बेर-चेस्टनट की छपाई-पट्टियों को सौंपकर गहरी आशा उठती है।

बेर और चेस्टनट दोनों की लकड़ी पर छपाई के पट्टे बनाए जा सकते हैं। सम्राट कहते हैं: सूत्र जनता को देने के बाद आशा है तुम इसे मुद्रणालय को देकर पट्टे बनवाओ, छपवाकर बाँटो और लोगों को समझाओ। लेकिन इतनी गहरी आशा का वास्तविक लक्ष्य है कि लोग शीघ्र इसका पालन करें।

यौन दुराचार से विरत रहने की कविता

स्पष्ट मृत्यु-पथ स्वयं खोजते हो; प्रेम गहरा बताना व्यर्थ, पाप उससे भी गहरा है।

सुंदर रूप को ऐसे देखो मानो वह राक्षस का रूप हो; देव-प्रेतों को धोखा देकर अनुचित मन न उठाओ।

यांगताई के एक स्वप्न में कौन-सा स्थायी आनंद? परलोक के तीन दंड-विधानों की भयावहता सहना कठिन।

दूसरों की पत्नी-बेटियों से दुराचार करने वालों से पूछो: अपनी पत्नी-बेटियों पर वैसा कौन स्वीकार करेगा?

वेनचांग सम्राट का यौन दुराचार से विरत रहने का बहुमूल्य उपदेश

मैं स्वर्ण-प्रासाद के सर्वोच्च अधिपति के आदेश से हर महीने यिन और माओ दिनों में फ़ेंगदू नरकों का निरीक्षण करता हूँ और संसार के अपराधी लोगों के तथ्य जाँचता हूँ। काले अभिलेख पहाड़ जैसे दिखाई देते हैं; सब लोगों के जीवन भर के कर्म-मामले हैं। अनेक प्रकार की बुराइयों के बीच यौन दुराचार के फल के लिए स्वर्गीय विधान सबसे कठोर हैं।

दूसरों की पत्नी-बेटियों से दुराचार करके उनके गृहद्वार को कलंकित करने वाला नरक में पाँच सौ कल्प दुख भोगता है। तब निकलकर खच्चर या घोड़ा जन्म पाता है; पाँच सौ कल्प और बिताकर मनुष्य-जन्म मिलता है, जिसमें वेश्या या अभिनेता बनता है।

जो लोग षड्यंत्र रचकर विधवाओं या भिक्षुणियों के साथ व्यभिचार करते हैं और दूसरों के चरित्र को भ्रष्ट करते हैं, वे नरक में आठ सौ कल्प तक दुःख भोगते हैं। उसके बाद ही वहाँ से निकलकर भेड़ या सूअर के रूप में जन्म लेते हैं और मनुष्य उनका वध करते हैं। फिर आठ सौ कल्प के बाद ही उन्हें मानव शरीर मिलता है; तब वे अंधे, गूँगे या पाँच इंद्रिय-अंगों तथा चार हाथ-पैरों में कमी वाले व्यक्ति होते हैं।[166]

जो स्वयं निम्न पद या स्थिति में होकर अपने से ऊँचे व्यक्ति के साथ, अथवा उम्र में बड़ा होकर अपने से छोटे के साथ अनुचित संबंध बनाते हैं और सामाजिक-नैतिक मर्यादा बिगाड़ते हैं, वे नरक में एक हज़ार पाँच सौ कल्प तक दुःख भोगते हैं। उसके बाद ही वहाँ से निकलकर साँप या चूहे के रूप में जन्म लेते हैं। फिर एक हज़ार

पाँच सौ कल्प के बाद ही मानव शरीर पाते हैं; वे या तो माँ के गर्भ में मर जाते हैं, या गोद में रहने की शैशवावस्था में। अंततः लंबी आयु नहीं पाते।

और जो लोग अश्लील पुस्तकें रचकर दूसरों के मन और आचरण को बिगाड़ते हैं, वे मृत्यु के बाद अवीचि नरक में जाते हैं। जब तक उनकी पुस्तकें पूरी तरह नष्ट नहीं हो जातीं और उन पुस्तकों के कारण बुरे काम करने वालों के पापों का फल पूरा नहीं चुक जाता, तब तक वहाँ से निकलकर प्रेतलोक में जन्म नहीं पा सकते। वहाँ घना अँधेरा है; सूर्य, चंद्रमा और तारों की तीन ज्योतियाँ नहीं दिखतीं। वे हवा को भोजन बनाते हैं और बर्फ़ पर सोते हैं; उनकी त्वचा बुरी तरह फट जाती है। अमर सिद्धों या बुद्धों से भेंट होने पर भी उनका उद्धार नहीं हो पाता। लोग नहीं जानते कि अश्लील पुस्तकें संसार को कितनी भारी हानि पहुँचाती हैं।

संभ्रांत परिवारों की सुशिक्षित सदाचारिणी स्त्रियाँ, कभी हरे झरोखे के पास दिन की निस्तब्धता में, कभी दीपक की नीली-हरी मंद आभा में रात गहराने पर, ऐसी पुस्तक खोलकर पढ़ती हैं। उनका मन और प्राण विचलित हो जाते हैं, वासना की आग रोक नहीं पातीं और तुरंत छिपकर अवैध संबंध बनाने लगती हैं। इससे पतिव्रता स्त्रियों का सतीत्व और अविवाहित कन्याओं की पवित्रता नष्ट होती है। प्रतिभाशाली, पढ़े-लिखे युवक भी ऐसी पुस्तक देखते ही अपनी सोच दूषित कर लेते हैं; कोई हस्तमैथुन पर नियंत्रण नहीं रख पाता, तो कोई लंपट निगाहें डालते हुए अनुचित संबंधों में पड़ जाता है। छोटे स्तर पर यह उनकी मूल यांग-शक्ति को क्षीण कर अल्पायु में मृत्यु का कारण बनता है; बड़े स्तर पर नैतिक संबंधों को कलुषित करता है और उन्हें विद्वज्जनों के समाज में अयोग्य ठहराया जाता है। और जो लोग चतुराई से ऐसे नाटक लिखते, मंच पर उनका अभिनय कराते हैं, अपने कृपापात्र लड़कों को प्रशिक्षण देते हैं और अश्लील हाव-भाव बार-बार देखते हैं, उनके द्वारा कितने लोगों का शुद्ध आचरण बिगड़ता है, गिना नहीं जा सकता। इन सबका मूल कारण अश्लील पुस्तकों की हानि है। कितने दुःख की बात है कि पूर्वजन्मों से मिले

प्रज्ञा के बीज रखने वाले विद्वान हाथ में सात छुन लंबी लेखनी लेकर संसार का उपकार करने और अपने लिए पुण्य संचित करने की नहीं सोचते; वे उलटे अनंत पापकर्म रचते हैं, स्वर्गाधिपति का कोप मोल लेते हैं और चिंता किए बिना स्वयं बर्फ़ीली खाई तथा आग के गड्ढे में उतर जाते हैं। यह अत्यंत दुखद है।

महागुरु यिनगुआंग द्वारा संशोधित ‘शौकांग बाओज्यान’ में शरीर की रक्षा और जीवन सँभालने के लिए संयम की तिथियों तथा स्वर्ग, पृथ्वी और मनुष्य से संबंधित निषिद्ध दिनों की तालिका (TXT फ़ाइल में यह तालिका व्यवस्थित नहीं की जा सकती; कृपया इसे इंटरनेट पर खोजें। यह तालिका बहुत महत्त्वपूर्ण है, विशेषकर उन माता-पिताओं के लिए जो पुण्य और प्रज्ञा दोनों से संपन्न संतान चाहते हैं)।[167]

‘परलोक के अटल विधान’ सचमुच परलोक के प्रशासन द्वारा प्रस्तुत की गई पुस्तक है और उसके प्रसार को उसी की कृपा-शक्ति मिली है — ‘परलोक के अटल विधान’ से जुड़ी मेरी कहानी[168]

मैं बहुत समय तक यह तय नहीं कर पाया कि अपने और ‘परलोक के अटल विधान’ के बीच घटी इस छोटी-सी कहानी को लिखूँ या नहीं। मैं एक साधारण मनुष्य हूँ; त्रिधातु के भीतर की बातों और छह गतियों की वास्तविकता की गहराई नहीं जानता। फिर यह अनुभव मेरी अपनी कल्पना से भी परे था। पहले मैं केवल दूसरों की कहानियाँ पढ़ता था। ‘शौकांग बाओज्यान’, ‘युहाई हुइकुआंग’ और ‘वानशान श्येनज़ी’ जैसी पुस्तकों में बहुत लोगों के परलोक से जुड़े ऐसे अनुभव दर्ज हैं। मेरा यह अनुभव विशेष रूप से ‘परलोक के अटल विधान’ से जुड़ा है और आगे के मेरे जीवन की स्थिति से भी संबंध रखता है; इसलिए मैं अब तक सारी बात खुलकर कहने का साहस नहीं कर पाया। पुस्तक का परिचय देते समय आस-पास के लोगों को बस थोड़ा-सा बताया था। लेकिन जब मैंने देखा कि कई लोगों में ‘परलोक के अटल विधान’ के प्रति गहरा पूर्वाग्रह है, तो लगा कि मुझे यह बात कहनी चाहिए। अब भी थोड़ा डर है और नहीं जानता इसका क्या परिणाम होगा; फिर भी मैं केवल अपने अनुभव को जैसा घटा वैसा बताना चाहता हूँ। आपकी सोच या रुख कुछ भी हो और आप उसे जैसे भी देखें, त्रिधातु में जो घटा है वह तथ्य ही रहता है, सबके लिए तथ्य। मेरी आशा बस इतनी है कि लोग जानें: ‘परलोक के अटल विधान’ का स्रोत सचमुच असाधारण है; यह वास्तविक है, मिथ्या नहीं। मुझे लगता है बुद्धधर्म प्राणियों के सामने तथ्य का सत्य खोलता है, तथ्यों को नकारता नहीं। ‘वज्रच्छेदिका सूत्र’ स्पष्ट कहता है: “जो अनुत्तर सम्यक् संबोधि का चित्त जगाते हैं, वे धर्मों को पूर्ण विनाश का रूप नहीं बताते।” कुछ लोग बुद्धधर्म का बड़ा डंडा लहराकर स्वयं

को न्यायाधीश मानते हैं; पर यदि आप तथ्य नहीं समझते, तो बुद्धधर्म को भी वास्तव में नहीं समझते! आप द्वैतातीत दृष्टि से सत्य को देख नहीं सकते और अभी साधारण मनुष्य ही हैं; फिर अपनी आँख, कान, नाक, जीभ, शरीर और मन की सीमित धारणाओं के आधार पर न्यायाधीश बनने का साहस कैसे करते हैं? क्या यह अत्यंत अहंकार नहीं है? स्वयं को और दूसरों को भ्रम में डालने से जो पापकर्म बनता है, क्या आपने उसके बारे में कभी सोचा है?

दो महीने पहले, यानी मार्च के मध्य में, मुझे एक बौद्ध ग्रंथ-वितरण केंद्र में 'परलोक के अटल विधान' की एक प्रति धर्म-संबंध से मिली। शायद पहले भी उसे देखा था और अच्छा भी लगा था, लेकिन कुछ विचारों के प्रभाव में हमेशा यही मानता रहा कि यह बस भलाई की सीख देने वाली पुस्तक है; इसलिए ध्यान से नहीं पढ़ा। इस बार वितरण केंद्र में उसे देखते हुए लगा कि इसकी बातें बहुत अच्छी हैं। कम-से-कम इससे मुझे अपने जीवन के कई वर्ष पहले के एक दौर को समझने में सहायता मिली: जैसे मेरी आत्मा खो गई हो; सड़क पर चलते समय दस से कुछ अधिक मीटर दूर की कोई वस्तु साफ़ नहीं दिखती थी, मुझमें बिल्कुल भी ऊर्जा नहीं रहती थी और मैं धुँधली, उनींदी अवस्था में था। ऐसा लगता था मानो केवल शरीर चल रहा हो और मन में साधारण-सी प्रतिक्रियाएँ भर बची हों। शायद यह यौन दुराचार के बुरे कर्म का ही फल था—मेरी सांसारिक आयु पूरी होने से पहले ही तीन हुन-आत्माओं को पकड़कर ले लिया गया होगा![169]

पुस्तक घर लाने के बाद मैंने उसे फिर ध्यान से पढ़ा। मुझे वह सचमुच अच्छी लगी। वर्षों के अपने अनुभव से मुझे लगा कि यौन दुराचार के परिणाम वास्तव में बहुत बुरे और भयावह होते हैं। मैंने सोचा, यदि स्थानीय क्षितिगर्भ साधना-स्थल को कुछ और प्रतियाँ भेज सकूँ ताकि अधिक लोग पढ़ें, तो कितना अच्छा होगा। यह विचार यूँ ही आया और चला गया; मैंने इसे कोई विशेष बात नहीं माना। फिर काम किया, खाना खाया और सो गया। लेकिन उसी रात सपना आया कि मैं पुस्तकों का

एक ढेर उठाकर क्षितिगर्भ तानलिन ले जा रहा हूँ। साथ ही एक आवाज़ ने मुझसे कहा: “यदि तुम ‘परलोक के अटल विधान’ की एक ढेरी क्षितिगर्भ तानलिन पहुँचाओगे, तो तुम्हें अनंत जीवन मिलेगा।” जागने पर यह विचित्र और दिलचस्प लगा। दिन में आया एक हल्का-सा विचार, जिसे मैं भूल भी गया था, सपने में इस तरह क्यों आया? अनंत जीवन क्या है? फिर भी, क्षितिगर्भ तानलिन को पुस्तकों का ढेर देना अच्छी बात तो है; इसे कर ही देना चाहिए! काम पर पहुँचने के बाद मैंने कंप्यूटर पर शांगगुआन युहुआ का ब्लॉग खोजा और फिर ‘शानशिन लियानशिन झेंगफ़ा शेंगहुओ’ वेबसाइट मिली। लेकिन अच्छे काम में भी कठिनाइयाँ आती हैं। मेरा इंटरनेट बैंकिंग प्रमाणपत्र समाप्त हो गया था। ‘परलोक के अटल विधान’ के साथ मैंने ‘सिबेई दिज़ांग बाओचान’ आदि ग्रंथ भी मँगाए, जिन्हें मैं बहुत समय से खोज रहा था; ‘परलोक के अटल विधान’ की प्रतियाँ धर्म-संबंध के लिए निःशुल्क थीं। प्रमाणपत्र किसी तरह नवीनीकृत नहीं हो रहा था; बार-बार समय मेल नहीं खाने की समस्या आती। बैंक के ग्राहक सेवा कर्मियों से कई बार संपर्क कर प्रयोग किया, पर बात नहीं बनी। हम औद्योगिक क्षेत्र में थे, दिन में शहर से दूर; बार-बार प्रयास करना बहुत झंझट भरा था। यह सब मैं उस सपने के कारण नहीं कर रहा था—सच तो यह है कि मैंने सपने को उस समय गंभीरता से लिया ही नहीं था। बस सोचा कि जब एक भला काम करने का निश्चय किया है, तो थोड़ी बाधा आते ही छोड़ नहीं देना चाहिए। इसलिए बाद में विशेष रूप से शहर जाकर बैंक के कार्यालय में प्रमाणपत्र नवीनीकृत कराया। फिर दफ़्तर लौटकर अंततः काम पूरा किया और तीन पेटी पुस्तकें मँगाईं, जिनमें ‘परलोक के अटल विधान’, ‘हुइआन मिंगदेंग लेख-संग्रह का चयनित संस्करण’ और ‘सिबेई दिज़ांग बाओचान’ आदि थीं। पुस्तकें आ गईं तो मैं एक ढेर क्षितिगर्भ तानलिन पहुँचा आया। पहले वाला सपना मैंने कोई ख़ास बात नहीं माना था, न ही उसे सच समझा; लगभग भूल चुका था। मैं इसे केवल एक अच्छा काम मानकर कर रहा था। लेकिन उसी रात फिर एक सपना आया। उसमें दो सरकारी दूत जैसे व्यक्ति थे। उनके चेहरे लाल-काले थे, माथे पर कई-कई झुर्रियाँ

थीं और चेहरे मोटे तौर पर चौकोर थे। वे ठीक 'युली बाओछाओ' में दिखाए गए परलोक के दूतों जैसे लगते थे। देखते ही लगा कि वे जीवित संसार के मनुष्य नहीं हैं। उनमें नरमी या अपनापन नहीं था; उनका पूरा भाव "सरकारी काम" और "निरपेक्ष कठोरता" का था, मानो कोई भावना उन्हें प्रभावित न कर सके और वे केवल नियम के अनुसार काम करते हों। एक तीसरा व्यक्ति भी था, जो शायद उस इलाके का प्रभारी था—मुझे नहीं पता वह भूमि-देवता था या चूल्हे का देवता। दोनों दूतों ने मुझे एक बड़ा काग़ज़ दिया। वह मेरी बातों के अभिलेखों से पंक्ति-दर-पंक्ति भरा था। हर पंक्ति के बिल्कुल बाएँ मेरा नाम था, बहुत साफ़ अक्षरों में; दाएँ विवरण लिखा था। उन तीनों के सामने ही मैंने अभिलेख वाला काग़ज़ फाड़ना शुरू कर दिया, उसे पट्टियों में फाड़ने लगा। मगर काग़ज़ जैसे बहुत मज़बूत था और आसानी से नहीं फटता था। तभी वह स्थानीय प्रभारी जैसा व्यक्ति दोनों दूतों को एक ओर कुछ सलाह-मशविरा करने ले गया। मैं काग़ज़ फाड़ता रहा। कुछ देर बाद वे लौटे और मुझसे उसे आग लगाकर पूरी तरह जला देने को कहा, मानो वे मेरी आशंका हमेशा के लिए मिटा देना चाहते हों। काग़ज़ जल जाने पर दोनों दूत उठे, एक बार मुझे देखा और उसी दफ़्तरी, अडिग, बिना अपनत्व या रियायत वाले चेहरे के साथ चले गए। जागकर मुझे बड़ी हैरानी हुई—मैंने ऐसा सपना देखा था! वह इतना वास्तविक दृश्य अभी-अभी घटा था! मैं त्रिधातु की भीतरी बातों या छह गतियों में पुनर्जन्म की वास्तविकता की गहराई नहीं जानता था, इसलिए बाहर कुछ कहने का साहस नहीं हुआ। लेकिन मेरे लिए यह स्पष्ट हो गया कि 'परलोक के अटल विधान' सचमुच परलोक के प्रशासन द्वारा प्रस्तुत और उसके प्रसार के लिए समर्थित है। परलोक का प्रशासन वचन का पक्का है; जो कहता है, वह करता है। 'परलोक के अटल विधान' में लिखा है: "जो कोई परलोक के विधान का समर्थन करेगा, उसे स्वर्ग में उच्चतर गति प्राप्त होगी और नरक की सूची से उसका नाम हटा दिया जाएगा।" और पुस्तक में यह भी सचमुच ठीक ही कहा गया है: "यह मत समझिए कि कोई अत्यंत निजी

काम करने पर किसी को पता नहीं चलता। भलाई या बुराई का एक विचार भी सीधे परलोक के शासन की सत्कर्म-दुष्कर्म लेखा-पुस्तिका से जुड़ जाता है।"

मैं सोच रहा था कि बात यहीं समाप्त हो गई, लेकिन कुछ ही समय बाद उसी दूत से फिर भेंट हो गई। इस बार वह मेरे पास नहीं आया; मुझे नीचे बुलाया गया। पहले एक बीच की बात बताता हूँ। दो वर्ष पहले मैं जिउहुआ पर्वत गया था और शीत्येन मंदिर में ठहरा। सामान रखकर मुख्य सभागार में बुद्ध को प्रणाम करने गया। प्रणाम करके जब द्वार से निकल रहा था, तो दरवाज़े के पास मेज़ के पीछे बैठी एक वृद्ध आदरणीय भिक्षुणी ने मुझे रोका। उन्होंने पूछा: "तुम घर पर 'वज्रच्छेदिका सूत्र' पढ़ते हो, न?" मेरी कमीज़ की अंदर वाली ऊपरी जेब में उसकी छोटी प्रति थी। मैंने कहा, "हाँ, मैं इसे अपने साथ रखता हूँ," और बोलते-बोलते निकाल भी ली। उन्होंने कहा, "मैं यह नहीं कह रही कि तुम इसे साथ रखते हो; मैं कह रही हूँ कि तुम इसे पढ़ रहे हो—कम-से-कम तीन महीने से।" मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। पहली बार किसी को इस तरह बोलते देखा था, और सचमुच मैं उस अवधि में यह सूत्र पढ़ रहा था। मैंने साथ आए अपने बेटे, भतीजे और भतीजी को भी बुलाया। भिक्षुणी ने थोड़े लेकिन सारगर्भित शब्द कहे और बातें बिल्कुल सही निकलीं; उन सबको बहुत प्रोत्साहन मिला। शाम को जब मैं फिर मुख्य सभागार पहुँचा, तो एक युवती को बुद्ध के सामने घुटने टेककर 'क्षितिगर्भ सूत्र' पढ़ते देखा। उसकी माँ जैसी लगने वाली एक महिला द्वार पर खड़ी थी। पूछने पर पता चला कि वे चीन के उत्तर-पूर्व से आई थीं। वृद्ध भिक्षुणी ने उनकी स्थिति भी ठीक-ठीक बताई थी, इसलिए युवती ने संकल्प किया कि यात्रा के दौरान पर्वत पर ही 'क्षितिगर्भ सूत्र' पढ़ेगी। भिक्षुणी अत्यंत करुणामयी थीं। उन्होंने बिना ऊबे हमें बार-बार समझाया और साधना गंभीरता से करने को कहा। उन्होंने मेरी पत्नी को भी जीवन, परिवार और काम-धंधे से लेकर पिछले जन्म और इस जन्म तक कई तरह से समझाया। हमें अनेक सूत्र, जप-मालाएँ और आभूषण आदि दिए। मेरी पत्नी बहुत प्रभावित हुई और लौटने के बाद कुछ

समय तक ‘क्षितिगर्भ सूत्र’ ध्यान से पढ़ती रही। पर्वत से उतरने से पहले मैंने भिक्षुणी से पूछा कि क्या भविष्य में मेरे सामने कोई विपत्ति या कठिनाई आएगी। उन्होंने ‘क्षितिगर्भ सूत्र’ की एक प्रति और क्षितिगर्भ की प्रतिमा मुझे देकर कहा: “कुछ मत पूछो। काम के दिनों में समय नहीं मिलता तो शनिवार और रविवार को घर पर रोज़ ‘क्षितिगर्भ सूत्र’ का एक पूरा पाठ किया करो; सब ठीक होगा।” लौटने के बाद कुछ समय तक मैंने ऐसा किया, फिर आलसी पड़ गया। लेकिन जब भी उनका असाधारण करुणामय चेहरा, बार-बार दी गई सीख और आग्रह याद आते, मुझे बहुत लज्जा होती। लगभग पिछले वर्ष के उत्तरार्ध में मैंने सप्ताहांत के हर दिन एक पूरा ‘क्षितिगर्भ सूत्र’ पढ़ना फिर शुरू किया और सामान्यतः इस नियम पर कायम रहा।

अब मुख्य बात पर लौटूँ। ‘परलोक के अटल विधान’ की प्रतियाँ धर्म-संबंध से बाँटने और वह सपना देखने के कुछ दिन बाद मैं साधना में थोड़ा आलसी और ढीला हो गया था—पुरानी आदतें सचमुच बहुत गहरी हैं! कई बार जब ‘क्षितिगर्भ सूत्र’ पढ़ना चाहिए था, नहीं पढ़ा; हालाँकि अपने तय किए हुए सुबह के पाठ जारी रखे। फिर एक रात सोने के बाद लगा कि मैं नीचे उतरकर एक कमरे में पहुँचा हूँ। उसमें लंबी आयताकार बैठक-मेज़ थी और मानो बैठक चल रही थी। सामने बीच में जो अध्यक्ष-सा बैठा था, वह पिछली बार सपने में मिले दूत जैसा लगा। मैं भीतर गया तो उसके चेहरे पर वही निष्पक्ष, बहुत गंभीर और नियम के प्रति सावधान भाव था। उसने पूछा: “इन दिनों सूत्र क्यों नहीं पढ़ते?” उस माहौल में मैंने अनायास सच बता दिया: “सप्ताहांत की दोपहर को ‘क्षितिगर्भ सूत्र’ नहीं पढ़ा, लेकिन सुबह ‘समंतभद्र की दस महान प्रतिज्ञाएँ’ और ‘वज्रच्छेदिका सूत्र’ पढ़ता रहा हूँ।” अचानक उसके चेहरे पर प्रसन्नता की उजली मुस्कान आ गई, जिसमें संतोष झलक रहा था। मैं अत्यंत विस्मित हुआ। मेरी धारणा में उसके चेहरे पर ऐसी अभिव्यक्ति आना अत्यंत दुर्लभ लगता था—मानो रात के आकाश में सूर्य दिखाई दे! केवल मेरे बौद्ध

सूत्र पढ़ने से ही वह इतना प्रसन्न हो गया। सोचा नहीं था कि यहाँ सूत्र-पाठ को तुरंत इतनी अलग दृष्टि से देखा जाएगा। इसके बाद ऐसा लगा कि उसने 'परलोक के अटल विधान' की प्रतियाँ बाँटने का लेखा भी फिर देखा; कुल मिलाकर वह उससे काफ़ी संतुष्ट लग रहा था।

मुझे लगा कि 'परलोक के अटल विधान' को पढ़ने और फैलाने से सीधे अपने जीवन में बहुत ठोस लाभ मिलते हैं, जिन्हें कितने भी पैसे देकर नहीं खरीदा जा सकता। इसलिए मैंने सोचा कि अपने भाइयों और बहनों को भी इसे पढ़ने और बाँटने दूँ, ताकि उन्हें भी यह दुर्लभ लाभ मिले। मगर हम भाई-बहन अलग-अलग जगह रहते थे। मैंने सोचा कि कुछ प्रतियाँ अपने माता-पिता को दे दूँ; वे जिस बेटे या बेटी के घर जाएँ, वहाँ कुछ पहुँचा देंगे। उस समय माता-पिता मेरे बड़े भाई के घर रहते थे। शुक्रवार की दोपहर लगभग दो बजे के कुछ बाद यह विचार आया और मैंने उनसे मिलने का निर्णय कर लिया। रेल से दूसरे शहर गया और शाम लगभग छह बजे के कुछ बाद बड़े भाई के घर पहुँचा। भीतर जाकर चकित रह गया: मेरा बड़ा भाई अपने घर में नहीं था, लेकिन बाकी सब भाई-बहन बैठक में एक साथ बैठे थे! पूछने पर सब बोले, "तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं!" मैंने अपने छोटे भाइयों में से बड़े से पूछा, "तुम यहाँ कैसे?" वह इस शहर में काम नहीं करता था। उसने कहा, "दोपहर की बैठक अचानक रद्द हो गई, तो गाड़ी चलाकर माता-पिता से मिलने आ गया।" मैंने छोटी बहन से पूछा, "तुम यहाँ कैसे?" उसने कहा, "दोपहर में कुछ काम से निकली थी; काम समाप्त हुआ तो पाँच बजने वाले थे, तो कार्यालय लौटने के बजाय माता-पिता से मिलने आ गई।" फिर सबसे छोटे भाई से पूछा, "तुम यहाँ कैसे?" उसने कहा, "छिंगमिंग पर्व पर माता-पिता अपने पुराने घर नहीं जा सके, इसलिए मैं गया था। अभी दोपहर को लौटा हूँ और पहले उनसे मिलने आया हूँ।" हम भाई-बहन सामान्यतः बहुत कम एक साथ जुटते हैं। किसी के घर कोई आयोजन हो और सब आएँ, तब भी लगभग कभी ऐसा नहीं होता कि सब एक ही शिचन की अवधि में

पहुँच जाएँ। हमने थोड़ी बातचीत की और सबने ‘परलोक के अटल विधान’ की कुछ प्रतियाँ धर्म-संबंध से ले लीं। फिर सबको अपने-अपने घर के काम थे, कुछ को बाहर के शहर भी लौटना था, इसलिए जल्दी-जल्दी विदा हो गए। मुझे लगा कि पुस्तक उनके हाथों तक इतनी शीघ्र पहुँच सकी, तो मेरे उन्हें पढ़ने और बाँटने का विचार आते ही बुद्धों, स्वर्ग-पृथ्वी और देवताओं की शक्ति ने इसे अवश्य सहारा दिया होगा!
170

कुछ दिन बाद मेरी छोटी बहन ने अचानक फ़ोन करके पूछा कि ‘परलोक के अटल विधान’ कहाँ छपती है; उसका बेटा इसके मुद्रण के लिए दान देना चाहता था। वह कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के तीसरे वर्ष में था और इतना बेलगाम छोटा दबंग था कि उसे सँभालना कठिन था। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ और कारण पूछा। बहन ने कहा: “यह पुस्तक सचमुच अच्छी है। मैं घर में इसे अकेली पढ़ती थी और बच्चे से पढ़ने को नहीं कहा था। पर पता नहीं कब उसने ख़ुद पढ़ ली। अचानक मुझसे बोला, ‘ माँ, मैंने पाप किया है।’ मैंने पूछा क्या हुआ। उसने कहा, ‘पहले मैं मज़े के लिए जान-बूझकर बहुत-सी चींटियों को चोट पहुँचाता था। अब अपना सारा पैसा ‘परलोक के अटल विधान’ छापने के लिए दान कर दूँगा। बुद्ध के सामने संकल्प करूँगा और बुद्धों तथा बोधिसत्त्वों से प्रार्थना करूँगा कि उनकी कृपा से उन छोटे जीवों को बेहतर गति मिले जिन्हें मैंने चोट पहुँचाई थी।’” बहन ने आगे कहा: “इस पुस्तक ने सचमुच बहुत बड़ा पुण्य किया और हमारी बड़ी मदद की; जिस लड़के को हम सँभाल नहीं पा रहे थे, उसमें इतना परिवर्तन आ गया!” मेरा यह छोटा भांजा बुद्धिमान तो था, लेकिन बहुत मनमानी करता और मुसीबत खड़ी करता था। उसे अनुशासित करना कठिन था और बड़े लोग उससे परेशान रहते थे। वह अपना पैसा ख़ुद ख़र्च करता था, किसी बड़े को उसमें दख़ल तक नहीं देने देता था। इस बार उसने अपने मन से ऐसा संकल्प किया, अपना पैसा समेटकर पूरा दान दे दिया और अपने लिए कुछ भी नहीं रखा।

'संयुक्त आगम' में एक उपमा है: "जितनी मिट्टी नाखून पर ठहरती है, उतने ही प्राणी मनुष्यगति में होते हैं; जितनी मिट्टी पूरी धरती पर है, उतने ही अमनुष्य प्राणी होते हैं।" 'निर्वाण सूत्र' में भी लिखा है कि एक बार बुद्ध ने धरती से थोड़ा-सा धूलकण उठाकर आदरणीय कश्यप से पूछा: "मेरे हाथ पर यह धूल अधिक है, या दसों दिशाओं के संसारों की सारी धरती की मिट्टी?" कश्यप ने कहा: "निश्चय ही दसों दिशाओं के संसारों की मिट्टी अधिक है।" बुद्ध ने कहा: "जो मानव शरीर पाकर शुभ धर्म का आचरण करते हैं, वे मेरे हाथ की धूल जितने दुर्लभ हैं; जिन्हें मानव शरीर नहीं मिला और जो बुरे कर्म करते हैं, वे दसों दिशाओं की धरती की मिट्टी जितने अधिक हैं।" बौद्ध सूत्रों में यह भी कहा गया है: "मानव शरीर पाने वाले नाखून पर जमी मिट्टी जैसे हैं; मानव शरीर खोने वाले पूरी धरती की मिट्टी जैसे।" अनादि काल से हमने सचमुच नरक में ले जाने वाले अनगिनत कर्म किए हैं। मुझे लगता है कि जो व्यक्ति इस समस्या का सामना नहीं कर सकता, वह स्पष्ट चेतना से नहीं सोच रहा। 'परलोक के अटल विधान' कोई ऐसी पुस्तक नहीं है जिसे किसी ने दूसरी पुस्तकों की सामग्री बटोरकर लिखा हो; यह किसी की कल्पित रचना भी नहीं है। आदरणीय वरिष्ठ सहसाधिका शांगगुआन युहुआ केवल कथावाचिका हैं—घटी हुई बातों की कथावाचिका—और एक दायित्व पूरा कर रही हैं। ये विचलित कर देने वाले तथ्य हमारे सामने शुभ कर्म करने, नैतिक नियमों का पालन करने और बुद्धधर्म की साधना की वास्तविक आवश्यकता, तात्कालिकता और महत्त्व प्रकट करते हैं।
171

अंत में, कुछ लोग 'परलोक के अटल विधान' में कही गई इन बातों को स्वीकार नहीं करते—"पवित्र माता मरियम अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्व का एक रूप हैं" और "मैंने बोधिसत्त्व को जिस रूप में प्रकट होते देखा, वह कैथोलिक पवित्र माता मरियम की करुणामयी आकृति थी। परलोक के न्यायाधिकारी ने कहा कि पवित्र माता मरियम वास्तव में अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्व के अनेक प्रकट रूपों में से एक हैं।"

कुछ लोग तो इन्हें “गलत” भी कहते हैं। मेरा विचार है कि वरिष्ठ सहसाधिका शांगगुआन युहुआ अपने अनुभव की घटनाएँ बता रही हैं। उन्होंने कुछ गलत नहीं कहा; बात यह है कि आप नहीं समझते। ‘वज्रच्छेदिका सूत्र’ में कहा गया है—“हे सुभूति, तुम्हारा क्या विचार है? क्या तथागत को शारीरिक रूप देखकर पहचाना जा सकता है?” “नहीं, भगवन्! शारीरिक रूप से तथागत को नहीं देखा जा सकता। क्यों? तथागत जिस शारीरिक रूप की बात करते हैं, वह वास्तव में शारीरिक रूप नहीं है।” बुद्ध ने सुभूति से कहा: “जितने भी रूप हैं, वे सब मिथ्या हैं। यदि कोई सभी रूपों को रूप नहीं समझकर देखे, तो वह तथागत को देखता है”; फिर पूछा: “हे सुभूति, तुम्हारा क्या विचार है? क्या बुद्ध को पूर्ण रूपमय शरीर से देखा जा सकता है?” “नहीं, भगवन्! तथागत को पूर्ण रूपमय शरीर से नहीं देखना चाहिए। क्यों? तथागत कहते हैं: पूर्ण रूपमय शरीर, वास्तव में पूर्ण रूपमय शरीर नहीं है; इसे पूर्ण रूपमय शरीर कहा जाता है।” “हे सुभूति, तुम्हारा क्या विचार है? क्या तथागत को सभी लक्षणों की पूर्णता से देखा जा सकता है?” “नहीं, भगवन्! तथागत को सभी लक्षणों की पूर्णता से नहीं देखना चाहिए। क्यों? तथागत कहते हैं: सभी लक्षणों की पूर्णता वास्तव में पूर्णता नहीं है; इसे सभी लक्षणों की पूर्णता कहा जाता है।” “यदि कोई मुझे रूप से देखना चाहे या ध्वनि के सहारे खोजे, तो वह गलत मार्ग पर चलता है और तथागत को नहीं देख सकता।” तो बताइए, बुद्ध को किस रूप में प्रकट होना चाहिए और किस रूप में नहीं? किस रूप में प्रकट होने पर ही उसे बुद्ध का प्रकट होना कहेंगे? आपके अपने मन में ‘मैं’ और ‘दूसरा’ का भेद तथा आसक्ति है। आप संसार के असंख्य रूपों को पकड़कर उनमें भेद करते हैं, असत्य को सत्य और मिथ्या को अस्तित्ववान मानते हैं और विनाशवाद की चरम दृष्टि उत्पन्न करते हैं। फिर आप कैसे मनमाने ढंग से यह निर्णय कर सकते हैं कि बुद्धों और बोधिसत्त्वों की समस्त धर्म-तत्त्वों के संबंध में परम पूर्ण और निर्बाध अलौकिक सामर्थ्य तथा प्रज्ञा किसी विशेष रूप में प्रकट नहीं हो सकती?[172]

‘सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र’ के ‘अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्व का सर्वव्यापी द्वार’ अध्याय में स्पष्ट कहा गया है: “बुद्ध ने अक्षयमति बोधिसत्त्व से कहा: ‘हे सज्जन पुरुष! यदि किसी देश के प्राणियों का उद्धार बुद्ध के रूप में प्रकट होने से हो सकता है, तो अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्व बुद्ध के रूप में प्रकट होकर उन्हें धर्म का उपदेश देते हैं। यदि किसी का उद्धार प्रत्येकबुद्ध के रूप में प्रकट होने से हो सकता है, तो वे प्रत्येकबुद्ध के रूप में प्रकट होकर धर्म का उपदेश देते हैं। यदि किसी का उद्धार श्रावक के रूप में प्रकट होने से हो सकता है, तो वे श्रावक के रूप में प्रकट होकर धर्म का उपदेश देते हैं। यदि किसी का उद्धार ब्रह्मा के रूप में प्रकट होने से हो सकता है, तो वे ब्रह्मा के रूप में प्रकट होकर धर्म का उपदेश देते हैं। यदि किसी का उद्धार शक्र देवेन्द्र के रूप में प्रकट होने से हो सकता है, तो वे शक्र देवेन्द्र के रूप में प्रकट होकर धर्म का उपदेश देते हैं। यदि किसी का उद्धार ईश्वर देव के रूप में प्रकट होने से हो सकता है, तो वे ईश्वर देव के रूप में प्रकट होकर धर्म का उपदेश देते हैं। यदि किसी का उद्धार महेश्वर देव के रूप में प्रकट होने से हो सकता है, तो वे महेश्वर देव के रूप में प्रकट होकर धर्म का उपदेश देते हैं। यदि किसी का उद्धार महान दिव्य सेनापति के रूप में प्रकट होने से हो सकता है, तो वे महान दिव्य सेनापति के रूप में प्रकट होकर धर्म का उपदेश देते हैं। यदि किसी का उद्धार वैश्रवण के रूप में प्रकट होने से हो सकता है, तो वे वैश्रवण के रूप में प्रकट होकर धर्म का उपदेश देते हैं। यदि किसी का उद्धार छोटे राज्य के राजा के रूप में प्रकट होने से हो सकता है, तो वे छोटे राज्य के राजा के रूप में प्रकट होकर धर्म का उपदेश देते हैं। यदि किसी का उद्धार श्रेष्ठी के रूप में प्रकट होने से हो सकता है, तो वे श्रेष्ठी के रूप में प्रकट होकर धर्म का उपदेश देते हैं। यदि किसी का उद्धार गृहस्थ साधक के रूप में प्रकट होने से हो सकता है, तो वे गृहस्थ साधक के रूप में प्रकट होकर धर्म का उपदेश देते हैं। यदि किसी का उद्धार राजकीय अधिकारी के रूप में प्रकट होने से हो सकता है, तो वे राजकीय अधिकारी के रूप में प्रकट होकर धर्म का उपदेश देते हैं। यदि किसी का उद्धार ब्राह्मण के रूप में प्रकट होने से हो सकता है, तो वे ब्राह्मण के रूप में प्रकट होकर धर्म का उपदेश

देते हैं। यदि किसी का उद्धार भिक्षु, भिक्षुणी, उपासक या उपासिका के रूप में प्रकट होने से हो सकता है, तो वे भिक्षु, भिक्षुणी, उपासक या उपासिका के रूप में प्रकट होकर धर्म का उपदेश देते हैं। यदि किसी का उद्धार श्रेष्ठी, गृहस्थ साधक, राजकीय अधिकारी, ब्राह्मण अथवा स्त्री के रूप में प्रकट होने से हो सकता है, तो वे स्त्री के रूप में प्रकट होकर धर्म का उपदेश देते हैं।[173] यदि किसी का उद्धार बालक या बालिका के रूप में प्रकट होने से हो सकता है, तो वे बालक या बालिका के रूप में प्रकट होकर धर्म का उपदेश देते हैं। यदि किसी का उद्धार देव, नाग, यक्ष, गंधर्व, असुर, गरुड़, किन्नर, महोरग, मनुष्य या अमनुष्य के रूप में प्रकट होने से हो सकता है, तो वे उन सभी रूपों में प्रकट होकर धर्म का उपदेश देते हैं। यदि किसी का उद्धार वज्रधारी देवता के रूप में प्रकट होने से हो सकता है, तो वे वज्रधारी देवता के रूप में प्रकट होकर धर्म का उपदेश देते हैं।'" इससे स्पष्ट है कि बुद्ध और बोधिसत्त्व प्राणियों की परिस्थिति के अनुरूप रूप धारण करके धर्म का उपदेश देते हैं। जिस रूप से किसी प्राणी का उद्धार हो सकता है, वे उसी रूप में प्रकट होकर उसका उद्धार करते हैं; कोई एक निश्चित रूप पकड़कर बैठने योग्य नहीं है! इसलिए, जिनका उद्धार पवित्र माता मरियम के रूप में प्रकट होने से हो सकता है, उनके लिए वे उस रूप में भी प्रकट होकर धर्म का उपदेश देते हैं। बुद्धों और बोधिसत्त्वों की महान करुणा और समभाव किसी भी प्राणी को कैसे छोड़ सकते हैं? वे छह गतियों में किसी को नहीं छोड़ते, फिर मनुष्यों के किसी धर्म को छोड़ने का प्रश्न ही कहाँ उठता है?! बुद्धों और बोधिसत्त्वों की परम पूर्ण, निर्बाध अलौकिक सामर्थ्य और प्रज्ञा के लिए ऐसा कौन-सा रूप असंभव है जिसमें वे प्राणियों के मन के अनुरूप प्रकट हों? कृपया ध्यान से विचार करें! प्राणियों के प्रति अपने असमानतापूर्ण भाव के कारण बुद्ध के मन का गलत अर्थ न लगाएँ! रूपों से अपनी आसक्ति और स्वयं तथा दूसरे के बीच भेद करने वाली मानसिकता से बुद्ध के मन की मनमानी व्याख्या न करें!

बुद्धों और बोधिसत्त्वों के प्रति कृतज्ञता!

स्वर्ग, पृथ्वी, प्रेतों और देवताओं के प्रति कृतज्ञता!

शांगगुआन युहुआ गुरुजी के प्रति कृतज्ञता!

वेनशु मोचिए गुरुजी के प्रति कृतज्ञता!

उन सभी के प्रति कृतज्ञता जिन्होंने 'परलोक के अटल विधान' को संसार में प्रसारित करने में योगदान दिया!

मियाओशेंग

पुण्य-समर्पण गाथा

इस पुण्य से पूर्व और वर्तमान कर्मों का निवारण हो
समस्त पुण्य और प्रज्ञा बढ़ें श्रेष्ठ कुशल-मूल पूर्ण हों
युद्धजन्य सभी विपत्तियाँ और अकाल आदि
सब पूरी तरह मिट जाएँ हर व्यक्ति शिष्टाचार और विनय का अभ्यास करे
जो भी मुद्रण में सहायता करें जो इसे आगे-आगे प्रसारित करें
उनके जीवित परिजन सब सुखी रहें पहले दिवंगत हुए जन उच्चतर गति पाएँ
पवन और वर्षा सदा अनुकूल रहें सभी लोग स्वस्थ और सुरक्षित रहें
धर्मधातु के समस्त चेतन प्राणी साथ मिलकर सर्वोच्च मार्ग का साक्षात्कार करें

अनुवादक और संपादकीय टिप्पणियाँ

इन टिप्पणियों के संदर्भ:

https://dict.revised.moe.edu.tw/dictView.jsp?ID=133305&la=1&powerMode=0

https://dict.revised.moe.edu.tw/appendix.jsp?ID=12&la=1

https://sutian.moe.edu.tw/zh-hant/su/6020/

https://www.bfnn.org/book/books2/1750.htm

टिप्पणियाँ

1. अनुवादक की टिप्पणी: सामूहिक कर्म और ब्रह्मांड के संतुलन की बात लेखिका की धार्मिक दृष्टि का विस्तार है, चुंबकीय क्षेत्र का वैज्ञानिक मापन या आपदाओं का भूवैज्ञानिक कारण नहीं। उदाहरण के लिए, भूकंप के भौतिक कारणों में चट्टानों का भ्रंश पर खिसकना और ऊर्जा का निकलना शामिल है; देखें USGS। भू-चुंबकीय क्षेत्र के भी भौतिक स्रोत हैं; देखें NOAA। किसी व्यक्ति का आपदा से पीड़ित होना उसके नैतिक दोष का प्रमाण या उसे सहायता से वंचित करने का आधार नहीं है।↩

2. अनुवादक की टिप्पणी: स्त्री-शरीर से पुरुष-शरीर पाने की बात यहाँ लेखिका की कर्मफल और पुनर्जन्म की धार्मिक मान्यता के संदर्भ में है, इस जीवन में किसी चिकित्सकीय प्रक्रिया या शरीर बदलने की सलाह के रूप में नहीं। मूल कथन को सुरक्षित रखा गया है; इसे स्त्रियों के मूल्य या सम्मान की पात्रता का निर्णय नहीं माना जाना चाहिए।↩

3. अनुवादक की टिप्पणी: ‘तथागत’ बुद्ध की एक उपाधि है। ‘त्रायस्त्रिंश स्वर्ग’ बौद्धपरंपरा में एक विशिष्ट स्वर्गलोक का नाम है; मूल चीनी में इसे ‘तैंतीस स्वर्ग’ कहा गया है। देखें ‘如来’ का अर्थ और फ़ो गुआंग शान का विवरण, पृ. 3.↩

4. अनुवादक की टिप्पणी: बौद्ध शब्दावली में तीन अधोगतियाँ नरक, प्रेतयोनि और तिर्यक् (पशु) योनि हैं। देखें DILA में तीन दुर्गतियाँ।↩

5. अनुवादक की टिप्पणी: यहाँ ‘उपवास’ बौद्ध धार्मिक आचरण के उन दिनों और अवधियों के लिए है जिनमें शील-पालन भी शामिल है। देखें मूल पद का कोशार्थ.↩

6. अनुवादक की टिप्पणी: ‘अनुत्तर सम्यक् संबोधि’ का आशय सर्वोच्च और पूर्ण सम्यक् बोध से है। देखें बौद्ध पद की व्याख्या.↩

7. ZH-L0172: “फ़ेइजिंग” का लिप्यंतरण और प्रसंग में आया शरीर में आवेश का अर्थ रखा गया है। इस धार्मिक धारणा की कोई सटीक प्रक्रिया यहाँ स्पष्ट नहीं की गई है।↩

8. ZH-L0215: यहाँ 婆婆 और 公公 को प्रसंग के पारिवारिक क्रम और कैंटोनीज़ प्रयोग के आधार पर क्रमशः नानी और नाना पढ़ा गया है। उसी सूची में 奶奶 होने से बोली का पूरा तंत्र निश्चित नहीं होता; यह प्रसंगानुकूल प्राथमिक पाठ है, हर अन्य अर्थ का निर्णायक निषेध नहीं।↩

9. यहाँ “正法” को पकड़कर वापस लाने के दंडात्मक प्रसंग में विधि के अनुसार मृत्युदंड देने के अर्थ में पढ़ा गया है। पाठ कई जन्मों के बाद भी वापस लाने की बात करता है, पर परलोक में यह कैसे होता है, नहीं बताता।↩

10. पूर्ण सूत्र में इस अंश से ठीक पहले बोधिसत्त्व महासत्त्व को कर्ता बताया गया है (तैशो T11, संख्या 310, पृ. 264b19–25)। पुस्तक में उद्धृत अंश वहाँ से शुरू होता है जहाँ कर्ता दोहराया नहीं गया है; इसलिए इसे किसी नए श्रोता को दिया गया सीधा आदेश न बनाकर वर्णन के रूप में रखा गया है।↩

11. सांस्कृतिक टिप्पणी: फ़ूजी (扶乩) चीन की एक पारंपरिक विधि है जिसमें लिखे गए अक्षरों को देवताओं का संदेश मानकर उनसे मार्गदर्शन माँगा जाता है। देखें ताइवान के शिक्षा मंत्रालय का शब्दकोश।↩

12. सांस्कृतिक टिप्पणी: मार (Māra) बौद्ध परंपरा में आध्यात्मिक मुक्ति के मार्ग में बाधा डालने वाले का नाम है। देखें DILA बौद्ध शब्दकोश, 魔।↩

13. सांस्कृतिक टिप्पणी: मार (Māra) बौद्ध परंपरा में आध्यात्मिक मुक्ति के मार्ग में बाधा डालने वाले का नाम है। देखें DILA बौद्ध शब्दकोश, 魔।↩

14. सांस्कृतिक टिप्पणी: यहाँ ‘वीर्य’ का अर्थ साधना में उत्साह और परिश्रम है। ‘अर्हत’ बौद्ध परंपरा में क्लेशों से मुक्त, पूजनीय व्यक्ति की उपाधि है; यहाँ यह बुद्ध के लिए प्रयुक्त है। देखें महाप्रज्ञापारमिता शास्त्र, द्वितीय खंड।↩

15. सांस्कृतिक टिप्पणी: ‘महामयूरी विद्याराज्ञी’ बौद्ध परंपरा के एक आराध्य रूप का नाम है, जिसका संबंध मोर से है। देखें DILA ग्रंथसूची और बौद्ध शब्दकोश।↩

16. अनुवादक की टिप्पणी: ‘मूल यांग’ (元陽, युआन यांग) पारंपरिक चीनी शब्दावली का पद है। इस अध्याय में इसे मनुष्य के साथ जन्म लेने वाला, अत्यंत शुद्ध और प्रकाशमय बताया गया है। ‘यांग’, चीनी ‘यिन–यांग’ अवधारणा का एक पक्ष है। देखें यिन–यांग का परिचय और ‘元陽’ का प्रयोग, पृ. 81–82.↩

17. अनुवादक की टिप्पणी (चिकित्सकीय जानकारी): विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, आपातकालीन गर्भनिरोधक गोलियाँ अंडाशय से अंडा निकलने को रोकती या टालती हैं। वे गर्भपात नहीं करातीं और पहले से ठहरे गर्भ को समाप्त नहीं करतीं। देखें विश्व स्वास्थ्य संगठन का विवरण.↩

18. अनुवादक की टिप्पणी: ‘अंतराभव’ (中有; संस्कृत: antarābhava) इस बौद्ध संदर्भ में मृत्यु और अगले जन्म के बीच की अवस्था है; यहाँ यह उस अवस्था में स्थित सत्त्व को भी दर्शाता है। देखें ब्रूस्टर का अध्ययन, पृ. S45.↩

19. अनुवादक की टिप्पणी: इस अंश में स्मृति और पीड़ा के बारे में पुस्तक का कथन रखा गया है। चिकित्सा शोध में तंत्रिका प्रतिक्रिया और दर्द के अनुभव में अंतर किया जाता है। ब्रिटेन के रॉयल कॉलेज ऑफ़ ऑब्स्टेट्रिशियंस ऐंड गाइनिकॉलजिस्ट्स की 2022 की समीक्षा गर्भावस्था के 28वें सप्ताह से पहले दर्द महसूस होने की संभावना को कम मानती है। देखें समीक्षा, पृ. 2 और 9.↩

20. अनुवादक की टिप्पणी: चीनी में ‘दस महीने गर्भ में रखना’ एक प्रचलित अभिव्यक्ति है। 28 दिन के एक गर्भ-मास की गणना से ऐसे दस महीने लगभग 40

सप्ताह होते हैं, दस कैलेंडर महीने नहीं। देखें बीजिंग प्रसूति एवं स्त्रीरोग अस्पताल का स्पष्टीकरण.↩

21. अनुवादक की टिप्पणी: मूल पाठ इस अध्ययन का पूरा संदर्भ नहीं देता। गर्भपात के बाद छह महीनों में ‘दस गुनी’ दर के दावे की पुष्टि नहीं हो सकी। मिनेसोटा विश्वविद्यालय की जानकारी-सामग्री छात्रों द्वारा बताए गए आत्महत्या के प्रयासों की चर्चा करती है, आत्महत्या से हुई मौतों की नहीं; दोनों एक नहीं हैं। तुलना के लिए, अमेरिकी राष्ट्रीय अकादमियों की 2018 की समीक्षा, पृ. 10 का निष्कर्ष है कि गर्भपात से अवसाद, चिंता या आघातोत्तर तनाव विकार का जोखिम नहीं बढ़ता। यह निष्कर्ष उन्हीं विकारों के बारे में है, मूल पाठ की संख्या की पुष्टि नहीं।↩

22. अनुवादक की टिप्पणी: ‘पाराजिक’ (pārājika) बौद्ध शील-विनय में अत्यंत गंभीर अपराध का पद है। यहाँ संदर्भ चीनी ‘ब्रह्मजाल सूत्र’ (T1484) के बोधिसत्त्व-शील का है। देखें एजर्टन का शब्दकोश, पृ. 342 और चीनी मूल ग्रंथ.↩

23. अनुवादक की टिप्पणी: यहाँ रोग और उसके ठीक होने की व्याख्या पुस्तक के धार्मिक कथन का हिस्सा है। यह किसी रोग का निदान करने या निर्धारित चिकित्सा बंद करने का आधार नहीं है; ऐसे निर्णय के लिए उचित चिकित्सकीय मूल्यांकन आवश्यक है।↩

24. अनुवादक की टिप्पणी: यहाँ पीड़ा का वर्णन पुस्तक के धार्मिक कथन का हिस्सा है। रॉयल कॉलेज ऑफ़ ऑब्स्टेट्रिशियन्स एंड गाइनिकोलॉजिस्ट्स की 2022 की समीक्षा, पृ. 9 के अनुसार, उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर गर्भावस्था के 28वें सप्ताह से पहले दर्द की अनुभूति होने की संभावना कम है। केवल भ्रूण की हलचल से दर्द की अनुभूति सिद्ध नहीं होती।↩

25. अनुवादक की टिप्पणी: इस चीनी कहावत का आशय है कि जिसने समस्या पैदा की है, उसी को उसका समाधान करना चाहिए। मूल की घंटी बाँधने और खोलने की छवि रखी गई है।↩

26. अनुवादक की टिप्पणी: यहाँ रोगों के कारण और उपचार की व्याख्या तथा अगले अनुच्छेद में गर्भपात के बाद हर माँ को अपराधबोध होने का दावा पुस्तक के धार्मिक कथन हैं। इन्हें निदान या निर्धारित चिकित्सा बंद करने का आधार नहीं बनाना चाहिए। 'मनोविकृति' चिकित्सकीय पद है; रॉयल कॉलेज ऑफ़ साइकायट्रिस्ट्स की हिंदी जानकारी इसके मूल्यांकन और उपचार की चर्चा करती है। रॉयल कॉलेज ऑफ़ ऑब्स्टेट्रिशियन्स एंड गाइनिकोलॉजिस्ट्स बताता है कि गर्भपात के बाद की भावनाएँ व्यक्ति और परिस्थितियों के अनुसार भिन्न हो सकती हैं।↩

27. अनुवादक की टिप्पणी: पुण्य के सात भागों में से एक मृतक को और छह शुभ कार्य करने वाले जीवित लोगों को मिलने की बात 《क्षितिगर्भ सूत्र》 के सातवें अध्याय, T13, पृ.784b में आती है। यहाँ शिशु-आत्माओं के लिए इसका प्रयोग इस पुस्तक में न्यायाधिकारी की व्याख्या है।↩

28. अनुवादक की टिप्पणी: संकल्प का यह संक्षिप्त रूप भिक्षु झू होंग की रचनाओं, J33, खंड17, पृ.94b20 में मिलता है। यह 《क्षितिगर्भ सूत्र》 में दिए गए लंबे संकल्प का शब्दशः उद्धरण नहीं है। मूल में 49 '部' का अर्थ पूरे सूत्र का 49 बार पाठ है, 49 अध्यायों का पाठ नहीं। पाठ की यह संख्या 49 दिनों की अवधि से अलग है।↩

29. अनुवादक की टिप्पणी: 'कमल के नौ स्तर' शुद्धभूमि में जन्म लेने के नौ स्तर हैं, जिनका वर्णन 《अमितायुर्बुद्ध के ध्यान का सूत्र》, T12, पृ.344c–346a में है। कामधातु, रूपधातु और अरूपधातु लोकों का एक अलग वर्गीकरण हैं। यहाँ 'रूप' भौतिक रूप को दर्शाता है, रंग को नहीं। देखें 《अभिधर्मकोश》, खंड8, T29, पृ.40c–41b।↩

30. अनुवादक की टिप्पणी: यहाँ स्मृति-पट्टिका मृतकों के लिए स्थापित की जाने वाली अनुष्ठानिक पट्टिका है। घंटी बाँधने और खोलने की कहावत का आशय है कि जिसने समस्या पैदा की है, उसी को उसका समाधान करना चाहिए।↩

31. अनुवादक की टिप्पणी: इस पुस्तक की अगली पंक्ति ‘स्पर्श से आहार’ को अर्पित भोजन का सार ग्रहण करने के रूप में समझाती है। बौद्ध पद ‘स्पर्शाहार’ का 《अभिधर्मकोश》, खंड10, T29, पृ.55a और55c में इंद्रिय-संपर्क तथा मन के पोषण से जुड़ा तकनीकी प्रयोग है। इस अनुच्छेद का अर्थ उस पद के सभी प्रयोगों की सामान्य परिभाषा नहीं है।↩

32. अनुवादक की टिप्पणी: पुराने चीनी सामाजिक आदर्श में ‘तीन आज्ञापालन’ का अर्थ था विवाह से पहले पिता की, विवाह के बाद पति की और पति की मृत्यु के बाद पुत्र की आज्ञा मानना। चार गुणों में स्त्री का सदाचार, वाणी, रहन-सहन की स्वच्छता और घरेलू कामकाज आते हैं; देखें बान झाओ की 《स्त्रियों के लिए निर्देश》 (女誡), चौथा अध्याय। यहाँ मूल पाठ में गुण को शील की पवित्रता तक सीमित करना न्यायाधिकारी की अपनी व्याख्या है, चारों गुणों की पूरी परिभाषा नहीं।↩

33. अनुवादक की टिप्पणी: बौद्ध संदर्भ में कल्प अत्यंत दीर्घ कालचक्र है। चीनी «万劫» का शाब्दिक रूप “दस हज़ार कल्प” है, पर यह अत्यंत लंबे समय का मुहावरा भी है। इसलिए यहाँ इसे मनुष्यों के वर्षों की किसी निश्चित संख्या या रिहाई की तय तारीख में नहीं बदला गया है। देखें ताइवान के शिक्षा मंत्रालय का शब्दकोश: 万劫।↩

34. अनुवादक की टिप्पणी: इस अंश में दंड की धार्मिक व्याख्या प्रस्तुत है। भौतिक विज्ञान में बिजली वायुमंडल का विद्युत विसर्जन है और गर्जन उससे हवा में उत्पन्न ध्वनि है। इस कथन को बिजली से प्रभावित किसी वास्तविक व्यक्ति के आचरण का प्रमाण या किसी की सुरक्षा की गारंटी नहीं मानना चाहिए। भौतिक जानकारी और सुरक्षा की सीमाओं के लिए देखें अमेरिकी मौसम सेवा: गर्जन और बिजली के बारे में तथ्य।↩

35. सांस्कृतिक टिप्पणी: चीनी «仁、義、禮、智、信» कन्फ्यूशियसी नैतिक परंपरा के पाँच सद्गुण, “वुचांग”, हैं। इस सूची में धर्मनिष्ठा का आशय नैतिक रूप से उचित आचरण और मर्यादा का आशय उचित व्यवहार तथा शिष्टाचार है; अन्य पद मानवीय करुणा, विवेक और विश्वासयोग्यता बताते हैं। देखें ताइवान के शिक्षा मंत्रालय का शब्दकोश: 五常, तीसरा अर्थ।↩

36. अनुवादक की टिप्पणी: लेखक ने यहाँ अवतंसक सूत्र के अलग-अलग अंश जोड़े हैं और मैत्री के कुछ पदों का क्रम बदला है। अनुवाद में पुस्तक का क्रम तथा “बुद्ध के वचन” यथावत हैं। सूत्र के प्रसंग में समन्तभद्र बोधिसत्त्व, पुहुई (普慧) के प्रश्नों का उत्तर देते हैं। देखें CBETA, T0279, पृ.305c और पृ.308a। चीनी “离生性” एक पारिभाषिक पद है। हुआयान की टीका में कारणों और परिस्थितियों पर निर्भर आचरण से मुक्त होने, अनुत्पत्ति के बोध और साधना की अपरिपक्वता दूर होने जैसे अर्थ मिलते हैं। इसलिए इसे केवल शारीरिक जन्म तक सीमित न समझें। यहाँ किसी एक आध्यात्मिक अवस्था को भी इसका एकमात्र अर्थ नहीं माना गया है। देखें T1733, पृ.432c।↩

37. सांस्कृतिक टिप्पणी: “छह दिन” चंद्रमास में बौद्ध उपवास और शील-पालन के दिन हैं। ये सामान्यतः चंद्रमास की 8वीं, 14वीं, 15वीं, 23वीं, 29वीं और 30वीं तिथियाँ हैं। इसका अर्थ लगातार छह दिन पूरी तरह भोजन छोड़ना नहीं है। देखें DILA शब्दकोश: 六齋日।↩

38. अनुवादक की टिप्पणी: समलैंगिकता, पिछले जन्मों और दंड का यह विवरण धार्मिक आख्यान में न्यायाधिकारी का कथन है। समलैंगिकता मानसिक विकार नहीं है; विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 1990 में इसे मानसिक विकारों के वर्गीकरण से हटाया था। यौन अभिमुखता, जेंडर पहचान और जेंडर अभिव्यक्ति अलग अवधारणाएँ हैं। देखें विश्व स्वास्थ्य संगठन, 2025 और उसकी शब्दावली की व्याख्या। अमेरिकन साइकियाट्रिक एसोसिएशन, 2024 यौन अभिमुखता को रोग मानकर बदलने की

कोशिशों का विरोध करता है, क्योंकि उनकी प्रभावशीलता का प्रमाण नहीं है और उनसे हानि हो सकती है।↩

39. पारिभाषिक टिप्पणी: मूल में “真气” (झेन ची) और “正气” (झेंग ची) हैं, जो जीवन-शक्ति और नैतिक शुचिता से जुड़ी चीनी धारणाओं के पद हैं। ताइवान के शिक्षा मंत्रालय का “真氣” शब्दकोश-लेख इसे जन्मजात और बाद में प्राप्त तत्त्वों से मिलकर बनने वाली पारंपरिक अवधारणा बताता है। यहाँ “मूल” को केवल जन्मपूर्व शक्ति तक सीमित न समझें। “正氣” में नैतिक शुचिता का अर्थ भी आता है। विचार और क्षति के बीच बताया गया संबंध न्यायाधिकारी का कथन है; शब्दकोश का संदर्भ उसे चिकित्सकीय रूप से सिद्ध नहीं करता।↩

40. पारिभाषिक टिप्पणी: यहाँ पाँच शीलों से बौद्ध परंपरा के पाँच नियम अभिप्रेत हैं: प्राणियों की हत्या, चोरी, यौन दुराचार, झूठ बोलने और मादक पेय पीने से विरत रहना। मूल कथन में केवल इस समूह का नाम है; यह सूची उस पद का स्पष्टीकरण है। देखें DILA शब्दकोश: 五戒।↩

41. पारिभाषिक टिप्पणी: चीनी “精气” (जिंग ची) जीवन-शक्ति संबंधी पारंपरिक धारणाओं का पद है। यह समग्र प्राण-शक्ति का अर्थ भी दे सकता है; हर प्रसंग में इसके अर्थ को दो अलग घटकों में बाँटना आवश्यक नहीं। ताइवान के शिक्षा मंत्रालय के शब्दकोश में भी मानव की जीवन-शक्ति इसका एक अर्थ है। उसे चुराने वाले प्रेत का वर्णन इस धार्मिक आख्यान का हिस्सा है। आगे इसी अध्याय में “精气神” भी आता है, जिसमें “शेन” का पद जुड़ता है; यहाँ उसका अनुवाद “चेतना” है।↩

42. सांस्कृतिक टिप्पणी: मेंग पो (孟婆) चीनी लोकपरंपरा की एक देवी हैं। कथा के अनुसार, वे आत्माओं को ऐसा पेय देती हैं जिससे पुनर्जन्म से पहले पिछले जीवन

की बातें भुला दी जाती हैं। इस प्रसंग में नाम का यही अर्थ है। देखें ताइवान के शिक्षा मंत्रालय का शब्दकोश, दूसरा अर्थ।↩

43. अनुवादक की टिप्पणी: यहाँ “应化身/化身” उस रूप को कहते हैं जिसे बोधिसत्त्व प्राणियों का मार्गदर्शन करने के लिए प्रकट करते हैं। बौद्ध शब्दकोश इसे संस्कृत “निर्माणकाय” से जोड़ते हैं। देखें DILA शब्दकोश: 化身। इस अंश में रोग और बाधाओं की कर्मजन्य व्याख्या धार्मिक आख्यान के न्यायाधिकारी का कथन है; यह पाठक की बीमारी का चिकित्सकीय निदान नहीं है।↩

44. सांस्कृतिक टिप्पणी: इस प्रसंग में “अधिष्ठान” से बुद्ध या बोधिसत्त्व की करुणा और आध्यात्मिक शक्ति से मिलने वाला सहारा अभिप्रेत है। देखें DILA का बौद्ध शब्दकोश, 加持।↩

45. सांस्कृतिक टिप्पणी: खक्खर बौद्ध भिक्षु का ऐसा दंड है जिसके ऊपरी भाग में धातु के छल्ले लगे होते हैं और हिलाने पर ध्वनि होती है। देखें DILA का शब्दकोश, 錫杖।↩

46. सांस्कृतिक टिप्पणी: दस कुशल कर्मों में हत्या, चोरी, यौन दुराचार, झूठ, निरर्थक वचन, फूट डालने वाले वचन, कटु वचन, लोभ, द्वेष और मिथ्या दृष्टि से विरत रहना शामिल है। देखें धर्म ड्रम का परिचय.↩

47. मंत्र-संबंधी टिप्पणी: मूल का चीनी ध्वन्यात्मक लिप्यंतरण ज्यों का त्यों रखा गया है। मूल के इस लिप्यंतरण के प्रमाणित संस्कृत रूप की पुष्टि नहीं हुई है। धर्म ड्रम के आधिकारिक लेख में प्रचलित पाठ “Om Pramardane Svaha” दिया गया है। प्राचीन बौद्ध ग्रंथ T0901, खंड छह में चीनी लिप्यंतरण का दूसरा रूप है। यह टिप्पणी पढ़ने की सहायता है, लेखक के मंत्र-पाठ का संशोधन नहीं।↩

48. पाठ-संबंधी टिप्पणी: मूल में पहले “पति की पूर्व पत्नी का बच्चा” और फिर “पूर्व पति का बच्चा” कहा गया है। रिश्ते के इस अंतर को अनुवाद में बनाए रखा गया है; मूल पाठ के आधार पर इसे निश्चित रूप से सुलझाया नहीं जा सकता।↩

49. सांस्कृतिक टिप्पणी: 《युली बाओछाओ》 (玉历宝钞) एक चीनी नीतिपरक धार्मिक ग्रंथ का नाम है, जिसमें परलोक में कर्मफल और दंड का वर्णन है। देखें पुराने पाठ की भूमिका।↩

50. सांस्कृतिक टिप्पणी: यहाँ ‘दाओ-साधक’ का अर्थ आध्यात्मिक मार्ग का साधक है। मूल चीनी शब्द ‘道人’ विभिन्न धार्मिक संदर्भों में प्रयुक्त होता है। देखें ताइवान के शिक्षा मंत्रालय का शब्दकोश और DILA बौद्ध शब्दकोश।↩

51. सांस्कृतिक टिप्पणी: वज्रयान मंत्र-साधना से जुड़ी बौद्ध परंपरा का नाम है। यहाँ यह इस पुस्तक में एक नरक के नाम का हिस्सा है। देखें DILA बौद्ध शब्दकोश, 金剛乘।↩

52. सांस्कृतिक टिप्पणी: बौद्ध संदर्भ में दस अकुशल कर्म हैं: हत्या, चोरी, यौन दुराचार, झूठ, फूट डालने वाले वचन, कटु वचन, निरर्थक वचन, लोभ, द्वेष और मिथ्या दृष्टि। देखें DILA बौद्ध शब्दकोश, 十善十惡।↩

53. सांस्कृतिक टिप्पणी: अवीचि बौद्ध परंपरा के एक नरक का नाम है। इसका प्रचलित अर्थ है ऐसा नरक जहाँ दुःख में विराम नहीं मिलता। देखें DILA बौद्ध शब्दकोश, 阿鼻।↩

54. पारिभाषिक टिप्पणी: ‘प्रज्ञा-जीवन’ में ज्ञान और प्रज्ञा की निरंतरता को जीवन के रूप में कहा गया है। यहाँ आशय बुद्ध की प्रज्ञा और शिक्षाओं को आगे पहुँचाने से है। देखें DILA बौद्ध शब्दकोश, 慧命।↩

55. पारिभाषिक टिप्पणी: दस दिशाएँ हैं चार मुख्य दिशाएँ, उनके बीच की चार दिशाएँ, ऊपर और नीचे। यहाँ ‘धर्मधातु’ का आशय समस्त जगत को समेटने वाले व्यापक क्षेत्र से है। देखें DILA शब्दकोश के 十方 और 法界 शब्द।↩

56. सांस्कृतिक टिप्पणी: बौद्ध वर्णनों में रौद्र रूप बाधाओं को दूर करने के लिए करुणा से भी प्रकट किया जाता है। यहाँ यह शब्द बोधिसत्त्व की प्रकट आकृति का वर्णन करता है। देखें DILA बौद्ध शब्दकोश, 忿怒।↩

57. सांस्कृतिक टिप्पणी: खक्खर धातु के छल्लों वाला भिक्षु-दंड है। देखें DILA बौद्ध शब्दकोश, 錫杖।↩

58. अनुवादक की टिप्पणी: ‘शुद्ध यांग’ पारंपरिक चीनी धारणा का शब्द है। यहाँ हस्तमैथुन से शरीर या जीवन को हानि की बात इस धार्मिक आख्यान में बोधिसत्त्व के कथन का हिस्सा है। अमेरिकन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स के अनुसार हस्तमैथुन सामान्य यौन विकास का हिस्सा हो सकता है; इसे अपने-आप में बीमारी का प्रमाण नहीं मानना चाहिए।↩

59. सांस्कृतिक टिप्पणी: बौद्ध ग्रंथों में ‘चार उपकारों’ की अलग-अलग सूचियाँ मिलती हैं। उदाहरण के लिए, 《大乘本生心地观经》 नामक बौद्ध सूत्र, खंड 2 में माता-पिता, प्राणियों, राजा और त्रिरत्न—बुद्ध, धर्म और संघ—के उपकार गिनाए गए हैं। शीशी याओलान, खंड 2 में एक दूसरी सूची भी है; इस पुस्तक का यह अंश किसी सूची को विस्तार से नहीं बताता।↩

60. सांस्कृतिक टिप्पणी: क्षितिगर्भ दशचक्र सूत्र में ‘चक्र’ का रूपक बाधाओं को दूर करने वाली शिक्षाओं और साधना के लिए आता है। उसी ग्रंथ में बोधिसत्त्व के दस चक्रों को दस कुशल कर्मपथ कहा गया है। यहाँ यह पद बोधिसत्त्व की स्तुति का अंश है।↩

61. सांस्कृतिक टिप्पणी: बौद्ध परंपरा में मंजुश्री के लिए 'माता' का प्रयोग उस प्रज्ञा के अर्थ में मिलता है जिससे बोध उत्पन्न होता है; यह शारीरिक वंश-संबंध नहीं है। 《佛說放鉢經》 में भी बुद्धमार्ग में मंजुश्री की शिक्षा की तुलना माता-पिता की भूमिका से की गई है।↩

62. अनुवादक की टिप्पणी: 'गर्भरूपी कारागार' गर्भ में रहने के दुःख का बौद्ध रूपक है; आत्मा की अवस्थाओं का यह वर्णन पुस्तक की धार्मिक दृष्टि का हिस्सा है। देखें DILA, 胎獄। 'दस महीने' पारंपरिक अभिव्यक्ति है। चिकित्सा में गर्भावधि सामान्यतः अंतिम मासिक धर्म के पहले दिन से लगभग चालीस सप्ताह गिनी जाती है; देखें अमेरिकन कॉलेज ऑफ ऑब्स्टेट्रीशियन्स ऐंड गायनेकोलॉजिस्ट्स।↩

63. स्रोत-टिप्पणी: 'सर्वव्यापी द्वार अध्याय' सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र का पच्चीसवाँ अध्याय है और अवलोकितेश्वर से संबंधित है। यहाँ दिए गए दोनों उद्धरण उसके दो अलग स्थानों से हैं। देखें चीनी पाठ, खंड 7।↩

64. सांस्कृतिक टिप्पणी: यहाँ पंचांग प्रणाम पाँच अंगों को धरती से लगाकर किया जाने वाला बौद्ध प्रणाम है, जो गहरे सम्मान को व्यक्त करता है। देखें DILA, 五體投地।↩

65. सांस्कृतिक टिप्पणी: कैथोलिक धर्मशिक्षा, अनुच्छेद 495 में मरियम को यीशु की माता माना गया है। उन्हें अवलोकितेश्वर का एक प्रकट रूप बताने वाली बात इस पुस्तक में परलोक के न्यायाधिकारी की व्याख्या है; इसे यहाँ कैथोलिक धर्मशिक्षा का कथन नहीं माना गया है।↩

66. पारिभाषिक टिप्पणी: प्रत्येकबुद्ध वह है जो किसी गुरु से शिक्षा पाए बिना स्वयं बोध प्राप्त करता है। देखें DILA बौद्ध शब्दकोश, 辟支佛।↩

67. अनुवादक की टिप्पणी: यहाँ 'वृक्क-शक्ति का क्षीण होना' पारंपरिक चीनी चिकित्सा की अवधारणा है; देखें हांगकांग बैपटिस्ट विश्वविद्यालय का विवरण। यह

अंश किशोर द्वारा अपने लक्षणों की दी गई व्याख्या है; केवल इस वर्णन से बताए गए कारण-कार्य संबंध की पुष्टि नहीं होती। अमेरिकन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स के अनुसार हस्तमैथुन सामान्य यौन विकास का हिस्सा हो सकता है और अपने-आप में बीमारी का प्रमाण नहीं है।↩

68. अनुवादक की टिप्पणी: 《ई जिंग》 (परिवर्तन का ग्रंथ) और 《शू जिंग》 (प्राचीन दस्तावेज़ों का ग्रंथ) प्राचीन चीनी ग्रंथ हैं। यहाँ इनके कथन यिनगुआंग के उद्धरण के भीतर आए हैं। देखें ई जिंग का संबंधित अंश और शू जिंग का संबंधित अंश।↩

69. अनुवादक की टिप्पणी: बौद्ध शब्दावली में तीन दुर्गतियाँ नरक, प्रेतयोनि और तिर्यक् (पशु) योनि हैं। कल्प अत्यंत लंबी समयावधि है; यहाँ इसे वर्षों की निश्चित संख्या में नहीं बदला गया है। देखें DILA में तीन दुर्गतियाँ और मोनियर-विलियम्स शब्दकोश, kalpa।↩

70. अनुवादक की टिप्पणी: मुख्य पाठ में स्वास्थ्य के विषय में लेखक के धार्मिक और नैतिक कथन सुरक्षित रखे गए हैं; इन्हें चिकित्सकीय निदान न माना जाए। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार संतानोत्पत्ति में असमर्थता के अनेक चिकित्सकीय कारण हो सकते हैं। अमेरिकन एकेडमी ऑफ़ पीडियाट्रिक्स स्पष्ट करती है कि हस्तमैथुन अपने आप में बाँझपन का कारण नहीं है; मानसिक परेशानी या दैनिक जीवन में बाधा होने पर मूल्यांकन आवश्यक हो सकता है। देखें विश्व स्वास्थ्य संगठन और अमेरिकन एकेडमी ऑफ़ पीडियाट्रिक्स।↩

71. अनुवादक की टिप्पणी: पाँच बौद्ध शील हैं: जीवों की हत्या न करना, चोरी न करना, यौन दुराचार न करना, झूठ न बोलना और मदिरा न पीना। देखें DILA में पाँच शील।↩

72. अनुवादक की टिप्पणी: दक्षिण जम्बूद्वीप पारंपरिक बौद्ध विश्वरचना के चार द्वीपों में से एक है, जो सुमेरु पर्वत के दक्षिण में माना जाता है। देखें DILA में दक्षिण जम्बूद्वीप।↩

73. अनुवादक की टिप्पणी: धर्मधातु का अर्थ यहाँ इस मंगलकामना के व्यापक दायरे में सभी लोकों और सत्ताओं से जुड़ा है। बोधिचित्त जागृति प्राप्त करने का संकल्प है। इन बौद्ध शब्दों के अन्य विशिष्ट प्रयोग भी हैं। देखें DILA में धर्मधातु और बोधिचित्त।↩

74. अनुवादक की टिप्पणी: चीनी परंपरा में जन्म-वर्ष, महीने, दिन और घंटे को पारंपरिक पंचांग के संकेतों के चार जोड़ों से व्यक्त किया जाता है। इन्हीं आठ चीनी अक्षरों को बा-ज़ी कहते हैं। देखें शिक्षा मंत्रालय का शब्दकोश: 生辰八字।↩

75. अनुवादक की टिप्पणी: फ़ेंगशुई एक चीनी परंपरा है जो भवनों या कब्रों की दिशा और उनके प्राकृतिक परिवेश को सौभाग्य तथा विपत्तियों से जोड़ती है। यह शब्द का परिचय है, इसकी प्रभावशीलता का प्रमाण नहीं। देखें शिक्षा मंत्रालय का शब्दकोश: 風水।↩

76. अनुवादक की टिप्पणी: निर्धारित आयु का कथन धार्मिक संवाद का हिस्सा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार वयस्कों में नियमित शारीरिक गतिविधि सभी कारणों से मृत्यु के कम जोखिम से जुड़ी है; इससे किसी व्यक्ति की मृत्यु का निश्चित समय नहीं निकलता। देखें विश्व स्वास्थ्य संगठन।↩

77. अनुवादक की टिप्पणी: बोधिचित्त बौद्ध जागृति प्राप्त करने का संकल्प है; यहाँ इसका संदर्भ सभी प्राणियों का हित करना है। देखें DILA में 菩提心।↩

78. अनुवादक की टिप्पणी: आकाश और मनुष्य की एकता चीनी चिंतन की एक धारणा है। इस अंश में इसे प्रकृति के साथ सामंजस्य के संदर्भ में कहा गया है। देखें शिक्षा मंत्रालय का शब्दकोश: 天人合一।↩

79. अनुवादक की टिप्पणी: यह धार्मिक संवाद है, भोजन या नींद छोड़ने की चिकित्सकीय सलाह नहीं। पर्याप्त नींद और पोषण की कमी स्वास्थ्य को हानि पहुँचा सकती है। इन कथनों के आधार पर भोजन या नींद बंद न करें। देखें अमेरिकी हृदय, फेफड़े और रक्त संस्थान और ब्रिटेन की राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवा।↩

80. अनुवादक की टिप्पणी: आलयविज्ञान बौद्ध दर्शन का शब्द है। इसे संग्रह करने वाली ऐसी चेतना के रूप में समझाया जाता है जिसमें अनुभव और कर्म के बीज संचित रहते हैं। इस पुस्तक में दर्पण और रिकॉर्डर की उपमा से यह विचार समझाया गया है। देखें DILA शब्दकोश: 阿賴耶।↩

81. अनुवादक की टिप्पणी: तीनों कालों का अर्थ भूत, वर्तमान और भविष्य है। धर्मधातु यहाँ बौद्ध अर्थ में समस्त धर्मों अथवा घटनाओं के क्षेत्र और उनके यथार्थ को दर्शाता है। ये पंक्तियाँ अवतंसक सूत्र के खंड 19 में हैं; उन्हें दुष्कर्म-दर्पण पर लागू करना इस पुस्तक के न्यायाधिकारी की व्याख्या है। देखें चीनी पाठ, PDF पृष्ठ 224।↩

82. अनुवादक की टिप्पणी: बदनामी और रोग के बीच यह संबंध कथा की धार्मिक व्याख्या है, चिकित्सकीय निदान नहीं। राष्ट्रीय कैंसर संस्थान सिर और गर्दन के कैंसर के चिकित्सकीय जोखिम-कारक बताता है। किसी व्यक्ति को कैंसर होने से यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि उसने कोई पाप किया है। देखें राष्ट्रीय कैंसर संस्थान।↩

83. अनुवादक की टिप्पणी: प्रज्ञा-जीवन बौद्ध संदर्भ में प्रज्ञा पर आधारित आध्यात्मिक जीवन का रूपक है। यहाँ आशय दूसरों के लिए धर्म सुनने और मुक्ति की ओर बढ़ने का अवसर बाधित करना है। देखें DILA शब्दकोश: 慧命।↩

84. अनुवादक की टिप्पणी: सामान्य सर्दी-जुकाम ऊपरी श्वसन तंत्र का वायरल संक्रमण है। यहाँ मौसम के उतार-चढ़ाव का वर्णन संक्रमण की चिकित्सकीय व्याख्या का स्थान नहीं लेता। देखें अमेरिकी रोग नियंत्रण एवं रोकथाम केंद्र।↩

85. अनुवादक की टिप्पणी: विचारों को सीधे जलवायु परिवर्तन से जोड़ना इस पुस्तक की धार्मिक व्याख्या है, मौसम की वैज्ञानिक व्याख्या नहीं। बीसवीं सदी के मध्य से जारी दीर्घकालीन वैश्विक तापवृद्धि को NASA मानवीय गतिविधियों द्वारा ग्रीनहाउस प्रभाव बढ़ाए जाने से जोड़ता है। देखें NASA: जलवायु परिवर्तन के कारण।↩

86. अनुवादक की टिप्पणी: यह कथन पुस्तक में वर्णित धार्मिक संवाद का हिस्सा है; इससे अकेले कविता के ऐतिहासिक कर्तृत्व का निर्णय नहीं होता। प्रसिद्ध 《मान जियांग होंग》 का यूए फ़ेई से संबंध साहित्यिक शोध का विषय है। देखें कर्तृत्व और रचनाकाल पर अध्ययन का शानदोंग विश्वविद्यालय द्वारा परिचय।↩

87. अनुवादक की टिप्पणी: “वूमू” यूए फ़ेई को मृत्यु के बाद दिया गया सम्मानसूचक नाम है, किसी दूसरे व्यक्ति का नाम नहीं। देखें शिक्षा मंत्रालय का शब्दकोश: यूए फ़ेई।↩

88. अनुवादक की टिप्पणी: चीनी शीर्षक में “सिलिंग” सोंग सम्राट गाओज़ोंग का संकेत करता है, उनका व्यक्तिगत नाम नहीं। यह वेन झेंगमिंग की “मान जियांग होंग” छंद-धुन पर रचित अलग कविता है, संवाद में उल्लिखित यूए फ़ेई से संबद्ध प्रसिद्ध कविता नहीं। शीर्षक, पाठ और रचनाकार के लिए देखें ताइपे के राष्ट्रीय प्रासाद संग्रहालय की सूची।↩

89. अनुवादक की टिप्पणी: “पृथ्वी-सार” चीनी 地肥 का अनुवाद है: बौद्ध सृष्टि-वर्णन में धरती से उत्पन्न आहार, खेती में डाली जाने वाली खाद नहीं। आभास्वर रूपधातु का एक देवलोक है। यह धार्मिक ब्रह्मांड-वर्णन का प्रसंग है; DILA शब्दकोश में इसके देवों के नीचे आने, यह आहार खाने और उड़ने की शक्ति खोने की कथा दी गई है।↩

90. अनुवादक की टिप्पणी: यह ‘शूरंगम सूत्र’ के छठे खंड का संक्षिप्त उद्धरण है। चीनी सूत्र-पाठ में धरती में उत्पन्न अनाज का उल्लेख है। वहाँ प्रसंग प्राणियों से प्राप्त

पदार्थों को खाने या इस्तेमाल करने से बनने वाले संबंधों का है; इस पुस्तक के न्यायाधिकारी इसे देवों की कथा पर लागू करते हैं। देखें चीनी पाठ, PDF पृष्ठ 54। ↩

91. अनुवादक की टिप्पणी: यहाँ भूख को पुण्य की कमी से जोड़ना पात्र की धार्मिक व्याख्या है, पीड़ितों की पात्रता या नैतिक जिम्मेदारी का अनुभवजन्य निष्कर्ष नहीं। विश्व खाद्य कार्यक्रम सशस्त्र संघर्ष, चरम मौसम और आर्थिक व्यवधान को खाद्य असुरक्षा बढ़ाने वाले कारकों में गिनता है।↩

92. अनुवादक की टिप्पणी: यहाँ पात्र का निर्देश धार्मिक कथा का हिस्सा है, खराब भोजन के सुरक्षित निपटान की सलाह नहीं। फफूँदी वाला भोजन पशुओं को भी नुकसान पहुँचा सकता है। अमेरिकी खाद्य एवं औषधि प्रशासन फफूँदी के विष से दूषित होने की आशंका वाला भोजन किसी पशु को न खिलाने और उसे बच्चों व पशुओं की पहुँच से दूर निपटाने की सलाह देता है। अमेरिकी राष्ट्रीय महासागरीय एवं वायुमंडलीय प्रशासन के अनुसार भोजन के अवशेष पानी की गुणवत्ता को भी नुकसान पहुँचा सकते हैं। खराब भोजन पशुओं के लिए न डालें और समुद्र में न फेंकें; स्थानीय सुरक्षित निपटान के निर्देश अपनाएँ।↩

93. अनुवादक की टिप्पणी: यहाँ “तोफ़ू के अवशेष” से तोफ़ू बनाते समय बचा पदार्थ अभिप्रेत है, सड़ा हुआ भोजन नहीं। चीनी “फ़ू” यहाँ तोफ़ू के नाम का हिस्सा है। ‘बेन्त्साओ गांगमु शीयी’ के “फ़ू” प्रकरण में भी यह शब्द तोफ़ू बनाने के बचे अवशेषों के लिए आया है। यह फटकार युनछी के मरणोपरांत लेखों के तीसरे खंड में है। इस शब्दार्थ का मतलब यह नहीं कि सड़ा भोजन खाना सुरक्षित है।↩

94. अनुवादक की टिप्पणी: यह एक अस्थायी शाब्दिक पाठ है। “灭道制” और “当不识者” का वाक्य-विभाजन और अर्थ यहाँ निश्चित नहीं है; आरंभ को किसी विशेष सिद्धांत की स्थापित व्याख्या नहीं माना गया है। इसी तरह “禅中” (ध्यान के बीच) का “会聚” (एकत्र होना) से संबंध स्पष्ट नहीं है; इस खंड से

अकेले ध्यान के समय एकत्र होने पर कोई निश्चित निषेध सिद्ध नहीं होता। यह अंश सूत्र के मुख्य पाठ की समाप्ति के बाद “ग्यारह हेतु-प्रत्ययों का अध्याय” शीर्षक से ताइवान विश्वविद्यालय के चीनी पाठ, PDF पृष्ठ 7 में मिलता है। यहाँ पुस्तक में दिया गया स्रोत-नाम यथावत रखा गया है।↩

95. अनुवादक की टिप्पणी: धूम्रपान छोड़ना लाभकारी है, पर इससे हर रोग मिटने या हर क्षति पलटने की गारंटी नहीं होती। COPD में फेफड़ों की क्षति स्थायी होती है; उपचार उसे नियंत्रित करने और बढ़ने की गति घटाने में सहायक है। इस धार्मिक कथन के भरोसे चिकित्सकीय जाँच न टालें। देखें NHS।↩

96. अनुवादक की टिप्पणी: इन लक्षणों को पूर्वकर्म से जोड़ना और स्वस्थ होने का आश्वासन देना यहाँ धार्मिक कथन है, चिकित्सकीय निदान या रोगी के दोष का प्रमाण नहीं। मासिक दर्द और रक्तस्राव के कई कारण तथा उपलब्ध उपचार हैं। तीव्र दर्द या लगातार रक्तस्राव की चिकित्सकीय जाँच कराएँ; पश्चात्ताप या धार्मिक साधना उपचार का विकल्प नहीं। देखें NHS के मासिक दर्द और अधिक रक्तस्राव संबंधी पृष्ठ।↩

97. अनुवादक की टिप्पणी: धूम्रपान और परोक्ष धुएँ का संपर्क प्रजनन-स्वास्थ्य, गर्भावस्था और शिशु को हानि पहुँचाते हैं; धूम्रपान छोड़ना लाभकारी है। ये चिकित्सकीय जोखिम हैं, इसका अर्थ यह नहीं कि हर धूम्रपान करने वाला बाँझ होगा या हर बच्चे में कथा के सभी बताए गुण अनिवार्यतः होंगे। देखें CDC।↩

98. अनुवादक की टिप्पणी: “गर्भधारण के दस महीने” पारंपरिक चीनी अभिव्यक्ति है, ठीक दस कैलेंडर महीनों की चिकित्सकीय समय-सीमा नहीं। NHS के अनुसार गर्भावस्था आम तौर पर अंतिम मासिक धर्म के पहले दिन से 37–42 सप्ताह होती है।↩

99. अनुवादक की टिप्पणी: “गर्भ से ही शाकाहारी” माँ के गर्भावस्था के आहार का वर्णन है, भ्रूण के स्वयं भोजन खाने का नहीं। पात्र का कथन बच्चे की अधिक बुद्धि या बेहतर स्वास्थ्य की गारंटी न माना जाए। संतुलित शाकाहारी गर्भावस्था-आहार

की योजना में लौह और B12 जैसे पोषक तत्त्वों पर ध्यान देना चाहिए; देखें ब्रिटिश न्यूट्रिशन फ़ाउंडेशन। यहाँ यौन संयम धार्मिक आचरण है; चिकित्सकीय दृष्टि से गर्भावस्था में संभोग सामान्यतः सुरक्षित होता है, जब तक डॉक्टर या दाई मना न करें। देखें Tommy's।↩

100. अनुवादक की टिप्पणी: दादाजी की सहनशीलता की धार्मिक प्रशंसा का अर्थ यह नहीं कि दुर्व्यवहार झेलने वाले उसे छिपाएँ या सहते रहें। विश्व स्वास्थ्य संगठन उपेक्षा, मानसिक दुर्व्यवहार और आर्थिक शोषण को बुज़ुर्गों के साथ दुर्व्यवहार में गिनता है। भोजन से वंचित किए जाने या हिंसा की स्थिति में सुरक्षा और देखभाल के लिए मदद लें; तत्काल खतरे में आपात सहायता लें।↩

101. अनुवादक की टिप्पणी: दोंगयुए चीनी परंपरा में ताइशान पर्वत के देवता हैं और परलोक से भी जुड़े हैं। यमराज से उनके संबंध की कथाएँ अलग-अलग हैं। यहाँ पदक्रम और पदोन्नति इस पुस्तक की धार्मिक कथा हैं, प्रमाणित प्रशासनिक इतिहास नहीं। देखें ताइवान इतिहास कोश।↩

102. अनुवादक की टिप्पणी: आपदाओं को कर्म से जोड़ना यहाँ धार्मिक व्याख्या है, पीड़ितों के दोष का प्रमाण नहीं। प्राकृतिक घटनाओं के भौतिक कारण होते हैं; उदाहरणतः भूकंप में समुद्रतल के विस्थापन से सुनामी उत्पन्न हो सकती है। देखें अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण।↩

103. अनुवादक की टिप्पणी: दिव्यांगता को पिछले कर्म का फल कहना धार्मिक कथा का भाग है; किसी व्यक्ति की दिव्यांगता उसके दोष का प्रमाण नहीं है। विश्व स्वास्थ्य संगठन दिव्यांगता को स्वास्थ्य-स्थितियों और पर्यावरणीय व व्यक्तिगत कारकों की परस्पर क्रिया से समझाता है तथा समान देखभाल और गरिमा पर बल देता है।↩

104. अनुवादक की टिप्पणी: “बाजी” चीनी औषधि बाजीथ्येन का संक्षिप्त नाम है, जिसका संबंध Morinda officinalis पौधे से है; देखें हांगकांग का आधिकारिक स्रोत। भोजन और कामेच्छा पर यहाँ धार्मिक निर्देश हैं, उपचार का

नुस्खा नहीं। जड़ी-बूटियाँ दवाओं के साथ परस्पर क्रिया कर सकती हैं; अपने चिकित्सक या फार्मासिस्ट को इनके उपयोग की जानकारी दें। देखें NCCIH।↩

105. अनुवादक की टिप्पणी: पश्चात्ताप के इस पद में चित्त का मिटना संदर्भानुसार आसक्ति और दूषित वृत्तियों का शांत होना है, शारीरिक हृदय का रुकना या स्वयं को हानि पहुँचाना नहीं।↩

106. अनुवादक की टिप्पणी: यह कथा का धार्मिक दृश्य है, सिरदर्द के कारण का चिकित्सकीय निदान या प्रेतबाधा का प्रमाण नहीं। सिरदर्द के अनेक कारण होते हैं। बार-बार होने या बढ़ने पर चिकित्सकीय जाँच कराएँ; अचानक अत्यंत तीव्र दर्द हो या साथ में कमजोरी अथवा बोलने में कठिनाई हो, तो तुरंत चिकित्सा सहायता लें। देखें NHS।↩

107. अनुवादक की टिप्पणी: पुण्यफल शेष होने या मृत्यु का समय न आने का कथन वास्तविक सुरक्षा की गारंटी नहीं है। हत्या की धमकी को गंभीरता से लें, सुरक्षा और सहायता माँगें तथा तत्काल खतरे में स्थानीय आपात सेवाओं से संपर्क करें; अलौकिक हस्तक्षेप की प्रतीक्षा न करें। देखें हिंसा और दुर्व्यवहार पर NHS के निर्देश।↩

108. अनुवादक की टिप्पणी: यह इस अध्याय में लेखक का अपना शब्द-विभाजन है: “नाममात्र का मिथ्यावचन” पूर्णतः दूसरों के उद्धार के लिए, निजी स्वार्थ के बिना कहा जाता है; “सुविधा के लिए बोला गया असत्य” स्वहित के उद्देश्य से मिश्रित है। यहाँ दोनों समानार्थी नहीं हैं और इन नामों का अर्थ यह नहीं कि कथन तथ्यतः सत्य है।↩

109. मूल चीनी में स्पष्ट नहीं है कि मुँह में उड़कर लौटने वाला कौन है: जीभ या काला साँप। यहाँ लौटने की क्रिया रखी गई है, उसका कर्ता निश्चित नहीं किया गया है।↩

110. अनुवादक की टिप्पणी: झूठ से जन्मजात प्रकाश मंद पड़ने और उससे रोग होने का संबंध पुस्तक की धार्मिक व्याख्या है, चिकित्सकीय निदान या रोगी के झूठा होने का प्रमाण नहीं। स्वास्थ्य पर पर्यावरण, आनुवंशिकता और सामाजिक परिस्थितियों सहित अनेक कारकों का प्रभाव पड़ता है; देखें विश्व स्वास्थ्य संगठन। नामस्मरण या पश्चात्ताप चिकित्सकीय जाँच और उपचार का विकल्प नहीं हैं।↩

111. अनुवादक की टिप्पणी: स्त्रियों का बताया अनुपात कथा के भीतर का वर्णन है, प्रमाणित जनसंख्या-आँकड़ा नहीं। कष्ट को काले कर्म से जोड़ना धार्मिक कथन है, चिकित्सकीय निदान या स्त्रियों के चरित्र का निर्णय नहीं। मासिक धर्म से पहले के लक्षण व्यक्ति-व्यक्ति और महीने-महीने बदल सकते हैं। दैनिक जीवन प्रभावित हो तो चिकित्सकीय जाँच और उपचार उपलब्ध हैं। देखें NHS।↩

112. अनुवादक की टिप्पणी: परिजन को मार-लोक से आया बताना कथा की धार्मिक व्याख्या है, किसी वास्तविक व्यक्ति पर ऐसा निर्णय देने का प्रमाण नहीं। सद्भाव या कृतज्ञता की सीख पीड़ित को दुर्व्यवहार सहने के लिए बाध्य नहीं करती, न दुर्व्यवहार करने वाले को सुधारने की जिम्मेदारी उसी की है। सुरक्षा और विशेषज्ञ सहायता माँगी जा सकती है; तत्काल खतरे में स्थानीय आपात सेवाओं से सहायता लें। देखें पारिवारिक दुर्व्यवहार पर NHS।↩

113. नाम-संबंधी सुधार: मूल नाम में “तलवारों के समुद्र में मछली पकड़ना” है, “तलवार-मछलियों का समुद्र” नहीं। इसलिए इस नाम का समुद्र-संबंधी अंश सुधारा गया है; कथा में अलग से आने वाली “लोहे की तलवार-मछली” का अनुवाद नहीं बदला गया।↩

114. अनुवादक की टिप्पणी: जन्मजात कटे होंठ या मानसिक लक्षणों को पिछले जन्म में मछली पकड़ने का फल बताना पुस्तक का धार्मिक कथन है, चिकित्सकीय निदान या बच्चे अथवा परिवार के दोष का प्रमाण नहीं। कटे होंठ की स्थिति जन्म से पहले विकास के दौरान बनती है; अधिकांश मामलों का कारण अज्ञात है और आनुवंशिक व अन्य कारक मिलकर भूमिका निभा सकते हैं। ऐसी स्थितियों और

लक्षणों के लिए योग्य विशेषज्ञ से जाँच तथा देखभाल आवश्यक है। कटे होंठ के विषय में देखें CDC।↩

115. मूल पहले मछली के “मुँह में” फेंकना कहता है, फिर “मुँह के पास” के स्तंभ पर गिरना बताता है। दोनों स्थान-वर्णन ज्यों के त्यों रखे गए हैं; उन्हें मिलाने के लिए कोई अतिरिक्त रास्ता नहीं जोड़ा गया है।↩

116. अनुवादक की टिप्पणी: यहाँ आत्मा लौटाने का अदरक-सूप और ठंडा पानी कथा के प्रसंग हैं, प्राथमिक उपचार के निर्देश नहीं। वास्तविक जीवन में बेहोशी चिकित्सकीय आपात स्थिति है: स्थानीय आपात सहायता माँगें; बेहोश व्यक्ति को खाना या पेय न दें और होश में लाने के लिए चेहरे पर पानी न छिड़कें। देखें MedlinePlus।↩

117. मूल चीनी पाठ में “尺” लिखा है; इस स्थान पर माप की पूरी इकाई स्पष्ट नहीं है। इसलिए इसे निश्चित रूप से “वर्ग फुट” में नहीं बदला गया है।↩

118. अनुवादक की टिप्पणी: उपचार से सुधार न होना किसी अलौकिक कारण या नैतिक दोष का प्रमाण नहीं और न इसका अर्थ है कि चिकित्सा व्यर्थ है। वयस्क या बच्चे में लक्षण बने रहें या बढ़ें तो योग्य विशेषज्ञ से दोबारा जाँच करानी चाहिए। यह कथा पाठक का निदान या दवा बदलने का निर्देश नहीं है। अवसादरोधी दवा ले रहे हों तो लाभ न होने या दवा बंद करने के विषय में चिकित्सक से बात करें; अपने-आप अचानक बंद न करें। देखें NHS।↩

119. अनुवादक की टिप्पणी: नगर-रक्षक देव और भूमि-देव चीनी लोक-आस्था के देवता हैं; उनके रूपों और भूमिकाओं का विविध इतिहास है। यहाँ की प्रशासनिक व्यवस्था और एक हज़ार वर्ष का उल्लेख इस पुस्तक की कथा का भाग हैं, सभी परंपराओं का प्रमाणित इतिहास नहीं। लोक-आस्था में स्थानीय संरक्षक और न्यायाधिकारी के रूप में नगर-रक्षक देव का परिचय देखें: ताइवान लोक-संस्कृति शब्दकोश।↩

120. अनुवादक की टिप्पणी: झुकी पीठ और पारिवारिक प्रताड़ना को पिछले कर्म का फल बताना कथा की धार्मिक व्याख्या है, चिकित्सकीय निदान या पीड़ित के दंड का पात्र होने का प्रमाण नहीं। रीढ़ के झुकाव के कई शारीरिक कारण होते हैं; चिंता हो तो चिकित्सकीय जाँच लें। देखें NHS। पिछली बात में दादी का सहनशीलता का आदर्श स्त्रियों या बुज़ुर्गों को परिवार बचाने के लिए मारपीट और अपमान सहते रहने के लिए बाध्य नहीं करता। दुर्व्यवहार पीड़ित का दोष नहीं है; आपात स्थिति की प्रतीक्षा किए बिना सुरक्षा और सहायता माँगी जा सकती है। तत्काल खतरे में स्थानीय आपात सहायता लें। देखें पारिवारिक दुर्व्यवहार पर NHS।↩

121. अनुवादक की टिप्पणी: यहाँ और अगले अनुच्छेदों में “नकारात्मक चुंबकीय क्षेत्र” कर्म की धार्मिक व्याख्या का शब्द है, लोगों की नैतिकता या इच्छाओं का भौतिक मापन नहीं। भू-चुंबकीय मॉडल इन नैतिक दावों के प्रमाण नहीं हैं। पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र के भौतिक स्रोतों के लिए देखें NOAA।↩

122. अनुवादक की टिप्पणी: ये प्रावधान धार्मिक उपदेश के पुराने पाठ के हैं, वर्तमान लागू कानून या आधुनिक चिकित्सकीय निर्देश नहीं। इनकी श्रेणियों या आयु-सीमाओं का उपयोग बलप्रयोग अथवा यौन शोषण को उचित ठहराने, या किसी के लिंग अथवा यौन अभिविन्यास के कारण उसका मूल्य घटाने के लिए नहीं किया जाना चाहिए। यहाँ की संख्याएँ पाठ में बताए कर्मदंड के परिमाण हैं, आयु या जोखिम के प्रमाणित माप नहीं।↩

123. इस परिशिष्ट के संबंधित अंशों में “चार भाग”, “सात भाग” आदि मूल चीनी “分” को बनाए रखते हैं। इन स्थानों पर कुल भागों की संख्या स्पष्ट नहीं बताई गई है; इसलिए इन्हें स्वतः दसवाँ हिस्सा या प्रतिशत नहीं माना गया है। जहाँ मूल स्पष्ट रूप से “आधा” कहता है, वहाँ “आधा” ही रखा गया है।↩

124. इस परिशिष्ट के संबंधित अंशों में “चार भाग”, “सात भाग” आदि मूल चीनी “分” को बनाए रखते हैं। इन स्थानों पर कुल भागों की संख्या स्पष्ट नहीं बताई गई

है; इसलिए इन्हें स्वतः दसवाँ हिस्सा या प्रतिशत नहीं माना गया है। जहाँ मूल स्पष्ट रूप से “आधा” कहता है, वहाँ “आधा” ही रखा गया है।↩

125. अनुवादक की टिप्पणी: पाठ की धार्मिक मान्यता में दिव्यांगता को कर्मफल कहा गया है; यह किसी वास्तविक व्यक्ति की दिव्यांगता का निदान या उसके अपराध करने का प्रमाण नहीं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार दिव्यांगता स्वास्थ्य-स्थितियों और व्यक्तिगत तथा पर्यावरणीय कारकों की परस्पर क्रिया से उत्पन्न होती है; कलंक और भेदभाव स्वास्थ्य-सेवा की असमानता बढ़ाते हैं। इस धार्मिक संबंध के आधार पर किसी को सम्मान या देखभाल से वंचित नहीं किया जाना चाहिए।↩

126. इस परिशिष्ट के संबंधित अंशों में “चार भाग”, “सात भाग” आदि मूल चीनी “分” को बनाए रखते हैं। इन स्थानों पर कुल भागों की संख्या स्पष्ट नहीं बताई गई है; इसलिए इन्हें स्वतः दसवाँ हिस्सा या प्रतिशत नहीं माना गया है। जहाँ मूल स्पष्ट रूप से “आधा” कहता है, वहाँ “आधा” ही रखा गया है।↩

127. इस परिशिष्ट के संबंधित अंशों में “चार भाग”, “सात भाग” आदि मूल चीनी “分” को बनाए रखते हैं। इन स्थानों पर कुल भागों की संख्या स्पष्ट नहीं बताई गई है; इसलिए इन्हें स्वतः दसवाँ हिस्सा या प्रतिशत नहीं माना गया है। जहाँ मूल स्पष्ट रूप से “आधा” कहता है, वहाँ “आधा” ही रखा गया है।↩

128. इस परिशिष्ट के संबंधित अंशों में “चार भाग”, “सात भाग” आदि मूल चीनी “分” को बनाए रखते हैं। इन स्थानों पर कुल भागों की संख्या स्पष्ट नहीं बताई गई है; इसलिए इन्हें स्वतः दसवाँ हिस्सा या प्रतिशत नहीं माना गया है। जहाँ मूल स्पष्ट रूप से “आधा” कहता है, वहाँ “आधा” ही रखा गया है।↩

129. इस परिशिष्ट के संबंधित अंशों में “चार भाग”, “सात भाग” आदि मूल चीनी “分” को बनाए रखते हैं। इन स्थानों पर कुल भागों की संख्या स्पष्ट नहीं बताई गई है; इसलिए इन्हें स्वतः दसवाँ हिस्सा या प्रतिशत नहीं माना गया है। जहाँ मूल स्पष्ट रूप से “आधा” कहता है, वहाँ “आधा” ही रखा गया है।↩

130. इस परिशिष्ट के संबंधित अंशों में “चार भाग”, “सात भाग” आदि मूल चीनी “分” को बनाए रखते हैं। इन स्थानों पर कुल भागों की संख्या स्पष्ट नहीं बताई गई है; इसलिए इन्हें स्वतः दसवाँ हिस्सा या प्रतिशत नहीं माना गया है। जहाँ मूल स्पष्ट रूप से “आधा” कहता है, वहाँ “आधा” ही रखा गया है।↩

131. इस परिशिष्ट के संबंधित अंशों में “चार भाग”, “सात भाग” आदि मूल चीनी “分” को बनाए रखते हैं। इन स्थानों पर कुल भागों की संख्या स्पष्ट नहीं बताई गई है; इसलिए इन्हें स्वतः दसवाँ हिस्सा या प्रतिशत नहीं माना गया है। जहाँ मूल स्पष्ट रूप से “आधा” कहता है, वहाँ “आधा” ही रखा गया है।↩

132. एक ही चीनी इकाई में पहले ‘सौ वर्ष’ और फिर ‘सौ कल्प’ हैं। दोनों रखे गए हैं; संपादक ने अंतर का निपटारा नहीं किया। एक जी के बारह वर्ष होने की मूल टिप्पणी भी सुरक्षित है।↩

133. इस परिशिष्ट के संबंधित अंशों में “चार भाग”, “सात भाग” आदि मूल चीनी “分” को बनाए रखते हैं। इन स्थानों पर कुल भागों की संख्या स्पष्ट नहीं बताई गई है; इसलिए इन्हें स्वतः दसवाँ हिस्सा या प्रतिशत नहीं माना गया है। जहाँ मूल स्पष्ट रूप से “आधा” कहता है, वहाँ “आधा” ही रखा गया है।↩

134. इस परिशिष्ट के संबंधित अंशों में “चार भाग”, “सात भाग” आदि मूल चीनी “分” को बनाए रखते हैं। इन स्थानों पर कुल भागों की संख्या स्पष्ट नहीं बताई गई है; इसलिए इन्हें स्वतः दसवाँ हिस्सा या प्रतिशत नहीं माना गया है। जहाँ मूल स्पष्ट रूप से “आधा” कहता है, वहाँ “आधा” ही रखा गया है।↩

135. ‘遗一子女’ के लिए यहाँ संतान होने या रह जाने का अर्थ लिया गया है; अलग से बच्चे को त्याग देने की अनिवार्य शर्त नहीं जोड़ी गई। ‘遗’ के सामान्य शब्दार्थ में छोड़ना और रह जाने देना दोनों मिलते हैं, इसलिए यह स्थानीय अर्थ-

प्रस्ताव है, लेखक का अंतिम निर्णय नहीं। पशु-जन्म और पश्चात्ताप का कर्ता वही संबंध बनाने वाला व्यक्ति है, उसकी संतान नहीं।↩

136. मूल की दोनों आयु-सीमाओं में ठीक सोलह वर्ष की आयु आ जाती है। उस आयु पर कौन-सा नियम लागू होना चाहिए, यह दिए गए पाठ से निश्चित नहीं होता। दोनों सीमाएँ ज्यों की त्यों रखी गई हैं; संपादक ने स्वयं कोई एक नियम नहीं चुना है। अंग्रेज़ी B में इन दो आयु-समूहों की श्रेणियाँ उलटी हैं; यहाँ चीनी क्रम रखा गया है। ↩

137. अनुवादक की टिप्पणी: “एक जीवन नष्ट होने” का उल्लेख मूल में जिस व्यक्ति को नामित नहीं करता, उसका नाम अनुवाद में नहीं जोड़ा गया है। यह धार्मिक दंड का प्रावधान है, हर औषधीय गर्भपात से गर्भवती की मृत्यु होने का प्रमाण नहीं। विश्व स्वास्थ्य संगठन गर्भावधि के अनुकूल अनुशंसित विधि और आवश्यक कौशल के साथ किए गए सुरक्षित गर्भपात को असुरक्षित गर्भपात से अलग करता है। यह पाठ उपचार-विधि या दवा की खुराक नहीं देता।↩

138. बारह वर्ष या अधिक मूल पाठ का शब्दशः आयु-दिशा संकेत है। बाहरी ऐतिहासिक अनुमान के आधार पर इसे बारह से कम नहीं किया गया है।↩

139. इस परिशिष्ट के संबंधित अंशों में “चार भाग”, “सात भाग” आदि मूल चीनी “分” को बनाए रखते हैं। इन स्थानों पर कुल भागों की संख्या स्पष्ट नहीं बताई गई है; इसलिए इन्हें स्वतः दसवाँ हिस्सा या प्रतिशत नहीं माना गया है। जहाँ मूल स्पष्ट रूप से “आधा” कहता है, वहाँ “आधा” ही रखा गया है।↩

140. ZH-L1425 तथा संबंधित नियमों में पद-प्रतिष्ठा, चीनी 功名 के पारंपरिक परीक्षा-उपाधि और सरकारी पद वाले अर्थ में है। यह केवल आधुनिक प्रसिद्धि नहीं है। ↩

141. ZH-L1425 तथा संबंधित नियमों में पद-प्रतिष्ठा, चीनी 功名 के पारंपरिक परीक्षा-उपाधि और सरकारी पद वाले अर्थ में है। यह केवल आधुनिक प्रसिद्धि नहीं है। ↩

142. ZH-L1425 तथा संबंधित नियमों में पद-प्रतिष्ठा, चीनी 功名 के पारंपरिक परीक्षा-उपाधि और सरकारी पद वाले अर्थ में है। यह केवल आधुनिक प्रसिद्धि नहीं है। ↩

143. ZH-L1425 तथा संबंधित नियमों में पद-प्रतिष्ठा, चीनी 功名 के पारंपरिक परीक्षा-उपाधि और सरकारी पद वाले अर्थ में है। यह केवल आधुनिक प्रसिद्धि नहीं है। ↩

144. यहाँ ‘कल्प’ पहले एक नरक में एक बार दंड भोगने और फिर एक बार जन्म लेने की इकाई है। सामान्य बौद्ध ब्रह्मांडीय अवधि इसमें नहीं डाली गई है। इसी अनुच्छेद में मृत्यु, अनिवार्य पुनः मानवीय रूप और फिर दंड देकर मारे जाने की निश्चितता बहाल की गई है।↩

145. ‘लुनके’ पुस्तक या संहिता का नाम है; इसे स्वतः ‘पुनर्जन्म-संहिता’ नहीं कहा गया है। मूल के स्थान-नाम और राजकीय वर्ष बाहरी पाठों से चुपचाप नहीं बदले गए हैं।↩

146. अनुवादक की टिप्पणी: यह धार्मिक उपदेश और उसकी व्याख्या है। इसके निर्णय और आश्वासन मूल पाठ के स्वर में हैं, वर्तमान कानून या सिद्ध ऐतिहासिक अथवा चिकित्सकीय तथ्य नहीं। स्त्रियों, अन्य समुदायों और विवाह के बाहर जन्मे बच्चों के पुराने वर्णन किसी मनुष्य का मूल्य घटाने का आधार नहीं हैं। धार्मिक अभिलेख से पाप मिटना वास्तविक हानि की जवाबदेही समाप्त होना नहीं है।↩

147. अनुवादक की टिप्पणी: यौन हिंसा झेलने वाला व्यक्ति दोषी या अपमान का पात्र नहीं; अपराध उसके परिवार या बच्चों पर नहीं जाता। प्रतिष्ठा की इस पुरानी धारणा से हत्या, बहिष्कार या सम्मान के नाम पर हिंसा उचित नहीं होती। NHS

स्पष्ट करता है कि हमले में पीड़ित की गलती नहीं और चिकित्सकीय तथा भावनात्मक सहायता उपलब्ध है।↩

148. ZH-L1465 और ZH-L1498: चीनी आधार-पाठ में संदिग्ध अक्षर शेष हैं। एक सार्वजनिक प्रति में पहले स्थान पर ‘勦’ और दूसरे पर ‘不長’ मिलता है; उससे परियोजना के मूल अक्षरों को निर्णायक रूप से बदलना उचित नहीं। पास की मूल व्याख्या से समर्थित अर्थ रखा गया है; मृत्युदंड की विधि का अनुमान नहीं जोड़ा गया।↩

149. ZH-L1477–1478: चाचा पिता के छोटे भाई और चाची उनकी पत्नी हैं। भतीजे की पत्नी और भतीजी अलग संबंध हैं; पाठ में पहली ही संबंध-श्रेणी है।↩

150. ZH-L1477–1478: चाचा पिता के छोटे भाई और चाची उनकी पत्नी हैं। भतीजे की पत्नी और भतीजी अलग संबंध हैं; पाठ में पहली ही संबंध-श्रेणी है।↩

151. ZH-L1465 और ZH-L1498: चीनी आधार-पाठ में संदिग्ध अक्षर शेष हैं। एक सार्वजनिक प्रति में पहले स्थान पर ‘勦’ और दूसरे पर ‘不長’ मिलता है; उससे परियोजना के मूल अक्षरों को निर्णायक रूप से बदलना उचित नहीं। पास की मूल व्याख्या से समर्थित अर्थ रखा गया है; मृत्युदंड की विधि का अनुमान नहीं जोड़ा गया।↩

152. ZH-L1506: पुराने पाठ में रक्त निकलने और क्षय-सदृश रोग का सटीक आधुनिक चिकित्सकीय अर्थ अनिश्चित है। R03 के शब्द बनाए रखे गए हैं; उन्हें किसी व्यक्ति के निदान के रूप में नहीं पढ़ना चाहिए। मूल लेखक के कारण-संबंधी कथन इस समीक्षा से सिद्ध नहीं होते।↩

153. अनुवादक की टिप्पणी: रोगों के नाम और नैतिक कारण लेखक के कथन हैं, निदान या रोगी को करुणा तथा देखभाल से वंचित करने का आधार नहीं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार यौन संचारित संक्रमण रोगजनकों से होते हैं; उपदंश और सूजाक सहित कुछ संक्रमणों का उपचार करके उन्हें ठीक किया जा सकता है,

हालांकि दवा-प्रतिरोध चुनौतियाँ पैदा करता है। रोग से अपराध का अनुमान नहीं, चिकित्सकीय जाँच आवश्यक है।↩

154. ZH-L1510: ‘शिचन’ पारंपरिक चीनी समय-इकाई है; दिन को बारह भागों में बाँटने की प्रणाली में एक शिचन दो घंटे का होता है। दो घंटे की यह सांस्कृतिक व्याख्या मूल टिप्पणी से अलग यहाँ रखी गई है। मूल में आधे शिचन से कम समय है; अंग्रेज़ी B का आधे घंटे से कम समय वाला रूप नहीं अपनाया गया। यह चिकित्सा-संबंधी समय-आकलन नहीं है।↩

155. अनुवादक की टिप्पणी: यह पाठ में वर्णित त्रासदी है, आत्महत्या या प्रतिशोध की प्रेरणा नहीं। यौन हिंसा से किसी का मूल्य समाप्त नहीं होता; शील सिद्ध करने के लिए स्वयं को हानि पहुँचाना जरूरी नहीं। सुरक्षा और सहारा पहले हैं; विश्वसनीय लोगों तथा प्रशिक्षित सेवाओं से चिकित्सकीय और भावनात्मक मदद ली जा सकती है। NHS की जानकारी हमले के बाद सहायता समझाती है।↩

156. अनुवादक की टिप्पणी: “जन्मजात वृक्क-जल” और आगे का दान्त्येन पाठ की परंपरागत अवधारणाएँ हैं; इन्हें आधुनिक गुर्दा-रोग का निदान या उपचार निष्फल होने का प्रमाण न मानें। अस्सी, नब्बे, सौ वर्ष और अन्य दीर्घायु-आश्वासन भी चिकित्सकीय गारंटी नहीं। इस वर्णन के कारण जाँच या उपचार में देर न करें।↩

157. ZH-L1574 में स्वीकृत चीनी पाठ का नाम ‘तोउ’ है; अंग्रेज़ी या अन्य ग्रंथों में भिन्न रूप मिलने पर उसे चुपचाप नहीं बदला गया। ZH-L1580–1582 में भाभियों की संख्या बाहर के स्रोत से नहीं जोड़ी गई है। ‘ह्वांगशू’ कथा का पदनाम है; इसे वक्ता का रक्त-संबंधी चाचा नहीं माना गया है।↩

158. ZH-L1574 में स्वीकृत चीनी पाठ का नाम ‘तोउ’ है; अंग्रेज़ी या अन्य ग्रंथों में भिन्न रूप मिलने पर उसे चुपचाप नहीं बदला गया। ZH-L1580–1582 में भाभियों की संख्या बाहर के स्रोत से नहीं जोड़ी गई है। ‘ह्वांगशू’ कथा का पदनाम है; इसे वक्ता का रक्त-संबंधी चाचा नहीं माना गया है।↩

159. ZH-L1574 में स्वीकृत चीनी पाठ का नाम ‘तोउ’ है; अंग्रेज़ी या अन्य ग्रंथों में भिन्न रूप मिलने पर उसे चुपचाप नहीं बदला गया। ZH-L1580–1582 में भाभियों की संख्या बाहर के स्रोत से नहीं जोड़ी गई है। ‘ह्वांगशू’ कथा का पदनाम है; इसे वक्ता का रक्त-संबंधी चाचा नहीं माना गया है।↩

160. ZH-L1586 में नाभि से लगभग एक छुन नीचे का वर्णन, तथा ZH-L1588 में माओ के लिए अस्सी, दिए के लिए नब्बे और सौ वर्ष का उल्लेख, मूल व्याख्या के अनुसार सुरक्षित हैं। ये मूल स्रोत के कथन हैं, संपादक की चिकित्सकीय परिभाषाएँ नहीं।↩

161. ZH-L1586 में नाभि से लगभग एक छुन नीचे का वर्णन, तथा ZH-L1588 में माओ के लिए अस्सी, दिए के लिए नब्बे और सौ वर्ष का उल्लेख, मूल व्याख्या के अनुसार सुरक्षित हैं। ये मूल स्रोत के कथन हैं, संपादक की चिकित्सकीय परिभाषाएँ नहीं।↩

162. अनुवादक की टिप्पणी: मारने और डाँटने के शब्द मूल व्याख्या के कारण रखे गए हैं, हिंसक पालन-पोषण की सलाह नहीं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार शारीरिक दंड बच्चों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को हानि पहुँचाता है; संगठन अहिंसक पालन-पोषण का समर्थन करता है। माता-पिता की आज्ञा का सिद्धांत चोट या अपमान को उचित नहीं बनाता।↩

163. अनुवादक की टिप्पणी: ये पाठ के धार्मिक आश्वासन हैं, आग, बाढ़, युद्ध या संक्रमण से वास्तविक सुरक्षा की गारंटी नहीं। पाठ करना सुरक्षा-व्यवस्था, सुरक्षित निकासी या चिकित्सा का विकल्प नहीं; आपदा झेलने से किसी का दोष सिद्ध नहीं होता।↩

164. अनुवादक की टिप्पणी: दृष्टि या श्रवण-हानि, दिव्यांगता और गरीबी को पूर्व पाप से जोड़ना पाठ की धार्मिक मान्यता है, किसी का निदान या उसके अथवा पूर्वजों के अपराध का प्रमाण नहीं। विश्व स्वास्थ्य संगठन दिव्यांगता को स्वास्थ्य-स्थितियों तथा

पर्यावरणीय और व्यक्तिगत कारकों की परस्पर क्रिया से समझाता है। सभी सम्मान, देखभाल और बिना कलंक के सहायता के अधिकारी हैं।↩

165. अनुवादक की टिप्पणी: बिजली का यह भय धार्मिक कथन है, पुस्तक की आलोचना से बिजली गिरने की भविष्यवाणी या असहमत व्यक्ति को धमकाने अथवा हानि पहुँचाने की अनुमति नहीं। तूफ़ान में सुरक्षा अपनाएँ; अमेरिकी राष्ट्रीय मौसम सेवा गरज सुनने पर सुरक्षित भवन के भीतर जाने की सलाह देती है। बिजली लगना किसी की आस्था के दोष का प्रमाण नहीं।↩

166. अनुवादक की टिप्पणी: दंड और बाद के जन्म इस पाठ की धार्मिक मान्यता हैं, चिकित्सकीय निदान या किसी दिव्यांग व्यक्ति, बच्चे अथवा परिवार के अपराध का प्रमाण नहीं। विश्व स्वास्थ्य संगठन दिव्यांगता को स्वास्थ्य-स्थितियों और पर्यावरणीय तथा व्यक्तिगत कारकों की परस्पर क्रिया से समझाता है। गर्भहानि या शिशु की मृत्यु को इस कथा से सिद्ध पाप का परिणाम न मानें और परिवार को देखभाल तथा सहायता से वंचित न करें।↩

167. अनुवादक की टिप्पणी: दिए गए चीनी मूल में स्वयं तालिका नहीं, केवल उसका शीर्षक और TXT में तालिका न होने की सूचना है। यह सूचना सुरक्षित रखी गई है। पुस्तक के साथ अलग बाहरी संदर्भ-परिशिष्ट के रूप में तालिका का समीक्षित अनुवाद दिया गया है। उसका आधार «शौकांग बाओजियान» का आधुनिक चीनी भाषा वाला संस्करण है; उसके स्रोत, पाठांतर और शेष संदिग्ध अंश परिशिष्ट में बताए गए हैं। उसे इसी TXT संस्करण से छूटी हुई मूल तालिका होने का दावा नहीं किया गया है। संयम की तिथियों और बच्चे के गुणों का यह संबंध स्रोत की मान्यता है, गर्भधारण की प्रमाणित चिकित्सा-सलाह या बच्चे के स्वास्थ्य अथवा गुणों की गारंटी नहीं।↩

168. अनुवादक की टिप्पणी: आगे व्यक्तिगत अनुभव का वृत्तांत है, जिसमें स्वप्न और कथाकार की उनकी व्याख्या शामिल हैं। उनका विश्वास और कथन सुरक्षित रखे गए हैं; इससे यह नहीं कहा जा रहा कि अनुवादक ने परलोक का स्वतंत्र सत्यापन किया

या पुस्तक का प्रसार अमरत्व अथवा वास्तविक हानि की जवाबदेही से मुक्ति सुनिश्चित करता है।↩

169. अनुवादक की टिप्पणी: धुँधली दृष्टि और सुस्ती को आत्माओं के ले जाए जाने से जोड़ना कथाकार का अनुमान है, चिकित्सकीय निदान नहीं। NHS बताता है कि दृष्टि-हानि के अनेक कारण हो सकते हैं और जाँच तथा उपचार मदद कर सकते हैं। दृष्टि में बदलाव की शीघ्र जाँच और अचानक दृष्टि चली जाने पर आपात चिकित्सा आवश्यक है। पाठ या अनुष्ठान के कारण चिकित्सा न टालें।↩

170. अनुवादक की टिप्पणी: मूल में “एक शिचन” है, ठीक एक ही क्षण या एक आधुनिक घंटा नहीं। पारंपरिक बारह समय-खंडों की प्रणाली में दिन बारह भागों में बँटता है; इस गणना में एक शिचन दो घंटे है। यह मूल की समय-इकाई का स्पष्टीकरण है, मुलाकात की स्वतंत्र रूप से सत्यापित समय-सारणी नहीं।↩

171. अनुवादक की टिप्पणी: नाखून की मिट्टी और विशाल धरती की उपमा संयुक्त आगम तथा निर्वाण सूत्र में मिलती है, लेकिन यहाँ निर्वाण सूत्र का कथन वृत्तांत-लेखक का सार है, पूरा शब्दशः उद्धरण नहीं। परंपरागत पाठ में अतिरिक्त शर्तें और विवरण हैं। पुस्तक का सार सुरक्षित रखा गया है; उसे संशोधित मूल सूत्र से नहीं बदला गया और न जन्मों के सांख्यिकीय आँकड़े के रूप में प्रस्तुत किया गया है।↩

172. अनुवादक की टिप्पणी: मरियम को अवलोकितेश्वर का प्रकट रूप मानना इस वृत्तांत-लेखक का तर्क और उसके द्वारा उद्धृत पात्रों का कथन है। यह धर्मों की घोषित सहमति या कैथोलिक चर्च का सिद्धांत नहीं। आगे के निष्कर्ष में मरियम का उल्लेख सर्वव्यापी द्वार अध्याय के स्वयं उद्धरण का अंश भी नहीं है।↩

173. यहाँ पुस्तक में दिए उद्धरण की सूची रखी गई है, जिसमें “स्त्री” पिछले वर्गों से अलग है। CBETA के पाठ (T09, संख्या 262, पृ.57b13–14) में उससे पहले यह विभाजक चिह्न नहीं है। छेंगगुआन की व्याख्या (T36, संख्या 1736, पृ.680c16–681a01) में इन चार वर्गों की स्त्रियाँ समझी गई हैं और पत्नियों-

बेटियों का भेद भी है। यहाँ पुस्तक के उद्धरण को सूत्र के संशोधित पाठ से नहीं बदला गया है।↩